दीपक चाहे छोटा हो चाहे बड़ा, जब सूर्य अपना आलोकवाही कर्तव्य उसे सौंपकर चुपचाप डूब जाता है -
तब जल उठना ही उसके अस्तित्व की शपथ है, जल उठना ही उसका जाने वाले को प्रणाम है।

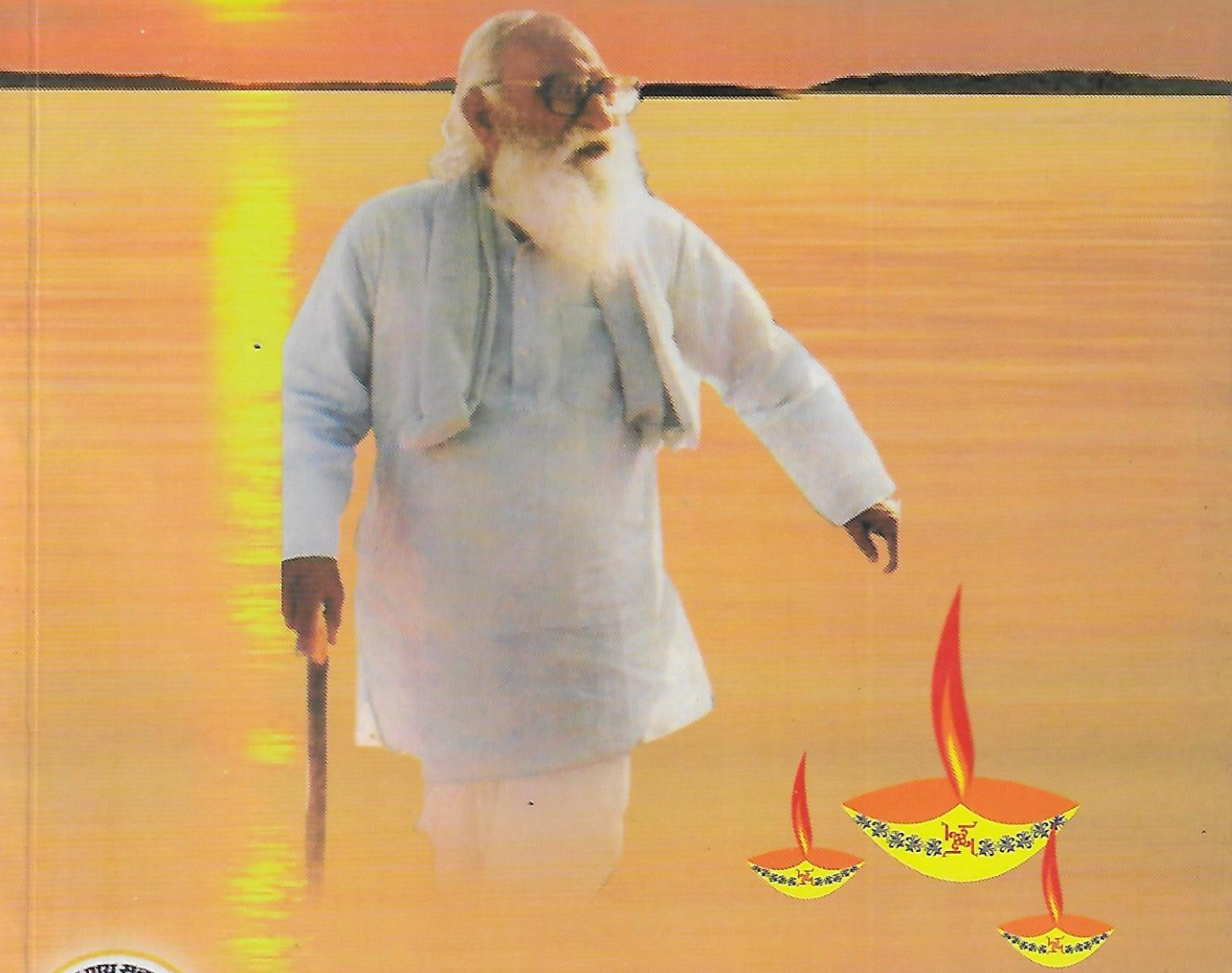

नीराजन

पं0 दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर

2010

शुभ्र वसन वीणा को धारे
झिलमिल मुकुट चमकते तारे
नहीं रहे अज्ञान अँधेरा
करो ज्ञान का नया सवेरा

नीराजना

पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर

वार्षिक पत्रिका : 2009 - 10

संरक्षक :

श्री वीरेन्द्रजीत सिंह

सचिव

प्रबंध समिति : पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय

●

प्रधान सम्पादक :

दुर्गेश वाजपेयी

सम्पादक (अंग्रेजी) :

रेखा निगम

ॐ

हमारा साध्य

प्रचंड तेजोमय शारीरिक बल,

प्रबल आत्मविश्वासयुक्त बौद्धिक

क्षमता एवं निरसीम भाव संपन्ना

मन:शक्ति का अर्जन कर,

अपने जीवन को निस्पृह भाव

से भारत माँ के चरणों में

अर्पित करना ही हमारा परम

साध्य है।

अनुक्रम

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृ.सं.
1.	श्रद्धास्पद नाना जी	- दुर्गेश वाजपेयी	3
2.	विद्यालय की प्रगति आख्या 2008-2009	- श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी	5
3.	बूझो तो जानें	- अमित कुमार	11
4.	जीवन तथा समय का प्रबन्धन	- डॉ. ज्ञानचन्द्र अग्रवाल	12
5.	श्री राम न चलें हनुमान के बिना	- श्री हरिकृष्ण सेठ	14
6.	दो नौ ग्यारह	- डॉ. कमल किशोर गुप्त	16
7.	राष्ट्र नौका की वही पतवार बनना है हमें तो।।	- श्री कुप्. सी. सुदर्शन	21
8.	भारत के शिखर पुरुष	- डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, पू. रा.	21
9.	समर्पित समाजसेवी	- श्री अटल बिहारी वाजपेयी, पू. प्र.	22
10.	बहुआयामी व्यक्तित्व	- श्री अशोक सिंहल, विहिप	22
11.	ऋषितुल्य प्रचारक	- श्री मदनदास	22
12.	परिपूर्ण मानव जैसा जीवन जिया	- श्री मधुभाई कुलकर्णी	23
13.	सच्चे कर्मयोगी	- श्री दिनेश चंद्र	23
14.	अनुकरणीय कार्य	- श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी	23
15.	स्वाभिमानयुक्त अहंकारशून्य सबके नाना	- श्री राजनाथ सिंह 'सूर्य'	23
16.	रह गये अचर्चित गुबरीले	- श्री धर्मपाल अवस्थी	26
17.	नव वर्ष	- श्री सुभाष चन्द्र शर्मा	28
18.	चाहत	- डॉ. मनोज शुक्ल	30
19.	विद्यालय का पर्व : वार्षिकोत्सव	- यश अवस्थी, अनुराग भदौ., प्रणव त्रि.	31
20.	आतंकवाद का समाधान	- यश अवस्थी	34
21.	परिस्थितियों का प्रभाव	- निखिल गुप्त	37
22.	सी.एन.जी.	- राजर्षि सिंह गौतम	38
23.	परखो अपना ज्ञान	- निखिल गुप्त	39
24.	सच होंगे सपने	- निमिष श्रीवास्तव	40
25.	भ्रम	- विनायक त्रिपाठी	41
26.	चिन्तन	- शिवकुमार	41
27.	क्रियासिद्धिः सत्वे भवति	- अभिजीत मिश्र	42
28.	कवि श्रीपति	-	43
29.	विज्ञान पहेलियाँ	- विमलेश कुमार	44
30.	सौभाग्य-दुर्भाग्य	- आर्यन दीक्षित	45
31.	गाय का महत्त्व	- पवन प्रकाश पाण्डेय	45
32.	मेरा क्या अपराध था	- आर्यन दीक्षित	46

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृ.सं.
33.	असामान्य सहन शक्ति	- शुभम त्रिपाठी	46
34.	प्रथम स्वाधीनता संग्राम	- दिव्यांशु मिश्र	47
35.	अमर वाणी	- हर्षित मिश्र	48
36.	दोस्ती	- देवप्रिय मधुकर	49
37.	प्रेरक व्यक्तित्व स्वामी विवेकानन्द	- अनुराग त्रिपाठी	50
38.	महान विभूतियाँ	- आदित्य राज	52
39.	डॉ. भीमराव अम्बेडकर	- आदित्य राज	53
40.	विदेशी का स्थान	- राजर्षि सिंह गौतम	53
41.	सफलता के रहस्य	- वैभव वरीश सिंह राठौर	54
42.	भागो भूत आया	- रोहन शर्मा	55
43.	क्लोरीन का रहस्य	- पार्थ निगम	56
44.	महारानी लक्ष्मीबाई	- अनुराग त्रिपाठी	57
45.	वीरेन्द्र सहवाग	- अभिनन्दन कुमार	58
46.	सचिन तेन्दुलकर	- अभय दीक्षित	58
47.	एन.सी.सी. का प्रशिक्षण कैम्प	- राजर्षि सिंह गौतम	59
48.	हमारे प्रतीक	- आदित्य राज	60
49.	दिखावे की कीमत	- निशांत सचान	61
50.	रोचक तथ्य	-	61
51.	लक्ष्य सुनिश्चित करें	- रवि कुमार 'कुँवर'	62
52.	संस्कृतं वद	- देवप्रिय मधुकर	62
53.	बूझो तो जानें	- प्रखर द्विवेदी	63
54.	भौगोलिक पहेलियाँ	- आशुतोष कुमार	63
55.	हिन्दी साहित्य में पहला	- सिद्धार्थ सिंह	64
56.	इतिहास के पन्नों में कानपुर	- सिद्धार्थ सिंह	65
57.	हर मुस्लिम आतंकवादी नहीं	- निमिष	67
58.	भारत की प्रमुख नदियाँ एवं प्रमुख लम्बाई	- शुभम त्रिपाठी	68
59.	चिन्तन	- कार्तिकेय प्रताप सिंह	68
60.	पुराणों में श्लोकों की संख्या	- शुभम त्रिपाठी	69
61.	क्या आप जानते हैं?	- अजीत विक्रम	69
62.	आश्चर्यजनक परिभाषायें	- शुभम त्रिपाठी	70
63.	सामान्य ज्ञान	- शुभम त्रिपाठी	70
64.	उम्र छोटी काम बड़े	- सुयश द्विवेदी	71
65.	एक बूँद जिंदगी की	- देवांश अवस्थी	71
66.	नवीन जानकारी	- सत्यम अग्निहोत्री	72

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृ.सं.
67.	दूसरा बिहार	- पीयूष गुप्त	72
68.	रोचक जानकारियाँ	- सत्यम अग्निहोत्री	73
69.	क्या आप जानते हैं?	- ज्ञानेन्द्र अवस्थी	73
70.	आग गर्म क्यों होती है?	- ज्ञानेन्द्र अवस्थी	74
71.	चन्द्रमा के बारे में	- निशांत सचान	74
72.	रोचक तथ्य	- विनायक त्रिपाठी	73
73.	आश्चर्यजनक बातें	- मनीष कुमार	74
74.	चाय-काफ़ी में दस प्रकार के ज़हर	- देवांश अवस्थी	74
75.	संसार में उपनाम	- मनीष कुमार	75
76.	समाचार-पत्रों की दुनिया	- हर्षित गुप्त	76
77.	भारतीय इतिहास में प्रमुख युद्ध	- रवि कुमार 'कुँवर'	77
78.	रोचक जानकारी	-	77
79.	क्या आप जानते हैं?	- उदित नारायण	78
80.	कुछ रोचक तथ्य	-	78
81.	जानने वाली बातें	- परमवीर कुमार	78
82.	इतिहास पुरुष श्री नरेन्द्रजीत सिंह के प्रति	- ऋषभ तिवारी	79
83.	जीवन एक संग्राम	- ऋषभ तिवारी	80
84.	माँ क्या है?	- अंकित कुमार	80
85.	समन्दर	-	80
86.	नेता का पहाड़ा - गुस्सा का पहाड़ा	- गोविन्द पाण्डेय	81
87.	मच्छर चालीसा	- आर्यन दीक्षित	81
88.	पैसा सब कुछ नहीं खरीद सकता	- दीपक सचान	82
89.	डेवलपमेन्ट???	- गोविन्द पाण्डेय	82
90.	मेरी तमन्ना है	- अमित कुमार	83
91.	विज्ञान के कुछ तथ्य	- प्रेम कुमार	83
92.	माँ-बाप	- आर्यन दीक्षित	84
93.	यदि देश हित मरना पड़े	- सुयश शुक्ल	84
94.	अंग्रेजी का भूत	- आकाश त्रिपाठी	85
95.	बफ़ेट सिस्टम	- आकाश त्रिपाठी	86
96.	मैं भारत हूँ	- अभिषेक वर्मा	87
97.	माँ	- देवेश	87
98.	नारायण डाट काम	- शिवम द्विवेदी	88
99.	वर्ष के बारह माह	- शिवम द्विवेदी	89

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृ.सं.
100.	जिह्वा	- अपूर्व त्रिपाठी	90
101.	माँ	-	90
102.	'माँ'	- ऋषि द्विवेदी	90
103.	पेड़ नहीं काटूँगा	- मनीष कुमार	91
104.	गृहमंत्री जी विस्फोट हुआ है!	- प्रणव त्रिपाठी	92
105.	बेटियाँ	- अभिनव पचौरी	93
106.	मातृभूमि	- प्रदीप कुमार भारती	93
107.	श्री गुरू जी	- अभिषेक यादव	94
108.	दहकते चिनार	- प्रणव त्रिपाठी	94
109.	हास्य-व्यंग्य	- अभिषेक यादव	95
110.	कुछ करना होगा	- आकाश सिंह	96
111.	दिल्ली में बिल्ली	- आदित्य विक्रम सिंह	96
112.	सम-सामयिक दोहे	- आदित्य विक्रम सिंह	97
113.	सवेरा	- अमित यादव	97
114.	रात और तारे	- अमित यादव	97
115.	ग्लोबल वार्मिंग	- रवि कुमार कुँवर	98
116.	लोकतंत्र शासन	- ओम जी द्विवेदी	99
117.	आरक्षण	- देवप्रिय मधुकर	100
118.	आज का इन्सान	- देवप्रिय मधुकर	101
119.	होते क्यों नाराज	- अभिषेक पाण्डेय	101
120.	खुशियाँ बाँटते चलो	- देवप्रिय मधुकर	102
121.	बंदर और कलंदर	- अर्जित कुमार	103
122.	चंदा मामा	- शिवम यादव	103
123.	मिठाई भरा पत्र	- अर्जित कुमार	104
124.	जियो तो ऐसे जियो	- प्रशान्त सिंह चौहान	104
125.	राजनीति	- प्रकाश कुमार	105
126.	कैसी दिल्ली है भाई	- परमवीर कुमार	106
127.	दहेज प्रथा एक सामाजिक कलंक	- मनीष कुमार	106
128.	घाट-घाट पर पंडे	- केशव तिवारी	107
129.	जग में होता उसका नाम	- प्रद्योत	108
130.	बदलाव	- जगमोहन यादव	108
131.	वृक्षं लगाये वृक्ष बचाये	- नैना	109
132.	समय	- जगमोहन यादव	110
133.	जिज्ञासा	-	110

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृ.सं.
134.	हँसना जरूरी है	- ऋतिक श्रीवास्तव	111
135.	हँसने के लिए	- अंकित गुप्त	113
136.	चुटकुले	- अंकित पाल	114
137.	चेतावनी!	- अमित कुमार	115
138.	हँसगुल्ले	- रणविजय सिंह	116
139.	बाल गीत	- श्रुति गुप्ता	117
140.	सब्जी-परिणय	-	117
140.	नदी	-	117
141.	जंगल का राजा शेर	- अनुराग त्रिपाठी	118
142.	रावण कभी नहीं मरता	- शिवम पाण्डेय	119
143.	अपने विभाग के सर्वोच्चाधिकारी	- कुन्दन कुमार	120
144.	प्रो. अर्मत्य कुमार सेन	-	120
145.	भारत में सर्वप्रथम	- कुन्दन कुमार	121
146.	कणाद	- नदीश पाण्डेय	122
147.	करुणा	-	122
148.	शिक्षा	-	122
149.	हम गढ़ते हैं अपनी तकदीर	- हर्षित गुप्त	123
150.	रोचक जानकारियाँ	- गोविन्द कुमार सिंह	124
151.	दुनिया का सबसे ऊँचा क्रिसमस ट्री	-	124
152.	हमारा विद्यालय	- कृष्ण दत्त ओझा	125
153.	देश गीत	- सूरत प्रताप	125
154.	लुप्त होती प्रजाति	- अर्पित कुमार मिश्र	126
155.	हरियाली	- निर्मला	126
156.	मलय समीर	-	126
157.	फूल	-	126
158.	हॉकी विश्व कप की कुछ महत्वपूर्ण जानकारियाँ	- ऋषभ सिंह	127
159.	गुरू उपकार	- रोहन मुकेश	128
160.	आँखों में क्या है?	-	128
161.	कारगिल के बाद	- अमित कुमार	129
162.	क्या आपको पता है?	- सत्यम प्रकाश	130
163.	"78118 भारत" क्या है?	- सत्यम प्रकाश	131
164.	विश्व के प्रमुख स्थानों के भौगोलिक उपनाम	- अनुज कुमार	132
165.	विश्व में सर्वाधिक बड़ा, ऊँचा व लम्बा	- शाश्वत रंजन	133
166.	ज्ञान का बातें	- कुन्दन कुमार	134

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृ.सं.
167.	विश्व में सबसे बड़ा,सबसे ऊँचा एवं सबसे छोटा-	स्वस्तिक मिश्र	135
168.	तथ्य निराले	- ओंकार दीक्षित	136
169.	जरा हँस लो	- शिखर पाण्डेय	137
170.	आश्चर्यजनक तथ्य	- मानवर्धन कुशवाहा	137
171.	लक्ष्य निश्चित करें	- शुभम वर्मा	138
172.	वैज्ञानिक कारण	- ऋषि द्विवेदी	139
173.	दृढ़ संकल्प	- अनुराग त्रिपाठी	140
174.	चेतावनी	- ओम जी द्विवेदी	142
175.	द्वादश ज्योतिर्लिंग	- ऋषि त्रिपाठी	143
176.	क्या आप जानते हैं?	- रोहित त्रिपाठी	143
177.	फर्क	- अभय पाण्डेय	144
178.	समय का सदुपयोग	- शिवम पाण्डेय	144
179.	२६ जनवरी को घटित महत्वपूर्ण घटनायें	- दिव्यांशु कश्यप	145
180.	डर तेरे कितने नाम	- दिव्यांशु कश्यप	146
181.	मेरा विद्यालय	- रवि प्रताप-II	147
182.	युगद्रष्टा की अमृतवाणी	- शगुन गुप्त	147
183.	मुशर्रफ और बुश	- अभिजीत दीक्षित	148
184.	चुटकियाँ	- अभय पाण्डेय	149
185.	साथ चलेंगे	- अंकित शुक्ल	150

English Section

S.N.	Subject	Writer	Page No.
1.	Editorial	- Mrs. Rekha Nigam	151
2.	Indian Values	- Mrs. Archana Tiwari	152
3.	English-Is it the Language Necessary for Success??	- Mrs. Tripti Prem	153
4.	Copenhagen United Nations Climate Change Conference - 2009	- Pranav Tripathi	154
5.	The Noble Indians	- Pranav Tripathi	154
6.	Water - Sports	- Nikhil Gupta	155
7.	History & Culture of India	- Pranav Tripathi	155
8.	Second Science Conclave-2009	-	156
9.	Hawai - The Tropical Paradise!	-	157
10.	Knowledge	- Sudhanshu Kumar	157
11.	Malaysia	- Govind Kumar	158

S.N.	Subject	Writer	Page No.
12.	Food, Glorious Food!	- Subham Sen	158
13.	The Challenge of Mount Everest	-	159
14.	To Parents	- Akash Rathore	159
15.	Symphony in Marble Symbol of love-Taj Mahal	- Satyam Prakash	160
16.	Various Facts	- Harshit Katiyar	160
17.	Study = Fail	- Madhukar Tiwari	161
18.	Music Mania	- Anurag Tripathi	161
19.	Atomic Energy : Uses and Abuses	- Alok Kumar Kushwaha	162
20.	Kalpana, We are proud of you	- Rishabh Yadav	163
21.	Definition of Discipline	- Dinesh Kumar	163
22.	Friendship	- Aditya Srivastava	164
24.	Beautiful Morning	-	164
25.	Mauritius	- Satyam Agnihotri	165
26.	I Can Be	-	165
27.	It is Fun Time!	- Kundan Kumar	166
28.	Fun	- Kundan Kumar	166
27.	One Day Out in Kannauj	- Aditya Pratap	167
28.	Jokes	- Aditya Srivastava	167
29.	What Makes Our India So Great?	- Amit Kumar	168
30.	More or Less	-	168
31.	Student / Cricketer	-	168
32.	Need for the teaching of moral and spiritual values	-	169
33.	Success in the Life	-	169
34.	Knowledge	-	169
35.	No More Going to School!	- Nishant	170
36.	Necessity is the Mother of Invention	- Subham Shukla	172
37.	Definitions of Friend	- Abhinandan Kumar	172
38.	How Old Are You	- Aditya Vikram Singh	173
39.	French World	-	173
40.	Do You Know?	- Akash Singh	174
41.	Chanda Mama	- Anupam Tripathi	174
42.	School Cricket	- Akash Singh	175
43.	Some Members of the Space Family	- Amit Chaurasia	175
44.	Its A Fact	-	176
45.	Tell Me Why	-	176
46.	Teacher	- Akash Rathore	176
47.	On The Day of Separation	- Chandra Mauli	177
48.	Yoga Can Set us Free	- Subham Gupta	178

S.N.	Subject	Writer	Page No.
49.	What is a House?	- Devpriya Madhukar	179
50.	What Is A Home?	-	179
51.	Reality of Life and Love	-	179
52.	Don't Forget	-	180
53.	Feelings of a Cadet	-	180
54.	Karl - Marx	-	181
55.	It Happend in 20th Century	- Nikhil Gupta	181
56.	Amazing Facts	-	181
57.	Reality of Happiness	- Ajay Singh Rawat	182
58.	Some Special Ate For A Good Life Are -	-	183
59.	An Ideal Teacher	-	183
60.	Studies.....Different Studies	- Sonam	184
61.	Perfect Silence	-	184
62.	Dont Read	-	184
63.	आचार्य परिवार	-	185

श्रद्धास्पद नाना जी

-दुर्गेश वाजपेयी

सम्मान पाने और श्रद्धास्पद होने में अन्तर होता है। सलाम ठोंकने वाले हाथ कई बार आपके पद के कारण, शक्ति के कारण, भय के कारण, स्वार्थ के कारण या प्रेम-भाव, मित्र-भाव के कारण भी उठते हैं लेकिन श्रद्धास्पद होना बड़ी बात होती है। किसी मनुष्य में जन-साधारण की अपेक्षा विशेष गुणों तथा शक्ति का विकास देखकर उसके सम्बन्ध में जो एक स्थाई आनन्द-पद्धति हृदय में स्थापित हो जाती है उसे श्रद्धा कहते हैं। श्रद्धा 'महत्त्व' की आनन्द पूर्ण स्वीकृति के साथ-साथ पूज्य बुद्धि का संचार है। यदि हमें निश्चय हो जाएगा कि कोई मनुष्य बड़ा वीर, बड़ा सज्जन, बड़ा गुणी, बड़ा दानी, बड़ा विद्वान, बड़ा परोपकारी या बड़ा धर्मात्मा है, तो वह हमारे आनन्द का एक विषय हो जाएगा। हम उसका नाम आने पर प्रशंसा करने लगेंगे, उसे सामने देख आदर से सिर नवायेंगे; किसी प्रकार का स्वार्थ न रहने पर भी सदा उसका भला चाहेंगे, उसकी बढ़ती से प्रसन्न होंगे और अपनी पोषित आनन्द-पद्धति में व्याघात पहुँचने के कारण उसकी निन्दा न सह सकेंगे। इससे सिद्ध होता है कि जिन कर्मों के प्रति श्रद्धा होती है उनका होना संसार को वांछित है। यही विश्व-कामना श्रद्धा की प्रेरणा का मूल है।

श्रद्धा एक सामाजिक भाव है। इससे अपनी श्रद्धा के बदले में हम अपने श्रद्धेय से कुछ नहीं चाहते। श्रद्धा धारण करते हुए हम अपने को उस समाज में समझते हैं जिसके किसी अंश पर उसने कोई शुभ प्रभाव डाला।

सदाचार पर श्रद्धा और अन्याय या अत्याचार पर क्रोध या घृणा प्रकट करने के लिए समाज ने प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिनिधित्व प्रदान कर रखा है। यह काम उसने इतना भारी समझा है कि उसका भार सारे मनुष्यों को बाँट दिया है, दो चार माननीय लोगों के सिर पर नहीं छोड़ रखा है। जिस समाज में सदाचार पर श्रद्धा और अन्याय पर क्रोध प्रकट करने के लिए जितने ही अधिक लोग तत्पर पाये जायेंगे, उतना ही वह समाज जागृत समझा जायेगा।

विगत 27 फरवरी 2010 को महान समाज सेवी, अपने विद्यालय के परम शुभ चिन्तक युग-दधीचि नाना जी देशमुख पार्थिव रूप से हमारे बीच नहीं रहे। नाना जी श्रद्धास्पद व्यक्ति थे। उनका जीवन समाज के लिए था; उन्हें हम लोग सदैव ही श्रद्धा-भाव से याद करेंगे।

नानाजी देशमुख की तीव्र बुद्धि तथा विलक्षण संगठन कौशल ने 1950 से 1977 तक भारतीय राजनीति पर अमिट छाप छोड़ी। उन्होंने विभिन्न विचार और स्वभाव वाले नेताओं को एक साथ लाकर कांग्रेस का सदा सत्ता में बने रहने का घमण्ड तोड़ दिया। उनका जन्म ग्राम कडोली (जिला परभणी, महाराष्ट्र) में 11 अक्तूबर, 1916 को हुआ था। निर्धनता और अभावों के बीच उन्होंने अपने जीवन की शुरुआत की। वे लोकमान्य तिलक के विचारों से बहुत प्रभावित थे। संघ संस्थापक डा. हेडगेवार ने ही उन्हें संघ से जोड़ा। 1940 में महाराष्ट्र के सैकड़ों युवक प्रचारक बने। इनमें नानाजी भी थे।

उन्हें उत्तर प्रदेश में पहले आगरा और फिर गोरखपुर भेजा गया। उन दिनों संघ का कार्य अत्यधिक कष्ट साध्य था। नानाजी एक धर्मशाला में रहते थे। वहाँ हर तीसरे दिन कमरा बदलना पड़ता था।

अन्ततः एक कांग्रेसी नेता ने उन्हें इस शर्त पर स्थायी कमरा दिलवाया कि वे उसका खाना बना दिया करेंगे। नानाजी के परिश्रम से तीन साल में गोरखपुर के आसपास 250 शाखाएँ खुल गयीं। विद्यालयों की पढ़ाई तथा संस्कारहीन वातावरण देखकर उन्होंने गोरखपुर में 1950 में कुछ बच्चों की पढ़ाई का उपक्रम प्रारंभ कराया, यही आगे चलकर सरस्वती शिशु मंदिर योजना के विधिवत शुभारंभ की भावभूमि बना। आज तो ऐसे विद्यालयों की संख्या देश में 50,000 से भी अधिक है।

1947 में रक्षाबन्धन के शुभ अवसर पर लखनऊ में 'राष्ट्रधर्म प्रकाशन' की स्थापना हुई, तो इसके प्रबन्धक नानाजी ही बने। वहाँ से मासिक राष्ट्रधर्म, साप्ताहिक पांचजन्य तथा दैनिक स्वदेश समाचार पत्र निकाले गये। 1948 में गांधी जी की हत्या के बाद संघ पर प्रतिबन्ध लग गया। इससे प्रकाशन संकट में पड़ गया। ऐसे में नानाजी ने छद्म नामों से कई पत्र निकाले। 1952 में जनसंघ की स्थापना होने पर उत्तर प्रदेश में उसका कार्य नानाजी को सौंपा गया। 1957 तक प्रदेश के सभी जिलों में जनसंघ का काम पहुँच गया। 1967 में उत्तर प्रदेश में चौधरी चरणसिंह के नेतृत्व में पहली संविद सरकार बनी। इसमें नानाजी की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। विनोबा के भूदान यज्ञ तथा 1974 में इन्दिरा गांधी के कुशासन के विरुद्ध लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में हुए आन्दोलन में नानाजी खूब सक्रिय रहे। पटना में जब पुलिस ने जयप्रकाश जी पर लाठियाँ बरसायीं, तो नानाजी ने उन्हें अपनी बाँह पर झेल लिया। इससे उनकी बाँह टूट गयी; पर जयप्रकाश जी बच गये। नाना जी जयप्रकाश के समग्र क्रांति आंदोलन की रीढ़ थे।

1975 में इन्दिरा गांधी ने देश में आपातकाल लगाकर सभी विपक्षी नेताओं को जेल में ठूँस दिया; पर नानाजी हाथ नहीं आये। आपातकाल के विरुद्ध बनी 'लोक संघर्ष समिति' के वे मन्त्री थे। उस समय हुए देशव्यापी सत्याग्रह में एक लाख से भी अधिक लोगों ने गिरफ्तारी दी। यद्यपि बाद में नानाजी भी पकड़े गये। 1977 के चुनाव में इन्दिरा गांधी हार गयीं और दिल्ली में मोरारजी देसाई के नेतृत्व में जनता पार्टी की सरकार बनीं। नानाजी ने सत्ता की बजाय संगठन को महत्त्व देते हुए अपने बदले ब्रजलाल वर्मा को मन्त्री बनवाया। इस पर उन्हें जनता पार्टी का महामंत्री बनाया गया।

उस समय नानाजी सत्ता या दल में बड़े से बड़ा पद ले सकते थे; पर उन्होंने लोकप्रियता के शिखर पर होते हुए भी सक्रिय राजनीति छोड़कर 'दीनदयाल शोध संस्थान' के माध्यम से पहले गोंडा और फिर चित्रकूट में ग्राम विकास का कार्य प्रारम्भ किया।

एकात्मवादी भारतीय संस्कृति

"भारतीय संस्कृति की पहली विशेषता यह है कि सम्पूर्ण जीवन का, सम्पूर्ण सृष्टि का समन्वित विचार करती है। उसका दृष्टिकोण एकात्मवादी है। टुकड़ों-टुकड़ों में विचार करना विशेषज्ञ की दृष्टि से ठीक हो सकता है, परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से उपयुक्त नहीं। पश्चिम की समस्या का मुख्य कारण उनका जीवन के सम्बन्ध में टुकड़ों-टुकड़ों में विचार फिर उन सबको थेगली लगाकर जोड़ने का प्रयत्न है।"

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

मेधावी छात्र

होनहार बिरवान के होत चीकने पात

अभिनव पचौरी - नवम 'क'
92.2% अंक

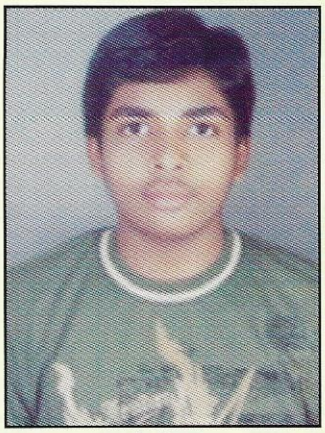

शाश्वत रंजन चौरसिया - नवम 'ख'
93.6% अंक

यश अवस्थी - एकादश 'क'
81.8% अंक

हर्षित वाजपेयी - सप्तम 'ख'
87.6% अंक

दिव्यांश अवस्थी - षष्ठ 'ख'
74.76% अंक

अरुणेश सिंह - पंचम
87.6% अंक

ऊर्जावान खिलाड़ी

पवन कुमार पाल - कक्षा पंचम
100 मीटर दौड़ में प्रथम स्थान
200 मीटर दौड़ में प्रथम स्थान
1200 मीटर दौड़ में प्रथम स्थान
1500 मीटर दौड़ में प्रथम स्थान
4x100 मीटर रिले रेस में द्वितीय

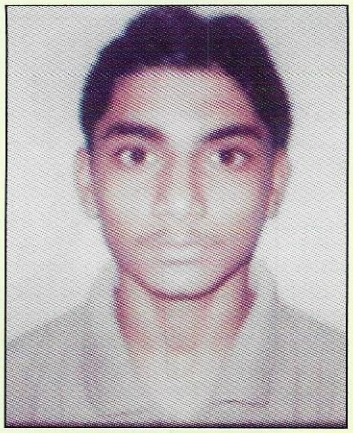

दीपक सचान - कक्षा 'नवम् ख'
200 मीटर दौड़ में प्रथम स्थान
400 मीटर दौड़ में प्रथम स्थान
4x100 मीटर रिले रेस में प्रथम
100 मीटर दौड़ में द्वितीय स्थान
लम्बी कूद में प्रथम स्थान
(17 फीट 6इंच)

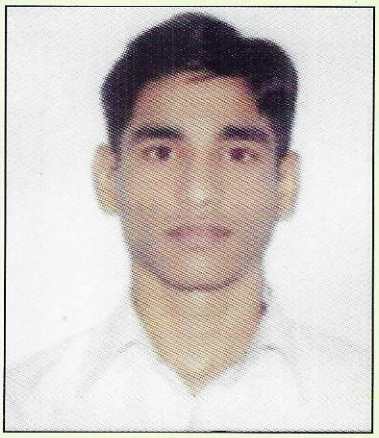

उत्कर्ष तिवारी - कक्षा एकादश 'क'
चैम्पियन : अभिमन्यु दल
चि० उत्कर्ष उ०प्र० की टीम से थ्रो बाल
खेलने देवास (म०प्र०) भी गये
200, 400, 800, 1500, 2000 मी०
तथा 4x100 मी० रिले रेस में
प्रथम स्थान

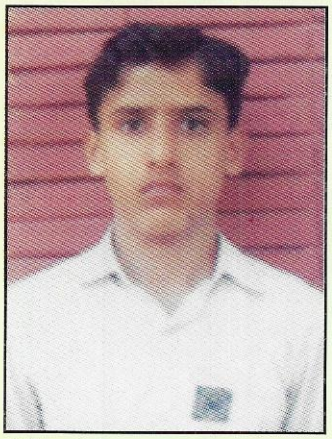

रॉबिन सिंह - कक्षा अष्टम 'ख'
800 मीटर दौड़ में प्रथम स्थान
1200 मीटर दौड़ में प्रथम स्थान
2000 मीटर दौड़ में प्रथम स्थान
तीन टांग दौड़ में प्रथम स्थान
4x100 मीटर रिले रेस में प्रथम स्थान
उछल कदम कूद में द्वितीय स्थान

ब्रजेश कुमार - कक्षा अष्टम 'ख'
100 मीटर दौड़ में प्रथम स्थान
200 मीटर दौड़ में प्रथम स्थान
लम्बी कूद में प्रथम स्थान
ऊँची कूद में प्रथम स्थान
उछल कदम कूद में प्रथम स्थान
4x100 मीटर रिले रेस में द्वितीय स्थान

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता

लम्बी कूद प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर क्रमशः चि० दीपक सचान,
शशांक कुमार, शिवम भदौरिया तथा सान्तवना स्थान प्राप्त चि० रविकान्त वर्मा

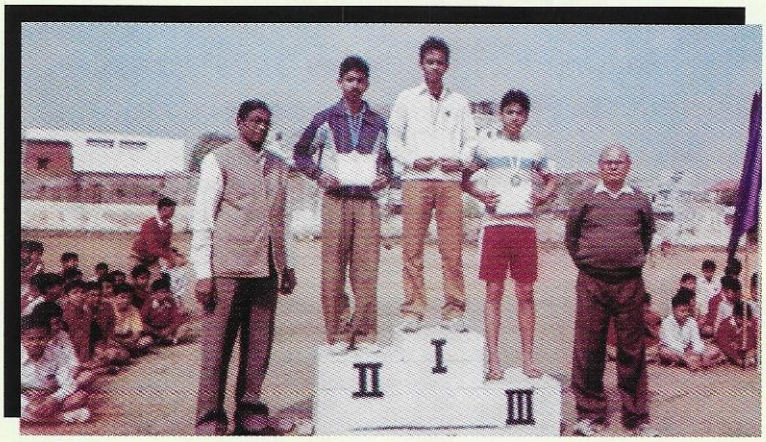

800 मीटर दौड़ एकलव्य दल में प्रथम स्थान पर चि० शशांक कुमार
द्वितीय स्थान पर चि० अंशुमान शुक्ल, तृतीय स्थान पर चि० श्रेय मिश्र
विजय स्तम्भ पर साथ ही प्रधानाचार्य श्री प्रकाश जी तथा आचार्य श्री रामतीर्थ जी

'नीबू चम्मच दौड़' पूरी करती हुई विद्यालय की छात्राएँ, चम्मच में नीबू रखकर
और उसे मुँह में दबाकर यह दौड़ पूरी करनी थी

खेलकूद प्रतियोगिताएँ

हॉकी सिटिजन ग्रुप, नई दिल्ली द्वारा ग्रीनपार्क स्टेडियम में आयोजित 'अण्डर फोरटीन हॉकी टूर्नामेंट' में अपने विद्यालय की विजेता टीम के साथ आचार्य श्री सुभाष जी

वार्षिक खेलकूद में १५०० मीटर दौड़ में लवकुश दल के छोटे-छोटे छात्रों का उत्साह देखते ही बनता है

अन्यान्य गतिविधियाँ

नानाराव पेशवा स्मारक में अपनी कक्षा के छात्रों के साथ नौका-विहार
करती हुई आचार्या श्रीमती अर्चना तिवारी जी

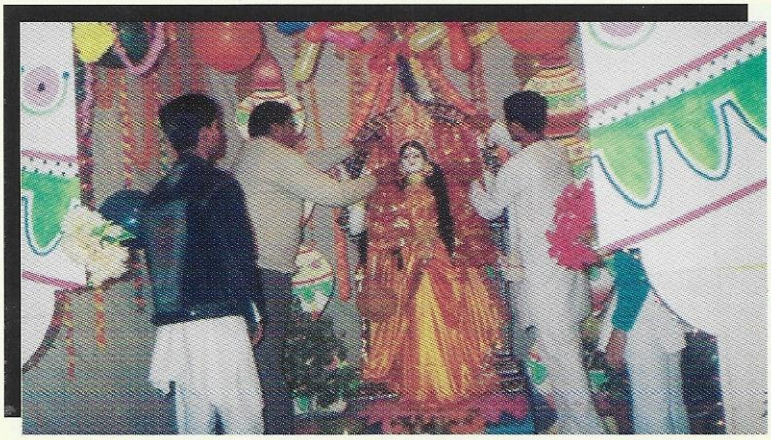

बसंत पंचमी के अवसर पर छात्रावास के मुख्यतः बिहार के छात्रों द्वारा सुसज्जित माँ सरस्वती
के भव्य दरबार में पूजन करते हुए प्रधानाचार्य श्री प्रकाश जी तथा चि० अभिनन्दन व चि० यज्ञप्रिय मधुकर

ऐतिहासिक प्रदर्शनी में राष्ट्रपति भवन का आकर्षक मॉडल बनाया
चि० अंशुमान (नवम 'ख') ने साथ में चि० देवप्रिय तथा अमित

सेवा-निवृत्ति सम्मान समारोह

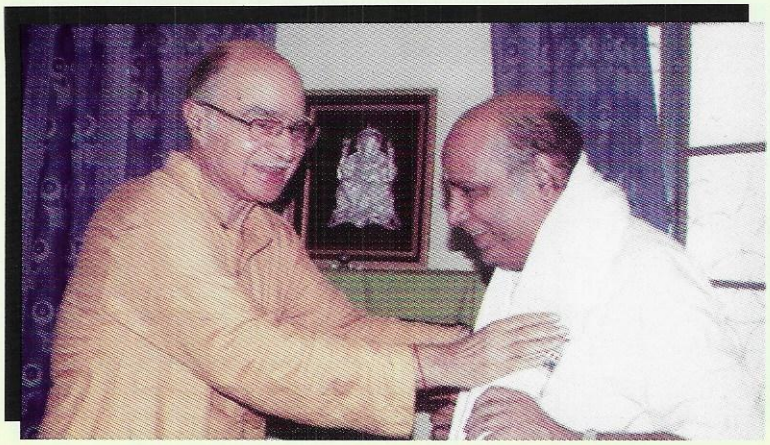

साधु स्वभाव आचार्य राजेश जी को उत्तरीय पहनाकर विदाई-सम्मान देते हुए माननीय श्री वीरेन्द्रजीत सिंह जी

क्रियमाण व्यक्तित्व के धनी चिर-प्रसन्न आचार्य श्री रामतीर्थ जी को विदाई-सम्मान देते हुए माननीय सचिव जी

परहित जीवन जीने वाले, विद्यार्थियों के प्रिय आचार्य श्री दीपक जी भी सेवानिवृत्त हुए

विद्यालय का पर्व : वार्षिकोत्सव

मुख्य अतिथि माननीय श्री मदनदास जी देवी का स्वागत करते हुए
प्रधानाचार्य श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी जी

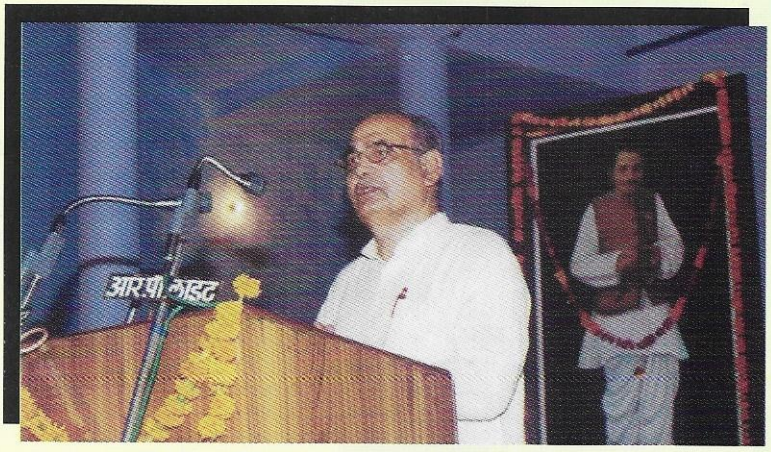

छात्रों को सम्बोधित करते हुए माननीय श्री मदनदास जी देवी

चि० ओम जी द्विवेदी को पुरस्कृत करते हुए माननीय श्री मदनदास जी

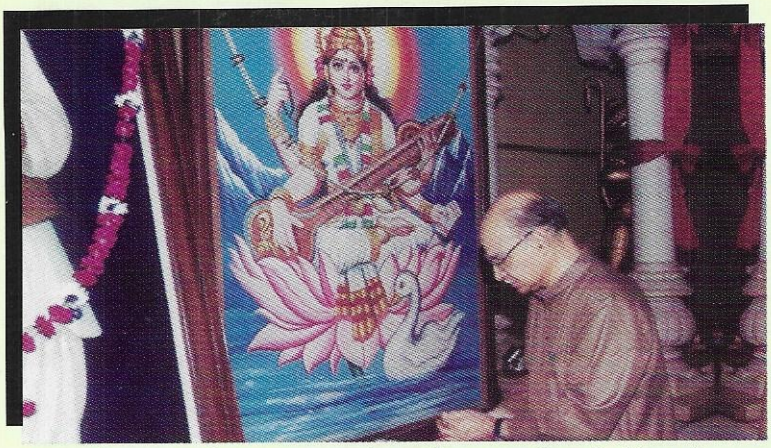

माँ सरस्वती के चित्र पर पुष्पार्पण करते हुए माननीय श्री वीरेन्द्र जी

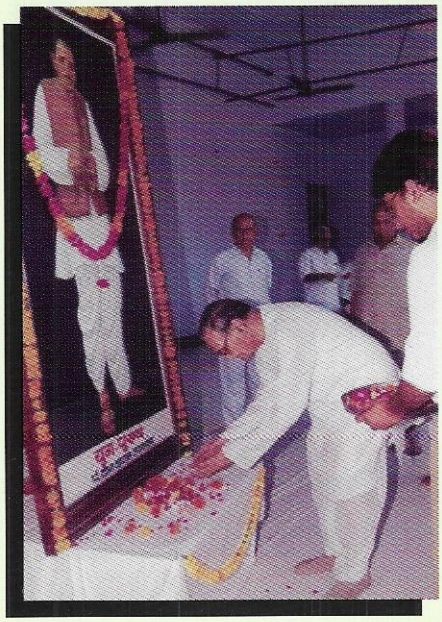

युग-दधीचि पं० दीनदयाल उपाध्याय
के चित्र पर पुष्पार्पण करते हुए
माननीय श्री कृष्ण गोपाल लाहोटी
(उपाध्यक्ष, विद्यालय प्रबन्ध समिति)

श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामंडल के सभापति पं० रामबालक मिश्र जी का
अभिनन्दन करते हुए प्रधानाचार्य जी

विद्यालय की प्रगति आख्या - 2008-2009

-प्रकाश नारायण वाजपेयी
प्रधानाचार्य

युगद्रष्टा पं. दीन दयाल उपाध्याय के 93वें जन्मोत्सव पर आज हम उनका पुनः स्मरण कर रहे हैं। साधना के पर्याय इस युग के ऋषि के द्वारा हमारे राष्ट्रीय जीवन को प्रदान की गई प्रेरणा अनंत काल तक आदर्श उद्धरण रहेगी और उनका बलिदान हर संवेदनशील देशभक्त के लिए एक चुनौती। वास्तव में हमारे विद्यालय की मूल भावना उस युग दधीचि के मर्मस्पर्शी बलिदान से ही प्रेरित है।

यह विद्यालय जिस भावना-भित्ति पर आधारित है उसके निर्माण की मूल सामग्री है, सात्विक भाव, सद्विचार और सदाचार। विद्यालय का उद्देश्य है शक्ति, शौर्य तथा साधना संकल्प के साथ भारत माता की आजीवन आराधना। इस उदात्त उद्देश्य-प्रेरित विद्यालय के निर्माण में जिन महनीय महापुरुषों ने अपना अनिर्वचनीय योगदान दिया है उनमें विद्यालय की कल्पना मूर्ति गढ़ने वाले मौन तपस्वी पूज्य भाऊराव, इसकी आधार शिला रखने वाले युग पुरुष परम पूज्य श्री गुरु जी, भव्य भवन को मूर्त-रूप देने वाली ममतामयी माँ श्रद्धेया बूजी और इसकी कंचन-काया में प्राण संचरित करने वाले श्रद्धास्पद बैरिस्टर साहब सदा ही स्मरण किये जायेंगे। विद्यालय के पूर्व अध्यक्ष ब्रह्मलीन प्राचार्य श्री शिवशरण शर्मा का व्रती जीवन और संकल्पसिद्ध अध्यवसाय जहाँ हमारे लिए पाथेय है वहीं गोलोकवासी श्री इन्द्रजीत जैन जी की उदारता हमारा संबल।

संवत् 2026 की गुरु पूर्णिमा (18 जुलाई 1970) के पावन पर्व से प्रारम्भ अपना यह विद्यालय आज अपना उनतालीसवाँ बसन्त मना रहा है।

इस विद्यालय की कल्पना-शिल्प का आधार उदात्त भावना तथा प्रारूप जाग्रत विवेक है। हमारा लक्ष्य यह भी है कि जिन देशद्रोहियों के घिनौने षडयंत्र तथा सत्ता की गर्हित लिप्सा के कारण पण्डित जी की क्रूर हत्या की गयी, उन विषैले विचारों को आमूल समाप्त कर दिया जाये और ऐसे विष वृक्ष फिर कभी न पनपें, इसकी सुनिश्चित व्यवस्था भी की जाये।

पं. दीनदयाल जी भारत, भारती और भारतीयता के मूर्तिमान स्वरूप थे। विद्यालय द्वारा संस्कारित दृढ़ इच्छा-शक्ति सम्पन्न आदर्श पीढ़ी शनैः-शनैः समाज को अपने अस्तित्व का बोध कराने लगी है।

अतः हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि ब्रिटिश दासता के काल से चली आ रही पब्लिक स्कूलों की भ्रामक चकाचौंध से सर्वथा अलग यह विद्यालय भारतीय संस्कारों की पुनर्स्थापना में एक सुस्पष्ट, गतिमान, तेजोद्दीप्त और प्रभावी उपक्रम है तथा वर्तमान व्यावसायिक प्रलिप्सु कर्दम में एक उन्नत-अडिग शैल-शृंग।

षष्ठ कक्षा के मात्र 24 छात्रों से प्रारम्भ होकर निरन्तर प्रगति करता हुआ यह विद्यालय आज विज्ञान वर्ग में मान्यता प्राप्त पूर्ण विकसित इण्टरमीडिएट विद्यालय है।

जिस भूमि पर यह विद्यालय स्थित है, वह श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा प्रदत्त है। महामण्डल की इस उदारता का विद्यालय चिर ऋणी रहेगा। प्रारम्भिक अर्द्धचन्द्राकार दुमंजिले भव्य भवन

का निर्माण श्रद्धेया बूजी ने नितान्त व्यक्तिगत साधनों से करवाया, जो अपने में एक महिमामय उद्धरण है। आवश्यकतानुसार धीरे-धीरे इस भवन का विस्तार तथा अन्य भवनों का भी निर्माण होता गया यथा विज्ञान-वीथी, भाऊराव-भवन, नरेन्द्र-निवास छात्रावास, प्राचार्य-आवास, माधव स्मृति क्रीड़ा-परिसर व प्रेक्षागार, आचार्य-कर्मचारी आवास तथा 7500 वर्ग फीट क्षेत्रफल का 'पण्डित दीन दयाल सभागार।'

इस समय पंचम से द्वादश तक 8 कक्षाओं के 17 अनुभागों में छात्रों की संख्या 808 है। इनमें से 230 छात्रावासीय हैं जो कि विद्यालय के ऊपरी खण्ड, पीछे भाऊराव-भवन तथा नरेन्द्र-निवास में रहते हैं। इनमें उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों के साथ ही उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, बंगाल तथा मध्य प्रदेश के छात्र भी हैं, जिनके भोजन, स्वास्थ्य, स्वाध्याय, अनुशासन आदि की चिन्ता विद्यालय-परिसर में ही निवास करने वाले सुयोग्य अधीक्षकों द्वारा की जाती है।

विद्यालय में पढ़ाने वाले आचार्यों की संख्या प्रधानाचार्य सहित वर्तमान में 28 है। लगभग सभी प्रशिक्षित परास्नातक हैं।

विद्यालय के पास लगभग एक लाख रु. से अधिक मूल्य की 15000 से अधिक पुस्तकों से सम्पन्न पुस्तकालय भी हैं। वाचनालय में 6 दैनिक, 2 साप्ताहिक 2 पाक्षिक तथा 13 मासिक पत्र-पत्रिकायें आती हैं। मुख्य समाचार, सुभाषित, सामान्य ज्ञान इत्यादि श्याम-पटों पर लिखे जाते हैं।

इस विद्यालय की शासन द्वारा विशिष्ट विद्यालय के रूप में कुछ विशेषताओं के आधार पर ही मान्यता दी गयी थी, जिनमें छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान प्रमुख है। इसी विशेषता के प्रति सचेत रह कर हम विद्यालय के छात्रों का समग्र विकास करने में सफल भी हैं।

शैक्षिक उपलब्धियाँ

परिषदीय परीक्षाएँ :

विद्यालय की दशम कक्षा का प्रथम दल 1975 में तथा द्वादश का 1981 में उत्तर-प्रदेश की माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित परीक्षा में सम्मिलित हुआ। परीक्षा-परिणाम प्रारम्भ से ही अत्युत्तम रहा है।

अद्यतन समेकित (Cumulative)

	दशम (35 वर्षों का)		द्वादश (28 वर्षों का)	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
कुल छात्र	3344		2795	
उत्तीर्ण	3328	99.50	2778	99.39
ससम्मान	1300	38.87	800	28.62

प्रथम श्रेणी	1672	50.00	1638	58.60
द्वितीय श्रेणी	346	10.34	335	11.98
तृतीय श्रेणी	0010	00.29	05	00.20
प्रदेश में स्थान	106 (लगभग 4%)		88 (लगभग 4%)	

अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ -

1. वर्ष 2001 में इण्टरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण छात्र चि. हिमांशु शुक्ल एवं चि. श्रीकृष्ण बाजपेयी ने इस वर्ष आई.ए.एस. परीक्षा में चयनित होकर विद्यालय को गौरवान्वित किया।

2. आठ छात्र वर्ष 2009 की इण्टरमीडिएट परीक्षा के साथ ही आई.आई.टी. में भी चयनित हुए हैं।

प्रतियोगी परीक्षाओं का अद्यावधि परिणाम

कुल छात्रों की संख्या	वर्गशः	चयनित संस्था	सफल छात्रों की संख्या	प्रतिशत
2795	गणित 2457	आई.आई.टी.	295	12.06%
		अन्य इंजीनियरिंग संस्थान	1590	64.71%
	जीव विज्ञान 338	मेडिकल परीक्षायें	87	26.36%

गत वर्ष की उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं :

जे.ई.ई. / संयुक्त प्रवेश परीक्षा (आई.आई.टी., मर्चेन्ट नेवी, धनबाद खनन महाविद्यालय तथा सी.बी.एस.ई.)	12
यू.पी.टी.यू. / (क्षेत्रीय अभियांत्रिकी विद्यालय)	100
अन्य (ए.एस.ई.ई.टी.वाई., चैन्नई, एन.आई.एफ.टी.)	20
कुल (इंजीनियरिंग में) चयनित छात्र	132
सी.पी.एम.टी./संयुक्त चिकित्सा प्रवेश परीक्षा मेडिकल कालेजों हेतु चयनित)	07
अन्य	05

एन.डी.ए. और सी.डी.एस. के माध्यम से सेना में पहुँचे लगभग 36 सैन्य अधिकारी और संघ लोक सेवा आयोग से चयनित लगभग 22 प्रशासनिक अधिकारी विद्यालय से प्राप्त संस्कारों एवं जीवन के उदात्त आदर्शों का प्रकटीकरण करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। विशेष बात यह है कि इन सबके विद्यालय से सतत् जीवन्त सम्बन्ध बने हुए हैं।

शिक्षा विभाग द्वारा संचालित 'राष्ट्रीय प्रतिभा खोज' परीक्षाओं में भी हमारे छात्र कीर्तिमान स्थापित करते आ रहे हैं।

विद्या भारती द्वारा संचालित 'संस्कृति ज्ञान परीक्षा' में भी अपने छात्र प्रतिवर्ष शत प्रतिशत सफलता पाते हैं। श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा आयोजित मानस तथा गीता परीक्षाओं में अपने विद्यालय को सदैव महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है।

शासन द्वारा स्वीकृत छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले कुल 73 छात्र विद्यालय में अध्ययनरत हैं।

हमारे अनेक छात्र अन्य स्रोतों से भी छात्रवृत्ति पा रहे हैं। इन छात्रवृत्तियों के दाता महानुभावों तथा न्यासों/संस्थाओं के नाम निम्नांकित हैं। हम इनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

पं. दीनदयाल उपाध्याय स्मारक शिक्षा समिति

श्रीमती सरस्वती देवी एवं श्री हरि मोहन गर्ग छात्रवृत्ति

श्रीमती सावित्री अग्रवाल

श्री कन्हैयालाल गोपालदास अग्रवाल

श्री इन्द्रजीत जैन स्मारक छात्रवृत्ति

श्री प्रेम नारायण जी सोमानी

आई.जे.एस. ट्रस्ट कानपुर

श्रीमती प्रेमा गुप्ता छात्रवृत्ति

श्रीमती भाग्यवती त्रिपाठी द्वारा श्री रवीन्द्र नाथ त्रिपाठी, पाण्डुनगर कानपुर

श्रीमती संजना मित्तल

पूर्व छात्र चि. प्रवीण भागवत

पूर्व छात्र चि. संदीप मेहरोत्रा

पूर्व छात्र चि. हृदयेश गुप्त

पूर्व छात्र चि. अजय गुप्त

श्री डी.के. सोमानी 'मैनेजिंग ट्रस्टी' सोमानी फाउण्डेशन, नई दिल्ली

कुल मिलाकर 47 छात्र इन सभी न्यासों और संस्थाओं के द्वारा लाभान्वित हो रहे हैं।

विद्यालय के पूर्व छात्र स्व. गुरुवर शरण अवस्थी की स्मृति में उत्कृष्ट अभिनेता छात्र को पुरस्कार दिया जाता है। यह स्थायी पुरस्कार उनके पिता डॉ. सन्त शरण अवस्थी ने प्रारम्भ किया था।

पाठ्येत्तर गतिविधियाँ

खेल-कूद व शारीरिक शिक्षा

विद्यालय में शारीरिक शिक्षा की भी व्यवस्थित योजना है। सामूहिकता की भावना विकसित करने हेतु योगासन व समता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। अपने सीमित साधनों में यथासंभव खेलों में भी कौशल प्राप्त करने का हमारा प्रयास रहता है। विद्यालय में सैनिक शिक्षा को भी महत्व दिया जाता है। इस दृष्टि से राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी.) की वरिष्ठ तथा कनिष्ठ इकाइयाँ विद्यालय में सफलतापूर्वक चलायी जा रही हैं। इनके प्रभारी विद्यालय के ही आचार्य हैं।

घर के सुरक्षित व सुविधाभोगी वातावरण से निकलकर छात्र स्वावलम्बन एवं कठोर जीवनचर्या का अभ्यास करते हुए देश का प्रत्यक्ष अध्ययन करें, इस दृष्टि से विद्यालय के छात्र प्रायः प्रतिवर्ष ही देशदर्शन हेतु जाते रहते हैं। इस योजना के अन्तर्गत अपने छात्र देशदर्शन हेतु देश के लगभग सभी कोनों में जा चुके हैं।

नैतिक शिक्षा

हमारी समय-सारिणी में नित्य प्रायः मानस, गीता आदि ग्रंथों के शिक्षाप्रद अंशों से युक्त प्रार्थना के बाद सदाचार बेला का प्रावधान है, जिसमें पूर्व निर्धारित आचार्य कथा, जीवनी आदि के माध्यम से छात्रों को आदर्श जीवन का पाठ पढ़ाते हैं। छात्रों में सर्वगुण-सम्पन्न व्यक्तित्व की स्थापना के प्रोत्साहन हेतु नियत मापदण्डों पर खरा उतरने वाले सर्वश्रेष्ठ छात्र को विद्यालय-रत्न पुरस्कार दिये जाने की भी योजना है।

समग्र व्यक्तित्व विकास

निर्भीक-सुचारु अभिव्यक्ति, उत्तरदायित्व तथा नेतृत्व भावना छात्रों की मानसिकता का अनिवार्य अंग बने, इस दृष्टि से विद्यालय में तीन संस्थाएँ कार्य करती हैं -

अष्टम कक्षा तक बाल-भारती, नवम-दशम में किशोर-भारती और एकादश-द्वादश में तरुण-भारती जिनके अन्तर्गत छात्र विद्यालय के विविध सामूहिक कार्यक्रमों का संचालन करते हैं। छात्रावास में भी विभिन्न पदों पर नियुक्त निर्णय-प्रक्रिया तथा छात्रावास-संचालन में गंभीर भूमिका निभाते हैं।

विद्यालय के बाहर नगर, जनपद, स्तरों पर आयोजित वाद-विवाद, लेखन, ललित कला प्रतियोगिताओं में छात्र लगातार भाग लेकर प्रतिष्ठा पाते रहते हैं।

कम्प्यूटर शिक्षण

विद्यालय का कम्प्यूटर विभाग सुव्यवस्थित और आधुनिकतम सुविधाओं से सुसम्पन्न हैं। साफ्टवेयर के माध्यम से कम्प्यूटरों पर ही पूर्ण अध्यापन तथा स्वनिर्मित साफ्टवेयर द्वारा अपने विद्यालय में छात्रों की प्रवेश-प्रक्रिया को भी कम्प्यूटरीकृत कर दिया गया है। प्रवेश-परीक्षा का परिणाम भी विगत वर्षों से

इण्टरनेट पर जारी किया जाने लगा हैं।

छात्रों के तकनीकी विकास हेतु विद्यालय अवधि के पश्चात् इण्टरनेट की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। जिसके द्वारा छात्र अपने Subject, Career, Current Issue की जानकारी प्राप्त कर रहे हैं।

विद्यालय की गृह परीक्षाओं एवं Student Database को Computerized करने हेतु Software बनाने के लिए विभाग कार्यरत हैं जिसके द्वारा हम अपने विद्यालय की Attendance एवं Result को Computerized कर सकेंगे।

युग भारती

बाल, किशोर और तरुण-भारती की शृंखला में अगली कड़ी है युग-भारती अर्थात् विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था। जिस उदात्त लक्ष्य की प्राप्ति हेतु इस विद्यालय की स्थापना की गयी थी, उसकी पूर्ति हेतु यह अनिवार्य था कि दशम या द्वादश उत्तीर्ण करने को ही छात्र का विद्यालय के साथ सम्बन्धों की समाप्ति न माना जाये, इसीलिए बहुत पहले ही पूर्व छात्रों की संस्था के रूप में संविधान, कार्यकारिणी इत्यादि के साथ तरूण-भारती की स्थापना हो गयी थी, जो कि अब युग-भारती के नाम से पंजीकृत हो चुकी है। युग-भारती ने अपने शिविरों, ग्राम-सम्पर्क-योजनाओं संचार-साधनों के प्रसार आदि से समाज को अपनी लगन और निष्ठा का परिचय दिया गया है।

पूर्व छात्रों का विद्यालय से यह जुड़ाव विद्यालय की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है और समाज के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण भी।

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष दिनांक 27 सितम्बर (रविवार) को प्रातः 10.00 बजे से युग-भारती का वार्षिक अधिवेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न हो चुका है। यह वर्ष 1984 बैच के छात्रों का रजत जयन्ती वर्ष है, अतः इस बैच के अधिकाधिक विद्यार्थी अधिवेशन में विशेष रूप से उपस्थित रहे। उस समय के आचार्यजनों का सम्मान भी किया गया।

माँ सुशीला वात्सल्य मन्दिर

विद्यालय द्वारा प्रारम्भ हुआ यह एक पावन प्रकल्प है, जिसका उद्देश्य समाज के सुविधा-वंचित शिशुओं की जीवन की आवश्यक सुविधाओं के साथ पालन-पोषण तथा समुचित अध्ययन की व्यवस्था करना है।

इसके लिए विद्यालय के दाहिने पार्श्व में वी.एस.एस.डी. महाविद्यालय के अनुग्रह से प्राप्त भूमि पर एक भव्य भवन निर्मित हो चुका है। युग-भारती के ही एक सक्रिय सदस्य (पूर्व छात्र) के द्वारा इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए पूरा व्यय भार वहन करने का अनुकरणीय संकल्प लिया गया है। भविष्य में इस वात्सल्य मन्दिर के द्वारा पालित-पोषित एवं मार्गदर्शित छात्रों का यशस्वी जीवन समाज के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण बन सकेगा, इसी विश्वास के साथ विद्यालय का यह पावन प्रकल्प 23 सितम्बर 2004 से कार्यरत है। वर्तमान समय में 27 शिशु शिक्षा एवं संस्कार प्राप्त कर रहे हैं। इस सेवाभावी पावन प्रकल्प में आप सबके सक्रिय सहयोग की अपेक्षा है।

विगत सत्र से विद्यालय में प्रतिभा-प्रोत्साहन-प्रकल्प का भी शुभारम्भ हो चुका है, जिसमें सायं 4.30 बजे 6.30 बजे तक कक्षा प्रथम से पंचम तक के छात्र-छात्राओं को निःशुल्क शिक्षा देने की व्यवस्था की गयी है। वर्तमान में 95 छात्र-छात्राएँ अध्ययनरत हैं।

विगत सत्र 2007 से हमारे विद्यालय ने बी.एन.एस.डी. शिक्षा निकेतन के साथ संयुक्त रूप से आई.आई.टी. (जे.ई.ई.) की तैयारी हेतु अतिरिक्त कक्षाओं का संचालन प्रारम्भ किया है।

भारतीय चिन्तन में शिक्षा का उद्देश्य विषय का कक्षा-शिक्षण मात्र नहीं, अपितु व्यक्ति-निर्माण के माध्यम से समाज-जागरण माना गया है। समाज का प्रज्ञा-प्रवाह अवरुद्ध होना भी स्वाभाविक है, अतः आदर्श स्थिति यह होगी कि विद्यालय समाज को ऐसे सुयोग्य नागरिक प्रदान करें जो समस्त सामाजिक विकृतियों से अछूते रह कर अपनी तेजस्विता से निरन्तर नवजीवन का संचार करते हुए इस जीवन-प्रवाह की निरन्तरता बनाए रखें।

दुर्भाग्यवश आज अधिसंख्य शिक्षा संस्थान इस उद्देश्य को पूरा नहीं कर पा रहे हैं। ऐसे में युग-भारती के सहयोग से विद्यालय की प्रभावी भूमिका ही भारत के स्वर्णिम भविष्य की दिशा में एक आश्वस्ति है।

अंत में ईश्वर से प्रार्थना है कि छात्रों में राष्ट्र-निष्ठा से परिपूर्ण समाजोन्मुखी व्यक्तित्व के उत्कर्ष में आप सभी समाज बन्धुओं का सहयोग हमें निरन्तर मिलता रहे।

धन्यवाद !

बूझो तो जानें

-अमित कुमार
नवम 'ख'

1. इधर खूँटा - उधर खूँटा।
   गाय मरखनी दूध मीठा।।

2. पलकों का हूँ साथी,
   हरदम रहता साथ।
   गम के आते ही मैं,
   छोड़ा देता दोस्त का साथ।।

3. हरी - थी, मन भरी थी,
   नौ लाख मोती जड़ी थी।
   राजा जी के बाग में,
   दो शाला ओढ़े खड़ी थी।।

4. चाचा - चाचा कोयल देखी,
   कहो भतीजे कैसी देखी।
   बे पंख के उड़ते देखी,
   दस पाँवों से चलते देखी।।

उत्तर : 1. सिंघाड़ा, 2. आँसू, 3. भुट्टा, 4. रेलगाड़ी।

जीवन तथा समय का प्रबन्धन

-डॉ. ज्ञानचन्द्र अग्रवाल
अध्यक्ष : प्रबंध समिति, पं. दीनदयाल उपाध्याय
सनातन धर्म विद्यालय

टिप्पणी : डॉ. ज्ञानचन्द्र जी ने एक शोध-छात्र के तथ्यों के आधार पर समय-प्रबन्धन के महत्त्व को समझाया है। डॉक्टर साहब जो कि स्वयं ही विद्यालय की तथा अनेक संस्थाओं की योजनाओं का प्रबन्धन करते हैं उनके द्वारा प्रबन्धन की बात समझाना सुसंगत है। विद्यार्थी जीवन में समय प्रबन्धन का सर्वाधिक महत्त्व है, इसी से व्यवस्थित व सफल जीवन का निर्माण होता है। डॉ. अग्रवाल का यह लेख हम सभी के लिए विशेष महत्त्वपूर्ण है।

-सम्पादक

रामू और श्यामू दो जुड़वाँ भाई हैं। दोनों अपना अध्ययन कार्य पूर्ण कर ग्रहस्थ बन चुके हैं। इन दोनों में रामू बहुत ही सफल एवं सुखी जीवन बिता रहा है जब कि श्यामू बड़ा उदास, निराश व दुखी रहता है। उसकी ग्रहस्थी में भी क्लेश बना रहता है।

एक व्यवसाय प्रबन्धन के शोध छात्र ने अपने शोध के विषय में इन दोनों भाईयों से पूछताछ कर अपने लेख में निम्नलिखित तथ्य पाये -

रामू और श्यामू की मेधा, बुद्धिमत्ता तथा स्वस्थता समान रूप में पाई गई।

रामू विद्यार्थी जीवन से बड़ा व्यवस्थित रहा जब कि श्यामू बहुत ही अस्त-व्यस्त।

रामू ने प्रारम्भ से अपनी दिनचर्या बना कर कार्य किया जब कि श्यामू बिना विचार किये कार्य करता रहा।

रामू अपने दिनभर के कार्यों की सूची प्राथमिकता के आधार पर बना कर कार्य प्रारम्भ करता है और दिन के अन्त में पाता है कि सभी कार्य जो उसने सोचे थे निर्धारित समय में पूर्ण हो गये हैं जब कि श्यामू दिन के अन्त में रोता हुआ सा घबराया रहता है कि आज के दिन में तो कुछ नहीं हो सका, सभी काम अधूरे पड़े हैं।

विद्यार्थी जीवन में रामू प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होता रहा जब कि श्यामू तृतीय श्रेणी अथवा कृपांक (Grace Marks) के आधार पर।

ग्रहस्थ जीवन में रामू अपने दफ्तर में कभी विलम्ब से नहीं पहुँचता है जब कि रामू कोई ही दिन ऐसा रहता है जिसमें समय से पहुँचता है।

रामू को अपने कार्यालय में क्रम को पार कर (Out of Turn) तरक्की मिलती है जब कि श्यामू की तरक्की रोक दी गयी है।

रामू की ग्रहस्थी का बजट आय व व्यय के मदों के आधार पर प्रत्येक मास के प्रारम्भ में बन जाता है जिससे भोजन, वस्त्र, मकान किराया, बच्चों की पढ़ाई, चिकित्सा आदि पर व्यय को प्राथमिकता देकर अन्य व्यय अपनी आर्थिक स्थिति को देखते हुए किये जाते हैं। अतः कभी तनाव नहीं रहता। श्यामू कोई बजट नहीं बनाता, परिणामतः अनावश्यक अथवा कम महत्वपूर्ण मदों पर व्यय हो जाता है और आवश्यक कार्य धनाभाव के कारण छूट जाते हैं। बच्चों की फीस जमा न होने पर प्रायः स्कूल से नाम कट जाता है। भोजन, चिकित्सा आदि के लिए अपने मित्रों से ऋण लेना पड़ता है। मकान का किराया समय से नहीं दे पाता है। परिणामतः तनावग्रस्त रहता है और अभाव का रोना रोता रहता है।

इन सब के कारण श्यामू अस्वस्थ भी रहता है और स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया है, पारिवारिक जीवन में क्लेश बना रहता है वहीं रामू सदैव प्रसन्नचित्त, स्वस्थ और शान्त स्वभाव से रहता है। समाज में प्रतिष्ठा भी बढ़ गयी है।

शोध की दृष्टि से तो अनेक पहलुओं पर तथ्य एकत्रित किये गये हैं परन्तु जो कुछ ऊपर लिखे हैं, उनके आधार पर निष्कर्ष निकलता है कि -

समय प्रबन्धन जीवन में सुख, शान्ति व सफलता के लिए बहुत आवश्यक है। इससे तात्पर्य है कि समय के प्रति सजग, सतर्क व सावधान रह कर अपनी दिनचर्या बनाकर निर्धारित समय पर निर्धारित कार्य करना। प्राथमिकता के आधार पर अपने कार्यों की सूची बना कर उन्हें कार्यान्वयन करना, कुशलता पूर्वक कम समय में कार्य सम्पन्न करने का प्रयास करना, आलस्य व प्रमाद से ग्रसित न होकर पूरे मनोयोग से प्रत्येक कार्य करने का स्वभाव बना लेना। मिले हुए अवसर को हाथ से न निकलने देना। ठीक समय पर प्रहार करना, (Strike when the iron is hot) सदैव स्मरण रखना "समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता" (Time & Trade wait for none)। जो व्यक्ति प्रारम्भ से ही ऐसा अभ्यास कर लेता है वह ही रामू की भाँति केवल विद्यार्थी जीवन में ही नहीं अपितु ग्रहस्थ जीवन और आने वाले जीवन में भी सफलता प्राप्त करता है तथा सुख, शान्ति, प्रतिष्ठा, यश का स्वामी बन जाता है। जितने भी समाज में बड़े आदमी हुए हैं, मार्ग दर्शक व पथ प्रदर्शक हुए हैं उनके जीवन का भी कुशल प्रबन्धन सफलता का रहस्य रहा है। कहा भी जाता है सफलता व असफलता के बीच में बहुत ही पतली रेखा रहती है। प्रबन्धन ही उस रेखा का नाम है।

सफलता का रहस्य

सफलता के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ नहीं आवश्यक हैं अनुकूल मन, विचार, भाव, संकल्प और आशापूर्ण दृष्टिकोण। कोई भी व्यक्ति जो दुःख और कष्टों में है, आशावादी दृष्टिकोण से उन्हें परास्त करने का प्रयत्न करे तो आशातीत सफलता मिल सकती है, यह सुनिश्चित है।

- पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

श्री राम न चलें हनुमान के बिना

-श्री हरिकृष्ण सेठ
वरिष्ठ अधिवक्ता, समाज सेवी

टिप्पणी : श्री हरिकृष्ण जी के इस लेख को पढ़कर लगा कि 'तुलसी' साहित्य का उनका अध्ययन विस्तृत है, चिंतन उत्तुंग तथा भक्ति गहन है। भक्ति, प्रेम व करुणा का संश्लिष्ट अजस्र प्रवाह है। हनुमान जी महाराज से बड़ा रामभक्त कोई नहीं है। उनके चरित्र का चिन्तन, अध्ययन व मनन मन को पवित्र बुद्धि को प्रखर और कर्म को ऊर्जस्वित करता है। सेठ साहब के इस लेख को छापते हुए हमें बहुत अच्छा लग रहा है।

-सम्पादक

बिना हनुमान के श्री राम नहीं चल पाते हैं यह बात कुछ अटपटी सी लगती है, किन्तु यह सच है। आध्यात्मिक दृष्टि से रामावतार में भी श्री हनुमान का वही स्थान है जो ब्रह्माण्ड में विवेक के अधिष्ठाता शंकर व प्राण के अधिष्ठाता वायुदेव का है। हमारे ग्रंथों में इसीलिए श्री हनुमान को "शंकर सुवन" व "वायुपुत्र" कहा गया है।

श्री हनुमान अनेक दिव्य गुणों के समुच्चय थे। अखण्ड ब्रह्मचर्य, अतुल शौर्य, आत्मबल तथा अनुपम पाण्डित्य के धनी थे। सेवा और आत्म समर्पण की प्रतिमूर्ति थे। तन्त्र वाङ्मय में भी सिद्ध थे। सचिवोत्तम थे। श्री हनुमान में एक श्रेष्ठतम सचिव के समस्त गुण समाविष्ट थे। वानरराज सुग्रीव, विभीषण व श्री राम भी उनकी मंत्रणा का आदर करते थे और मानते थे। श्री हनुमान एक कुशल दूरदर्शी, नीतिज्ञ, मेधावी राजनीतिज्ञ व राजदूत भी थे।

भगवान श्री राम व लक्ष्मण जब माता सीता को वन वन खोजते थके हारे ऋष्यमूक पर्वत के निकट पहुँचते हैं तब सर्वप्रथम हनुमान जी विप्रवेश में उनसे मिलते हैं। श्री राम हनुमान जी के प्रथम मिलन पर ही उनके महान गुणों पर मुग्ध हो जाते हैं। थके और शोकाकुल दोनों भाइयों को अपनी पीठ पर चढ़ाकर सुग्रीव से मिलने ले जाते हैं।

श्री राम व वानरराज सुग्रीव की मैत्री स्थापना में श्री हनुमान की भूमिका एक सफल राजनीतिज्ञ के रूप में प्रकट होती है जिस मैत्री का बड़ा दूरगामी प्रभाव माता सीता जी की रावण के चंगुल से मुक्ति तक होता है। चंचल वानर स्वभाव के कारण मैत्री बीच में ही न टूट जाये अतः दूरदर्शिता से राम-सुग्रीव के मध्य अग्नि की साक्षी दिलाकर श्री हनुमान जी स्थायी मित्रता स्थापित कराते हैं।

'बालिवध के पश्चात् वानरराज सुग्रीव को किसकिन्धा राज्य, अपहृत पत्नी और राज्य वैभव प्राप्त होने पर वह रामकाज भूल गया था तब श्री हनुमान ने उसे कर्त्तव्य बोध कराया और उसकी तन्द्रा भंग कर उसे राम काज आगे बढ़ाने में लगाया। तब वानरराज सुग्रीव ने अपने प्रधान योद्धाओं - अंगद, नल, नील, जामवन्त, हनुमान आदि को माता सीता की खोज में दक्षिण दिशा की ओर भेजा। प्रस्थान के पूर्व

श्री राम ने वीर हनुमान को काम करने में समर्थ जानकर निशानी स्वरूप अपनी मुद्रिका उन्हें दी। श्री राम जान गये थे कि श्री हनुमान जी कार्य के साधक नहीं वरन् कार्य की सिद्धि थे।

अन्ततोगत्वा राम सेवकों की वह टोली विशाल समुद्र तट पर पहुँच गयी। सौ योजन चौड़े समुद्र को पार करना एक बड़ी चुनौती थी। सागर पार करने में बड़े बड़े बलशाली भी जब हिम्मत हार गये उस समय महावीर हनुमान शान्तभाव से एक तरफ बैठे थे तब वयोवृद्ध जामवन्त ने उन्हें बल बुद्धि विवेक की याद दिलायी। सन्त तुलसीदास जी ने हनुमान जी को "ज्ञानियों में अग्रगण्य" की उपाधि दी है। वीर हनुमान ने अपने कौशल से बहुत ही सहजतापूर्वक सागर पार कर रामकाज की धारा को प्रवाहित रखा।

सुन्दर काण्ड में तो शंकर सुवन श्री हनुमान जी का ही प्रमुखता से वर्णन है। बड़ी कठिन परिस्थितियों में वह ही ऐसे थे जो माता सीता की सुधि लाने में समर्थ हो सके। अकेले रावण की सोने की लंका जलाकर राख कर डाली और महाबली रावण के दम्भ को चूरचूर कर दिया। राम भक्त विभीषण से भी मैत्री का सूत्रपात अपनी चतुरता से कर दिया जो श्री राम के लिए लंका विजय और अजेय रावण के वध का कारण बना।

जब विभीषण शरणापन्न होकर श्री राम शिविर में प्रवेश पाना चाहते थे तब राम की परामर्श परिषद ने यह मन्त्रणा दी थी कि जो भाई का नहीं हो सकता वह हमारा कैसे होगा। लेकिन नीतिनिपुण एवं दूरदर्शी श्री हनुमान की मन्त्रणा पर ही विभीषण को श्री राम शिविर में प्रवेश मिला और मन्त्रणा का सूत्रपात हुआ।

मूर्छित लक्ष्मण के लिए दुर्लभ औषधि पहाड़ समेत लाकर उनकी प्राण रक्षा की और शोकाकुल श्री राम का दारुण दुःख निवारण किया।

श्री हनुमान समान रामभक्त, सेवक दूसरा नहीं हुआ। जो सच्ची सेवा हनुमान जी ने की उससे भगवान राम भी उनके हाथों बिक गये और उनके ऋणी हो गये। लेकिन हनुमान जी तो सेविकायी करने और सेवक बने रहने में ही आनन्दित होते रहे।

सन्त तुलसीदास कवितावली में कहते हैं -

"पाहि रघुराज पाहि कपिराज रामदूत
रामहूँ की बिगरी तुम्हीं सुधारि लई है"

हृदय घाउ मेरे, पीर रघुबीरै।
पाइ सँजीवनि जागि कहत यों, प्रेम पुलकि बिसराय सरीरै।।
मोहि कहा बूझत पुनि-पुनि जैसे पाठ अरथ चरचा कीरै।
सोभा सुख छति लाहु भूप कँह, केवल कांति मोल हीरै।।
तुलसी सुनि सौमित्र-बचन सब धरि न सकत धीरौ धीरै।
उपमा राम-लखन की प्रीति की क्यों दीजै खीरै-नीरै।।

-तुलसीदास

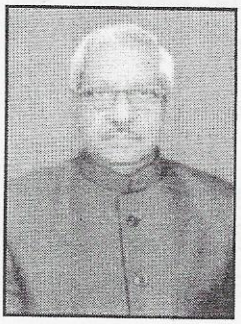

दो नौ ग्यारह

-डॉ. कमल किशोर गुप्त
रीडर, रसायन विभाग
विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म कालेज, कानपुर।

"नौ दो ग्यारह होना" एक अत्यन्त प्रचलित कहावत है। इसका अर्थ हम सब जानते हैं; बताने की आवश्यकता नहीं है। यहाँ मैंने इस कहावत - "नौ दो ग्यारह" को "दो नौ ग्यारह" लिखा है। अंकगणित की दृष्टि से देखें तो 9+2 = 11 होता है और 2+9 भी 11 होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि दोनों का योग एक ही है। यानी दो भिन्न-भिन्न रास्तों से एक ही परिणाम को प्राप्त किया जा सकता है। अंकगणित से इतर दृष्टि से भी देखें तो यह कहा जा सकता है कि एक से अधिक रास्तों पर से भी एक परिणाम गन्तव्य, ठिकाना - (Destiny) पर पहुँचा जा सकता है। रास्ते का अपना महत्व होता है पर उससे कहीं अधिक उस चुने हुए रास्ते (रास्ता विशेष) पर चलने के तरीके का भी महत्व होता है। जैसे कोई व्यक्ति सड़क पर अगल-बगल देखते हुए, सड़क के गड्ढों आदि का ध्यान रखते हुए नियमानुसार अपने बायीं ओर चलता है तो वह बिना किसी को क्षति-पीड़ा पहुँचाये और अपने को सुरक्षित रखते हुए शान्त व स्थिर मन से सकुशल अपने गन्तव्य तक सरलता से, सहजता के साथ समय से पहुँचता है। परन्तु यदि कोई व्यक्ति उसी रास्ते पर उपरोक्त सावधानियों की ओर ध्यान न देते हुए बायें किसी भी तरह सड़क पर चलता है तो वह खुद चुटहिल होता है और दूसरों को भी चोट पहुँचाता है। वहाँ शान्ति, सरलता, सहजता के साथ समय से पहुँचने की बात सोचना ही बेमानी हो जाता है। ठीक इसी प्रकार जब कोई ईश्वर को प्राप्त करने के लिए अपने पापों से मुक्ति के लिए, आत्म-साक्षात्कार के लिए, आत्मा को परमात्मा में विलीन करने के लिए, स्वर्गस्थ पिता से मिलने के लिए, स्वर्ग में स्थान पाने के लिए, बैकुण्ठ धाम में चिर निवास के लिए, जन्नत पाने के लिए, कयामत के दिन अल्लाह के सिंहासन के सर्वाधिक निकट रहने के लिए या मानव का परम लक्ष्य ठिकाना (Destiny) पाने के लिए वह कोई न कोई रास्ता चुनता है, तब आवश्यक हो जाता है कि वह उस रास्ते पर चलने के लिए महापुरुषों, पैगम्बरों, धर्मग्रन्थों, ऋषियों, मुनियों द्वारा बताये तरीके को अपनायें। इस तरह वह वहाँ तक बिना हानि उठाये एवं किसी को बिना हानि पहुँचाये पहुँच सकता है जहाँ उसे पहुँचना है।

इसी बात को कहने के लिए लेखक ने 9 और 11 इन दो अंकों का सहारा लिया है। 9/11 कहते या पढ़ते ही अमेरिका में घटित उस दर्दनाक घटना की तिथि 11 सितम्बर सन् 2001 तुरन्त ध्यान में आती है, और तन, मन सब एकदम सिहर सा जाता है, दिल दहल जाता है, मन में दहशत भर जाती है। 9/11 की दूसरी तिथि भी है। वह है 11 सितम्बर 1893 जब अमेरिका के ही अन्दर (शिकागो में) मानव के परम लक्ष्य (Destiny) प्राप्ति हेतु दुनिया भर के ऋषि-मुनि विचारक व धार्मिक विभूतियाँ विचार-विमर्श के लिए एकत्र बैठी थीं। उसी सम्मेलन में धर्मों की माता के प्रतिनिधि के रूप में स्वामी विवेकानन्द जी ने "अमेरिकावासी बहनों तथा भाइयों" से सम्बोधित कर भ्रातृत्व एवं शान्ति का सन्देश दिया था। यही वे दो भिन्न तरीके हैं जो एक ही तिथि 9/11 (अर्थात् 11 सितम्बर) को घटित हुए। मानव के उसी उदात्त परम लक्ष्य (Destiny) को प्राप्त करने के लिए इन दोनों 9/11 पर संक्षिप्त चर्चा करना उपयुक्त प्रतीत होता है।

प्रथम 9/11 : यह सन् 1893 के सितम्बर मास की 11 तारीख है। दुनिया भर से पधारे धार्मिक प्रतिनिधियों से सभाकक्ष खचाखच भरा था। तभी संचालक महोदय ने स्वामी विवेकानन्द जी को आमन्त्रित किया। साधनहीन किन्तु साधनारत स्वामी विवेकानन्द जी को जैसे परमपिता परमेश्वर ने ही वहाँ भेजा हो। मंच पर पहुँचते ही स्वामी जी ने कहा - "अमेरिकावासी बहनों तथा भाइयों।" यह सुनते ही सभाकक्ष तालियों की गड़गड़ाहट से भर गया। लगभग पाँच मिनट तक लगातार करतल ध्वनि सम्भवतः स्वाभाविक एवं नैसर्गिक स्वीकृति थी उस सम्बोधन की और आत्मिक सर्वग्राह्यता भी। स्वामी विवेकानन्द जी ने अपने स्वागत भाषण के लिए आभार प्रकट करते हुए कहा, "संसार के संन्यासियों की सबसे प्राचीन परम्परा की ओर धन्यवाद देता हूँ, धर्मों की माता की ओर से धन्यवाद देता हूँ। मैं एक ऐसे धर्म का अनुयायी होने में गर्व का अनुभव करता हूँ जिसने संसार को सहिष्णुता तथा सार्वभौम स्वीकृति दोनों की ही शिक्षा दी है। "शायद इसी सार्वभौम स्वीकृति का संकेत थी सभाकक्ष में वह करलध्वनि। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में कहा-" जैसे विभिन्न नदियाँ भिन्न-भिन्न स्रोतों से निकलकर समुद्र में मिल जाती है, उसी प्रकार हे प्रभो! भिन्न-भिन्न रुचि के अनुसार विभिन्न टेढ़े-मेढ़े अथवा सीधे रास्ते से जाने वाले लोग अन्त में तुझमें ही आकर मिल जाते हैं।"

स्वामी विवेकानन्द जी का उद्‌बोधन 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' 'सर्वेभवन्तु सुखिनः' 'जियो और जीने दो' जैसे सुभाषितों से ओत-प्रोत था। स्वामी जी के सम्मुख उपस्थित विशाल स्रोता समूह विचारधारा का होते हुए भी उनके सम्बोधन से आप्लावित था। मानव जीवन के उस परम लक्ष्य (Destiny) की खोज के लिए बैठे विचारकों, साधकों को शायद एक सीधा सरल रास्ता दिख गया।

द्वितीय 9/11 : यह सन् 2001 के सितम्बर मास 11 की तारीख है। ठीक 108 वर्ष बाद यह घटना घटित हुई। 108 का अपना महत्त्व है पर यहाँ स्थानाभाव के कारण इसे यहीं छोड़ देना ही उपयुक्त है। यह वह तारीख है जब अमेरिका (न्यूयार्क व वाशिंगटन) में ही इस्लाम के कुछ युवा अनुयायियों, जो अत्यन्त पढ़े-लिखे साधन सम्पन्न और आधुनिक थे, ने ट्विन टावर्स और पेन्टागन जैसे अभेद्य भवनों को ही लक्ष्य बनाकर उनमें हवाई जहाज घुसाकर भीषण विध्वंस किया, हजारों निरपराध भाइयों बहनों की वीभत्स हत्या, हजारों परिवार तबाह किये, तथा अरबों डालर खाक करने का एक क्रूरतम कुकृत्य की कायरतापूर्ण कहानी लिख डाली। दुनिया स्तब्ध थी। क्या हुआ? सभी अवाक् थे। हर एक के चेहरे पर एक बड़ा भारी प्रश्न चिह्न था- ये क्या? जेहाद के जरिए जन्नत जाने की जरूरत, जुगाड़, जल्दी, जुर्रत। वे शायद यह भूल गये कि उन्हीं के पैगम्बर मोहम्मद साहब ने साफ कहा है कि सताने वाला जन्नत में नहीं घुस सकता, यह कि दुराचारी, अन्यायी, सूद लेने व देने वाले पापी लोगों को पाप करने से न रोकने वाले की भी अल्लाह खबर लेते हैं। पैगम्बर साहब यह भी कहते हैं कि वस्तुतः अल्लाह विनम्र है और विनम्रता को चाहता है, और वह विनम्र को वह सब देता है जो कठोर को नहीं देता। अल्लाह पाक पवित्र है और पाक से प्रेम करता है वह साफ है साफ से प्रेम करता है, वह दयालु है और दयालु से प्रेम करता है, वह कृपाशील है कृपाशील से प्रेम करता है। फिर परम कृपालु अल्लाह की यह कैसी इबादत? हर ध र्म सम्प्रदाय का अपना वैशिष्ट्य होता है; इस्लाम का वैशिष्ट्य है -Equity and human love (समानता व मानवता)। फिर 9/11, 2001 ?

1 जनवरी 2001 को भोर होते ही एक नवजात शिशु ने धरती पर अपनी आँखें खोलीं और कहा?

कहाँ? कर रोने लगा। हर्षित भी माँ ने अपने अंक में समेटते हुए उसे बड़े प्यार से दुलराया। वह शिशु शान्त, सुरक्षित माँ की गोद में सो गया। उसके निर्मल मन मस्तिष्क ने माँ को धन्यवाद दिया और सोचने लगा कि यह दुनिया कितनी अच्छी है। यहाँ शान्ति, सुरक्षा, सद्भाव सभी कुछ तो है। पर यह क्या? उस शिशु ने अभी घुटने के बल चलना प्रारम्भ ही किया था कि इसी वर्ष के नवें महीने की 11 तारीख को विध्वंस का एक क्रूर खेल खेला गया। वह शिशु मन में सोच ही रहा था कि अत्याचारों, अनाचारों, अन्याय, संघर्षों, जबरन लूट-खसोट, बलात् धर्म-परिवर्तन, निरपराध व अबोध नर-नारियों की हत्यायें, विज्ञान के विकास के बजाय विनाश हेतु आधुनिक हथियारों, रासायनिक तथा परमाणुविक हथियारों द्वारा अनावश्यक आक्रमण जैसे असंख्य तूफानों झंझावातों को समेटे विगत दोनों सहस्राब्दियों से विलग यह तीसरी सहस्राब्दी होगी। जिसमें उस जैसे असंख्य शिशुओं को आने का संयोग व सौभाग्य मिला है। यह तीसरी सहस्राब्दी हमें अन्याय से न्याय, अंधकार से प्रकाश, अज्ञान से ज्ञान व विज्ञान, अशिक्षा से शिक्षा असत्य से सत्य अहंकार से कृपा व क्षमा, आधे-अधूरे भोजन से भरपेट भोजन, अस्वस्थ से स्वस्थ, अधीरता से धीरता, असहिष्णुता से सहिष्णुता, अपरिपक्वता से परिपक्वता और अधर्म से ध र्म की ओर ले जायेगी। हम सब सद्भाव, सौहार्द्र के साथ एक दूसरे के सहयोगी, सम्पूरक होकर विज्ञान व विकास रूपी दो पहियों वाले सामूहिक उन्नति के रथ पर सवार होकर अपने लक्ष्य, गन्तव्य (Destiny) को प्राप्त करेंगे। पर हे माँ! यह क्या हुआ?

माँ तो ममता, वात्सल्य का सागर होती है फिर हे माँ! तूने ऐसे बच्चों को क्यों जना? तू ही तो बच्चों की पहली गुरू है फिर यह कैसा गुरू मन्त्र? कैसी सीख? माँ! बताओ न?

सत्य सनातन धर्म, ऋषियों-मुनियों, विभिन्न मत, पंथ के प्रवर्तकों, पैगम्बरों ने जितने रास्ते बताये हैं वे सब भिन्न-भिन्न होते हुए भी एक ही जगह पहुँचते हैं। जैसे विभिन्न नदियाँ समुद्र में मिलती हैं या एक वृत्त की विभिन्न त्रिज्यायें एक ही बिन्दु अर्थात् वृत्त के केन्द्र पर मिलती हैं। तब फिर इन त्रिज्यायों का एक दूसरे से टकराना, एक दूसरे को काटना बाँटना इधर-उधर भटका देगा और केन्द्र अर्थात् गन्तव्य तक पहुँचने ही नहीं देगा। अर्थात् हम अपनी Destiny तक पहुँच ही न सकेंगे। अतः सोचो, समाज के विचारकों, धर्मगुरूओं, महापुरुषों! न कि उस शिशु को इससे कैसे निजात मिले। आज आने वाली पीढ़ी वर्तमान पीढ़ी से यही पूछती है- आप हमें कौन सा रास्ता दिखाना चाहते हैं? "9/11, 1893 वाला या 9/11, 2001 वाला?"

अडिग विश्वास को भय से डिगाया नहीं जा सकता।
निपट अनुरक्त को योगी बनाया जा नहीं सकता।।
खिलेगा तो महक देगा खिले चाहे जहाँ बेला।
किसी के जातिगत गुण को मिटाया जा नहीं सकता।।
हृदय वाणी तथा व्यवहार में अन्तर जहाँ रहता।
वहाँ सद्भाव में स्थायित्व लाया जा नहीं सकता।।

रा. स्व. संघ के सरसंघचालक
श्री मोहनराव भागवत
का भावभीना शोक संदेश

उनका जीवन सतत् प्रेरणा देगा

नानाजी देशमुख के जाने से भारत के सार्वजनिक जीवन के तपस्वी कर्मयोगी, राजनीति में रहकर भी जल में कमलपत्रवत् पवित्र रहने वाले एक निष्ठावान स्वयंसेवक के प्रेरणादायी जीवन का अंत हुआ है। परन्तु यह जीवन समूचे देश की नयी पीढ़ी को सतत् देशभक्ति, समर्पण व सेवा की प्रेरणा देता रहेगा।

उनका जीवन कृतार्थ जीवन था इसलिए उनकी पार्थिव देह का दृष्टि से ओझल होना मात्र शोक की बात नहीं है, बल्कि हम सभी के लिए स्वयं कृतसंकल्पित होने की बात है। उनके जीवन का अनुकरण अपने जीवन में करना, यही उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी। मैं उनकी स्मृति में अपनी व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

धर्म के द्वारा धारण की गई इस मातृभूमि की सेवा हम सदैव करते रहें। **-अथर्ववेद (12/1/17)**

नवदधीचि नानाजी

नानाजी नहीं रहे, यह विचार मन में आते ही मन विद्रोह कर उठता है, क्योंकि भले ही वह संदेश आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन नानाजी की जिजीविषा, उनकी दृढ़ संकल्प-शक्ति और सेवा-साधना का मूर्तरूप उन्हें कभी हमारी स्मृतियों से ओझल नहीं होने देगा। एक साधारण से बालक चण्डिकादास की लोक-विभूषित नाना देशमुख बनने तक की जीवन यात्रा इतनी प्रेरणास्पद है कि उसके संस्पर्श से असंख्य मन आह्लादित हो उस पथ के अनुगामी बने। गोंडा का जयप्रभा ग्राम, चित्रकूट का ग्राम विकास प्रकल्प व ग्रामोदय विश्वविद्यालय तथा दिल्ली का दीनदयाल शोध संस्थान नानाजी की कल्पनाशीलता, योजकता और संगठन-शक्ति का जीवंत रूप हैं। डॉ. हेडगेवार के सान्निध्य में परिपुष्ट हुआ स्वयंसेवकसंघ राष्ट्र व समाज सेवा के व्रत के रूप में अंतिम श्वास तक उनके जीवन की तपश्चर्या बनकर प्रस्फुटित होता रहा। यह प्रस्फुटन उनकी इतनी दीर्घायु होने पर भी उन्हें पूरी तरह चैतन्य व जीवित बनाए हुए था। नानाजी एक कर्मयोगी थे, समाज और राष्ट्र जीवन के लिए जिस क्षेत्र में भी वे दायित्व लेकर गए, प्राणपण से न केवल उसे पूर्ण किया बल्कि ऐसे प्रतिमान गढ़ दिए कि मानों एक नया प्रेरणा पुंज खड़ा हो गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में एक निस्पृह निस्वार्थ, त्यागपूर्ण, बंधुत्वभाव से ओत-प्रोत, सेवाभावी जीवन जीने का जो संकल्प उनके जीवन में जागृत हुआ, उसे पूरी दृढ़ता से उन्होंने जीवन पर्यन्त निभाया। कोई भी प्रलोभन उन्हें डिगा न सका, यहाँ तक कि सत्ता के मोहक आमंत्रण को भी उन्होंने

ठुकरा दिया। लोकप्रियता के शिखर पर होते हुए भी न केवल उन्होंने मंत्रिपद को अस्वीकार किया, बल्कि राजनीति की मर्यादा बाँधते हुए उन्होंने ६० वर्ष की आयु हो जाने के बाद स्वयं को राजनीति से मुक्त कर वंचितों, अभावग्रस्त ग्रामीणों की अहर्निश सेवा में समर्पित कर दिया।

आज जब जीवन की अंतिम साँस तक राजनेताओं में पदलिप्सा हिलोरें मारती रहती हैं और वे देशसेवा के नाम पर स्वार्थों की राजनीति में आकंठ डूबे रहते हैं, तब नानाजी के जीवन का यह घटनाक्रम निश्चय ही प्रेरणा का स्रोत है। इस सेवा साधना में रत नानाजी ऋषितुल्य हो गए, दरिद्र नारायण की सेवा उनके जीवन का मूलमंत्र बन गई। गैर राजनीतिक आधार पर उन्होंने जन सहयोग से कृषि, ग्राम विकास व शिक्षा के क्षेत्र में ऐसे अनूठे प्रयोग सार्थक कर दिखाए कि उनके माध्यम से आज सैकड़ों गाँवों का जीवन स्वावलम्बन व आर्थिक उन्नयन का स्वाद चखकर भाव विभोर है। गरीबों और संकटग्रस्त लोगों की करुण पुकार पर वे दौड़े चले जाते थे, ऐसे अनेक अंचलों में उन्होंने सेवा और विकास के जो स्वावलम्बी कार्य खड़े किए, वे आधुनिक विकास की बेतहाशा दौड़, जो अनेक प्रकार के विनाश को भी आमंत्रित कर रही है, के लिए एक मानक बन सकते हैं। वे स्पष्टतः यह मानते थे कि ग्रामीण आत्मनिर्भरता के बिना कोई विकास सार्थक नहीं हो सकता। आज विकास के नाम पर औद्योगीकरण व शहरीकरण का जो दंश हमारा समाज झेल रहा है, नानाजी ने उससे मुक्त विकास की अपनी सांस्कृतिक परम्परा के अनुरूप जैविक कृषि व स्वावलम्बी गाँव का मंत्र देकर नई दिशा प्रदान की।

नानाजी स्वयंसेवक जीवन का आदर्श रूप थे। देश और समाज के उत्कर्ष के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने का व्रत उन्होंने अपने प्रत्यक्ष आचरण से पूर्ण कर दिखाया। इसी का परिणाम था कि नानाजी संघ विचार के कटु आलोचकों के भी प्रिय थे। उन्होंने अपने जीवन से यह सिद्ध कर दिखाया कि जिस संघ पद्धति से निर्मित व्यक्तित्व यानी नानाजी जब उन्हें प्रिय हैं तो उन्हें गढ़ने वाली संघ पद्धति यानी संघ विचार कैसे त्याज्य हो सकता है। इसी का परिणाम था कि नानाजी से जुड़े अनेक लोग अपने दुराग्रहों को त्यागकर संघ विचार के निकट आए। राजनीति में पं. दीनदयाल उपाध्याय के संस्कार को लेकर उन्होंने जो कदम बढ़ाया, उसके बाद निरंतर आगे बढ़ते हुए वे न केवल सब प्रकार के राजनीतिक कलुष से अपने को बचाए रहे, बल्कि सबके समक्ष राजनीतिक शुचिता का आदर्श प्रस्तुत किया। वे १९७५ में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा लोकतंत्र की हत्या करते हुए आपातकाल के रूप में देश पर तानाशाही थोपने का अपने-अपने तरीके से विरोध कर रहे विभिन्न राजनीतिक दलों के बीच कड़ी बन गए और लोकसंघर्ष का नायकत्व उन्हें मिला। जयप्रकाश नारायण की समग्र क्रांति के तो वे मुख्य रणनीतिकार थे। इसी में से देश में दूसरी आजादी के नाम से विख्यात लोकतंत्र की पुनःस्थापना हो सकी। समाज के प्रति नानाजी की चिंता इतनी गहन थी कि वे अपने जीवन का क्षण-क्षण तो उसकी सेवा में अर्पित करते ही रहे, मृत्योपरांत उनकी पार्थिव देह भी समाज के स्वास्थ्य संवर्धन में सहायक हों, इसके लिए वे चिकित्सा शोध कार्य के हेतु अपनी देह दान करने का संकल्प भी कर गए। ऐसे नवदधीचि नानाजी को शत्-शत् नमन।

-पांचजन्य से साभार

राष्ट्रनौका की वही पतवार बनना है हमें तो।।

-कुप्. सी. सुदर्शन, निवर्तमान सरसंघचालक, रा. स्व. संघ

चंडिकादास-अमृतराव देशमुख यानी अपने नानाजी देशमुख के देहावसान का समाचार सुनकर उन समस्त लोगों का शोक संतप्त होना स्वाभाविक है जिन्होंने उनके व्यक्तित्व के आकर्षण का अनुभव किया। माता-पिता दोनों का साया उनके पैदा होने के कुछ दिनों बाद ही हट गया था। अत्यंत दारिद्रय में जीवनयापन कर रहे उनके मामा-मामी ने किसी प्रकार प्राथमिक विद्यालय की शिक्षा दिलाई। उनकी पढ़ने की ललक ने उन्हें भाजीपाला बेचने जैसे छोटे-मोटे काम करते हुए भी मैट्रिक तक की शिक्षा प्राप्त करने की प्रेरणा दी। किन्तु इस प्रक्रिया में उन्होंने जाना कि भूख की ज्वाला क्या होती है और इस अनुभव ने उन्हें परदुःखकातर बना दिया, जो उनके स्वभाव का अनिवार्य अंग बन गया। जब वे संघ-संस्थापक डाक्टर हेडगेवार के संपर्क में आए तो न केवल संघ के स्वयंसेवक बन गए अपितु डाक्टर जी के निधन पर अपना समग्र जीवन समाज और राष्ट्र की सेवा में लगाने का संकल्प ले लिया। प्रचारक बनकर अपने संगठन-कौशल से न केवल सहस्रावधि युवकों को स्वयंसेवक बनने के लिए प्रेरित किया तथा उस जिले में संघ शाखाओं का जाल बिछाया अपितु उनमें से कुछ को प्रचारक बनने के लिए प्रेरित किया।

सन् १९४७ में मासिक राष्ट्रधर्म, साप्ताहिक पांचजन्य और दैनिक स्वदेश प्रारंभ होने पर पं. दीनदयाल उपाध्याय, नानाजी देशमुख तथा अटल बिहारी वाजपेयी का त्रिवेणी संगम हुआ तो राष्ट्रजीवन को पावन करने हेतु एक वैचारिक धारा बही, जो आज भी राष्ट्र के राजनीतिक जीवन में शुचिता, पारदर्शिता तथा जन-समस्याओं के प्रति जागरूकता लाने हेतु बद्धपरिकर है। पाश्चात्य राजनीतिक प्रणाली को अनुपयुक्तता और अपरिणामकारकता को एक बार उन्होंने लोकसभा के सदस्य तथा एक बार राज्यसभा के सदस्य रहकर भलीभांति जान लिया था और इसलिए दलगत राजनीति से संन्यास लेकर समग्र ग्राम विकास के कार्य में अपने आपको झोंक दिया। अनेक जिलों में कार्य करते हुए अन्त में चित्रकूट में एक सर्वांगपरिपूर्ण, समृद्ध, आत्मनिर्भर तथा देश की सांस्कृतिक परम्परा के अनुरूप विकास का नमूना खड़ा कर दिखाया और वहीं पर उन्होंने सुखपूर्वक अंतिम साँस ली। यही नहीं, इस नवदधीचि ने अपनी काया का भी समर्पण कर हमें यही संदेश दिया -

किन्तु अपनी देह को भी, देह अपनी कह न पाई।
राष्ट्रनौका की वही, पतवार बनना है हमें तो।।

भारत के शिखर पुरुष

-डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, पूर्व राष्ट्रपति

नानाजी देशमुख भारत के शिखर पुरुष थे। वे भारत में ग्रामीण विकास के पथप्रदर्शक थे। उन्होंने ८० गाँवों का सम्पूर्ण विकास कर देश के समक्ष एक आदर्श गाँव का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया। ऐसे ग्रामीण विकास के पथप्रदर्शक को मैं विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

समर्पित समाजसेवी

-अटल बिहारी वाजपेयी, पूर्व प्रधानमंत्री

नानाजी देशमुख के निधन से एक समर्पित समाजसेवी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का जीवनव्रती प्रचारक, वरिष्ठ राजनेता और एक कर्मयोगी द्रष्टा हमारे बीच से चला गया।

नानाजी देशमुख के साथ मुझे भी काम करने का सौभाग्य मिला। भारतीय जनसंघ में हमने साथ-साथ काम किया। आभावों और विरोधों के बीच अनुकूलता निर्माण करना उनका सहज गुण था। चुनौतियों से दो-दो हाथ करने में वे दक्ष थे। उनके व्यक्तित्व में चुम्बकीय आकर्षण था, जो भी उनके सम्पर्क में आया, वह उनका होकर रह गया।

वे एक योद्धा थे। लोकनायक जयप्रकाश नारायण के साथ आंदोलन में जुटे। आपातकाल में लोकतंत्र के लिए भूमिगत संघर्ष में सक्रिय रहे और बाद में सामाजिक विषमताओं से लड़ना जारी रखा और अंतिम साँस तक सक्रिय रहे। वे मूलतः रचनाधर्मी सामाजिक कार्यकर्ता थे। उनके निधन से समाज और विशेष रूप से मेरी निजी क्षति हुई है। मैं उनके प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ तथा परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे।

बहुआयामी व्यक्तित्व

-अशोक सिंहल,
अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद्

नानाजी का व्यक्तित्व बहु आयामी था। वे आधुनिक युग के ऋषि थे। उत्तर प्रदेश में संघ कार्य के विस्तार में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। गोरखपुर में प्रथम शिशु मंदिर की स्थापना कर उन्होंने देश की शिक्षा व्यवस्था को एक नई दिशा दी। जब मोरार जी देसाई ने उन्हें सरकार में मंत्री पद देने की बात कही तो उन्होंने कहा कि वे मंत्री बनने के लिए नहीं बल्कि समाजसेवा के लिए संघ के प्रचारक बने हैं।

ऋषितुल्य प्रचारक

-मदनदास,
अखिल भारतीय प्रचारक प्रमुख, रा.स्व.संघ

नानाजी ने चित्रकूट, गोंडा और बीड में ग्राम विकास का जो कार्य किया, वह अतुलनीय है। उन्होंने कृषि, उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ, महिला, सशक्तिकरण, सामाजिक समरसता के क्षेत्र में ही अनुपम उदाहरण प्रस्तुत नहीं किए बल्कि गांवों के झगड़ों को गाँव में ही निबटाने का एक अद्‌भुत प्रयोग किया, जो पूरी तरह सफल रहा। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन एक ऋषितुल्य प्रचारक के रूप में जिया।

परिपूर्ण मानव जैसा जीवन जिया

-मधुभाई कुलकर्णी,
सदस्य, अ.भा.क्रा.मं., रा.स्व.संघ

श्री गुरू जी ने अपने एक उद्‌बोधन में परिपूर्ण मानव कैसा होना चाहिए, उसका जो विवेचन किया, नानाजी देशमुख ने वैसा जीवन जिया। उनका पूरा जीवन समाजसेवा के लिए समर्पित रहा।

सच्चे कर्मयोगी

-दिनेश चंद्र,
अंतर्राष्ट्रीय संगठन महामंत्री, विहिप

नानाजी एक सच्चे कर्मयोगी थे। चित्रकूट के सेवा प्रकल्प को मूर्त रूप देने में इतने वर्षों तक उन्होंने एक कर्मयोगी की तरह जीवन जिया। नानाजी के जीवन की विशेषता थी कि समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने वाले शिखर पुरुषों को वे राष्ट्रकार्य के प्रवाह से जोड़ देते थे। संगठन ने जहाँ जो भी दायित्व दिया उसे उन्होंने प्राणपण से निभाया। इतना ही नहीं वहाँ की सफलता भी प्राप्त की, नई दिशा दी और उसमें चार चाँद लगा दिए। उन्होंने चित्रकूट को तो एक नई पहचान ही दे दी।

अनुकरणीय कार्य

-सुब्रह्मण्यम स्वामी,
अध्यक्ष, जनता पार्टी

1970 में जनसंघ में जब मेरा प्रवेश हुआ, तब से लगातार नानाजी के साथ मेरा गहरा आत्मीय संबंध रहा। मैंने उनके जीवन से बहुत कुछ सीखा है। आपातकाल के दौरान नानाजी ने संगठन बनाने का जो काम किया, जयप्रकाश नारायण, मोरारजी देसाई जैसे लोगों को साथ लेकर जनता पार्टी बनाने की जो संभावना बनाई, वह अनुकरणीय है।

स्वाभिमानयुक्त अहंकारशून्य सबके नाना

-राजनाथ सिंह 'सूर्य'

नानाजी देशमुख के निधन से सार्वजनिक क्षेत्र से एक ऐसे व्यक्तित्व और परम्परा का अवसान हुआ है जो समरसता की राजनीति और सहज सामाजिक सौहार्द्र के लिए समर्पित होकर स्वावलंबनयुक्त ग्रामीण परिवेश को परिपुष्ट करने के प्रति समर्पित रहा। चाहे वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक रहे हों, जनसंघ के संगठन मंत्री अथवा जनता पार्टी के महामंत्री, उनका चित्त हमेशा ग्रामोत्थान की प्राथमिकता से आच्छादित रहता था। इसलिए जब 1977 में वे बलरामपुर से लोकसभा का चुनाव जीतकर सांसद

बने तो गाँवों को स्वावलम्बी बनाने के लिए जयप्रभा प्रकल्प को मूर्तरूप दिया, जिसकी शुरूआत उन्होंने अपने प्रारम्भिक प्रचारक जीवन में गोरखपुर के बाँसगाँव क्षेत्र में की थी। मैंने सर्वप्रथम उनका दर्शन 1950 में प्रयाग में आयोजित प्राथमिक संघ शिक्षा वर्ग में एक शिक्षार्थी के रूप में तब किया था जब लू लग जाने के कारण मैं लगभग अचेत-सा हो गया था और उन्होंने स्वयं मेरा उपचार किया था। वे नाम के ही नाना नहीं थे, मेरे जैसे सैकड़ों ऐसे कार्यकर्ता होंगे जिन्हें उनका नाना जैसा प्यार मिला था।

आद्य सरसंघचालक डाक्टर हेडगेवार से प्रेरित होकर आजीवन प्रचारक रहकर कार्य करने वालों के प्रकाशपुंज नानाजी देशमुख थे। बहुत कम लोगों में रचनात्मक सृजन की ऐसी भूख देखने को मिलेगी जैसी नानाजी में थी। कृषि उनकी प्राथमिकता थी, ग्रामीण उद्योग उनके ग्रामीण स्वावलम्बन का माध्यम था। शायद यही कारण था कि जनसंघ के 1967 के घोषणापत्र में उन्होंने ही 'हर हाथ को काम और हर खेत को पानी' का नारा दिया था। कृषि के बाद शिक्षा उनकी दूसरी प्राथमिकता थी। गोरखपुर में प्रचारक के रूप में वे जहाँ कृषि कार्य करने वाले स्वयंसेवकों को स्वदेशी साधनों से उत्तम खेती के लिए प्रेरित करते रहे वहीं संस्कारक्षम शिक्षा के लिए पक्की बाग में सरस्वती शिशु मंदिर की भावभूमि तैयार कर विश्व की सबसे बड़ी शिक्षा शृंखला का सूत्रपात किया था।

21 वर्ष की अवस्था में जब वे गोरखपुर प्रचारक बनकर पहुँचे थे जहाँ रहने और खाने की कोई व्यवस्था तक नहीं थी। तब वे एक वकील के घर भोजन और घर का काम करने की शर्त पर रहने लगे थे। बाद में उसी गोरखपुर में सैकड़ों ऐसे परिवार हो गये जिनमें नानाजी की पैठ चौके तक थी। अपने सहज आत्मीय व्यवहार और प्रखरता से उन्होंने ग्रामीण अंचल से सैकड़ों कार्यकर्ताओं को समाजसेवा के लिए प्रेरित किया।

जनसंघ की स्थापना होने पर दीनदयाल जी के सहयोगी के रूप में देशभर में काम करने के लिए जिन संघ प्रचारकों ने दायित्व सँभाला उनमें नानाजी का प्रमुख स्थान रहा है। पर जनसंघ के कार्यकर्ताओं को प्रेरित करने भर से उन्हें कभी संतोष नहीं हुआ। वे सभी राजनीतिक दलों में पैठ रखते थे। शायद बहुत कम लोगों को स्मरण होगा कि 1962 के जनसंघ घोषणा पत्र के प्रारूप को अन्तिम रूप उस समय के प्रख्यात कांग्रेसी नेता डॉ. सम्पूर्णानन्द ने दिया था। नानाजी ही 1963 में कानपुर के संघ शिक्षा वर्ग में डाक्टर राम मनोहर लोहिया को ले गये थे। जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रान्ति अभियान के सूत्रधार भी नानाजी ही बने थे। 1967 के चुनाव में कांग्रेस को उत्तर प्रदेश सहित कई राज्यों में पूर्ण बहुमत नहीं मिला था। उस समय उन्होंने उत्तर प्रदेश में संयुक्त विधायक दल बनाने और चौधरी चरण सिंह को उसका नेतृत्व करने के लिए राजी करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

ऐसा आत्मविश्वास बहुत कम लोगों में देखने को मिलता है जैसा नानाजी में था। वे किसी काम को असम्भव नहीं मानते थे। नई दिल्ली में दीनदयाल शोध संस्थान भवन के लिए एक करोड़ रुपए की आवश्यकता का आंकलन था। एक दिन में मैंने उनसे पूछा इतना धन कहाँ से आएगा। उन्होंने कहा - धन माँगने वाले की नीयत और नियोजन के उद्देश्य के प्रति विश्वसनीयता हो तो देश में धन देने वालों

की कमी नहीं है। महामना मालवीय के बाद नानाजी दूसरे ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने जब जिस भी सम्पत्तिवान व्यक्ति से जितना चाहा, धन प्राप्त किया। जयप्रभा ग्राम और चित्रकूट का ग्रामोदय विद्यालय इसका उदाहरण है। उनके प्रति इतनी गहरी विश्वसनीयता का भाव क्यों था? क्योंकि वे स्वयं अपरिग्रही थे। मुझे स्मरण है 1977 में राष्ट्रपति भवन से उन्हें मोरारजी भाई मंत्रिमंडल में मंत्री के रूप में शपथ लेने का आमंत्रण प्राप्त हुआ था। दीनदयाल शोध संस्थान में हम उनके पास बैठे थे। निमंत्रण पत्र मुझे देते हुए उन्होंने कहा लो तुम जाकर शपथ ले लेना। सत्ता के प्रति अनासक्ति का ऐसा सहज भाव बहुत कम लोगों में देखने को मिलता है। यही कारण है कि जब जनता पार्टी में सत्ता के लिए नोच-खसोट अपने चरम पर पहुँचने लगी तो उन्होंने साठ वर्ष की आयु हो जाने पर सत्ता और दलील पदों की राजनीति से अलग हो जाने का फैसला लिया तथा चित्रकूट में ऐसे रमे कि अन्तिम साँस भी वहीं ली।

उनका ग्रामोदय विश्वविद्यालय इस मामले में अनूठा नहीं है कि उसका परिवेश ग्रामीण है अपितु इसलिए कि उसमें उन्होंने ग्राम स्वावलंबन को मूर्तरूप भी दिया। उनका मानना था कि ग्रामीण आत्मनिर्भरता ग्रामीणों के स्वावलम्बन में निहित है, जिससे देश आत्मनिर्भर होकर सभी प्रकार की चुनौतियों का सामना कर सकेगा।

आत्मविश्वास और सृजनात्मक प्रकृति के कारण जिस क्षेत्र में भी नानाजी हाथ डालते थे, उन्हें सफलता ही मिलती रही है, लेकिन एक सच्चे स्वयंसेवक के समान उन्होंने इसका श्रेय लेने के अहंकारी आचरण से अपने को दूर रखा। उनमें अनुकरणीय स्वाभिमान था। इसलिए उच्चतम स्थान को रिक्त करने के बाद शून्य से प्रारंभ कर वे फिर उसी ऊँचाई पर पहुँचते रहे।

भाग्य

भग्नाशस्य करण्डपिण्डिततनोर्म्लानेन्द्रियस्य क्षुधा कृत्वाऽऽखुर्विवरं स्वयं निपतितो नक्तं मुखे भोगिनः। तृप्तः तत्पिशितेन सत्वरमसौ तेनैव यातः पथा लोकाः! पश्यत दैवमेव हि नृणां वृद्धौ क्षये कारणम् ।।

अर्थ : हे मनुष्यों ! देखो, चूहा रात में छिद्र करके निराश, पिटारी में पिण्डीभूत शरीर वाले, भूख से शिथिल इन्द्रियों वाले सर्प के मुख में स्वयं गिर गया। वह सर्प उस चूहे के मांस से तृप्त होता हुआ उसी मार्ग से शीघ्र निकल गया। अतः निश्चयपूर्वक भाग्य ही मनुष्य के उत्कर्ष और अपकर्ष में कारण होता है।

(नीतिशतकम्)

रह गये अचर्चित गुबरीले

-धर्मपाल अवस्थी
वीर रस के श्रेष्ठ कवि

टिप्पणी : भौंरे और गुबरीले को प्रतीक रूप में लेकर लिखी गयी यह कविता भावों को आन्दोलित करने की विशेष शक्ति रखती है। अन्याय, अत्याचार और पक्षपात के विरुद्ध एक जबरदस्त इन्कलाब है इस कविता में। मैं धर्मपाल जी की इस कविता की सराहना करते हुए तृप्त नहीं हो पाता हूँ।

-सम्पादक

चर्चा भ्रमरों की होती है,
रह गये अचर्चित गुबरीले।
जो भौंरा मँडराता फिरता
कलियों की मस्त जवानी पर।
सुमनों पर सुमनों से निसृत -
सौरभ की मन्द रवानी पर ।
दुनिया की पीड़ा से अजान,
गाता जो केवल निज प्रशस्ति,
बाहर से भीतर तक काला,
लानत है ऐसे प्राणी पर।
फिर भी भौंरे सबके परिचित,
रह गये अपरिचित गुबरीले।।1।।

कितना विष इनके गुंजन में,
यह किसी विरहिणी से पूछो।
कितनी वंचना भरी है इनकी
प्रीति कमलिनी से पूछो।।
दिल कितने तोड़ चुके अब तक,
कितने हृदयों में वास किया,
कितनी मंजरियाँ भ्रष्ट हुईं,
यह इनकी करनी से पूछो।
ऐय्याश हो गये यशोधनी,
बदनाम हो रहे गुबरीले।।2।।

माहिर हैं शोषण के लेकिन
करते मधुवर्षी सम्भाषण।
लाज़िम इनको नित नये सुमन की
मधुशाला का उद्घाटन।।
कौमार्य नष्ट कर चुके न जाने -
कितनी कलियों का अब तक,
फिर भी बगिया में कायम है,
इन काले भौरों का शासन।
बेशरम लूटते माल
चाटते धूल बेचारे गुबरीले।।3।।

गुबरीले जो गन्दगी देखते ही
दौड़ें दफनाने को।
अपना तन गन्दा कर डालें
धरती के दाग मिटाने को।।
दुनिया उछालती है जिसको
गुबरीला उसको गोल करे,
शुक्रिया अदा करदे उसका
है फुरसत कहाँ जमाने को।
दुनिया की इस एहसान -
फरामोशी से पीड़ित गुबरीले।।4।।

मिट्टी से मटमैले तन पर,
मिट्टी ही जिनके लिए वसन।

जीवन की अन्तिम घड़ियों में
मिट्टी ही जिनके लिए कफ़न।।
होते हैं मिट्टी में पैदा,
जीते हैं मिट्टी की खातिर,
मिट्टी ही जिनका जीवन है
मिट्टी ही भोजन और भजन।।
धरती वसुमती इन्हीं से है
धरती के गौरव गुबरीले।।5।।

बगिया के फूलों में दिखती -
है आज तुम्हें जो तरुणाई।
गुड़हल, गुलाब गुलमेंहदी में -
है जो आकर्षक अरुणाई।।
यह करामात गुबरीले के
उस गाढ़े खून पसीने की।
जो अवसर पाकर कलियों में
लेने लगता है अँगड़ाई।
फिर भी रसपान करें भौंरे
रह गये तरसते गुबरीले।।6।।

जब सुबह तितलियाँ पाटल पर
अधरों के सरस प्रहार करें।
जब तरु के हरित हिंडोलों पर
बैठे खग युग्म विहार करें।।
उस समय धरा में बोते हैं,
गुबरीले श्रम की स्वर्ण फसल,
जब कलियों के मद भरे चषक
पाने को अलि मनुहार करें।
सब श्रेय प्रेय भौरों का है,
मरते खाते हैं गुबरीले।।7।।

जो कलियाँ गुबरीले छू लें
वे देवों को स्वीकार नहीं।
लेकिन भौरों की जूठन भी,
अपनाने से इनकार नहीं।।
गुबरीले कर्ता और करण,
सम्बन्ध अधिकरण हैं भौंरे
गुबरीलों को अपने श्रम का
फल पाने का अधिकार नहीं।।
मंदिर के निर्माता होकर
पूजा से वंचित गुबरीले।।8।।

क्या गुबरीले के जीवन में
यौवन का ज्वार नहीं होता।
क्या उसके उर में भावों का
मधुमय संचार नहीं होता।।
चाँदनी रात में जब उठते
रह रह मलयानिल के झोंके
क्या गुबरीले के अंतर का व्याकुल
संसार नहीं होता।।
फिर भी संयम की डोर पकड़
निज राह चल रहे गुबरीले।।9।।

आखिर ये गुबरीले कब तक
संयम का बोझ उठायेंगे
सोचो कब तक ये घुटन भरे
जीवन से नेह निभायेंगे।।
संयम का बाँध तोड़ जिस दिन
फूटेगा असन्तोष का जल
भौंरे तो भौंरे बगिया के
शृंगार सभी ढह जायेंगे।।
भौंरे चीखेंगे गला फाड़
नक्सली हो गये गुबरीले।।

नव वर्ष

-सुभाष चन्द्र शर्मा
आचार्य

चन्दन वन सा महक उठा है,
शस्य श्यामला का आँगन।
हे! राम तुम्हारा अभिनन्दन,
नव वर्ष तुम्हारा अभिनन्दन।

वर्ष प्रतिपदा के आते ही,
जड़ चेतन में जीवन आया।
प्रकृति सुन्दरी ने प्रमुदित मन,
धरती पर कालीन बिछाया।
हरी चुनरिया ओढ़े निबिया,
झूम-झूम करती नर्तन।
नव वर्ष तुम्हारा.....

नव जीवन की चूनर ओढ़े,
कलियों ने अब घूँघट खोले।
तितली बैठी गोद सुमन के,
श्याम सखा सँग भौंरे डोले।
अमराई महके बगिया में,
खोल झरोखे कहे पवन।
हे राम.....

अमलताश की हँसी देखकर,
पीपल ने कर-ताल बजायी।
और पलाश की हर डाली ने
शुभ पूजन की ज्योति जलायी।
बुन्दे पहने बबुरी डोले,
झालर-बाँध रहा सहजन
हे राम तुम्हारा.....

हुआ शक्ति-पूजन घर-घर में,
सबने अनुपम रूप निहारा।
अहंकार-अज्ञान तिमिर से,
निकला श्रद्धा सूरज प्यारा
पावन मंत्रों से होता है,
घर-घर नव देवी पूजन।
हे राम.....

घर-घर धूप कपूर जल उठे,
बाजे शंख, मृदंग मँजीरा।
गाँव-शहर के मंदिर जागे,
नाचे ललना मानों मीरा।

नील गगन हो गया सुगन्धित
बरस रहे आशीष वचन
हे राम तुम्हारा.....

खेत और खलिहान में चमके,
जीवन धन का नूतन सोना।
जाग उठा देवी गीतों से,
गाँव-नगर का कोना-कोना,
व्रत-पूजन से कंचन हो गयी,
दादी, अम्मा, बुआ, बहिन
हे राम तुम्हारा.....

चन्दन वन सा.....

(1)

आरेख बनाता हूँ जिन्दगी का, बिगड़ जाता है।
गुलाबी चेहरे पर, काजल का रंग चढ़ जाता है।
भावुक मन भिगो देता है, दिल का कैनवास,
जमाने की हवाओं से, चित्र सिकुड़ जाता है।

(2)

सत्ता की सभाओं में, नजारे बदल जाते हैं।
राजनीति की काई पर, पैर फिसल जाते हैं।
मायावी महल में, आँखें खोल कर चलो।
यहाँ पत्थर के बगुले, इंसान को निगल जाते हैं।

(3)

नजदीकियों का ये शहर, अब नापता है दूरियाँ।
घर के आँगन बँट गये, रिश्तों की उलझी डोरियाँ।
खानदानी खाट पर, इंसानियत बीमार है,
मौन-सब-कुछ कह रहा, अपनों की हैं मजबूरियाँ।

(4)

वैश्वीकरण के दौर में, हर बात बिकती है।
दिन बहुत सस्ते कि, महँगी रात बिकती है।
जमाने के ज़हर से बादलों का रंग हुआ पीला,
पपीहा प्यासा मरता है, यहाँ बरसात बिकती है।

(5)

देश का अब नया संविधान बनाया जाये।
दिल-ए-रेगिस्तान को, मरु उद्यान बनाया जाये।
जलसे, तमाशे, मजलिसों में गुम हुई हैं मंजिलें,
माटी के इस पुतले को, फिर इंसान बनाया जाये।

चाहत

-डॉ. मनोज शुक्ल
'आचार्य'

उपवन एक लगावें ऐसा जिसमें सदा बहार हो।
कोई न हो सूखा मुरझाया सबके हृदय में प्यार हो।।

हरे भरे हों तरुवर जिसमें कोमल-कोमल किसलय से,
वन प्रान्तर मधुमय बन जावे सुरभित पवन मलय से,
फूल खिले हों डाली-डाली भ्रमरों का गुंजार हो।
कोई न हो सूखा मुरझाया सबके हृदय में प्यार हो।

पक्षीगण चहचहा रहे हों पेड़ों की शाखाओं पर,
कभी तुषारापात न होवे खगकुल की आशाओं पर,
व्याध बसे न यहाँ पे कोई न हिंसा का व्यवहार हो।
कोई न हो सूखा मुरझाया सबके हृदय में प्यार हो।।

सहज वैर को छोड़ सभी पशु पक्षी सदा विहार करें,
घृणित स्वार्थ की छोड़ भावना मिलजुल सभी अहार करें,
ऋजुता हो सबके मानस में अन्तःकरण सुधार हो।
कोई न हो सूखा मुरझाया सबके हृदय में प्यार हो।।

यदि आपद् आये उपवन में साथ खड़े हों सब मिलकर,
परदुःख को अपना दुःख समझें करुण भावना भर कर,
हों संवेदनशील सभी जन करुणामयी बयार हो।
कोई न हो सूखा मुरझाया सबके हृदय में प्यार हो।।

स्वर्णिम दृश्य बने उपवन को देख सभी ललचायें,
छोड़ परस्पर द्वेष सभी जन इस उपवन में आयें,
सफल साधना हो 'मनु' तेरी प्रभु का सबको दुलार हो।
कोई न हो सूखा मुरझाया सबके हृदय में प्यार हो।।

विद्यालय का पर्व : वार्षिकोत्सव

-यश अवस्थी
(मंत्री तरूण भारती)
अनुराग भदौरिया, प्रणव त्रिपाठी
कक्षा-11

'चरैवेति-चरैवेति' का मन्त्र लेकर चलने वाले युग दधीचि पं. दीनदयाल जी ने शक्ति, संकल्प और साधना के साथ भारतमाता की आजीवन आराधना की। युग द्रष्टा के बलिदान से प्रेरित भावुक संकल्प पर स्थापित पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय ने पंडित जी के 93वें जन्मोत्सव को अपने 39वें वार्षिकोत्सव के रूप में हर्षोल्लास के साथ मनाया। विद्यालय के इस उत्सव का उद्देश्य छात्रों के अतंस में उमंग का पुष्प पल्लवित करना है। प्रस्तुत है वार्षिकोत्सव की रिपोर्ट -

वार्षिकोत्सव का प्रारम्भ ऐतिहासिक, भौगोलिक, विज्ञान एवं कम्प्यूटर प्रदर्शनी के आयोजन से हुआ। मुख्य अतिथि डॉ. राजीव चौरसिया (वी.एस.एस.डी. कॉलेज, भूगोल विभाग) श्री पुरुषोत्तम सिंह, डॉ. पृथ्वीपति सचान (एच.बी.टी.आई. प्रवक्ता भौतिकी विभाग) ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। प्रदर्शनी में छात्रों ने राष्ट्रपति भवन, संसद भवन, सर्वोच्च न्यायालय, पंचमहल आदि भव्य मॉडल बनाकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया वहीं भूगोल व विज्ञान संबंधी प्रदर्शों में चन्द्रयान प्रथम, पाइथागोरस प्रमेय, फूड अडल्ट्रेशन, ज्वालामुखी, ग्लोबल वार्मिंग आदि प्रशंसनीय रहे। कम्प्यूटर प्रदर्शनी में छात्रों ने विविध सामयिक मुद्दों स्वाइन फ्लू, राष्ट्रामंडल खेल, कम्प्यूटर वाइरस आदि पर प्रस्तुतीकरण किया। विगत वर्ष की प्रदर्शनी के लिए भैया दिग्विजय, चन्द्रशेखर, यश, कुलदीप, अखिल, सौरभ, शशांक को पुरस्कृत किया गया।

वार्षिकोत्सव के द्वितीय चरण में अन्तर विद्यालयीय गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में डी.ए.वी. कॉलेज की प्राचार्या डॉ. रेखा शर्मा तथा निर्णायक मण्डल में डॉ. संजय स्वर्णकार, डॉ. आदर्श त्रिपाठी तथा श्री लक्ष्मीशंकर शुक्ल उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन बाल भारती द्वारा किया गया। पूरा वातावरण संगीतमय था। भावनाओं का तट था संगीत के सिंधु के अनन्त छोर से राष्ट्रीयता का मरीचिमाली झाँक रहा था। मुख्य अतिथि डॉ. रेखा शर्मा ने कहा - "सफलता के लिए छोटा रास्ता नहीं होता, परिश्रम आवश्यक है। समय का सदुपयोग करें, आत्मविश्वास व साहस के साथ बाधाओं का सामना करें व लक्ष्य को प्राप्त करें। "निर्णायक मंडल के सदस्यों ने छात्रों को ध्येय पथ पर सतत् बढ़ने का पाथेय प्रदान किया। प्रतियोगिता में 18 विद्यालयों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में पं. दीनदयाल विद्यालय के भैया पार्थ निगम को प्रथम स्थान, द्वितीय स्थान कु. अंतरा सेन (मरियमपुर हायर सेकेण्डरी स्कूल), तृतीय स्थान ओंकारेश्वर विद्या निकेतन के भैया शशांक दीक्षित को प्राप्त हुआ।

वार्षिकोत्सव के तृतीय चरण में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि के रूप में कानपुर नगर की अपर जिलाधिकारी श्रीमती शकुन्तला गौतम उपस्थित थीं। विद्यालय के प्रधानाचार्य जी ने स्मृति-चिह्न देकर मुख्य अतिथि का स्वागत किया। मुख्य अतिथि ने अपने वक्तव्य में कहा- "अनुशासन ही छात्र जीवन का आधार है। सफलता प्राप्ति हेतु अनुशासन, कड़ी मेहनत लगन, उद्देश्य, लक्ष्य, समय प्रबंधन निश्चित होना चाहिए। विद्यालय में छात्राओं का प्रवेश महिला सशक्तीकरण की ओर महत्वपूर्ण कदम है। हमें पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के विचारों का अनुगमन करना चाहिए।"

कार्यक्रम का संचालन किशोर भारती के अध्यक्ष भैया शुभम श्रीवास्तव व मंत्री भैया आशुतोष तिवारी ने किया। विगत वर्ष के रंगमंचीय कार्यक्रम में श्रेष्ठ अभिनय करने वाले भैया यज्ञप्रिय, आर्यन, रोशन, पार्थ को पुरस्कृत किया गया। धन्यवाद ज्ञापन विद्यालय सचिव श्री वीरेन्द्रजीत सिंह जी ने किया।

रंगमंचीय प्रस्तुतियों का प्रारम्भ सरस्वती वंदना से हुआ। इसके पश्चात् अभिनय गीत, नेपाली नृत्य और डांडिया नृत्य का प्रस्तुतीकरण किया गया। इसके पश्चात् हिन्दी नाटक 'प्रेमदीवानी मीरा' का मंचन किया गया। इस नाटक के माध्यम से 'द्वापर की मीरा' को कलियुग की मीरा' के रूप में प्रस्तुत किया गया। इस नाटक के पश्चात् अंग्रेजी नाटक 'शिवाजी' का प्रस्तुतीकरण किया गया जिसके माध्यम से शिवाजी के पराक्रम का वर्णन किया गया। अन्त में 'सुदामा चरित' के माध्यम से श्रीकृष्ण व सुदामा की मित्रता का चित्रण कर दर्शकों को मोहित कर दिया। प्रस्तुतियों में कु. अनुकृति शुक्ल, चि. उज्ज्वल दीप, देवेश, प्रखर सिंह, निमिष, पार्थ, प्रांजल का अभिनय सराहनीय रहा। कार्यक्रम के अभ्यास में प्रमुख भूमिका आचार्य श्री दुर्गेश जी, मयंकमणि जी, आचार्या श्रीमती रेखा जी, श्रीमती अर्चना जी, आचार्य श्री अंकुर जी ने निभाई। रंगमंचीय प्रस्तुतियों का साहित्यिक भाषा में संचालन आचार्य श्री दिनेश जी, अंकुर जी आचार्या श्रीमती रेखा जी ने किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगीत के साथ हुआ।

वार्षिकोत्सव के चतुर्थ चरण के रूप में अन्तर विद्यालयीय वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें नगर के 18 प्रतिष्ठित विद्यालयों ने भाग लिया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. मिथिलेश शर्मा (जी.एस.वी.एम. कॉलेज की पूर्व प्राचार्या) रहीं। छात्र व छात्रा वर्ग की प्रतियोगिता अलग-अलग हुई। निर्णायक मण्डल में, डॉ. निशा अग्रवाल, डॉ. मनोज मिश्र तथा डॉ. पंकज चतुर्वेदी रहे। कार्यक्रम का संचालन तरूण भारती के अध्यक्ष भैया प्रकाश केशव तथा मंत्री भैया यश अवस्थी ने किया। प्रतियोगिता का विषय - "उच्च शिक्षा में आरक्षण अनुचित है।" विषय के पक्ष में डी.पी.एस. आजादनगर के छात्र चि. भैया वैभव मिश्र ने कला "आरक्षण अनुचित है। वर्ण व्यवस्था जिसे अत्यंत कुत्सित माना जाता है, उसे ही आरक्षण के नाम पर पुष्पित पल्लवित किया जा रहा है।" इसी विद्यालय के भैया शशांक ने विपक्ष में कहा कि "सवर्णों द्वारा सदियों से किए जा रहे अत्याचारों पर विराम है आरक्षण।"

दीनदयाल विद्यालय के भैया देवेश बाजपेई ने विषय के पक्ष में कहा - "देश के नेता वर्तमान समय में जाति विद्वेष की आग लगाकर राजनीति की रोटियाँ सेंक रहे हैं। आरक्षण से अयोग्य व्यक्तियों को पनाह व योग्य व्यक्ति उपेक्षित हो जाते हैं।" छात्र वर्ग के पश्चात् छात्रा वर्ग की प्रस्तुति हुई। निर्णायक मण्डल के सदस्य डॉ. मनोज मिश्र ने कहा - "क्या वह देश प्रगति कर सकता है जिसकी राजनीति का आधार शिथिल हो। प्रतिभा किसी की मोहताज नहीं होती। मुख्य अतिथि ने अपने वक्तव्य में कहा- आरक्षण के अनुचित प्रयोग से क्षमता व बुद्धिमत्ता का अपमान हो रहा है फलतः हमारा देश विकासशील देशों की श्रेणी में ही है। जिसकी जैसी योग्यता उसको वैसा ही कार्य मिलना चाहिए।"

छात्र वर्ग में डी.पी.एस. आजादनगर के छात्र शशांक सक्सेना को प्रथम, इसी विद्यालय के वैभव मिश्र को द्वितीय तथा दीनदयाल विद्यालय के भैया देवेश बाजपेयी को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। छात्रा वर्ग में आकांक्षा त्रिपाठी को प्रथम, मरियमपुर सीनियर सेकेण्ड्री की छात्रा शिखा त्रिपाठी को द्वितीय, भाविनी खरे को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

वार्षिकोत्सव के अगले चरण में 27 सितम्बर को युग भारती जो हमारे विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था है, उसका वार्षिक सम्मेलन संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में 1984 बैच के छात्रों का रजत जयंती

वर्ष मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि युग भारती के संरक्षक तथा विद्यालय के पूर्व प्राचार्य श्री ओमशंकर त्रिपाठी थे। उन्होंने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा- "छात्रों को अपने मानस पटल में तथा अंतस में देश की की सेवा करने का विचार अंकित करना चाहिए। जिस राष्ट्र के युवकों में इतिहास बदलने की इच्छा होती है उसी देश का भूगोल बदलता है।" इसके पश्चात् युग भारती की नयी कार्यकारिणी घोषित हुई तथा इसके पश्चात् सभी ने सहभोज किया।

वार्षिकोत्सव के अंतिम चरण के रूप में मुख्य कार्यक्रम आयोजित हुआ। शारीरिक प्रदर्शन एवं पुरस्कार वितरण के अवसर पर मुख्याभ्यागत के रूप में (अखिल भारतीय प्रचारक प्रमुख राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) माननीय मदनदास जी देवी थे। कार्यक्रम का शुभारंभ पुष्पार्पण व इष्टदेवों के पूजन से हुआ। मुख्य अतिथि का स्वागत प्रधानाचार्य जी द्वारा तथा परिचय प्रबंध समिति के अध्यक्ष डॉ. ज्ञानचन्द्र अग्रवाल द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन तरुण भारती के अध्यक्ष भैया प्रकाश केशव व महामंत्री भैया चन्द्रशेखर द्वारा किया गया। इसके पश्चात् एन.सी.सी. एवं घोष के छात्रों ने पथ संचलन कर मान वंदना की। इसके बाद विद्यालयों के छात्रों ने सामान्य योग, तिष्ठ योग एवं तीव्र योग कर विद्यालय में व्याप्त चैतन्यता का प्रदर्शन किया। कक्षा षष्ठ से अष्टम के छात्रों ने साहसिक प्रदर्शन (रिवर क्रासिंग किया जो सराहनीय प्रयास था। हाईस्कूल परीक्षा 2009 में सर्वोच्च अंक प्राप्तकर्ता छात्र चि. प्रशांत कुमार, दीपेन्द्र, विकल्प, विशाल व अतुल को पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त खो-खो एवं कबड्डी प्रतियोगिता के विजयी छात्रों एवं एन.सी.सी. एवं घोष के छात्रों चि. आदित्य शेखर, शशांक मोहन दुबे, अनुराग भदौरिया, अजय रावत को पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार वितरण के पश्चात् प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश भार्गव जी ने निर्धन छात्रों की छात्रवृत्ति के लिए 50,000 रू. की चेक सचिव जी को दी।

इसके पश्चात् माननीय मदनदास जी देवी ने अपने वक्तव्य में कहा - "पं. दीनदयाल जी ने रूस चीन द्वारा फैलाये गये समाजवाद, पश्चिम द्वारा फैलाये जा रहे पूँजीवाद के सामने एकात्म मानववाद की संकल्पना प्रस्तुत की। 'एकात्म मानववाद की संकल्पना प्रस्तुत की। 'एकात्ममानववाद' मनुष्य के समग्र स्वरूप का विकास करता है। मनुष्य परिवार के लिए, परिवार गाँव के लिए, गाँव जनपद के लिए, जनपद राष्ट्र के लिए है ऐसे विचार एकात्ममानववाद के हैं। चीन हमारा महान शत्रु है। उसने सीमाओं में हस्तांतरण प्रारम्भ कर दिया है अतः छात्रों को सेना में जाने की आवश्यकता है। 'हमें इस देश के प्रहरी व सेवक हैं।' ऐसी भावना हमारे अंतस में हो। हमें राष्ट्र निर्माण हेतु अग्रसर होना चाहिए जो विश्व विकास का कारक है।"

वार्षिक आख्या प्रधानाचार्य जी ने प्रस्तुत की। धन्यवाद ज्ञापन विद्यालय के सचिव श्री वीरेन्द्रजीत सिंह ने किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगीत के साथ हुआ।

वार्षिकोत्सव के अंतिम चरण में कवि सम्मेलन हुआ। देश भक्ति, समाज, दर्शन आदि पर आधारित कविताएँ विशाल कक्ष में सक्षात् वागदेवी के रूप में अवतरित हुई। कार्यक्रम में छात्र कवियों ने भी कविताओं का पाठ किया तथा कवि-समूह में कमलेश जी, प्रमोद जी, राघवेन्द्र जी, सुमन जी, सुरेश जी आदि थे। कवियों ने ऐसी सरस्वती की धारा प्रवाहित की कि श्रोताओं के हृदय की गंगा व प्रज्ञा की यामुनी धारा में समाहित होने से सभागार ज्ञान संगम जैसा पवित्र हो गया। इसके साथ ही वार्षिकोत्सव का प्रेरक स्थगन हो गया तथा वह समाप्त होने की चिर प्रतीक्षात्मक पीड़ा हमको दे गया।

आतंकवाद का समाधान

-यश अवस्थी
कक्षा-11 'क'

"राम के शर सोयेंगे तूणीर में जब
या सुदर्शन शान्ति की माला जपेगा
सिर धुनेगा बेबसी में गाधिनंदन
हर कदम पर दुष्ट दुर्योधन तपेगा।"

मुम्बई के ताज होटल में हमला, लोकल ट्रेनों में हमला, मन्दिरों पर हमला, संसद भवन पर हमला, दिल्ली, जयपुर, असम, अहमदाबाद बंगलौर, अगरतला को रक्तरंजित कर देने वाली लिप्सामयी, विध्वंस व्यथा व अमानवीय क्रियायें, भयंकर विस्फोट में कई लोगों की मौत। इतनी कुत्सित हत्याएँ क्यों? इन निदोर्षों को क्यों काल का ग्रास बनना पड़ता है? इसका परिणाम यह है कि आतंकवाद की दस्तकें देश के द्वार पर हैं।

आतंकवाद का शिकार कब कौन हो जाए, इसका पता नहीं। अपने प्रभुत्व से जनमन में भय की भावना का निर्माण कर अपना उद्देश्य सिद्ध करने का सिद्धान्त आतंकवाद है। आज नेता शान्ति का प्रवचन देते रहते हैं परन्तु ऐसे अमानवीयकृत्य के विरुद्ध कदम नहीं उठाते। एक आतंकवादी 'कसाब' बयान पर बयान बदले जा रहा है। निहत्थे लोगों पर गोलियाँ बरसाने वाला एक पिशाच कारावास में महलों की जिंदगी बिता रहा है और हमारी शासन एवं न्याय व्यवस्था इतनी पंगु हो गयी है कि वह किंकर्तव्यविमूढ़ होकर सोच रही है।

इसी कारण आज संपूर्ण राष्ट्र आतंक की आग में तप्त हो रहा है। जम्मू की सरजमीं रक्तरंजित है, लहू से लाल है। कभी भगवान शिव के दर्शनार्थ सहस्र व्यक्तियों पर हमला होता है तो कभी पवित्र रघुनाथ मंदिर पर फिदाईन हमला होता है।

नित्य किसी स्त्री का सिंदूर पोंछ दिया जाता है तो किसी बच्चे को अनाथ कर दिया जाता है तो किसी के बुढ़ापे का सहारा छीन लिया जाता है।

आतंकवाद की धारणा :-

मनुष्य भय से पलायनवादी बन जाता है, इस कारण लोगों में भय उत्पन्न कर कुछ असामाजिक तत्त्व अपने नीच स्वार्थों की पूर्ति के लिए हिंसक साधनों का प्रयोग करते हैं यही परिस्थिति आतंकवाद है। अर्थात् "सामाजिक मूल्यों में ह्रास के कारण समय-समय पर कुछ समाज विरोधी एवं राष्ट्र विरोधी तत्त्व अकारण ही निर्दोष एवं निहत्थे लोगों पर हिंसा कर समाज में असुरक्षात्मक वातावरण बनाते हैं, ऐसी स्वार्थमयी कुत्सित वृत्ति आतंकवाद है।

वर्तमान परिस्थितियाँ :-

आतंक का सैलाब इतना बढ़ चुका है कि पूरा राष्ट्र इसकी अग्नि में तप चुका है। पिछले नौ-दस वर्षों में यह अपनी सीमा पर है। इसका प्रायोजक पड़ोसी देश पाकिस्तान है। इसके द्वारा अंकित इन वृत्तियों द्वारा जीवन समाप्त हुए, इसकी गणना करना मुश्किल है। अक्टूबर 2001 कश्मीर में हमला,

दिसंबर 2001 संसद भवन पर हमला, 2003 मार्च ट्रेन में विस्फोट, अक्टूबर 2005 में राजधानी में आतंकी हमले, दिसंबर 2005 में बंगलौर में विस्फोट, मार्च 2006 संकटमोचन मंदिर (वाराणसी) में 28 भक्तों की मृत्यु, मई 2006 जम्मू में 32 हिन्दुओं की हत्या, श्रीनगर पर आतंकी हमला, जुलाई 2006 मुम्बई में शृंखलाबद्ध धमाकों से 200 की मौत, 714 घायल हुए ऐसी कई घटनाएँ जो हृदय में कौंध जाती हैं। 26 नवंबर 2009 में मुम्बई के ताज होटल, सी.एस.टी. (रेलवे स्टेशन), नरीमन प्वाइंट पर आतंकी आक्रमण से लगभग 256 लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया है। मार्च 1993 को मुम्बई में शृंखलाबद्ध धमाकों में 257 की मौतें हुई। इसके बाद से क्रमागत आतंकी गतिविधियाँ जारी हैं। वर्ष 2008 में जयपुर, दिल्ली, बंगलौर, अहमदाबाद, वाराणसी अगरतला, असम में हुए धमाकों से लगभग 400 से अधिक लोगों की मृत्यु हुई। गृहमंत्रालय के आँकड़ों पर यदि दृष्टिपात करें तो सिर्फ जम्मू कश्मीर में विगत 20 वर्षों में 60,000 से अधिक हिन्दुओं को मौत के घाट उतार दिया गया है। आतंकवादियों के आतंक से मानवता आहत हुई है एवं आर्तनाद का वातावरण तैयार हुआ है-

'ममता की गोद है सूनी, सिंदूरों को है मिटा दिया
फिर ढहा दिए मेहनत के घर, आशाओं पर पानी फेर दिया
मेंहदी भी सूखी नहीं सिंदूर खून में बदल गया।
केसर के बागों में देखो, लाशों का सागर मचल गया।'

आतंकवादा के स्रोत : आतंकवाद के लिए उत्तरदायी कारणों को दो वर्गों में रखा जाता है- 1. आन्तरिक 2. वाह्य।

आंतरिक कारकों में युवकों में सतत बढ़ती हुई बेरोजगारी व असुरक्षा की भावना प्रमुख है। तरुणों में अपार शक्ति व अदम्य साहस होता है। उन्हें कार्यक्षेत्र में न मिलने के कारण वे दिशाहीन हो जाते हैं और आतंकवादी संगठन के सदस्य बन जाते हैं। भारत ३० वर्षों से जेहादियों से जूझ रहा है क्योंकि हमारे ही पड़ोसी देश राष्ट्र की प्रगति से ईर्ष्या करते हैं। यही बाह्य कारणों में से एक है।

आतंकवाद : एक विश्वव्यापी समस्या :

सर्वप्रथम आतंक की प्रवृत्ति को जन्म दिया था साम्राज्यवादी राष्ट्र अमेरिका ने। उसने 6 अगस्त व 9 अगस्त 1945 को हिरोशिमा व नागसाकी पर परमाणु बम गिराकर हिंसात्मक प्रवृत्तियों को प्रश्रय दिया परन्तु एक दिन वह अपने ही संजाल में फँस गया। राजनीतिक मुखौटों में निहित उसकी काली करतूतें विश्व के सामने उजागर हो गयीं, जब 11 सितम्बर 2001 को न्यूयार्क के वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर हमला हुआ। इस देश पर हुए वज्रपात से सम्पूर्ण विश्व अचंभित हैं।

इसी कारण आज विश्व पर इसकी काली घटा छा चुकी है। इस अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर दमन करने की उत्सुकता किसी देश ने नहीं दिखायी। इसी कारण हमें चेतना की आवश्यकता है। आतंकियों ने यू.एस.ए., लंदन, मिस्र, भारत व पाकिस्तान पर अपनी धाक जमाने के लिए हमले किए हैं। इस वाद को मिटाने के लिए स्वयं जागृत होना चाहिए -

अब वक्त आ गया है, जाग जाएँ हम।
कौन दुश्मन है अमन का, पहचान जाएँ हम।।

दुष्प्रभाव :

आज आतंकवाद से कश्मीर, मुम्बई, असम, आदि बुरी तरह प्रभावित हैं। इन राज्यों की यह घातक लपटें पड़ोसी राज्यों का झुलसा रही है। हमारी सांस्कृतिक विरासत को भी नहीं बख्शा जा रहा है। फलतः जनता में असुरक्षा की भावना घर कर गयी है। शिक्षा, उद्योग, कृषि पनपने के स्थान पर गर्त में जा रहे हैं। इससे संपूर्ण विश्व में अमन का नहीं, आतंक का प्रभुत्व है।

आतंकवाद का निवारण :

आतंक एक ऐसी बारूदी सौगात है जो अपने पराये का भेद तो कर नहीं पाती स्वयं अपना अस्तित्व भी दाँव पर लगा देती है। हमने उपवास किए, पद यात्राएँ बस यात्राएँ, एकतरफा संघर्ष विराम किए अपनी ही सेना के हाथों में हथकड़ियाँ डालने में कोई संकोच नहीं किया। परन्तु यह रोग बढ़ता गया।

लेह से पोर्टब्लेयर तक, ओखा से ईटानगर तक की जनता की भावना यही है कि इन आतंकियों का समूलोच्चाटन होना चाहिए। विश्व के सभ्य समाज में ऐसे दरिन्दों की कोई जगह नहीं है। कायर जेहादियों को यह सबक सिखाना होगा कि वे मानवता की ओर आँख उठाने का दुस्साहस न करें। सब्र व धैर्य को जो दब्बूपन मानने की गलती करते हैं। उन मनोरोगियों को यह समझाना होगा कि हमारी शान्ति सुप्त ज्वालामुखी है, महाविनाश को आमंत्रण है। हमारा इतिहास साक्षी है कि स्वतंत्रता उन्हीं के हाथों में सुरक्षित रही है जिनके भुजदण्डों में शक्ति, हृदय में देश के लिए अथाह प्रेम व भक्ति व मस्तिष्क में योजनाओं का भण्डार विद्यमान हो। अतः आतंकवाद, आतंकवादी व उनको प्रश्रय देने वाली किसी भी शक्ति का समूल विनाश दमन नीति से ही होना चाहिए।

फिर सीमा पर प्रभंजन उठने वाला है
आसमान वायव्य दिशा का काला है
बारूदी दुर्गन्ध हवा में छायी है
चाँदी के शिखरों पर फिर से काई है
चलो मनाने फिर विजयी त्योहार चले
चलो देश के प्रहरी सीमा पार चले।

समाहार :

आतंकवाद का रोग भयंकर तो है किन्तु असाध्य नहीं। दिशाहीन युवकों को राष्ट्र की मुख्यधारा में सन्निहित करना होगा, चित्त में आत्म विश्वास को जगाना होगा, शिक्षा व प्रसार माध्यमों से राष्ट्रीय भावना को पुष्ट करना होगा, बेरोजगारी का निदान करना होगा। तभी देश का भविष्य सुरक्षित होगा जब वाह्य हस्तक्षेप का उन्मूलन दमन नीति से हो। इन्हीं उपायों से हम अपने भारत को सबल, सम्पन्न व सुखी बना सकेंगे और राष्ट्र को पुनः शिखर पर ले जा सकेंगे।

चाहे जितनी कोशिश कर लो, वीरत्व रंग दिखलाएगा।
नापाक इरादों का परचम लहरा कभी न पाएगा।
हमसे टकराने का हौसला अगर किसी ने बाँधा तो
इतिहास गवाही देता है वो मिट्टी में मिल जाएगा।

परिस्थितियों का प्रभाव

-निखिल गुप्त
नवम 'ख'

मनुष्य आखिर कब तक सहन कर सकता है? मनुष्य एक सामाजिक जीव ही तो होता है! कब तक यूँ ही वह इस समाज की ठोकरों, दुतकारों तथा फटकारों को सहन कर सकेगा? और फिर वह एक किशोर हो और वह भी एक छात्र! ज़रा सोचिए, क्या बीती होगी उस छात्र के हृदय पर जिसने संसार के रंगारंग अभिनयों को समझना प्रारंभ ही किया हो और उसके हाथों से उसके पिताजी द्वारा भेजे गए रुपये चोरी हो गए हों।

ऐसी ही घटना छात्रावास में रहने वाले छात्र के साथ घटित हुई। वह वहाँ से दूर एक छोटे से कस्बे से छात्रावास में रहकर अपनी पढ़ाई पूरी करने आया था - वह छात्रावास आया था - कुछ पढ़ने, कुछ करने आया था। बड़ा आदमी बनने। परन्तु परमात्मा ने उसके बारे में शायद कुछ और ही सोच रखा था। वह एक मध्यम वर्गीय परिवार का सीधा-सादा बालक था। उसके अभिभावक ने उसके उज्ज्वल भविष्य के लिए स्वयं से दूर भेजा था। उसने आज तक न कभी चोरी की, न कभी किसी से द्वेष-भाव रखा। छात्रावास में रहते-रहते उसके तीन वर्ष हर्ष-पूर्वक व्यतीत हो गए। वह आया था। बाल्यावस्था में और होने वाला था किशोर। इन तीन वर्षों में उसकी पहचान श्रेष्ठ विद्यार्थियों में की जाती थी। एक दिन उसके पिता ने उसे 800 रु. शुल्क जमा करने हेतु भेजे। वह 800 रु. अपने पास रखकर चिन्तामुक्त हो गया। उसी शाम वह अपने दोस्तों के साथ खेलने चला गया। इधर वह चिन्तामुक्त होकर खेल रहा था और उधर षडयंत्र अपने पैर फैला चुका था। जब वह खेलकर आराम करने आया तो सहसा उसका ध्यान अपने टूटे ताले की ओर गया। उसने घबराहट में अपने रुपयों को ढूँढ़ना चाहा परन्तु उसके पूरे रुपये चोरी हो चुके थे। हाय रे हृदय। उसके ऊपर तो मानो पहाड़ गिर पड़ा। यद्यपि 800 रु. कोई बड़ा मूल्य नहीं है परन्तु उस किशोर ने जिसने कभी चोरी नहीं की चोरी सोची तक नहीं उसी के रुपये चोरी। वह बेचारा परेशान होकर इधर-उधर भागा, बहुत रोया परन्तु जो होना था वह हो चुका था। रात भर वह यही सोचता रहा कि ईश्वर ने उसी के साथ ऐसा क्यों किया? उसने कभी भी कोई गलत कार्य नहीं किया था फिर उसे यह सजा भला, क्यों? इस तरह के कई सवालों की आँधी में फँसा उसका हृदय बार- बार विचलित हो रहा था। उसने सुबह तुरंत ही उठकर अपने पिता से घबराते हुए सम्पूर्ण गाथा खोल डाली परन्तु पिता ने उसकी घबराहट को शांत करते हुए सांत्वना दी और उसे इस बात को भूल जाने को कहा। सांत्वना प्राप्त होने के पश्चात् उसका मन भी हलका हो गया परन्तु कहीं न कहीं मन के किसी कोने में वह घटना एक भावना की डिबिया में कैद पड़ी थी।

फिर इस बात को दुर्भाग्य समझकर भूल गया था वह। परन्तु न जाने विधाता ने उसके बारे में क्या सोच रखा था। कुछ महीने पश्चात् पुनः उसके रुपये चोरी हो गए। ऐसी विकट परिस्थिति में वह पुनः फँस चुका था। परमात्मा के द्वारा किया गया यह तिरस्कार उससे सहन नहीं हुआ। इस बार उसने किसी की न सुनी, न अपने पिता को इस बारे में बताया। उसके मन और दिमाग में सिर्फ एक ही चीज घूम रही थी - चोरी। वह अपने होश खो बैठा था। उसका मन शांत नहीं बैठ रहा था। उसके हृदय में टीस उत्पन्न हो रही थी जो उसे बार-बार कचोट रही थी। अगली सुबह जब वह उठा, वह भावशून्य हो चुका

था। उसे अब सिर्फ एक सुअवसर की तलाश थी। जब सभी खेलने चले गए तो उसने बीमार होने का नाटक किया और खेलने से मना कर दिया।

सभी के जाने के पश्चात् वह अपने बिस्तर से उठा, अपने दोस्त के बिस्तर के पास पहुँचा, उसके बक्से का ताला तोड़ा, पैसे निकाले और भाग निकला। उसका मुख सूख गया था। वह पूरी तरह से पसीने में भीगा था। यह उसकी पहली चोरी थी परन्तु दुर्भाग्यवश अंतिम न हो सकी। अब तो वह चोरी में पारंगत हो चुका था। उसे अब किसी बात का भय भी न सताता था। उसे जब जिस वस्तु को प्राप्त करना होता, वह तुरंत उसे चुरा लेता। अंत में वही हुआ जिसका भय था, समाज ने उसे 'चोर' कहा। उसका बहिष्कार किया गया। परंतु कोई यह नहीं जान सका कि इसी समाज ने ही उसे चोर बनाया है।

हर बच्चा अपनी माँ की कोख से खाली हाथ जन्म लेता है। हर बच्चे को अच्छे संस्कार में बड़ा किया जाता है। फिर क्यों कोई बड़ा अधिकारी बनता है और कोई 'चोर'। इसी समाज में रहने वाले लोग उसे 'चोर' बनाते हैं और फिर उसे 'चोर' नाम से नवाजते हैं। आखिर क्यों? क्या उसके कोई सपने नहीं होंगे? क्या उसके पिता उसे एक उच्च पद पर देखना नहीं चाहते होंगे? इन सभी सवालों का जवाब सिर्फ एक शब्द में निहित है - 'परिस्थितियाँ'। यह परिस्थिति ही है जो किसी को अच्छा बनाती है तो किसी को चोर। यदि समाज में ऐसी 'परिस्थितियाँ' ही न बनें तो समाज में कोई स्वतः चोर नहीं बनेगा। इन सब की जड़ सिर्फ यही 'परिस्थितियाँ' ही हैं। **यद्यपि उस छात्र ने प्रतिक्रिया में चोरी की थी परन्तु चोरी करने को किसी भी तरह उचित नहीं ठहराया जा सकता है।**

सी. एन. जी.

-राजर्षि सिंह गौतम
नवम 'ख'

पूरा नाम	-	कम्प्रेस्ड नेचुरल गैस
मिश्रण	-	धरती के अन्दर पाये जाने वाले हाइड्रो-कार्बनों का मिश्रण है।
मीथेन की मात्रा	-	इसमें 80 से 90 प्रतिशत मात्रा मीथेन की होती है।
प्रकृति	-	यह रंगहीन, गंधहीन एवं हवा से हल्की होती है। इसे वाहनों में प्रयोग करने के लिए 200-250 कि. ग्रा. प्रति वर्ग से.मी. दाब पर समपीडित किया जाता है।
प्रयोग	-	सी.एन.जी. को पेट्रोल तथा डीजल के स्थान पर प्रयोग करने का कारण यह है कि इससे पेट्रोल व डीजल की अपेक्षा 70% कार्बन कार्बन मोनो आक्साइड 87% नाइट्रोजन ऑक्साइड कम उत्सर्जित होती है। अतः प्रदूषण को कम करने के लिए सी.एन.जी. एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

परखो अपना ज्ञान

-निखिल गुप्त
नवम 'ख'

1. 'रेड क्रॉस' की अंतर्राष्ट्रीय संस्था कहाँ स्थापित हुई?

(अ) जेनेवा, स्विट्जरलैण्ड (ब) न्यूयार्क, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका।

(स) क्वाला लम्पूर, मलेशिया।

उत्तर - (अ) जेनेवा, स्विट्जरलैण्ड।

2. 'स्विट्जरलैण्ड' की राजधानी कौन-सी है?

(अ) जेनेवा। (ब) बर्ने। (स) जुरीच।

उत्तर - (ब) बर्ने।

3. मॉरीशस कब आजाद हुआ?

(अ) 1958 ई.। (ब) 1959 ई.। (स) 1966 ई.।

उत्तर - (ब) 1968 ई.।

4. मलेशिया की करेंसी क्या है?

(अ) रिंग्गित (ब) मलेशियन दिनार। (स) डॉलर।

उत्तर - (अ) रिंग्गित।

5. मॉरीशस की राष्ट्रीय भाषा क्या है?

(अ) मॉरीशस स्रेओले (ब) फ्रेंच (स) अंग्रेजी

उत्तर - (स) अंग्रेजी

बदलाव

इस कदर बदलाव होगा गाँव में सोचा न था।
धूप सा संताप होगा छाँव में सोचा न था।।
जिन्दगी ईमान की जीना कठिन हो जायेगा।
यों चुभेंगे शूल सच के पाँव में सोचा न था।।

सच होंगे सपने

-निमिष श्रीवास्तव
दशम 'ख'

क्या आप जानते हैं कि नोबल प्राइज़ तथा ओलंपिक खेलों में क्या समानता है? हमारा देश दोनों में ही अपना खाता खोलने के लिए तरसता है। एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ सबसे कि क्या कभी किसी के माता-पिता ने उसके नोबेल प्राइज जीतने का सपना देखा है? आम तौर पर आपने सभी के माता-पिता से यही सुना होगा कि मेरा बेटा बड़ा होकर आईएएस बने या आईआईटी में सेलेक्ट हो जाये अगर कोई और खुश हो गया तो कहेंगे गवर्नर बनेगा। और फिर इन्हीं सपनों के साथ हम बड़े होते हैं। जो सफल होते हैं उन्हें सोसाइटी में सफल व्यक्ति का तमगा मिल जाता है फिर पैसा कमाने की जल्दी परिवार, बच्चे, बच्चों की शादी और सारा जीवन बीत जाता है। शायद हम सबका ही बचपन का कोई न कोई सपना होता है जो कि पूरे जीवन चक्र की गंभीरता में कहीं खत्म हो जाता है। कल दो ४०-५० साल के दोस्तों की बात सुनी। एक ने दूसरे से कहा "यार। तुम बचपन में फिजिक्स में इतने अच्छे थे कि हमलोग सोचते थे कि बड़े होकर तुम नोबेल पुरस्कार पाओगे।" यह संवाद सुनकर लगा कि क्या हम भी कभी ऐसा सोचते थे?

आपने कई बार सुना होगा कि भगदड़ में सौ-दो सौ लोग कुचल गये। अगर उन लोगों से पूछो कि आप क्यों दौड़ रहे हैं? तो वो बोलेंगे कि आगे वाला भाग रहा है इसलिए हम भी भाग रहे हैं। यही हाल है हमारे समाज का। हम वही करना चाहते हैं कि जो कि हमारे आस पास के लोग कर रहे हों।

हम अपने बच्चों के लिए कभी ये नहीं देखते कि इस खास सबजेक्ट में अच्छा है इसलिए यही करेगा। फिर वो नोबेल प्राइज जीतने का सपना कैसे देख सकता है? सही मायने में हम उसे एक जॉब करने वाला इंसान बनाना चाहते हैं चाहे इसके लिए सिविल सर्विसेज की परीक्षाएँ हों या फिर एक अच्छे संस्थान से एक डिग्री। इस तरह हम उनके सपने एक आइडियल जॉब तक सीमित कर देते हैं। पर एक संघर्ष करता मिडिल क्लास व्यक्ति जॉब से ऊपर उठकर सोचे भी तो कैसे? रोटी, कपड़ा, मकान के आगे आखिर हमें नोबेल दिखे भी तो कैसे? लेकिन थोड़ी-सी ही सही परंतु यह सोच बदलनी ही पड़ेगी। हम न तो इंफ्रास्ट्रक्चर सुधार सकते हैं और न ही संस्थाओं में रिसर्च का माहौल बना सकते हैं। पर चैम्पियन बनने के लिए उन्हें उनके इंट्रेक्ट को फ़ालो करने की आजादी तो दे ही सकते हैं। फिर वह अपना करियर खुद-ब-खुद बना लेंगे। छोटे शहरों में नहीं परन्तु बड़े शहरों में इसकी नींव तो पड़ ही चुकी है। एक बड़े इंसान के लिए सपने और लक्ष्यों की कोई सीमा नहीं होती।

भ्रम

-विनायक त्रिपाठी
नवम 'ख'

एक जर्मन यात्री घूमते हुए नीदरलैण्ड की राजधानी एमस्टर्डम पहुँचा। वहाँ उसकी नज़र एक बहुत सुन्दर इमारत पर पड़ी। वह बड़े आश्चर्य से उस इमारत को देखने लगा। उसने पास से गुजरते हुए एक आदमी से पूछा, क्या आप बता सकते हैं कि यह इमारत किसकी है? वह आदमी जर्मन भाषा से बिल्कुल परिचित नहीं था। वह इससे उतना ही अन्जान था, जितना कि जर्मन यात्री डच भाषा से। उस आदमी ने जवाब में 'कैन्निटवर्स्टन' कहा और चला गया। 'कैन्निटवर्स्टन' डच भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता आप क्या कह रहे हैं, मैं समझा नहीं। लेकिन जर्मन यात्री ने समझा कि उस इमारत के मालिक का नाम 'कैन्निटवर्स्टन' बताया है। अतः वह घूमते-घूमते एक समुद्री मुहाने पर पहुँचा। वहाँ समुद्र में उसे कई जहाज नज़र आए। एक जहाज से बहुत सी टोकरियाँ और बोरियाँ उतारी जा रही थीं। उसने टोकरी ढोने वाले मजदूर से पूछा, यह सारा सामान किसका है? मजदूर भी जर्मन भाषा नहीं जानता था, उसने जल्दी में बोला कैन्निटवर्स्टन। यह सुनकर जर्मन यात्री ने सोचा यह कितना अमीर है। मैं भी बहुत अमीर बनूँगा। अमीर बनने का ख्वाब देखते हुए वह बढ़ रहा था कि तभी उसे सामने से अर्थी आती दिखाई दी। उसने सिर से टोपी उतारी और एक किनारे खड़ा हो गया। कुछ क्षणों के बाद जब अर्थी उसके पास से गुजरी, तो एक आदमी को रोककर पूछा, यह किसकी अर्थी है? उस आदमी ने जवाब दिया 'कैन्निवर्स्टन' और आगे बढ़ गया। जर्मन यात्री की आँखों में आँसू छलक आए। वह दुःखी होकर सोचने लगा, अब कैन्निवर्स्टन के लिए इतनी सारी सम्पत्ति का क्या महत्व रह गया। मैं भी बहुत अमीर बनकर क्या करूँगा? आखिर मरने के बाद मेरे साथ भी केवल एक कफन ही जाएगा।

चिन्तन

-शिव कुमार
पंचम

1. सर्वोत्तम दिन = आज।
2. सबसे उपयुक्त समय = अभी।
3. सबसे बड़ी भूल = समय की बर्बादी।
4. सबसे भाग्यशाली व्यक्ति = जो अपने काम में जुटा हो।
5. सबसे बड़ी बाधा = अधिक बोलना।
6. सबसे बड़ा दिवालिया = जिसने उत्साह खो दिया हो।
7. सबसे खतरनाक = आलस्य।
8. सबसे बड़ी आवश्यकता = सामान्य ज्ञान।
9. सबसे बुरी भावना = ईर्ष्या।
10. सबसे सरल काम = दूसरों की गलतियाँ निकालना।
11. सबसे बड़ी उपलब्धि = प्रसन्न रहना।

क्रियासिद्धिः सत्वे भवति

-अभिजीत मिश्र
नवम 'क'

महाराज भोज बड़े ही रसिक एवं कविहृदय थे। विद्वानों के लिए उनके द्वार सदैव खुले रहते थे। उनकी काव्य प्रतिभा से प्रभावित हो, महाराज उन्हें विपुल धन देकर उनका यथोचित सम्मान करते थे।

एक बार उनके दरबार में एक वृद्ध ब्राह्मण अपनी पत्नी, पुत्र तथा स्नुषा (पुत्रवधू) के साथ आया। उन चारों के मुख से विद्वत्ता की आभा टपक रही थी। महाराज ने उन्हें समस्या पूर्ति के लिए चरण दिया- 'क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे'। और उनसे कहा कि उनमें से जो कोई भी इसकी अच्छी समस्यापूर्ति करेगा, उसे एक लाख मुहरें दी जायेंगी।

'सर्वप्रथम वृद्ध ने सूर्य का उदाहरण देते हुए यह श्लोक पढ़ा :-

रथस्यैकं चक्रं भुजगयमिताः सप्ततुरगाः
निरालम्बो मार्गश्चरणविकलः सारथिरपि।
रविर्गच्छत्यन्तं प्रतिदिनमपारस्य नभसः
क्रियासिद्धिः सत्वे भवति महतां नोपकरणे।।

-अर्थात् "सूर्य के रथ का पहिया एक ही है, रथ के सातों घोड़ों को वश में रखने के लिए साधन सर्पों की रास है, जिस मार्ग पर वह चलता है, उसका कोई अवलम्ब नहीं है, उसका सारथि अरुण पंगु है। इन सब बाधाओं के होते हुए भी सूर्य प्रतिदिन आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक गमन करता है। इससे सिद्ध होता है कि महान् पुरुषों की सिद्धि उनके पराक्रम पर निर्भर करती है, बाह्य उपकरणों पर नहीं। श्लोक सुनकर राजा भोज बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने विप्र पत्नी से कहा, "माता जी, क्या आप भी समस्या पूर्ति करेंगी।"

विप्र पत्नी ने हामी भरी तथा यह श्लोक सुनाया -

घटो जन्मस्थानं मृगपरिजनो भूर्जवसनो
वने वासः कन्दाशनमपि च दुःस्थं वपुरिदम्।
तथाप्येकोऽगस्त्यः सकलमपिबद् वारिधिजलं
क्रियासिद्धिः सत्वे भवति महतां नोपकरणे।।

-"अगस्त्य मुनि का जन्म घड़े में हुआ हरिण उनके परिजन थे और वृक्षों के वल्कल उनके वस्त्र। वन में उनका वास था और कंद-मूल फल उनका आहार। फिर भी समूचे समुद्र को उन्होंने अकेले ही पी डाला। इससे सिद्ध होता है कि महान् पुरुषों की सिद्धि उनके पराक्रम पर निर्भर करती है, बाह्य उपकरणों पर नहीं।

जब विप्र - पुत्र की ओर राजा ने देखा तो उसने निम्न लिखित श्लोक पढ़ा -

विजेतया लंका चरणतरणीयो जलनिधिः
विपक्षः पौलस्त्योः रणभुवि सहायाश्च कपयः।

तथाप्येको रामः सकलमवधीद्राक्षसकुलं
क्रियासिद्धिः सत्वे भवति महतां नोपकरणे।।

-लंका को जीतना था, किन्तु उसके लिए विशाल समुद्र को पार करना था और उस पार कोई सेतु नहीं था। रावण-जैसा बलाढ्यशत्रु था और रणभूमि में सहायक थे वानर। ऐसी विषम परिस्थितियों में श्रीराम ने सम्पूर्ण राक्षसकुल का नाश किया। इससे सिद्ध होता है कि महान पुरुषों की सिद्धि, उनके पराक्रम पर निर्भर करती है, बाह्य उपकरणों पर नहीं।

तब महाराज ने विप्र स्नुषा से पूछा, "देवि! क्या आप भी अपनी प्रतिभा का परिचय देंगी?" तब उसने यह श्लोक पढ़ा -

धनुः पौष्पं मौर्वी मधुकरमयी चंचल दृशां
दृशां कोणो बाणः सुहृदपिजडात्मा हिमकरः।
तथाप्येकोऽनंगस्त्रिभुवनमपि व्याकुलयति
क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे।।

-कामदेव का धनुष पुष्पों का है, उसकी प्रत्यंचा भौंरों की है और बाण लोहे के नहीं बल्कि चंचल कामिनियों की तिरछी चितवनों से बने हैं। उसका सखा चंद्रमा जड़ एवं शीतल है। फिर भी यह अंगहीन कामदेव सारे त्रिभुवन को व्याकुल कर देता है। स्पष्ट है कि महापुरुषों की सिद्धि उनके पराक्रम पर निर्भर करती है, बाह्य उपकरणों पर नहीं।

चारों की काव्य रचना से भोज बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने प्रत्येक को एक लक्ष मुद्रा देकर उनका सम्मान किया।

कवि श्रीपति

कवि श्रीपति निर्धन थे, मगर निर्भीक और आत्मसम्मानी थे। भिक्षा में जो कुछ पाते, उसी से अपना जीवन निर्वाह करते थे। पत्नी गरीबी से त्रस्त हो चुकी थी। उसने अकबर की प्रशंसा सुनी, तो पति को उनके पास भेजा। उनकी भक्तिपरक रचनाओं से बादशाह सन्तुष्ट हो गया और उसने उन्हें अपने दरबार में रख लिया। उनकी उत्कृष्ट रचनाओं को सुन बादशाह प्रसन्न हो उन्हें अपने दरबार में उचित इनाम देता। इससे कुछ मुसलमान कवियों को श्रीपति से ईर्ष्या हुई। उन्होंने सोचा कि यह व्यक्ति हमेशा भगवान के ही गुण गाता है, स्वयं बादशाह का बखान कभी नहीं करता, इसलिए इसे नीचा दिखाया जाय। एक दिन उन्होंने दरबार में समस्या पूर्ति के लिए यह पंक्ति दी - "करो मिल आस अकबर की।"

अन्य कवियों ने इस पंक्ति को लेकर अकबर की प्रशंसा में पुल बाँध दिये। अब बारी श्रीपति की थी। यह बात उन जैसे भगवद्भक्त के उसूल के खिलाफ थी। उन्होंने निर्भीकता से निम्न कवित्त कहा-

अब के सुल्तान फनियान समान हैं,
बाँधत पाग अयब्बर की।
तजि एक को दूसरे को जू भजे,

जीभ गिरै वा लब्बर की।।
सरनागति श्रीपति' रामहिं की,
नहिं त्रास है काहुहि जब्बर की।
जिनको हरि मा परतीति नहीं,
सो करौ मिलि आस अकब्बर की।।

उनसे द्वेष करने वालों ने सोचा था कि आज तो श्रीपति को बादशाह की चापलूसी करनी पड़ेगी, मगर यह कवित्त सुनते ही उन्हें निराशा हुई वहीं दूसरी ओर भगवत्प्रेमी दरबारी मन ही मन प्रसन्न हो गये।

विज्ञान पहेलियाँ

-विमलेश कुमार
नवम 'ख'

1. हवा की दिशा झट बतलाता,
कहो, यन्त्र वह क्या कहलाता?

2. अन्धकार है दूर भागता,
यह प्रकाश की माया।
सबसे पहले इसकी गति का
किसने पता लगाया?

3. तारपीन का तेल
कहाँ से पाते?
झट उत्तर दो,
सर क्यों हो खुजलाते?

4. कहो यह कमाल क्यों,
खून का रंग लाल क्यों?

5. रोग साध्य है टी. बी.
उसका झट उपचार कराओ,
किसने इसके बैक्टीरिया को
खोजा, नाम बताओ।

6. आविष्कार टोरी सेली का
बैरोमीटर न्यारा।
इससे क्या नापा करते हैं?
बूझो प्रश्न हमारा।

7. 'इन्सुलिन को खोज मिला
एफ. बैटिंग को सम्मान
इन्सुलिन से किस बीमारी
का होता समाधान

8. पर्यावरण शुद्ध करने की
खातिर पौध लगाओ।
सर्वोत्तम जो भाग पौध का
उसका नाम बताओ।

उत्तर - विज्ञान पहेली

1. एनिमोमीटर
2. रोमर
3. चीड़ के पेड़ से
4. हीमोग्लोबिन के कारण
5. रॉबर्ट कोच
6. वायुमण्डल का दाब
7. मधुमेह
8. जड़

सौभाग्य - दुर्भाग्य

-आर्यन दीक्षित
नवम 'ख'

हर एक राही अन्जान है, किसी भी व्यक्ति को अपना भविष्य पता नहीं होता। वो अन्जान राह पर चलता है। वो रास्ता तो चुन लेता है पर उसे पता नहीं होता कि वो रास्ता कहाँ तक जाएगा। लेकिन एक रास्ते पर सभी को चलना पड़ता है जिन्दगी के रास्ते पर, आने वाले कल के रास्ते पर। जिन्दगी का रास्ता तो बड़ा लम्बा है पर पता नहीं अन्जान राही का उस रास्ते पर किस हादसे से सामना हो जाए और उसका सफर वहीं थम जाए। जिन्दगी की राह में मोड़ होने की शंका सभी को होती है कुछ की ये शंका हकीकत में बदल जाती है और किसी की शंका बनकर ही नष्ट हो जाती है और किसी की शंका बनकर नष्ट हो जाती है। उदाहरण के लिए दो व्यक्ति थे दोनों की लाटरी लग गयी। दोनों व्यक्ति बड़े खुश थे एक व्यक्ति की 50 हजार की तथा दूसरे की एक लाख की। अगले दिन उन्हें इनाम मिलना था। रात हुई, दोनों व्यक्ति अपनी झोपड़ी के बाहर बैठे थे अचानक तूफान आ गया। दोनों व्यक्ति झोपड़ी के अन्दर दौड़े अचानक 1 लाख की लाटरी लगने वाले व्यक्ति की झोपड़ी पर बड़ा सा पेड़ गिर गया। आदमी वहीं दब कर मर गया। उसकी राह वहीं खत्म हो गयी। और दूसरे व्यक्ति को अगले दिन ईनाम मिल गया। उसकी शंका हकीकत में बदल गयी। पर उसकी शंका तो शंका बनकर ही मिट गयी। ये जिन्दगी का एक मनचाहा सच है, जिसे लोग न मानकर भी मानने को मजबूर होते हैं।

गाय का महत्त्व

-पवन प्रकाश पाण्डेय
एकादश 'ख'

आज भारतीय समाज में हिन्दुओं के प्रतीकों पर कुठाराघात हमारी सरकार द्वारा किया जा रहा है। इसके प्रमुख निम्नलिखित तथ्य हैं -

हमारी गौ माता को राष्ट्रीय प्राणी घोषित न करना -

हमारा पूरा हिन्दू समाज गाय को माता समान प्यार देता है। हम लोग उसकी पूजा करते हैं। गाय को सीधा तथा नम्र स्वभाव का माना जाता है, तो फिर राष्ट्रीय प्राणी क्यों नहीं घोषित किया जा रहा है? यह सरासर भारतीयों का अपमान है।

गाय हमारे शरीर को पौष्टिक आहार (अपना दूध) प्रदान करती है। गाय से दोनों तरफ से लाभ ही लाभ हैं। गाय से उत्पन्न बच्चे जो आगे चलकर बैल का रूप प्राप्त करते हैं, जो हमारे कृषि कार्य के लिए सबसे प्रमुख साधन हैं। जिसके द्वारा खेतों में जुताई करके अन्न उत्पन्न किया जाता है।

आजकल लोग वैज्ञानिक तकनीक से ट्रैक्टर या अन्य मशीनों से जुताई करते हैं। लेकिन बैल सबसे पहला तथा प्रमुख आधार है। आज भी निर्धन श्रेणी के लोग जिनके पास ज्यादा धन तथा खेती नहीं है, वे बैलों का ही प्रयोग करते हैं।

इसलिए गाय को राष्ट्रीय प्राणी घोषित ही करना चाहिए।

मेरा क्या अपराध था

-आर्यन दीक्षित
नवम 'ख'

क्यों ठुकरा देते हैं लोग लड़कियों को, क्यों कर दी जाती है उनकी हत्या। अरे! जिसे हम माँ दुर्गा, माँ काली यहाँ तक कि लक्ष्मी का साक्षात् स्वरूप समझते हैं, उसके जन्म होने पर अपने को अभागा समझते हैं, उसकी हत्या की युक्ति बनाते हैं। धिक्कार है उन लोगों को जो कन्या के जन्म पर हर्षित होने की जगह शोकाकुल हो जाते हैं। ऐसी ही एक कन्या की कहानी यहाँ प्रस्तुत है। वह कन्या शायद इस तरह सोचती होगी -

मैं बहुत खुश थी। मेरे गर्भ में पहुँचते ही चारों तरफ़ मधुर गीतों की बौछारें होने लगीं। जिस घर में मैं जन्म लेने वाली थी वह घर खुशी से झूम रहा था। मैं भी बेचैन थी गर्भ से बाहर आने के लिए। आखिर वो समय आ गया, मैंने गर्भ योनि से बाहर कदम रखा। मैं बड़ी खुश थी। घर में खबर आग की तरह फैल गयी कि बेटी हुई है। मेरी एक बड़ी बहन थी वो चार वर्ष की थी। मेरी नजर मेरे दादा-दादी तथा पिताजी पर पड़ी। दादी-दादी तथा पिताजी की आँखों में आँसू थे। मैं समझी ये खुशी के आँसू हैं पर जल्द ही मेरा यह वहम दूर हो गया। दादी, माँ पर बुरी तरह बरस पड़ीं - मनहूस कहीं की। फिर से लड़की पैदा कर दी। फिर दादी पिताजी से बोलीं खड़े क्या हो जाओ इसे कूड़े के डिब्बे में फेंक दो। इतना सुनना था कि मेरे तो प्राण ही उड़ गए। कितने सपने लेकर मैंने जन्म लिया था, सारे स्वप्न टूट कर बिखर गए। मैं कूड़े के ढेर में फेंक दी गयी। कुछ जंगली कुत्तों को ताजे मांस की महक लग गयी। उन्होंने मुझे नोंच-नोंच कर खाना शुरू किया। मैं रो जरूर रही थी, पर मुझे उतना दर्द न हो रहा था जितना तब हुआ था जब मुझे अपनों के द्वारा ठुकराया गया था। मैं ऊपर भगवान जी के पास पहुँची और पूछा - "मेरा क्या अपराध था।"

असामान्य सहन शक्ति

-शुभम त्रिपाठी
नवम 'ख'

नागपुर में इण्टर की शिक्षा पूरी होने के बाद माधवराव 1924 में बी.एस-सी. की पढ़ाई के लिए देश के प्रख्यात काशी हिन्दू विश्व विद्यालय चले गये। उनकी ज्ञान पिपासा का शमन करने के लिए मानो वहाँ के ग्रन्थालय में बहुमूल्य ग्रन्थों का विपुल भण्डार राह देख रहा था। वहाँ जाकर माधवराव एकाग्रचित्त से एक के बाद एक पुस्तक पढ़कर समाप्त करते थे, एक दिन उनके पैर के अँगूठे में बिच्छू ने काट लिया परन्तु माधवराव उस भाग को थोड़ा सा काटकर पोटैशियम परमैग्नेट के पानी में पैर रखकर पढ़ने में पूर्ववत् तल्लीन हो गये। उनके एक मित्र ने आश्चर्य चकित होकर पूछा - "इस भयानक दर्द के बीच में आपने पढ़ाई कैसे जारी रखी है?" तब माधवराव ने सहजता से उत्तर दिया - बिच्छू ने पैर में काटा है सिर में तो नहीं! आगे भी चलकर कई बार भयानक पीड़ा को भी उनके द्वारा शांत चित्त से सहन करने के दृश्य लोगों ने देखे हैं।

प्रथम स्वाधीनता संग्राम

-दिव्यांशु मिश्र
नवम 'ख'

1857 ई. की क्रान्ति भारत के इतिहास की अद्वितीय एवं अविस्मरणीय घटना है क्योंकि जिस कुटिलता से अंग्रेजों ने 1757 ई. में प्लासी का मैदान मारा। उन्हीं अंग्रेजों को 1857 ई. में शताब्दी समारोह के स्थान पर उसके शोकान्त की तैयारी करनी पड़ी। क्रान्ति के 150 वर्ष बाद यह सिद्ध हो चुका है कि यह भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था, जिसके कारण तात्कालिक कारणों से पूर्व रोपित हो चुके थे। अंग्रेजों की अमानुषिक दरिन्दगी का पहला प्रतिकार 1806 ई. का वैल्लोर विद्रोह था, जिसमें अंग्रेजों द्वारा भारतीय सिपाहियों को अपने-२ धार्मिक प्रतीकों को छोड़ने का फरमान जारी किया गया। आँग्ल-वर्मी युद्ध जिसमें समुद्र पार जाने का आदेश था। भारतीयों ने अपने धर्म पर कुठाराघात समझा तथा अतिरिक्त वेतन भत्ता देने की वचन भंगता के चलते सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। 1820 ई. से 1836 ई. तक ब्रिटिश राज्य के छोटा नागपुर के कोल वनवासियों ने अस्त्र उठाये तो बिहार भागलपुर जनपद के इलाके की संथाल जाति का संघर्ष सिद्ध तथा कान्हू नामक संथाल वीरों के नेतृत्व में लगभग 60 हजार संथाल अपने पारम्परिक तीर कमान के साथ मैदान में उतरे। अंग्रेजी राज्य की स्थापना के 100 वर्ष के अन्तराल में लगभग तीन दर्जन विद्रोह हुए जो इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि भारतीयों का तन गुलाम था, मन नहीं।

उपर्युक्त विद्रोह, विरोध और असंतोष 1857 ई. की क्रान्ति के लिए आधारशिला तो बना ही साथ ही अंग्रेज अधिकारियों के बढ़ते अत्याचारों, दमन तथा लार्ड वेलेजली, लार्ड डलहौजी की क्रूरता तथा राज्यों के विलीनीकरण ने आग में घी का काम किया। 1857 ई. के क्रान्ति के तथ्य की पड़ताल करें तो हम पाते हैं कि राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक चार पायदान थे जिस पर आरूढ़ होकर क्रान्ति की ज्वाला धधक उठी।

डलहौजी की 'गोद निषेध' की तलवार निःसंतान मरे भारतीय राजाओं के राज्य पर गिरी तो अवध के राज्य को कुशासन का आरोप लगा कर उदरस्थ कर लिया। मुगलिया सल्तनत के बुझते चिराग तथा भारतीय जनता की आस बहादुरशाहशाह जफर के साथ दुर्व्यवहार राजनीतिक हथियार बना। वहीं मराठों के अन्तिम पेशवा हिन्दू पद-बादशाही के टिमटिमाते दीपक नानासाहब की पेंशन समाप्ति तथा जागीर से बेदखली क्रान्ति के निर्माण में मजबूत राजनीतिक आधार बने।

अपने सभ्य तथा भारतीयों को सभ्यता की सीख देने तथा अन्धविश्वास एवं धर्मान्धता को दूर करने का दम्भ भरने वाले स्वयं कितना अन्धविश्वास में डूबे थे। इसका प्रमाण देखने के लिए १९वीं शताब्दी के मध्य तक ग्रेट ब्रिटेन के कैथोलिकों और उनकी महिलाओं के साथ कैसा बर्ताव किया जाता था, चीत्कार करता हुआ कैथोलिक समाज बूटों से रौंदा जाता था। महिलायें समुद्र तटीय बालू में खूँटे गाड़कर बाँध दी जाती थीं ताकि वे समुद्र की लहरों का उदर भरण करें। काश! राजा राममोहन राय ने अपने आदरणीय ब्रिटिश राज्य की कैथोलिक जनता के अमानवीय उत्पीड़न पर दृष्टिपात किया होता तो उन्हें सतीप्रथा की विभीषिका की आँच इतना तप्त नहीं करती। 1920 ई. तक ब्रिटिश संसद का द्वार कैथोलिकों के लिए अभेद्य था फिर भी वह जनतंत्र की जननी देश था।

अंग्रेजों का संकल्प था कि जब तक यह देश कन्या कुमारी से हिमालय तक ईसा के धर्म का आलिंगन नहीं करता, जब तक यह देश हिन्दू और मुस्लिम धर्मों को तिरस्कृत नहीं कर देता तब तक हमारा प्रयास जारी रहना चाहिए।

तात्कालिक तथ्य सेना में प्रयुक्त चर्बीयुक्त कारतूस ने आग में घी का काम किया और जिसके चलते इसे सैनिक विद्रोह से विभूषित किया गया। जब कि वास्तविकता यह थी कि जन असंतोष अंदर ही अंदर व्याप्त हो चुका था। वह तो सैनिकों का उबाल ही था जो क्रान्ति की असफलता का कारण बना। अन्यथा जिस प्रकार की योजना बनी थी, उस योजना पर कार्य हुआ होता तो भारत १०० वर्ष पूर्व आजाद हो गया होता। क्रान्ति के स्वरूप पर जो लोग विवाद उत्पन्न करते हैं, उनके लिए १८५७ ई. के एक अखबार पयामे आजादी जिसके सम्पादक वेदार बख्त थे- में प्रकाशित यह गीत स्वतंत्रता संग्राम की व्यापकता और संकल्पबद्धता को सिद्ध करता है -

आये फिरंगी दूर से ऐसा मन्तर मारा।
लूटा दोनों हाथों से न्यारा वतन हमारा।।
आज शहीदों ने तुमको अहले वतन पुकारा।
तोड़ो गुलामी की जंजीरें बरसाओ अंगारा।।
हिन्दू-मुस्लिम सिक्ख हमारा भाई-२ प्यारा।
यह है आजादी का झण्डा इसे सलाम हमारा।।

मेरे द्वारा जो तथ्य प्रस्तुत किये गये हैं वे तार्किक होने के साथ-साथ प्रमाणिक भी हैं फिर भी मैं मानता हूँ कि कारण कुछ भी रहे हों, भारतीय सैनिकों ने जिस प्रकार से भारत माता की स्वतंत्रता के लिए क्रान्ति की चिंगारी जलायी वह अंततः ज्वाला बनकर अंग्रेजों की चिता बनी और उन्हें देश छोड़कर जाना पड़ा। आज हमारा देश स्वतंत्रता के मुक्त आकाश में विचरण करता हुआ विश्व के मानचित्र पर महाशक्ति बनकर उभर रहा है। जिनके कारण यह सब सम्भव हुआ, उन क्रान्तिवीरों को मेरा शत् शत् नमन्।

अमर वाणी

-हर्षित मिश्र
पंचम

1. कान की शोभा शास्त्र-श्रवण से है। हाथ की शोभा दान से है। **-भर्तृहरि**
2. आवत हिय हरषै नहीं, नैनन नहीं सनेह तुलसी तहाँ न जाइये कंचन बरसैं मेह। **-तुलसीदास**
3. जो मिट्टी से सोना बनाते हैं, वे व्यवहारकुशल हैं। **-डिगराइली**
4. जो पतितों और दुर्बलों के पक्ष में बोलते हुए भयभीत होते हैं, वे दास हैं। **-लावेल**
5. आचरण एक श्वेत कागज के समान है। एक बार मैला हो जाने पर इसका पूर्ववत उज्ज्वल होना कठिन होता है। **-जे हविज**

दोस्ती

-देवप्रिय मधुकर
नवम 'ख'

'दोस्ती' दोस्ती एक ऐसा शब्द है जो सभी के दिलों में बसता है। कोई भी व्यक्ति बिना दोस्त के रह नहीं सकता। किसी ने कहा भी है -

दोस्ती शायद जिन्दगी होती है,
जो हर दिल में बसती है।
जी लेते हम सभी इसके बगैर,
फिर भी इसकी जरूरत, हम सभी को होती है।।

कहते हैं सच्चा दोस्त वही होता है जो सुख-दुःख सभी में साथ दे। सुख में खुशी दे और दुःख में सान्त्वना। एक सच्चा दोस्त इससे ज्यादा क्या माँगे -

रब से तुम्हारी खुशी माँगते हैं,
दुआओं में तुम्हारी हँसी माँगते हैं,
सोचते हैं क्या माँगें हम आपसे
चलो उम्र भर की दोस्ती ही माँगते हैं।

दोस्त वो होता है जो हर समय अपने दोस्त की सलामती चाहे। उसके अहित में भी उसका हित खोजे। दोस्त के लिए कुरबाँ होने तक की तमन्ना रखे।

दुआ करते हैं हम सर झुका के
ऐ दोस्त तू अपनी मंजिल को पाए,
कभी तेरी राहों में अँधेरा जो आए,
रोशनी के लिए खुदा हमें जलाए।

हे ईश्वर! अगर दोस्त सही में ऐसे हों तो हर व्यक्ति को दुःख के समय भी सुख का अनुभव हो। एक बार रब मेहरबान था सबको मुँह माँगी वस्तु दे रहा था। रब ने मुझसे माँगने को कहा तो जानते हैं मैंने क्या माँगा -

चाँद ने रब से चाँदनी माँगी,
सूरज ने रब से रोशनी माँगी,
रब ने जब हमसे पूछा तो हमने कोई दौलत नहीं,
एक अच्छे इंसान की दोस्ती माँगी।

प्रेरक व्यक्तित्व स्वामी विवेकानन्द

-अनुराग त्रिपाठी
नवम 'ख'

सम्पूर्ण भारतवर्ष में विवेकानन्द की जयन्ती 12 जनवरी को 'राष्ट्रीय युवा दिवस' के रूप में मनाई जाती है। वास्तव में, अपने प्रेरणादायी शब्दों से युवकों को नई राह दिखाने के कारण स्वामी विवेकानन्द आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। आइए जानते हैं युवकों से कहे गए स्वामी जी के कुछ 'अनमोल' वचन-

भारतीय धर्म दर्शन का वास्तविक स्वरूप और किसी भी देश की अस्थिमज्जा माने जाने वाले युवकों के कर्तव्यों का रेखांकन कर स्वामी विवेकानन्द सम्पूर्ण विश्व के 'जननायक' बन गए। कोलकाता के नरेन्द्रनाथ अपनी साधना, ज्ञान और अथक मेहनत के बलबूते पर ही स्वामी विवेकानन्द के रूप में सम्मानित हुए। यह सच है कि बिना गुरु के आशीर्वाद के शिष्य का युग-प्रवर्तक बनना संभव नहीं है। ठीक उसी प्रकार, रामकृष्ण परमहंस के साहचर्य में ही स्वामी जी एक महान दार्शनिक और ओजस्वी वक्ता बन सके। अपने जीवनकाल में स्वामी विवेकानंद ने न केवल पूरे भारतवर्ष का भ्रमण किया बल्कि लाखों लोगों से मिले और उनका दुःख दर्द भी बाँटा। इसी क्रम में हिमालय के अलावा, वे सुदूर दक्षिणवर्ती राज्यों में भी गए, जहाँ उनकी मुलाकात गरीब और अशिक्षित लोगों से भी हुई। साथ ही साथ धर्म संबंधित कई विद्रूपताएँ भी उनके सामने आईं। इसके आधार पर ही उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि जब तक देश की रीढ़ 'युवा' पीढ़ी अशिक्षित रहेगी, तब तक आजादी मिलना और गरीबी हटाना कठिन होगा। इसलिए उन्होंने अपनी ओजपूर्ण वाणी से सोए हुए युवकों को जगाने का काम शुरू कर दिया।

शिक्षा से अंतस हो प्रकाशवान

स्वामी विवेकानन्द शिक्षा को गरीबी, धार्मिक अज्ञानता आदि को समाप्त करने का महत्वपूर्ण औजार मानते थे। उनका कहना था, 'शिक्षा आपके मस्तिष्क को सूचना उपलब्ध कराने का स्रोत मात्र नहीं होना चाहिए, बल्कि वह आपके चरित्र-निर्माण और सु-विचारों की संवाहक बनने में भी सहायक बने। साथ ही, आपको एक सामाजिक मानव बनने में भी आपकी मदद करे।' दरअसल शिक्षित होने से उनका तात्पर्य केवल डिग्रियाँ हासिल करने से न था, बल्कि आत्मा के सकारात्मक परिवर्तन से भी था। कहने का मतलब यही है कि यदि आप शिक्षित हैं, तो आपमें किसी भी बुराई के प्रति विरोध करने की क्षमता विकसित होनी चाहिए। आप ईर्ष्या-द्वेष से ऊपर उठकर परोपकार के कार्यों में संलग्न हों।

देश हित सर्वोपरि

भारत के स्वतंत्रता-संघर्ष के बारे में स्वामी विवेकानंद ने कहा था 'देश की आजादी की लड़ाई चंद लोगों तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए। इसके लिए देश भर से युवकों को आगे आना होगा, क्योंकि देश-सेवा से बढ़कर कोई कर्तव्य नहीं है। उनके अनुसार किसी भी देश में व्याप्त सामाजिक कुरीतियाँ तब तक समाप्त नहीं हो सकती, जब तक कि देश के युवा सामने न आएँ। यदि देशवासी धर्म और

विभिन्न समुदायों में बँटे होंगे, तो आजादी मिलनी कठिन हो जाएगी। इसलिए देश को एक सूत्र में बाँधने के लिए युवाओं को आगे लाना ही होगा। सच तो यह है कि युवकों को तमाम कठिनाइयों से पार पाते हुए जननायक बनने की कोशिश करनी ही होगी।

करें दूसरों की सहायता

विवेकानंद के गुरु स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने कहा था कि प्रत्येक जीव शिव का रूप है। इस उपदेश को आत्मसात् करते हुए स्वामी विवेकानन्द ने दरिद्रनारायण की सेवा, यानी गरीबों की सेवा से ही ईश्वर मिलते हैं, का सिद्धांत दिया। शिकागो विश्वधर्म महासभा में विवेकानन्द ने उपस्थित जनसमुदाय खासकर युवकों से अपील की, 'आपस में लड़े नहीं, बल्कि एक-दूसरे की मदद करें। 'विध्वंस नहीं निर्माण करें। 'मतभेदों' को भुलाकर भाईचारे के साथ रहें। "स्वामी जी के ये शब्द आज भी किसी देश की जनता के लिए प्रासंगिक हैं।

ईश्वर एक है

वर्ष 1898 में अल्मोड़ा में अपना व्याख्यान देते हुए स्वामी विवेकानन्द ने कहा था किसी भी व्यक्ति के रास्ते या विचार अलग हो सकते हैं लेकिन विभिन्न धर्मों के मानने वाले लोगों का लक्ष्य एक ही होता है - सर्वव्यापी ईश्वर से एकाकार। इसलिए दो समुदायों या समूहों में आपस की लड़ाई व्यर्थ है। इस प्रकार स्वामी जी ने देशवासियों से धर्म-सम्प्रदाय संबंधी मतभेदों को भुलाकर देश हित के लिए अपने प्राण न्योछावर करने का उपदेश दिया।

ओजस्वी वाणी

कोलकाता में 22 जनवरी, 1863 को तेजस्वी बालक नरेन्द्र का जन्म हुआ था। एक ओर, जहाँ नरेन्द्र को रामकृष्ण परमहंस जैसे गुरु का सान्निध्य मिला, तो वहीं दूसरी ओर नरेन्द्र जैसे शिष्य को पाकर रामकृष्ण धन्य हो गए। अपनी तीक्ष्ण प्रतिभा और अलौकिक आध्यात्मिक ज्ञान से ही वे नरेन्द्र से विवेकानन्द बन गये। 11 सितंबर, 1893 में स्वामी विवेकानन्द अमेरिका के शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन में पहुँचे, जहाँ उन्होंने भारत के वास्तविक स्वरूप, ज्ञान और हिंदू धर्म से संपूर्ण विश्व को अवगत कराया। स्वामी विवेकानन्द ने अपनी ओजपूर्ण वाणी से हमेशा भारतीय युवाओं को उत्साहित किया है। उनके उपदेश आज भी संपूर्ण 'मानव जाति' में शक्ति का संचार करते हैं। उनके अनुसार, किसी भी इन्सान को असफलताओं को धूल के समान झटककर फेंक देना चाहिए। तभी सफलता उनके करीब आती है। निराश और हताश युवकों के लिए स्वामी विवेकानन्द की आशावादी पंक्तियाँ प्रेरणास्रोत का काम करती हैं 'वास्तव में असफलताएँ हमारे जीवन का सौन्दर्य हैं। यदि हम हजार बार असफल होने के बावजूद सफल होने का प्रयास करते हैं, तो जीवन का सच्चा आनन्द हमें तभी मिलता है। जब-जब मानवता निराश एवं हताश होगी; तब-तब स्वामी विवेकानन्द के उत्साही, ओजस्वी एवं अनंत ऊर्जा से भरपूर विचार जन-जन को प्रेरणा देते रहेंगे और कहते रहेंगे - 'उठो जागो और अपने लक्ष्य की प्राप्ति से पूर्व मत रुको।"

महान विभूतियाँ

-आदित्य राज
नवम 'ख'

1. **अरस्तू** - यूनान के प्राचीन महान दार्शनिक और वैज्ञानिक, इन्होंने ज्योतिष शास्त्र, भौतिकी, काव्य शास्त्र, जीव विज्ञान, राजनीति, प्रशासन और तकनीकी तथा नैतिक विषयों पर लगभग 400 पुस्तकें लिखी। ये सिकन्दर के गुरू थे। पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने अनुसंधान और परीक्षणों में बहुत से सिद्धांत एवं निष्कर्ष निकाले।

2. **सर बेडेन पावले** - विश्व में स्काउटिंग के जन्मदाता माने जाते हैं। इनका जन्म सन् 1857 ई. में इंग्लैण्ड में हुआ। ये अंग्रेजी सेना के नायक थे। बालचर एवं गर्ल्स गाइड इनसे ही प्रारम्भ हुई।

3. **मार्टिन लूथर किंग** - अहिंसक अमेरिकी नीग्रो नेता के रूप में मान्य है। इन्होंने नीग्रो को नागरिक अधिकार दिलाने के लिए जीवन पर्यन्त संघर्ष किया।

4. **शोपेनहावर** - प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक, जिन्होंने उपनिषदों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और वेदान्त दर्शन की श्रेष्ठता प्रतिस्थाापित की।

5. **सी. एफ. एण्ड्रयूज** - (1870-1940) - महात्मा गाँधी के सहयोगी ब्रिटिश मिशनरी, जो भारत में सन् 1904 ई. में आये और यहीं रहकर भारत के नेताओं के साथ भारतीयों की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया, जिनके लिए इन्हें 'देशबन्धु' भी कहा जाता है।

6. **भगिनी निवेदिता** - स्वामी विवेकानन्द जी की प्रमुख ब्रिटिश शिष्या, जिसने रामकृष्ण मिशन के माध्यम से भारतीय अध्यात्म की पुनर्स्थापना, समाज जीवन के उत्थान एवं दरिद्र नारायण की सेवा व्रत का पालन करते हुए भारत में ही शरीर-त्याग किया। इनका पूर्वनाम नोबुल था।

7. **किरण बेदी** - संयुक्त राष्ट्र नागरिक पुलिस सलाहकार नियुक्त होने वाली प्रथम महिला थी।

8. **द्वारिकानाथ कोटनिस** (1910-1947) - प्रसिद्ध भारतीय युवा चिकित्सक, जो युद्ध-पीड़ित चीन में, एक मेडिकल मिशन 1938 में लेकर गये थे।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर

-आदित्य राज
नवम 'ख'

महाराष्ट्र में इनका जन्म 14 अप्रैल 1891 ई. में हुआ। इनकी माता भीमाबाई तथा पिता श्री रामजी सकपाल थे। माता-पिता ने उत्तम संस्कार दिए। अनेक प्रयास करके उच्च शिक्षण लिया। उच्च शिक्षा के लिए विदेश भी गए।

महाराष्ट्र के महार जाति में जन्म होने के कारण अपने समाज को पिछड़ेपन को देखकर उनको अतीव दुःख होता था।

महार एवं अन्य दलित जातियों की उन्नति के लिए उन्होंने जीवन पर्यन्त अत्यधिक परिश्रम किया।

वे भारत सरकार में नेहरू जी के मंत्रिमण्डल में कानूनमंत्री थे।

वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था इन्हें पसंद नहीं थी। 1965 ई. में विजयादशमी के पर्व पर इन्होंने अपने अनुयाइयों सहित बौद्ध धर्म धारण किया। इन्होंने क्रिश्चियन या मुसलमान धर्म को ग्रहण करना उचित नहीं समझा।

बौद्ध धर्म को धारण करने के बाद ज्यादा दिन जीवित नहीं रहे। उनकी ग्रंथ सम्पदा बहुत बड़ी है। मुम्बई में उनके साहित्य का बहुत बड़ा ग्रंथालय है। वह 'राजग्रह' नाम से प्रसिद्ध है। बौद्ध धर्म की दीक्षा उन्होंने नागपुर में ली। उस भूमि को दीक्षा-भूमि कहते हैं।

डॉ. अम्बेडकर को भारतीय संविधान का शिल्पी कहा जाता है।

इनकी मृत्यु 6 दिसम्बर, 1956 को अलीपुर रोड, दिल्ली में हुई।

विदेशी का स्थान

-राजर्षि सिंह गौतम
नवम 'ख'

एक बार स्वामी विवेकानन्द भाषण देकर बार-बार स्वदेशी वस्तु पर जोर दे रहे थे। उनके भाषण के बीच में ही एक विदेशी महिला बोली कि "आप स्वदेशी वस्तु पर बार-बार जोर दे रहे हैं परन्तु जूता तो आप विदेशी पहने हैं इसका क्या कारण है?" उत्तर में स्वामी जी ने कहा कि "यही तो मैं बताना चाहता हूँ कि विदेशी का स्थान कहाँ है।"

सफलता के रहस्य

-वैभव वरीश सिंह राठौर
नवम 'क'

"शुभ काम का आरम्भ अभी कीजिए, अभी इसी समय" -

यह एक सफलतम व्यक्ति का प्रेरक वाक्य है। जो व्यक्ति निरन्तर गाड़ी छूटने के बाद स्टेशन देर से पहुँचता है, जो किसी से मिलने का समय निश्चित कर देर से पहुँचता है। वह उन सभी व्यक्तियों के मन में संदेह उत्पन्न करता है, जो उस पर विश्वास रखते हैं। चाहे, भले ही वह ईमानदार हो, उसकी इच्छाएँ अच्छी हों पर उसका आलस्य रूपी दुर्गुण ही उसकी सारी अच्छाइयों पर पानी फेर देता है। कुछ व्यक्तियों की पदोन्नति नहीं होती। वे अपनी ईमानदारी का बढ़ा चढ़ाकर वर्णन करते हुए रोया करते हैं कि उनकी पदोन्नति नहीं की गयी और उनके साथ जुल्म किया जा रहा है, परन्तु वे अपने दोषों पर ध्यान नहीं देते। वास्तव में उनके ढीलेपन के कारण ही लोगों के विश्वास को ठेस पहुँचती है। इसलिए वे उनको बड़ा उत्तरदायित्व सौंपने का खतरा नहीं मोल लेते।

वास्तव में 'तुरन्त श्री गणेश' का विचार तब सार्थक होता है जब आय अपने पीछे के सभी पुल जला डालते हैं। तब आप ध्रुव निश्चय, अटूट संकल्प करते हैं कि भले ही कुछ भी कारण हो, भीषण बाधाएँ आयें। पीछे भागने का आप लालच नहीं करेंगे। सबसे बड़ी सफलताएँ उन्हीं के लिए बनी हैं, जो सबसे बड़ा खतरा उठाते हैं। जब व्यक्ति पीछे भागने के सभी पुल जला देता है। तब उनकी सामूहिक शक्तियों का मार्ग रोकने का साहस किसी में नहीं होता।

जो भी व्यक्ति एक-एक मिनट समय का पाबन्द होता है, उसके पास प्रत्येक काम के लिए औरों से दुगुना समय होता है। यही एक प्रमुख कारण है कि एक ही कक्षा के 47 विद्यार्थियों में से एक का स्थान प्रथम क्यों आता है।

आवश्यकता इस बात की है कि अपना मन इतना दृढ़ बनायें कि जो भी काम हाथ में लें, तो उसे पूरा करें। जब तक पूरा न हो जाए, तब तक चैन न लें। इस प्रकार आप अपने जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला सकते हैं जो आपके जीवन को आमूल बदल देगा।

नेपोलियन से एक बार प्रश्न किया गया।

"आपकी सफलता का रहस्य क्या है?"

"निरन्तर श्रम" उसका जवाब था।"

उसके जवाब में जबरदस्त दृढ़ता थी। अपने इसी संकल्प के कारण वह विश्व विजेता बना और आज इतिहास दोहराया जा सकता है। हम कठोर श्रम जारी रखें।

हम पूरे मन और पूरी शक्ति से काम लेंगे। सफलता आयेगी। कठोर श्रम करते हुए प्रतीक्षा तो करें।

भागो भूत आया

-रोहन शर्मा
नवम 'क'

धर्मपुरा छोटा-सा गाँव था। गाँव वाले मेल मिलाप से रहते थे। एक रात गाँव के कलुआ कुम्हार के घर चोरी हो गई। चोर की खोज की गई, मगर पता न चल सका, इससे पहले गाँव में कभी चोरी नहीं हुई थी। सभी हैरान! चोर कहाँ से आ गए? इसके बाद चोरियों की संख्या बढ़ती ही गई। रात के अंधेरे में चोरी करके चोर चले जाते हैं, कोई पकड़ नहीं पाया। गाँव वाले चिंतित हो उठे। चौपाल में पंचायत बैठी। तय किया, गाँव में एक पहरेदार रखा जाए। वह रात भर पहरा देगा तो चोर डर जायेंगे। मगर गाँव वालों में से कोई भी पहरेदारी के लिए तैयार न हुआ। चोरी से सभी डरते थे। उसी गाँव में साहसी मिलाप सिंह रहता था। मजबूत काठी वाला। सबको चुप देखकर उसने कहा "मैं दूँगा रात में पहरा। देखता हूँ चोर कैसे गाँव में घुसने की हिम्मत करते हैं।" गाँव वालों की मुराद पूरी हो गयी। उस दिन से मिलाप सिंह गाँव के मुख्य रास्ते पर अपनी झोपड़ी बनाकर रहने लगा। आधी रात हुई, जैसे ही दो चोरों ने गाँव में घुसने की कोशिश की, मिलाप सिंह ने उन्हें पकड़ लिया। जमकर पिटाई की। चोर गिड़गिड़ाने लगे तो उसने उसे छोड़ दिया। मिलाप सिंह की सख्त पहरेदारी से चोरियाँ बन्द हो गयीं। सब चैन की नींद सोने लगे, मगर चोरों की नींद हराम हो गयी। चोर मिलाप सिंह से बुरी तरह नाराज थे। एक रात मिलाप सिंह पहरा दे रहा था तभी कुछ आवाज आयी मिलाप सिंह ने कहा - "होशियार! खबरदार!! कौन है? इधर आ।" तभी एक वृद्ध मानव वहाँ आया और उसने कहा कि बेटा मैं अपनी बेटी के गाँव जा रहा था परन्तु बीच रास्ते में मेरी तबीयत खराब हो गयी। यह पोटली तुम मेरी बेटी के यहाँ पहुँचा दो। मिलाप सिंह ने इससे बेटी का पता पूछा और उस पोटली को उस वृद्ध व्यक्ति की बेटी के घर पहुँचाने चला गया। तभी चोर उससे बदला लेने के लिए आये और उसकी झोपड़ी के झाँककर देखा और सोचा कि वह सो रहा है अतः चोरों ने उसकी झोपड़ी को जला दिया। सुबह हुई गाँव वालों ने उसकी झोपड़ी को देखा जो जल रही थी। सबने सोचा कि मिलाप सिंह मारा गया। यह खबर पूरे गाँव में फैल गयी। वहाँ मिलाप सिंह गाँव का गया। जिसने उसे देखा।

वह चिल्लाकर भाग गया कि मिलाप का भूत आया। जिसने-जिसने उसे देखा यही कहता कि "भागो भूत आया"। मिलाप सिंह गाँव आया तो गाँव वालों ने भूत समझकर उसे भगा दिया। दुःखी होकर मिलाप सिंह एक तालाब के किनारे बैठ गया। उसने देखा कि चोर चोरी के सामान को एक पेड़ के नीचे छुपा रहे थे। मिलाप सिंह को देखकर चोर उसे भूत समझकर भाग गए। मिलाप के भूत की बात उसी वृद्ध मानव ने सुनी। उसने मिलाप सिंह की मदद करना उचित समझा और उसने गाँव वालों को सही बात बताई। गाँव वाले मिलाप सिंह को ढूँढ़ते हुए उसके पास पहुँचे। सभी लोगों ने उससे माफी माँगी और कहने लगे कि चलो हम आपके लिए झोपड़ी बना देते हैं। मिलाप सिंह बोला कि चोरों से इतना धन छुड़ाया है कि मैं अब महल बनवाऊँगा। इस प्रकार सम्मान के साथ मिलाप सिंह को गाँव लाया गया और सभी उसी प्रकार जीवन व्यतीत करने लगे।

Cl_2 का रहस्य

-पार्थ निगम
नवम 'ख'

मैं Cl_2 मेरी माता का नाम MNO_2 है तथा पिता का नाम HCl है। मेरा जन्म 1774 में हुआ। मेरी देखभाल शीले द्वारा की गई, 1777 में डेवी ने मुझे तत्त्व के रूप में स्वीकार किया। मैं 14 वर्ष की भी नहीं हुई थी कि मेरा विवाह डर्टी स्लेक लाइम के साथ किया गया, चूँकि उस समय बाल विवाह की प्रथा थी। शादी के तीन वर्ष पश्चात् मैंने एक पुत्र को जन्म दिया।

$$Ca(OH)_2 + Cl_2 \rightarrow CaCl_2 + H_2O$$

मेरा पुत्र विरंजक चूर्ण बड़ा ही होनहार निकला, डाक्टर भी उसका सम्मान करते हैं। वह मरीजों की देखभाल तथा कीटाणुओं को नष्ट करता है मेरा स्वभाव बहुत जहरीला है मैं अपने छोटे भाई जल से मिलने के बाद एक होकर 'क्लोरीन वॉटर' कहलाती है। क्रोध में आने पर मैं गला घोंट देती हूँ।

मैं एक बार हरी तथा पीली रंग की साड़ी पहनकर खूबसूरती लिये अपनी सहेली मेथेन के घर जा रही थी कि रास्ते में मि. सिम्पसन मिल गये वे मेरे अद्वितीय सौन्दर्य पर मुग्ध होकर मुझसे विवाह करना चाहते थे कि मेरी सहेली मेथेन आ गई। मैंने और मेरी सहेली ने तुरंत पैंतरा बदला तथा क्लोरोफार्म का निर्माण किया जिससे

$$CH_4 + 3\,Cl_2 \rightarrow CHCl_3 + HCl$$

मि. सिम्पसन बेहोश हो गये तथा अपने किये की सजा कई घंटे तक अचेतन अवस्था में भुगतते रहे। वे मेरी तथा मेरी सहेली की तरफ भूल से भी नहीं देखते हैं। यदि मुझे कोई अन्य गलत नजर से देखे तो मेरे क्रोध की सीमा बहुत अंतिम साँस तक है मैं युद्ध करने की शौकीन हूँ। मैं युद्ध में ल्यूसाइट के रूप में पहुँचकर दुश्मनों के छक्के छुड़ा देती है। मेरे पिता बहुत भयानक व्यक्ति हैं जब वे मि. कैल्सियम कार्बोनेट से मिल जाते हैं तो वह डर के मारे साँस छोड़ने लगता है।

$$CaCO_3 + 2\,HCl \rightarrow CO_2\uparrow + CaCl_2 + H_2O$$

मैं मि. सोडियम के साथ NaCl के रूप में समुद्र में रहना पसंद करती हूँ सब लोग मुझे NaCl के रूप में बहुत पसंद करते हैं। यदि मैं न मिलूँ तो सब मुझे ढूँढ़ते रहते हैं, अच्छा मैं विदा चाहती हूँ।

प्रारब्ध

यदि करील के वृक्ष में पत्ते नहीं आते हैं, तो क्या यह दोष वसन्त का है? यदि उल्लू दिन में नहीं देखता है तो इसमें सूर्य का क्या दोष? यदि चातक के मुख में जलधारा नहीं गिरती है तो मेघ का क्या दोष? विधाता ने जन्म के समय जो भाल पर लिख दिया उसको मिटाने में कौन समर्थ है?

– भर्तृहरि

महारानी लक्ष्मीबाई

-अनुराग त्रिपाठी
नवम 'ख'

(19 नवम्बर 1853 - 18 जून 1858) महारानी लक्ष्मीबाई वीरांगना तो थी ही; एक कुशल कूटनीतिज्ञ भी थीं। समय आने पर वह अपनी कूटनीति का प्रयोग भी करती थीं। जब महारानी लक्ष्मीबाई से अंग्रेजों ने सभी कुछ छीन लिया और उन्हें किले से बाहर निकाल दिया तो वह नगर के एक छोटे से महल में रहने और तपस्विनी का जीवन बिताने लगीं। अंग्रेजों द्वारा किये गये अपमान और अन्याय की टीस उनके हृदय में सदा उठा करती थीं। लेकिन वह अवसर की तलाश में सदा रहतीं कि अंग्रेजों को कब मात दे सकें। राज्य हड़पने के बाद अंग्रेजों ने महारानी को पाँच हजार रुपये प्रति मास पेंशन देने का निश्चय किया। आरम्भ में महरानी ने इसे लेने से मना कर दिया, लेकिन गम्भीरतापूर्वक सभी परिस्थितियों पर विचार करने के बाद उन्होंने पेंशन लेना शुरू कर दिया। इतनी बड़ी रकम एक विधवा रानी को देना पश्चिमोत्तर प्रांत के गवर्नर काल्विन ने उचित नहीं समझा। उसने महारानी से कहा कि उन्हें अपने स्वर्गीय पति के कर्ज को इसी पेंशन से अदा करना पड़ेगा। जब तक यह रकम अदा न होगी तब तक उन्हें पेंशन नहीं मिलेगी। महारानी ने यह उत्तर भिजवाया था, "तुम लोगों ने मेरे पति का राज्य हड़प लिया। सारा खजाना भी जब्त कर लिया। अब कर्ज अदा करने का उत्तरदायित्व अंग्रेजों पर है, मुझ पर नहीं। मेरे पति का उत्तराधिकारी न मुझे माना गया और न मेरे पुत्र दामोदर राव को, इसलिए उनके कर्ज का दायित्व हम पर कैसे आ सकता है?" इसी के बाद उनमें और अंग्रेजों में युद्ध अपरिहार्य नजर आने लगा था।

लक्ष्मीबाई ने खूब सोच समझकर क्रांति का पथ चुना। उसी पथ पर वह एक कुशल राजनीतिज्ञ की तरह बढ़ती रहीं। महारानी लक्ष्मीबाई संसार की महान वीरांगनाओं में से एक थी। उनके विरोधी सर ह्यूरोज ने जब उनकी शहादत का समाचार सुना तो उसने कहा 'विद्रोहियो में सबसे बड़ा कोई मर्द था तो वह झाँसी की रानी थीं।' भारत के इतिहास में उनका नाम सदा अमर रहेगा। उनकी स्मृति हमें सदैव राष्ट्रधर्म की प्रेरणा देती रहेगी। शायद इसीलिए उनके लिए लिखा गया - बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

अनुनय के आगे अन्याय नहीं झुकता
पौरुष के चरणों में नाक रगड़ते हैं।
विनय भीरुता का पर्याय न बन जाये
वीर शस्त्र इसलिये उठाया करते हैं।।

वीरेन्द्र सहवाग

-अभिनन्दन कुमार
नवम 'ख'

भारतीय क्रिकेट टीम का वह खिलाड़ी जिसके सामने विपक्षी टीम की हर रणनीति असफल सिद्ध हो जाती है। सहवाग विश्व के सबसे आक्रामक बल्लेबाजों में से एक हैं। चाहे एक दिवसीय हो या टेस्ट, जब सहवाग लय में आते हैं तो रनों की बरसात होने लगती है। मुल्तान के सुल्तान के नाम से प्रसिद्ध यह खिलाड़ी 'सर डान ब्रैडमैन' तथा 'ब्रायनलारा' के बाद तीसरे ऐसे बल्लेबाज हैं जो दो बार तीन सौ के जादुई आँकड़े को पार कर चुके हैं। सबसे तेज तिहरा शतक तथा एक पारी में सबसे अधिक चौके लगाये हैं। इन्होंने मात्र 254 रन की पारी में ही 50 चौके लगाये थे। बल्ले के अलावा जरूरत पड़ने पर अपनी गेंदों से भी काफी परेशान किया है। सहवाग के साथ गम्भीर की जोड़ी दुनिया की सबसे अच्छी ओपनिंग जोड़ी मानी जाती है। सहवाग धोनी के लिए तुरुप का इक्का है जिसका तोड़ किसी टीम के पास नहीं है। सहवाग के जीवन का सर्वश्रेष्ठ स्कोर 319 रन है जो उन्होंने विश्व चैम्पियन दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध बनाया था। विश्व की कोई भी टीम हो सहवाग ने किसी को नहीं छोड़ा है। विपरीत परिस्थितियों में अपनी टीम को जीत दिलाने की खूबी के कारण इनका विश्व एकादश की टीम में चयन निश्चित रहता है। भारत की तरफ से सबसे तेज शतक भी इन्हीं के नाम हैं।

सचिन तेन्दुलकर

-अभय दीक्षित
नवम 'ख'

सचिन मास्टर ब्लास्टर के नाम से प्रसिद्ध भारत के सबसे अनुभवी खिलाड़ी हैं। इन्होंने टेस्ट तथा एक दिवसीय दोनों में रनों का पहाड़ खड़ा कर दिया है। सचिन ने जितने कीर्तिमानों को छुआ है उतने कीर्तिमानों को छूने के लिए सोचना भी किसी खिलाड़ी के लिए मूर्खता होगी। सचिन रन बनाते हैं तब भी रिकार्ड बनता है और नहीं बनाते हैं तब भी रिकार्ड बनता है। सचिन ने एक दिवसीय तथा टेस्ट दोनों में सर्वाधिक शतक बनाये हैं। इन्होंने एकदिवसीय में सत्रह हजार तथा टेस्ट में हजार के जादुई आँकड़े को छुआ है। इन्होंने टेस्ट तथा एकदिवसीय दोनों में सर्वाधिक रन बनाये हैं। ओपनिंग में सचिन ने गांगुली के साथ मिलकर सबसे अधिक बार शतकीय साझेदारी की है। इन्होंने टेस्ट तथा एक दिवसीय दोनों में सर्वाधिक बार 'मैन ऑफ द मैच' व 'मैन ऑफ द सीरीज' का पुरस्कार जीता है। सचिन का उच्चतम स्कोर 200 है जो इन्होंने द. अफ्रीका के खिलाफ बनाया था। लोकप्रियता में भी सचिन अन्य खिलाड़ियों से बहुत आगे हैं।

एन. सी. सी. का प्रशिक्षण कैम्प

-राजर्षि सिंह गौतम
नवम 'ख'

N.C.C. का कैम्प कैडेट्स को सैन्य जीवन से परिचित कराने तथा उनमें भी इस प्रकार के गुणों के विकास हेतु आयोजित किया जाता है। इस दौरान कैडेट्स को हथियारों के बारे में ट्रेनिंग दी जाती है। कैम्प में विभिन्न प्रतियोगितायें भी होती हैं जिनमें सभी भाग लेते हैं। जैसे - फायरिंग, वाद-विवाद, निबन्ध लेखन व विभिन्न खेल प्रतियोगिताएँ।

इस वर्ष हमारा कैम्प कन्नौज में 59 BN NCC द्वारा आयोजित हुआ। इस कैम्प को CATC 192 नाम दिया गया। इसके कमांडिंग आफीसर ले. कर्नल ई. अन्सारी थे। यह दस दिवसीय कैम्प 4 दिसम्बर 2009 से 13 दिसम्बर 2009 तक चला।

हम सभी (JDT 58 के) कैडेट्स बस द्वारा विद्यालय से रवाना हुए। वहाँ पहुँचने के पश्चात् हम सब अपने बैरकों में गये और वहाँ की साफ-सफाई करवाई फिर वहाँ 6 बज चुके थे तथा S.D. के A.N.O. श्रीप्रकाश ओझा जी ने हमें बताया कि इस समय रोल कॉक परेड होगी हम सभी, वहाँ गये और सभी विद्यालयों के सीनियर कमांडर G.H.M. व B.H.M. को रिपोर्ट करने के पश्चात् N.C.C. गान करते हैं फिर सभी भोजन को जाते हैं। भोजन करके रात्रि 9 बजे B.H.M. हमारे बैरक में आया और सुबह 7:00 बजे पीटी परेड में शामिल होने के लिए कह गया सब थके से थे और सो गये। सबके मन में यह विचार उठने लगा था कि ये दिन कैसे कटेंगे। हालाँकि जैसे-२ दिन बीते सभी को, यहाँ अच्छा लगने लगा। अगले दिन हम सब ने सुबह पीटी परेड में हिस्सा लिया। उसके बाद फिर सभी को नाश्ता मिला, फिर नाश्ते के बाद लेक्चर परेड व ड्रिल परेड होती थी। उसके बाद फिर दोपहर का भोजन मिलता था अन्त में सायंकाल गेम पीरियड होता था। इसी प्रकार पूरे दिन की दिनचर्या रहती थी। कैम्प में प्रशिक्षण के अलावा भ्रमण कार्यक्रम भी होता था, इसी के तहत सब कन्नौज का प्रसिद्ध गौरीशंकर मंदिर तथा राजा जयचन्द्र का किला भ्रमण हेतु गये थे। कैम्प में "सर्व शिक्षा अभियान" के तहल रैली भी निकाली गई थी।

कैम्प के दौरान अनेक प्रतियोगिताएँ भी हुई जैसे - निबंध, वाद-विवाद, ड्रिल, फायरिंग आदि। इन प्रतियोगिताओं में हमारे विद्यालय के छात्रों ने कई पुरस्कार प्राप्त किये। वाद-विवाद प्रतियोगिता में सुजीत रंजन जी ने निबन्ध प्रतियोगिता में निखिल गुप्त व राघव अवस्थी तथा ड्रिल प्रतियोगिता में JD ने तथा SD ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। फायरिंग में भी JD के विमलेश कुमार ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। अन्तिम दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम व पुरस्कार वितरण होना था, सब खुश थे, सबसे अधिक पुरस्कार अपने विद्यालय को प्राप्त हुए थे। कमांडर आदित्य शेखर तथा सुजीत रंजन जी का नेतृत्व वास्तव में अच्छा था हमारे A.N.O. ने भी हमारा मार्गदर्शन किया। ये कैम्प हम सबके लिए एक विशेष अनुभव लाया एक ऐसा अनुभव जो वास्तव में किसी-2 को प्राप्त होता है।

हमारे प्रतीक

-आदित्य राज
नवम 'ख'

प्रश्न - ओंकार किसका प्रतीक है?

उत्तर - प्रत्येक वैदिक मंत्र का पाठ ओंकार से प्रारंभ होता है। ओंकार अर्थात् - ऊँ। अ+उ+म् इन तीन वर्णों की संधि से बना है। इन तीन वर्णों को तीन मात्रायें कहते हैं। ब्रह्माण्ड की दृष्टि से देखें तो समस्त विश्व ब्रह्माण्ड तीन ही मात्राओं में विभक्त हैं। अ-पृथ्वी उ-अंतरिक्ष म्-द्युलोक। विश्व की तीन अवस्थाएँ उत्पत्ति, स्थिति और विनाश भी इसी में समाई हुई हैं।

प्रश्न - दीपशिखा किसका प्रतीक है?

उत्तर - दीपशिखा आत्मविश्वास और ज्ञान का प्रतीक है। कोई कितना भी छोटा क्यों न हो यदि आत्मविश्वासयुक्त है, तो वह अज्ञान अंधकार को समाप्त कर ज्ञान के प्रकाश को फैलाने में सफल हो जाता है। अतः

दीप ज्योतिः परं ज्योतिः दीपज्योतिर्जनार्दनः।
दीपो हरतु पापं दीपज्योतिः नमोस्तुते।।

इस श्लोक में दीपक को पापनाशक बताकर परब्रह्म से उसकी तुलना की गई है।

प्रश्न - शंख किसका प्रतीक है? इसका क्या महत्त्व है?

उत्तर - शंख नाद ब्रह्म का प्रतीक है।

1. शंखनाद से श्वसन क्रिया बलवती होती है, जिससे मनुष्य दीर्घायु बनता है।
2. वैज्ञानिक परीक्षणों के अनुसार प्लेग, इन्फ्लूएंजा तथा दूसरे संक्रात्मक रोगों के कीटाणु मर जाते हैं।

प्रश्न - स्वास्तिक किसका प्रतीक है?

उत्तर - स्वास्तिक एक प्रतीक या चिह्न है। यह गणेश जी का लिप्यात्मक स्वरूप है। एक प्रकार की गृह रचना को भी स्वास्तिक कहते हैं। स्वास्तिक का शाब्दिक अर्थ है - मंगलकामना। इसीलिए किसी भी मंगल कार्य के प्रारंभ में निम्न वैदिक मंत्र पढ़ा जाता है।

"स्वस्ति नः इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु"
इस मंत्र के प्रत्येक चरण के प्रारंभ में स्वास्तिक शब्द आता है।

दिखावे की कीमत

-निशांत सचान
नवम 'ग'

एक सुंदर हरे-भरे वन में एक हंस व एक उल्लू रहता था। दोनों में बड़ी प्रगाढ़ मित्रता थी। हंस सभी हंसों का राजा था इसलिए अपनी मित्रता बनाये रखने के लिए उल्लू ने हंस को बता रखा था कि वो उल्लुओं का राजा है, जबकि ऐसा था नहीं। एक बार उसके घोंसले के आस-पास सिपाहियों ने खेमा गाड़ दिया। उसने सोचा कि अपने मित्र को अपना प्रभाव दिखाने का यह एक अच्छा मौका है। इसलिए वो जिद्द करके किसी तरह हंसराज को बुला लाया और गप्प हाँकते हुए कहने लगा कि, "ये सब मेरे आदमी हैं, मेरे प्रति बहुत ही निष्ठावान हैं। बिना मेरी अनुमति लिए कुछ नहीं करते।' अभी उसने बात पूरी की ही थी कि सैनिक वहाँ से कूच की तैयारी करने लगे। यह देखते ही उल्लू ने अपनी मनहूस आवाज निकाल दी। यह अपशगुन माना जाता है इसलिए सैनिकों ने रवानगी कुछ देर के लिए टाल दी। फिर सैनिकों ने 2-3 बार कूच का प्रयास किया पर उल्लू बार-बार उन्हें रोक देता।

जब सैनिकों ने दुबारा कूच करने का प्रयत्न किया तब फिर उल्लू ने आवाज निकाली। इससे एक सैनिक ने गुस्सा होकर तीर चला दिया जो उल्लू को न लगकर उसके मित्र को लग गया और हंसराज के प्राण-पखेरू उड़ गये।

इससे उल्लू को अपनी मूर्खता पर बहुत पश्चाताप हुआ, जिसकी वजह से उसके मित्र की जान चली गयी।

रोचक तथ्य

- ब्लू व्हेल 110 फुट तक लंबी हो सकती है।
- ब्लू व्हेल की जीभ हाथी के आकार जितनी होती है।
- गोल्ड फिश पराबैंगनी और इंफ्रारेड दोनों किरणों को देख सकती है।
- ग्रेगरी डनहेन द्वारा निर्मित विश्व की सबसे बड़ी बाइक का वजन 2.948 टन है।
- घोड़े को लाल रंग तथा जेबरा को नारंगी रंग दिखाई नहीं पड़ता।
- बुलफ्राग ही एक ऐसा जानवर है जो कभी नहीं सोता।
- हाथी दिन में केवल 2 घंटे सोता है।
- औसतन 1 व्यक्ति की जीभ में 20 लाख स्वीट ग्लैंड्स होते हैं।
- प्राचीन मिस्र के पुजारी अपने शरीर के सारे बाल उखाड़ देते थे।
- तैराकी का सबसे लंबा विश्व रिकार्ड अमेरिका की मिसीसिपी नदी में 1930 में एक व्यक्ति ने 2938 किमी. की दूरी पार कर बनाया था।
- अधिकांश नवजात बच्चों की आँखें देखने में नीली होती हैं।
- प्रतिवर्ष दुनिया भर में करीब 8 अरब डालर कीमत के हीरे खदानों से निकाले जाते हैं।
- हाथी का बच्चा 1 दिन में 80 ली. से अधिक दूध पी सकता है।

लक्ष्य सुनिश्चित करें

-रवि कुमार 'कुँवर'
नवम 'ख'

जीवन का सबसे बड़ा पुरस्कार जीवन की सबसे बड़ी दौलत है - किसी खास बात की ओर प्रवृत्ति लेकर जन्म लेना उसी की पूर्ति करने में मनुष्य को सुख मिलता है।

आप की क्या रुचि है? आप क्या बनना चाहते हैं? आप किस काम को लोगों से अच्छा कर सकेंगे? कौन सा पेशा कौन सा उत्तरदायित्व या कौन सा काम आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।

जहाँ या जिस काम में आप अपने व्यक्तित्व की पूरी शक्ति लगा सकें, जिसमें आपका मन रम सके और जिसके द्वारा आप समाज और संसार को कुछ दे सकें वही आपके जीवन का लक्ष्य होना चाहिए, लक्ष्य निश्चित करने पर आप स्वयं उस ओर बढ़ें क्योंकि आपके लक्ष्य में आपको खींचने की शक्ति है। आप का मन लक्ष्य पर टँगा हुआ है इसलिए आप कहीं भी रहें आपका खिंचाव उसी ओर रहेगा।

लक्ष्य ही मनुष्य का प्राण है, वही उसका जीवन है, वहीं से उसे प्रेरणा मिलती है।

यदि आपका लक्ष्य आपके अनुकूल है तो निश्चय ही आप उन्नति करेंगे और आप संसार में अपने व्यक्तित्व की छाप छोड़ जायेंगे।

संस्कृतं वद

-देवप्रिय मधुकर
नवम 'ख'

अंग्रेजी शब्द	संस्कृत शब्द
1. गुड मार्निंग	सुप्रभातम्
2. हेलो! हाऊ आर यू	कथय कुशलम्
3. क्वाइट वेल	सर्व कुशलम्
4. सॉरी	कष्टम्
5. एक्सक्यूज मी	क्षमस्वमे
6. टा. टा.	मंगलम्
7. ओ. के.	युक्तम्
8. गुडबॉय	शुभम्
9. गुडनाइट	शुभरात्रि
10. सर!	श्रीमान्
11. यस सर	आम् श्रीमान्

बूझो तो जानें

-प्रखर द्विवेदी
पंचम

1. इधर खूँटा - उधर खूँटा।
गाय मरखनी दूध मीठा।

2. मारने में लाठी, खाने में मिठाई।
बातें मेरी मम्मी ने बतायी।।

3. पलकों का हूँ साथी।
हरदम रहता साथ।।
गम के आते ही छोड़ देता दोस्ती का हाथ

4. भाई-भाई का जोड़ा, हरदम रहता साथ।
रंग काला हो या भूरा, दोनों एक समान।।

5. हरी थी, मन भरी थी,
नौ लाख मोती जड़ी थी।
राजा जी के बाग में
दो शाला ओढ़े खड़ी थी।।

<u>उत्तर</u>
1. <u>सिंघाड़ा</u> 2. <u>गन्ना</u> 3. <u>आँसू</u> 4. <u>जूता</u> 5. <u>भुट्टा</u>

भौगोलिक पहेलियाँ

-आशुतोष कुमार
षष्ठ 'क'

1. जहाँ तीन धाराएँ मिलती, उसे त्रिवेणी कह देते वहाँ उपस्थित तीर्थराज को, बोलो हम क्या कहते?
उत्तर - प्रयाग
2. भीषण युद्ध महाभारत का, जिसने देखा भला कहो कौन क्षेत्र पास में, जहाँ बसा अम्बाला।
उत्तर - कुरुक्षेत्र
3. नदी नर्मदा सदा बनाती, ओंकार जहाँ कौन यह तीर्थ मनोरथ, शोभित शिवम जहाँ
उत्तर - ओंकारेश्वर

हिन्दी साहित्य में पहला

-सिद्धार्थ सिंह
नवम 'ग'

हिन्दी साहित्य में पहला -

1. नाटक - 'नहुष' (अनूदित) - गोपाल चंद्र गिरिधरदास
2. इतिहास ग्रंथ - 'इस्त्वार द ला लितरेरात्यूर ऐन्दुई ऐन्दुस्तानी'
   (फ्रेंच भाषा में) मार्सा द तासी
3. उपन्यास - 'परीक्षागुरू' - लाला श्री निवास दास
4. कहानी - 'इन्दुमती' - किशोरी लाल गोस्वामी
5. आत्मकथा - 'अर्द्ध कथानक' (पद्यात्मक) - बनारसी दास जैन
6. संस्मरण संग्रह - 'पं. प्रतापनारायण मिश्र जी के संस्मरण' - बाबू बाल मुकुन्द गुप्त
7. रिपोर्ताज संग्रह - 'तूफानों के बीच' - रांगेय राघव
8. रेखाचित्र संग्रह - 'बोलती प्रतिमा' - पं. श्रीराम शर्मा
9. यात्रा वृत्तान्त - 'सरयू पार की यात्रा' - भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
10. डायरी - 'मेरी जेल डायरी' - नरदेव शास्त्री 'वेदातीर्थ'
11. गीत (गद्यकाव्य) - 'साधना' - रायकृष्ण दास
12. पत्र संकलन - 'स्वामी दयानंद के पत्र' - महात्मा मुंशीराम
13. भेंट वार्ता - 'रत्नाकर तथा प्रेमचंद से' - बनारसी दास चतुर्वेदी
14. हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र - 'उदन्त मार्तण्ड' - जुगल किशोर शुक्ल (संपादक)
15. हिन्दी दैनिक समाचार पत्र- 'व्यवहार सुधा वर्षण' - श्याम सुंदर सेन (संपादक)

तुमने चाहा ही नहीं, हालात बदल सकते थे।
मेरे आँसू तेरी आँखों से निकल सकते थे।।
तुम तो ठहरे झील की पानी की तरह।
दरिया होते तो बहुत दूर निकल सकते थे।।

इतिहास के पन्नों में कानपुर

-सिद्धार्थ सिंह
नवम 'ग'

कानपुर शहर प्राचीन काल से ही महत्वपूर्ण रहा है। जाजमऊ में शर्की राजाओं द्वारा बनवाये गये भवन आज भी विद्यमान हैं। फिरोज शाह तुगलक ने (1351 ई. से 1388 ई.) (सल्तनत काल) मखदूमशाह की मज़ार पर सिर झुकाया था और दो चंदन के दरवाजे लगवाये थे। परन्तु आधुनिक कानपुर का पुराना रूप हमें सर्वप्रथम मुगल काल देखने को मिलता है। अबुल फज़ल द्वारा लिखित "अकबरनामा" के तीसरे भाग "आइने अकबरी" में 14 परगनों के नाम हैं, जिसमें घाटमपुर, नवाबगंज, अकबरपुर, जाजमऊ, मोहनीपुर, शाहापुर, शिवली, बिठूर, आजाद नगर के नाम मुख्य हैं।

कानपुर का नामकरण 1698 ई. के बाद जन्माष्टमी के समय हुआ था, इसे मुगलकाल का चरमयुग भी कह सकते हैं। इस समय मुगलों के जो स्थानीय जमींदार होते थे, उन्हें राजा का पद देकर अपने मनसबदार के रूप में नियुक्त किया करते थे। ऐसे ही एक मनसबदार सचेंडी के राजा "हिंदू सिंह" थे। (इनका किला व वंश आज भी सचेंडी में विद्यमान है); जिसे आज वर्तमान कानपुर कहते हैं, यहाँ पर राजा हिंदू सिंह आये और गंगा में स्नान किया। पता नहीं उनके मन में क्या था, उन्होंने यहाँ पर एक नगर बसाने की योजना बनायी जिसे आज हम पुराना कानपुर (नवाबगंज) के नाम से जानते हैं। उसी पुराने कानपुर के स्थान पर "कान्हापुर या कन्हैयापुर" के नाम से एक नगर की स्थापना की।

पुराना कानपुर जहाँ पर आज हम नवाबगंज और उससे जुड़ा आजाद नगर देख रहे हैं। इसको नवाबगंज के रूप में पुराने कानपुर का जिक्र "मिर्जा हादी रुसवा" ने किया है जिनका उपन्यास 'उमराव जान' के रूप में बहुत मशहूर है। यही आजाद नगर, नवाबगंज आगे चलकर कानपुर कहलाया। संभवतः यह कानपुर की पहली नगरीय बसावट थी। यहाँ नगरीय बसावट का तात्पर्य यह है कि नगर वह स्थान है जहाँ पर आसपास की ग्रामीण संख्या प्रयोजित होकर आती है और रहती है और उसे वहाँ पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रोजगार मिलता है, जिससे तमाम लोग वहाँ आकर रहते हैं जो वहाँ के मूल निवासी नहीं होते हैं। कहा भी गया है :

"कारवाँ आते जाते हैं और गुलिस्ताँ बसता जाता है"

जब कानपुर बस गया तो यह एक ऐसा केन्द्र था जिसके एक तरफ गंगा नदी और दूसरी तरफ जी.टी. रोड है जिसे शेरशाह सूरी ने बनवाया था जल एवं स्थल यातायात की सुविधायें मौजूद थीं। इस प्रकार कानपुर का व्यापारिक दृष्टिकोण से भी विकास होता रहा।

जब हम आधुनिक काल की ओर बढ़ते हैं तो देखते हैं कि जो 1764 ई. का बक्सर युद्ध जो बिहार में हुआ, इससे भारत की तकदीर बदली और मुगलों का स्थान अंग्रेजों ने लिया। 1764 ई. के बाद 'वारेन हैस्टिंग्स ने कानपुर को 'अवध के नवाब' और 'दिल्ली के वजीर' 'सफदरजंग' से 50 लाख में खरीद लिया जो एक मुगल रियासत थी। वह फिर बदलकर अंग्रेजों की रियासत हो गयी। यही वह काल खंड है जब कानपुर का आधुनिकीकरण आरंभ हुआ। बिलग्राम, जो अंग्रेजों की छावनी हुआ करती थी उसे 1774

ई. में स्थानांतरित कर दिया गया। यही कानपुर की तकदीर बनी और व्यापार बढ़ गया। उस काल का एक आँकड़ा हमें मिलता है, जिससे पता चलता है कि कानपुर में उस समय बीस हजार आज का बिरहाना रोड व चौक थे। चौक जो आज स्टेशनरी मार्केट है, पहले यह मिठाई का बाजार हुआ करता था परन्तु अंग्रेजों को यहाँ आने में दिक्कत होती थी तो धीरे-2 बाजार को बिरहाना रोड; मालरोड में स्थापित कर दिया गया) 1778 ई. तक छावनी जो हमारे यहाँ बनी, इनसे एक परिवर्तन यह आया कि कानपुर को 'कंपू' कहा जाने लगा, क्योंकि सैनिक यहाँ तंबू लगाकर रहते थे। 24 मार्च 1803 ई. में कानपुर को अंग्रेजों ने जिला घोषित कर दिया और कानपुर की बसावट में परिवर्तन आने लगा। सन् 1861 ई. में यहाँ नगरपालिका का अस्तित्व देखने को मिलता है। 1869 में यहाँ पहली चमड़ा मिल स्थापित की गयी। 1864 में 'एल्गिन मिल' तथा 1874 में 'म्योर मिल' बनी। 1878 में जब अंग्रेज अफगान युद्ध होता है तो ये सारे मिल उत्पादन करते हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में कपड़े तथा ऊन की फैक्ट्रियाँ लगीं। "लाल इमली" सर्वाधिक प्रसिद्ध थी। इसी कारण इसे पूर्व का 'मैनचेस्टर' कहा जाने लगा।

जाजमऊ यहाँ का अत्यन्त प्राचीन स्थल है। 22 अगस्त, 2007 को ऑर्कियालॉजी सर्वे टीम द्वारा यहाँ उत्खनन कार्य आरंभ हुआ, जिसके प्रथम चरण का उत्खनन कार्य 20 सितम्बर 2007 को पूर्ण हुआ। इसके अंतर्गत 100 वर्गमी क्षेत्र का ही उत्खनन कार्य राज्य पुरातत्व विभाग लखनऊ के निर्देशन में हुआ। उत्खनन में प्राप्त मृदभाण्डों को लगभग 600 ई. पू. का माना जा रहा है। आशा की जा रही है कि टीले के गर्भ में इतिहास की महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त हों। यह स्थल मौर्य काल से संबंधित है, किन्तु यहाँ पर शुंग, कुषाण तथा मध्यकाल तक के अवशेष प्राप्त हुये हैं। जहाँ कई कालक्रम के मृदभाण्ड प्राप्त हुए हैं जिनमें -

(i) उत्तरी कृष्णामार्जित मृदभाण्ड (H.B.R.W.)

(ii) कृष्ण रंजित लोहित मृदभाण्ड (Black on Redware)

(iii) चित्रित धूसर मृदभाण्ड (Painted Greyware) आदि मृदभाण्ड हैं।

Anti Putes तथा हड्डी के तीर फलक (Bone Arrow Head Point) लगभग 100 की सं. में प्राप्त हुए हैं तथा एक Terracota Disk भी प्राप्त हुई है। इसके अतिरिक्त एक शतरंज के घोड़े के समान खिलौना प्राप्त हुआ है पर उसका आधार कुछ ज्यादा चौड़ा है। यहाँ से एक मुद्रा प्राप्त हुई है पर उसे अभी पढ़ा नहीं जा सका है। कुछ Miniature Poto भी प्राप्त हुए हैं। ये सभी वस्तुयें मृदभांड संस्कृति की प्रतीत होती हैं, उपलब्ध साक्ष्यों से पता चलता है कि इसकी सभ्यता शृंगवेरपुर और झूँसी से काफी साम्यता रखती है। यह मुख्यतः गंगा के किनारे-किनारे काफी विस्तृत क्षेत्र में फैली है।

मान राखिबो, माँगिबो, पियसों नित नव नेहु।
तुलसी तीनिउ तब फबैं, जौ चातक मत लेहु।।

- तुलसीदास

हर मुस्लिम आतंकवादी नहीं

-निमिष
दशम 'क'

मैंने जिंदगी में हमेशा से ही इंसानियत के धर्म को किसी धर्म या जाति से ऊपर और जब आज लोग दुनिया में सबसे अधिक लोगों द्वारा माने जाने वाले धर्म का बेवजह विरोध करते हैं तो मुझे बहुत दुःख होता है। पर मेरी इस प्रकार की सोच बनने में एक घटना ने बहुत बड़ा योगदान दिया। यह घटना तब की है जब मैं 10 या 11 वर्ष का रहा हूँगा। मैं पाँचवीं कक्षा में पढ़ता था। मेरे साथ कक्षा में केवल एक मुसलमान लड़का पढ़ता था। आमतौर पर हम लोग उसका मजाक उड़ाया करते थे। भारत-पाकिस्तान का वनडे मैच हुआ और उसमें पाकिस्तान की हार हुई। अगले दिन स्कूल में मैंने उसका मजाक उड़ाते हुये कहा यार! तुम्हारी टीम तो कल हार गई। ये बात मैंने उससे कई बार कही। आखिर में उसने हँसते हुए कहा "आज हार गई तो क्या हुआ, अगले में जीत जायेगी।" वो मेरा विद्यालय का आखिरी दिन था और उसके बाद मैं कानपुर आ गया और मैं उससे कभी नहीं मिल पाया। आज जब अतीत के उस पन्ने खोलकर आज की वर्तमान स्थिति से मिलाता हूँ तो महसूस होता है यही तो आज तक हमारे देश में मुसलमानों के साथ होता आया है। यदि आप यही कहेंगे कि तुम पराये हो, देशद्रोही हो तो वह इंसान उस देश के लोगों से, उस देश से कैसे प्यार कर पायेगा। उस घटना के बाद मैंने खुद को बदला और खुद से एक वादा किया कि कभी कोई जातीय विभेद नहीं करूँगा। मगर वर्तमान की बात करें तो हिंदुत्व का प्रचार करने वाले 40% लोग मुस्लिम जाति का मतलब आतंकवादियों की जाति समझते हैं और उनका विरोध करते हैं। उन सबसे मैं ये पूछना चाहूँगा कि ऐसा कौन-सा धर्म है जिसके अनुयायी ने आतंक नहीं फैलाया। नक्सलवादी भी तो आतंकवादी हैं पर वो मुसलमान तो नहीं। फिर हम एक जाति को आतंक का प्रतीक कैसे मान सकते हैं? एक बात पर मैं सहमत हूँ कि दुनिया के 60% आतंकवादी मुसलमान हैं परन्तु यह बात भी तो सच है कि सबसे ज्यादा बहकाया भी तो गया है। अंग्रेजों ने भी तो अपने फायदे के लिए उनको बहकाया। हमेशा ही उनको उग्रजाति का कहकर विरोध किया गया।

अगर देश भविष्य में कभी आगे बढ़ेगा तो यह भी सम्भव होगा जब लोग अनावश्यक कार्यों में अपनी ऊर्जा खर्च करने के बजाय उस ऊर्जा का सही कार्यों में प्रयोग करेंगे। देश कभी-भी अपने 20-30% लोगों की वजह से आगे नहीं बढ़ेगा। देश के प्रत्येक नागरिक को जातीय खाई को लाँघ एक साथ प्रयास करना पड़ेगा।

अन्त में एक मन्त्र देना चाहूँगा - अगर भविष्य में कभी-भी किसी भारतीय मुसलमान को देखकर उसके खिलाफ कुछ बोलने का मन करे तो भारत के पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की बड़ी उपलब्धियों, उनके विचारों को याद कर लेना, शायद मुँह से कुछ न निकले।

सद्विचार

दूसरों को कष्ट पहुँचाये बिना, दुष्टों के घर जाये बिना, संतों के बताए मार्ग का उल्लंघन किये बिना, जो कुछ भी प्राप्त हो जाये उसे ही बहुत समझो।

भारत की प्रमुख नदियाँ एवं लम्बाई

-शुभम त्रिपाठी
नवम 'ख'

सिन्धु	-	2,880
झेलम	-	720
चिनाब	-	1,180
रावी	-	725
सतलज	-	1,440
व्यास	-	470
गंगा	-	2,510
यमुना	-	1,357
रामगंगा	-	690
घाघरा	-	1,080
गंडक नदी	-	425
कोसी नदी	-	730
चम्बल	-	930
बेतवा नदी	-	480
सोन नदी	-	770
दामोदर नदी	-	670
ब्रह्मपुत्र नदी	-	2,880

चिन्तन

-कार्तिकेय प्रताप सिंह
पंचम

1.	सर्वोत्तम दिन	-	आज
2.	सबसे उपयुक्त समय	-	अभी
3.	सबसे बड़ी भूल	-	समय की बर्बादी
4.	सबसे बड़ी बाधा	-	अधिक बोलना
5.	सबसे खतरनाक	-	आलस्य
6.	सबसे बड़ी आवश्यकता	-	सामान्य ज्ञान
7.	सबसे बुरी भावना	-	ईर्ष्या
8.	सबसे भाग्यशाली व्यक्ति	-	जो अपने काम में संलग्न हो।
9.	सबसे बड़ी उपलब्धि	-	प्रसन्न रहना

पुराणों में श्लोकों की संख्या

-शुभम त्रिपाठी
नवम 'ख'

पुराण		श्लोक
ब्रह्म पुराण	-	10,000
पद्म पुराण	-	55,000
विष्णु पुराण	-	22,000
शिव पुराण	-	24,000
भागवत पुराण	-	18,000
नारद पुराण	-	25,000
अग्नि पुराण	-	15,400
भविष्य पुराण	-	14,500
मार्कण्डेय पुराण	-	9,000
ब्रह्मवैवर्त पुराण	-	18,000
लिंग पुराण	-	11,000
बाराह पुराण	-	24,000
स्कन्द पुराण	-	81,101
वामन पुराण	-	10,000
कूर्म पुराण	-	16,000
मत्स्य पुराण	-	14,000
गरुड़ पुराण	-	19,000
ब्रह्मांड पुराण	-	20,000

क्या आप जानते हैं?

-अजीत विक्रम
सप्तम 'क'

- भारत में सबसे अधिक पुस्तकालय हैं? जिनकी संख्या 57,000 है।
- विश्व में सबसे अधिक जनसंख्या वाला शहर टोकियो है।
- एस्बेस्टास नामक पदार्थ आग में नहीं जलता है।
- उकत्सी नामक झील प्रत्येक बारह वर्ष बाद मीठे व खारे जल में परिवर्तित होती रहती है।
- विलियम एवर्ट ग्लेडस्टोन नामक व्यक्ति चार बार इंग्लैण्ड का प्रधानमंत्री बना।
- पीटर दी ग्रेट नामक राजा ने दाढ़ी पर कर लगाया था।
- फ्रांस के राष्ट्रपति की पत्नी रेमाण्ड पाइन केयर को 1614 में वनमानुष अपहरण कर ले गये थे।

आश्चर्यजनक परिभाषायें

-शुभम त्रिपाठी
नवम 'ख'

1. **जेल** - मुफ्त का होटल।
2. **सास** - बहू के पीछे छोड़ा गया बिना वेतन का गुप्तचर।
3. **नेता** - भाषण सुनाने वाला यंत्र।
4. **चिंता** - वजन कम करने की सस्ती दवा।
5. **ताला** - बिना वेतन का चौकीदार
6. **मुर्गा** - गाँव की अलार्म घड़ी।
7. **चश्मा** - जादू की आँख।
8. **चाक** - अध्यापक की तलवार।
9. **कब्रिस्तान** - दुनिया का आखिरी स्टेशन।
10. **विद्वान** - अक्ल का ठेकेदार।
11. **मच्छर** - बिना बुलाया डाक्टर।

सामान्य ज्ञान

-शुभम त्रिपाठी
नवम 'ख'

1. औरतों को दाढ़ी क्यों नहीं निकलती है - (हारमोन्स की कमी के कारण)
2. सबसे बड़ा दिल वाला पक्षी - (हमिंग बर्ड)
3. कौन सा जानवर पेड़ पर दौड़ता है - (कंगारू)
4. सबसे लम्बी छलांग मारने वाला पशु - (कंगारू)
5. सबसे ऊँचाई पर उड़ने वाले पक्षी का नाम है - (सनबर्ड)
6. वह कौन सा जानवर है जो लोहे की मोटी-मोटी सलाखें भी तोड़ देता है - (तेन्दुआ)
7. विश्व में कुल कितनी भाषायें बोली जाती हैं - (2792)
8. किस देश में एक भी नदी नहीं है - (सऊदी अरब)
9. रोने वाला वृक्ष कहाँ है - (ब्राजील)
10. टाइटेनिक जहाज को डूबने में लगा समय - (2 घंटे 40 मिनट)
11. विश्व का सबसे बड़ा जहाज कौन सा बना था? (टाइटेनिक)

उम्र छोटी काम बड़े

-सुयश द्विवेदी
सप्तम 'ख'

- गुरुनानक को 9 वर्ष की उम्र में ही उनके शिक्षक मौलाना कुतुबुद्दीन से भी अधिक ज्ञान प्राप्त था।
- संत ज्ञानेश्वर ने 12 वर्ष की उम्र में भगवद्गीता पर मराठी छन्दों में ज्ञानेश्वरी गीता लिखी थी।
- छत्रपति शिवाजी ने 13 वर्ष की उम्र में तोरण का किला जीता था।
- भारत की कोकिला सरोजनी नायडू ने 13 वर्ष की उम्र में 1300 पंक्तियों की एक कविता अंग्रेजी में लिखी।
- प्रख्यात नाटककार श्री हरिश्चन्द्र चट्टोपाध्याय ने अपना प्रसिद्ध नाटक 'अबूहन' 14 वर्ष की उम्र में लिखा था।
- शंकराचार्य ने 16 वर्ष की अवस्था में भारत के सारे पंडितों को शास्त्रार्थ में पराजित किया।
- विश्व विजेता सिकन्दर ने 16 वर्ष की उम्र में शोरनियाँ का युद्ध जीता था।
- विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने इंग्लैण्ड के महाकवि शेक्सपियर के मैकबेथ नाटक का बंगला अनुवाद 14 वर्ष की उम्र में किया।

एक बूँद जिंदगी की

-देवांश अवस्थी
नवम 'क'

- एक ग्लास सन्तरे के जूस में 850 लीटर पानी खर्च होता है।
- एक किलो सूती कपड़ा बनाने में 11,000 लीटर पानी खर्च होता है।
- एक किलो स्टील बनाने में 260 लीटर पानी खर्च होता है।
- एक हैमबर्गर बनाने में 2,400 लीटर जल खर्च होता है।
- एक किलो ब्रेड बनाने में 1,300 लीटर जल खर्च होता है।
- एक लीटर काफी तैयार करने में 1,120 लीटर जल खर्च होता है।
- एक किलो कुरकुरे बनाने में 925 लीटर जल खर्च होता है।
- एक लीटर शराब बनाने में 960 लीटर जल खर्च होता है।
- एक ब्रेड की सप्लाइज़ बनाने में 40 लीटर जल खर्च होता है।
- एक किलो मांस बनाने में 16,000 लीटर जल खर्च होता है।
- एक किलो माइक्रोचिप्स बनाने में 16,000 लीटर जल खर्च होता है।

नवीन जानकारी

-सत्यम अग्निहोत्री
नवम 'क'

✸ पैर हिलाना हृदय रोग को दावत देना

पैरों का झटका दिल को लग सकता है। यह जानकारी एक रिसर्च के दौरान सामने आयी है। बहुत से लोगों की आदत होती है कि बेमतलब पैर हिलाते रहते हैं। लोग इसे एक आदत समझते हैं लेकिन, यह आदत नहीं एक बीमारी होती है। इसे रेस्टलेस लेग्स सिंड्रोम के नाम से जाना जाता है। मुख्य रूप से यह बीमारी उनको होती है जिन्हें कम नींद आती है।

लंदन में इस विषय पर एक शोध किया गया। रिसर्च दल के प्रमुख 'डाक्टर जान डब्ल्यू विंकलमैन' ने इस बारे में कहा कि पैर हिलाने से हार्ट अटैक का खतरा बढ़ जाता है। अकारण पैर हिलाने से ब्लड प्रेशर एवं दिल की धड़कन काफी बढ़ जाती है और यह दिल की बीमारी का प्रमुख कारण बन जाती है।

यह शोध ६८ साल से अधिक उम्र के कई लोगों पर किया गया है। इस शोध में यह भी कहा गया है कि लगभग 3% पुरुष तथा महिलाएँ 7% इस रोग से ग्रसित हैं।

✸ वृक्ष करते हैं दमा से बचाव

पेड़-पौधे न केवल धरती हरा-भरा बनाकर उसे प्रदूषण से मुक्त करते हैं वरन् यह दमा को भी नियंत्रित करने का काम करते रहते हैं। शोध से यह प्रमाणित हुआ है कि प्रतिवर्ग किमी. 613 पेड़ या अधिक वाली जगहों में दमा से पीड़ित पाए गए बच्चों की संख्या 343 पेड़ प्रतिवर्ग किमी. या इससे कम वृक्षों वाले स्थानों में दमा पीड़ित बच्चों की संख्या में कई गुना का अंतर है।

दूसरा बिहार

-पीयूष गुप्त
सप्तम 'क'

एक मंत्री जापान से बिहार आये थे वे व्यापारिक प्रतिनिधि मण्डल को बिहार के विकास के संबंध में सम्बोधित कर रहे थे। एक जापानी ने बिहार प्रदेश की प्रशंसा करते हुए कहा कि बिहार एक सुन्दर प्रदेश है। हमें तीन वर्ष दे दें। हम जापान की तरह इसे भी आर्थिक रूप से सुपर पावर बना देंगे।

यह सुनकर मंत्री जी झुँझलाए और बोले जापानी लोग बड़े ही निकम्मे हैं, आप हमें तीन दिन दें हम जापान को दूसरा बिहार बना देंगे।

रोचक जानकारियाँ

-सत्यम अग्निहोत्री
नवम 'क'

- फ्लाइंग फिश मुख्य रूप से एटलाण्टिक और भारतीय समुद्रों के गर्म भागों में पाई जाती है।
- नीली शार्क, कुक्कुर शार्क, गजशार्क आदि कुछ ज्यादा ही खतरनाक मछलियाँ हैं। जिस तरह जंगल का राजा शेर माना है उसी तरह जल का राजा नीली शार्क को माना गया है।
- रोशनी फेंकने वाली 'एंग्लर' नाम की एक मछली, रोशनी फेंककर छोटे-2 जीवों को अपनी ओर आकर्षित कर उन्हें खा जाती है।
- मथुरा तेल शोधक कारखाने के कारण ही विश्व प्रसिद्ध ताजमहल का रंग पीला पड़ता जा रहा है।
- जलाशयों में महुए के फल सड़ने से जल विषैला हो जाता है तथा मछलियाँ मर जाती हैं।
- अगले 20 वर्षों में विश्व की आधी मूँगा चट्टानें समाप्त हो जायेंगी।
- जुकाम के वायरस से होगा दिल का इलाज।
- मनुष्य को हीरे में बदला जा सकता है, सचमुच के हीरे में। मनुष्य के बालों से कार्बन लेकर उस पर 5-7 गीगा-पास्कल का दबाव डालकर सचमुच का सिंथेटिक हीरा बनाया जा सकता है।
- हमारी नासिकाओं में पीले रंग का ऐसा क्षेत्र है जिसमें लाखों केमोरीसेप्टर यानी गंध कोशिकाएँ म्यूकस द्वारा सदा तरोताज़ा व गीली रहती है। ये कोशिकाएँ नाड़ियों द्वारा मस्तिष्क के ओलफैक्टरी बल्ब से जुड़ी रहती है जिससे हमें गंध का एहसास होता है।

क्या आप जानते हैं?

-ज्ञानेन्द्र अवस्थी
दशम 'ख'

1. भारतीय मुद्रा का नाम रुपया सबसे पहले शेरशाह सूरी ने 1541 में रखा था।
2. भारत के प्रथम कवि महर्षि वाल्मीकि थे।
3. भारत के प्रधानामंत्री स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु विदेश (रूस) में हुई।
4. भारत में सर्वप्रथम परमवीर चक्र मेजर सोमनाथ शर्मा को 1947 में मिला था।
5. सिकन्दर के गुरु का नाम अरस्तू था।
6. विश्व के लाओस नामक देश में सिक्के का प्रचलन नहीं है।
7. सर्वप्रथम रेडियो बी.बी.सी. लंदन ने दी।
8. प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा गोलकुण्डा की खान से प्राप्त हुआ था।
9. नेपाल एक ऐसा देश है जो कभी किसी का गुलाम नहीं हुआ।
10. शहतूत फल के ऊपर छिलका व अन्दर बीज नहीं होते।
11. चीता ऐसा जानवर है जो अंधेरे में भी देख सकता है।
12. टू आटेरा नामक प्राणी की तीन आँखें होती हैं जो कि छिपकली के समान दिखाई देता है।

आग गर्म क्यों होती है?

-ज्ञानेन्द्र अवस्थी
दशम 'ख'

ईंधन को जब ऑक्सीजन में जलाते हैं तो कार्बन डाई ऑक्साइड (CO_2) तथा जल (H_2O) बनते हैं। इस अभिक्रिया में ईंधन के विभिन्न अणुओं के बीच पुराने आबन्ध तथा विभिन्न ऑक्सीजन अणुओं के बीच के आबन्ध टूटते हैं। हम जानते हैं कि हाइड्रोजन तथा ऑक्सीजन में इलेक्ट्रॉन को धारण करने की क्षमता भिन्न-भिन्न होती है। इसके अतिरिक्त आबन्धों के टूटने में ऊर्जा की आवश्यकता होती है जबकि आबन्धों के टूटने से ऊर्जा निर्मुक्त होती है। चूँकि आबन्धों को तोड़ने में प्रयुक्त ऊर्जा आबन्धों के टूटने से मुक्त ऊर्जा की अपेक्षा बहुत कम होती हैं। जिसके फलस्वरूप ऊष्मा उत्पन्न होती है। परिणामस्वरूप आग गर्म लगती है।

चन्द्रमा के बारे में

-निशांत सचान
नवम 'ग'

भारत के पहले मून मिशन चंद्रयान-I ने ऐतिहासिक खोज करते हुए चाँद पर पानी का पता लगाया है। चंद्रयान-I के साथ भेजे गये नाशा के उपकरण मून मिनरोलॉजी मैपर यानी M-3 ने परावर्तित प्रकाश की तरंग दैर्ध्य का पता लगाया। यह मिट्टी की ऊपरी परत पर मौजूद सामग्री में H_2 व O_2 में रासायनिक संबंध का संकेत देती है। दरअसल चाँद किसी मरुस्थल से भी अधिक सूखा है। लेकिन वैज्ञानिकों का मानना है कि चाँद की मिट्टी में जो नमी है उसकी प्रोसेसिंग से पानी मिल सकता है।

चंद्रयान-I से पहले के मिशनों पर एक नजर

अपोलो मिशन
- 40 साल पहले किया था चाँद पर पानी के अस्तित्व का दावा
- धरती पर लायी गयी चंद्र चट्टानों में पायी गयी नमी
- संदेह - जिन बक्सों में लाये गये थे नमूने उनमें थे छेद।

कैसिनी यान
- अमेरिका-यूरोप के संयुक्त कैसिनी अंतरिक्ष यान ने 10 वर्ष पूर्व चाँद पर दिये थे जल के संकेत।

डीम इम्पैक्ट प्रोब
- चाँद पर पानी होने की संभावना जताई।

रोचक तथ्य

-विनायक त्रिपाठी
नवम 'ख'

- कुत्ते के शरीर में विटामिन सी स्वतः बनता है।
- मनुष्य के बालों से हीरा प्राप्त किया जा सकता है।
  - मनुष्य के बालों से कार्बन प्राप्त करके उस पर 5-7 गीगा पास्कल का दबाव डालकर सचमुच सिंथेटिक हीरा बनाया जा सकता है।
- रेडियम पृथ्वी पर उपस्थित सबसे विरली धातु है। इसका वार्षिक उत्पादन लगभग नगण्य (तीन टन) है।
- भारत में उत्पादित कुल बिजली में परमाणु बिजली का तीन प्रतिशत है।
- शहद एक लम्बे समय तक खराब नहीं होता है।
- महान भौतिकवाद सुब्रह्मण्यम के अनुसार ईश्वर या गॉड सबसे बड़ी बोज थी।
- हवाई द्वीप के माउण्ट वाई-आले-आले नामक स्थान पर वर्ष में 350 दिन वर्षा होती है।
- न्यूयार्क शहर को बिग एप्पल कहते हैं।
- टर्की की राजधानी अंकारा है, परन्तु इसकी आर्थिक राजधानी इस्ताम्बूल है।
- नासा के विस्तृत परीक्षणों से गुजरने वाली कलाई घड़ियों में आमेगा स्पीडमास्टर ही सबसे ज्यादा अच्छी सिद्ध हुई।
- अल्सरेटिव-सिंड्रोम नामक एक संक्रामक रोग है, जो विषाणुओं द्वारा उत्पन्न होता है, विदेशी मछलियों से अब भारत में आने लगा है।
- इस रोग से ज्यादातर हिंसक मछलियाँ मारी जाती हैं।
- मछलियों का प्रिय भोजन उन्हीं के बच्चे यानी फिंगरलिस्प होते हैं।
- 'नीली व्हेल' का वजन 150 टन व लम्बाई लगभग 35 मीटर होती है।
- जलाशयों में कॉन्वॉल्ब्युलेसी कुल का पौधा जिसे बेशरम लता या बेहया कहा जाता है, क्योंकि वह तेजी से फैलता है।
- हमारी पृथ्वी पर लगभग 7 करोड़ हेक्टेयर वन स्वयं हमारे द्वारा हटा दिया जाता है।
- पोषक तत्वों की निरन्तर वृद्धि से एक जलराशि अत्यधिक संदूषित हो जाती है।
- ओजोन परत में 5 प्रतिशत की क्षति 10% अल्ट्रायलेट रेडियेशन में बढ़ोत्तरी करता है।

आश्चर्यजनक बातें

-मनीष कुमार
षष्ठ 'क'

1. विश्व के किसी देश में कपड़े पर अखबार निकलता है? **-सेन**
2. विश्व में कौन सी पहाड़ी है, जो प्रतिदिन अपना रंग बदलती है?-**आस्ट्रेलिया की आत्रसराक पहाड़ी**
3. विश्व में कौन सी चिड़िया है जो किसी भी चिड़िया की बोली बोल लेती है। **-नायन्ती स्कूक**
4. वह कौन सा पक्षी है, जो रंग बदलता है? **-कमनियन पक्षी**
5. दाँत का मन्दिर कहाँ है? **-श्रीलंका**
6. विश्व का कौन सा देश है, जहाँ रेलगाड़ी नहीं चलती है? **-आस्वानिया**

चाय-काफी में दस प्रकार के ज़हर

-देवांश अवस्थी
नवम 'क'

चाय-काफी में निम्नलिखित दस प्रकार के जहर होते हैं -

1. 'टैनिन' नाम का जहर 18% होता है जो पेट में छाले तथा गैस उत्पन्न करता है।
2. 'थिन' नामक जहर 08% होता है जिससे खुश्की चढ़ती है तथा यह फेफड़ों तथा सिर में भारीपन पैदा करता है।
3. 'कैफिन' नामक जहर 2.75% होता है जो शरीर में एसिड बनाता है तथा किडनी को कमजोर करता है।
4. 'वालाटाइल' नामक जहर आँतों के ऊपर हानिकारक प्रभाव डालता है।
5. 'कार्बोलिक अम्ल' से एसिडिटी उत्पन्न होती है।
6. 'पैमिन' नामक जहर से पाचन शक्ति कमजोर होती है।
7. 'एरोमोलीक' अँतड़ियों के ऊपर हानिकारक प्रभाव डालता है।
8. 'साइनीजन' अनिद्रा तथा लकवा जैसी भयंकर बीमारियाँ पैदा करती है।
9. 'आक्सेलिक अम्ल' शरीर के लिए अत्यन्त हानिकारक है।
10. 'स्टिनॉयल' रक्त विकार तथा नपुंसकता पैदा करता है।

संसार के उपनाम

-मनीष कुमार
षष्ठ 'क'

भारत का मैनचेस्टर	-	बंगलौर
बंगाल का शोक	-	दामोदर नदी, पं. बंगाल
नीले पहाड़	-	नीलगिरी पहाड़ियाँ (भारत)
महलों वाला शहर	-	कोलकाता (भारत)
स्वर्ण मन्दिर का शहर	-	अमृतसर (पंजाब)
भारत का प्रवेश द्वार	-	मुम्बई (भारत)
अरब सागर की रानी	-	कोचीन (भारत)
गुलाबी शहर	-	जयपुर (भारत)
मसालों का बगीचा	-	केरल (भारत)
सूर्योदय का देश	-	जापान
प्रभात की शान्ति वाला देश	-	कोरिया
मध्य रात्रि के सूर्य वाला देश	-	नार्वे
गगनचुम्बी अट्टालिकाओं का शहर	-	न्यूयार्क (अमेरिका)
सात पहाड़ियों का शहर	-	रोम (इटली)
महान श्वेत मार्ग	-	ब्राडवे (न्यूयॉर्क)
मोतियों का द्वीप	-	बहरीन
कंगारूओं का देश	-	ऑस्ट्रेलिया
सफेद हाथियों का देश	-	थाईलैण्ड
श्वेत शहर	-	वेलग्रेड (यूगोस्लाविया)
हवा वाला शहर	-	शिकागो (अमेरिका)
जापान का मैनचेस्टर	-	ओसाका

समाचार-पत्रों की दुनिया

-हर्षित गुप्त
सप्तम 'क'

विश्व के प्रमुख देशों के समाचार-पत्र

देश	समाचार-पत्र	प्रकाशन-स्थान	भाषा
ब्रिटेन	गार्जियन वीकली	लन्दन	अंग्रेजी
	न्यू स्टेट्समैन	लन्दन	अंग्रेजी
	डेली मिरर	लन्दन	अंग्रेजी
	टाइम्स ऑफ लन्दन	लन्दन	अंग्रेजी
	मैनचेस्टर गार्जियन	मैनचेस्टर	अंग्रेजी
	डेली टेलीग्राफ	लन्दन	अंग्रेजी
अमेरिका	डेली न्यूज	न्यूयॉर्क	अंग्रेजी
	न्यूयॉर्क टाइम्स	न्यूयॉर्क	अंग्रेजी
रूस	प्रापदा	मॉस्को	रशियन
	जेक्स्ता	मॉस्को	रशियन
	इजवेस्तिया	मॉस्को	रशियन
पाकिस्तान	डॉन	कराची	अंग्रेजी
	पाकिस्तान टाइम्स	रावलपिंडी	अंग्रेजी
फ्रांस	ले मोन्डे	पेरिस	फ्रेंच
चीन	पीपुल्स डेली	बीजिंग	चीनी
इंडोनेशिया	मडेंका	जकार्ता	इंडोनेशिया
मिस्र	अल अहराम	काहिरा	अरबी

भारतीय इतिहास के प्रमुख युद्ध

-रवि कुमार 'कुँवर'
नवम 'क'

पेशावर का युद्ध	-	1001 ई.
वैहिन्द का युद्ध	-	1009 ई.
तराइन का प्रथम युद्ध	-	1191 ई.
तराइन का द्वितीय युद्ध	-	1192 ई.
चन्दावर का युद्ध	-	1194 ई.
पानीपत का प्रथम युद्ध	-	1526 ई.
खानवा का युद्ध	-	1527 ई.
चन्देरी का युद्ध	-	1528 ई.
हल्दीघाटी का युद्ध	-	1576 ई.
प्लासी का युद्ध	-	1757 ई.
बक्सर का युद्ध	-	1764 ई.
सैनिक विद्रोह	-	1857 ई.
भारत चीन युद्ध	-	1962 ई.
भारत पाक युद्ध	-	1965 ई.
कारगिल युद्ध	-	1999 ई.

रोचक जानकारी

- ब्रिटेन की पहली रानी जेन थी।
- यूरोप का स्वर्ग स्विट्जरलैंड को कहा जाता है।
- शाश्वत नगर रोम को कहा जाता है।
- विश्व का सबसे गरीब देश भूटान है।
- विश्व का सबसे अमीर देश स्विट्जरलैंड है।
- विश्व का पहला धर्म हिन्दू धर्म है।
- भारत का नेपोलियन समुद्रगुप्त को कहते हैं।
- नूरजहाँ का अर्थ संसार की रौशनी से है।
- ग्रहों की खोज केपलर ने की।
- नौकरशाही की जन्मदाता हम्मूराबी है।
- विश्व में सर्वाधिक चावल का उत्पादन चीन में होता है।

क्या आप जानते हैं?

-उदित नारायण
नवम 'ख'

- विष्णु जी के धनुष का क्या नाम था? -सारंग
- हाथी मस्तक वजन कितना होता है? -5,200 ग्राम
- किरन वैज्ञानिक को पूरब का जादूगर कहते है? -सर जगदीश चन्द्र बोस
- मनुष्य के शरीर में कुल कितने छेद होते हैं? -20 लाख
- उत्तरी गोलार्द्ध का सबसे बड़ा दिन कब होता है? -21 जून

कुछ रोचक तथ्य

- दायें हाथ से काम करने वाला व्यक्ति, बाएं हाथ से काम करने वाले व्यक्तियों से औसतन 9 वर्ष अधिक जीता है।
- बुद्धिमान व्यक्तियों के बालों में जस्ता और ताँबा ज्यादा होता है।
- एक एकड़ क्षेत्रफल में 1 इंच हुई बरसात के पानी का वजन एक टन होता है।
- उंगलियाँ छाप की तरह हर एक के जीभ की छाप भी अलग होती है।
- उष्णकटिबन्धीय वनों के पेड़ इतने घने होते हैं कि वर्षा का जल धरती पर 10 मिनट के पश्चात आ पाता है।

जानने वाली बातें

-परमवीर कुमार
षष्ठ 'क'

(i) चूहा बिना पानी पिये ऊँट से भी लम्बी दूरी तय कर सकता है।
(ii) उत्तरी डकोटा में आज तक भूकम्प नहीं आया है।
(iii) घोंघा लगभग तीन साल तक सो सकता है।
(iv) दुनिया का सबसे बड़ा ड्रैगन (छिपकली) का वजन 102 किग्रा. है।
(v) अप्पा शेरपा का दुनिया का सबसे ज्यादा (18वीं बार) एवरेस्ट आरोहण का रिकॉर्ड।
(vi) अक्षरधाम विश्व का सबसे बड़ा मन्दिर है, यह दिल्ली (भारत) में स्थित है।
(vii) चिंपाजी सबसे बुद्धिमान जानवर है। यह एक-मात्र ऐसा जानवर है, जो दर्पण में अपना चेहरा पहचान सकता है।
(viii) विश्व का सबसे लम्बा समुद्री पुल चीन के 'हागझू की खाड़ी' पर बनाया गया है।
(ix) कश्मीर घाटी में पहली रेलगाड़ी का प्रचलन '11 अक्टूबर 2008' को प्रारम्भ हुआ।
(x) 2012 में होगी सात अरब विश्व की जनसंख्या।
(xi) 2025 तक भारत विश्व का तीसरा तेल आयातक देश होगा।

इतिहास पुरुष श्री नरेन्द्रजीत सिंह के प्रति

-ऋषभ तिवारी
नवम 'ख'

इतिहास पुरुष तुमको प्रणाम।
संस्कृति उद्धारक चिर ललाम।।

तुम थे नरेन्द्र प्रतिमूर्ति - कर्म।
तुमने समझा था न्याय - मर्म।।
तुम ज्ञान ज्योति प्रस्फुटित पुंज।
आलोक-लोक में स्रोत कुंज।।

राष्ट्रीय भावना के प्रकाम।
इतिहास पुरुष तुमको प्रणाम।।

सर्वोच्च शिखर यात्री सुतीर्थ।
जीवनव्रत अपनाया सुदीर्घ।।
श्रम निष्ठा कथनी-करनी के।
तुम उदाहरण आमरणी के।।

अविराम राम स्वर के सकाम।
इतिहास पुरुष तुमको प्रणाम।।

आजानबाहु तुम सिंह पुरुष।
कोमल कमनीय उधर पुरुष।।
प्रख्यात व्यक्तियों में सुश्रेष्ठ।
विद्वानों में थे सदा ज्येष्ठ।।

कल्याणव्रती शिव थे सुनाम।
इतिहास पुरुष तुमको प्रणाम।।

तुम लीन हुए तल्लीन जगत।
गत हुआ तिमिर तुम बने सतत।
इतिहास रच गये नवल-धवल।
संबल बल निर्मल सकल-सफल।।

श्रद्धास्वरूप शत-शत प्रणाम।
इतिहास पुरुष तुमको प्रणाम।।

जीवन एक संग्राम

-ऋषभ तिवारी
नवम 'ख'

कड़ी धूप में निकले तब
धूप से घबराना क्या?
सागर में जब कूदे तब
डूबे-डूबे चिल्लाना क्या?

दुनिया में जब आये हैं तब
दुःखों से पिण्ड छुड़ाना क्या?
आफत, चिन्ता, मौत, निराशा
से फिर भय खाना क्या?

मिले सफलता या असफलता
इसमें मन उलझाना क्या,
आगे कदम बढ़ा देने पर
पीछे उसे हटाना क्या?

माँ क्या है?

-अंकित कुमार
नवम 'ख'

माँ एक खुशबू है जिससे सारा जहाँ महकता है।
माँ एक दुआ है जो सिर पर चादर की तरह रहता है।
माँ एक आईना है जिसमें प्यार का अक्स दिखाई देता है।
माँ कुदरत का अनमोल तोहफा है जो मालामाल करता है।
माँ की ममता बेशकीमती है जिसे कोई नहीं चुका सकता।
माँ सिर्फ माँ है, जिसे सारा जहान सिर झुकाता है।

समन्दर

लहर ने समुन्दर से उसकी उम्र पूछी तो समन्दर को हँसी आ गयी,
मगर जब समन्दर ने बूँद की उम्र पूछी तो समन्दर में समाकर बूँद उसकी उम्र बढ़ा गयी,
बूँद ने दिया जवाब ऐसा उसके प्रश्न का,
कि समन्दर को खुद पे शर्म आ गई।
सोचते हैं लोग कि कोई वजूद नहीं है बूँद का,
पर एक-एक बूँद ही तो समन्दर की सीमा बना गयी।

-गोविन्द पाण्डेय
नवम 'ख'

नेता का पहाड़ा

नेता	x	1	=	नेता
नेता	x	2	=	भाषण
नेता	x	3	=	अनशन
नेता	x	4	=	प्रदर्शन
नेता	x	5	=	लगा दरबार
नेता	x	6	=	शराब शिकार
नेता	x	7	=	माँगे वोट
नेता	x	8	=	काटे नोट
नेता	x	9	=	निपोरे खीस
नेता	x	10	=	420

गुस्सा का पहाड़ा

गुस्सा	x	1	=	गुस्सा
गुस्सा	x	2	=	झगड़ा
गुस्सा	x	3	=	गाली
गुस्सा	x	4	=	थप्पड़
गुस्सा	x	5	=	घूसा
गुस्सा	x	6	=	लाठी
गुस्सा	x	7	=	चाकू
गुस्सा	x	8	=	रंजिश
गुस्सा	x	9	=	जेल
गुस्सा	x	10	=	फाँसी

मच्छर चालीसा

-आर्यन दीक्षित
नवम 'ख'

जय मच्छर भगवान उजागर।
जय अगनित रोगों के सागर।।
नगर दूत अतुलित बलधामा।
तुमको जीत न पावे गामा।।
सूक्ष्म रूप धरि तुम आ जाते।
विकट रूप धरि तुम पी जाते।।
मधुर-मधुर खुजलाहट लावे।
सारा देह ददेरा भावे।।
मलेरिया के तुम हो दाता।
तुम खटमल के छोटे भ्राता।।
वैद्य हकीम के तुम रखवारे।
डाक्टर जी के तुम अति प्यारे।।
नित रोगिन को देखन आवे।
कड़-कड़ नोट जेब को भावे।।
तुम्हरे नाम का बाजा डंका।
तुमको नाहिं काल की शंका।।
मानवपुर तुमको अति प्यारा।
हर व्यक्ति पर है राज तुम्हारा।।
मन्दिर हो या गिरजा-गुरूद्वारा।
हर घर में परताप तुम्हारा।।
नर-नारी हैं सब घबराते।
चौबीसों घंटे यश गाते।।

पैसा सब कुछ नहीं खरीद सकता

-दीपक सचान
नवम 'ख'

पैसा किताब खरीद सकता है विद्या नहीं।
पैसा संगीत खरीद सकता है स्वर नहीं।
पैसा इलाज खरीद सकता है जीवन नहीं।
पैसा मूर्ति खरीद सकता है भगवान नहीं।
पैसा शरीर खरीद सकता है आत्मा नहीं।
पैसा सौन्दर्य सामग्री खरीद सकता है सौन्दर्य नहीं।
पैसा पेन खरीद सकता है सुलेख नहीं।
पैसा बिस्तर खरीद सकता है नींद नहीं।
पैसा लड़का खरीद सकता है बेटा नहीं।
पैसा इन्सान खरीद सकता है प्यार नहीं।
पैसा तलवार खरीद सकता है साहस नहीं।
पैसा मृत्यु दे सकता है जीवन नहीं।

डेवलपमेन्ट ???

-गोविन्द पाण्डेय
सप्तम 'ख'

अच्छी कविता है। हास्य के आवरण में तीखा व्यंग्य छिपा है जो देश का कटु यथार्थ व्यक्त करता है। *-सम्पादक*

"देश में डेवलपमेन्ट हो रहा है,
अमीरों का काम अर्जेन्ट हो रहा है।
गरीब बेचारा साइलेण्ट हो रहा है,
देश बेचने का एग्रीमेण्ट हो रहा है। देश में डेवलपमेण्ट.....।।

चमचा अपनी जगह परमानेण्ट हो रहा है,
ईमानदार बेचारा सस्पेंड हो रहा है।
बच्चा बाप से इण्टेलीजेण्ट हो रहा है।
घर-घर में पार्लियामेण्ट हो रहा है।।
देश में डेवलपमेण्ट.....।।

कार्यालय में रेस्टोरेंट हो रहा है।
देश में डेवलपमेंट हो रहा है।।

रिश्वत से कार्य हैंड टू हैंड हो रहा है।
नेता सभा-समाप्ति पर प्रज़ेण्ट हो रहा है।
देश में डेवलपमेण्ट.....।।

मेरी तमन्ना है

-अमित कुमार
नवम 'ख'

मेरी तमन्ना है कि एक कहानी लिखूँ।
जिसमें खुद को सिपाही हिन्दुस्तानी लिखूँ।
अगर कटा सकूँ सिर अपना वतन की राह पर तो खुद को स्वाभिमानी लिखूँ।

मेरी तमन्ना है, कि एक कहानी लिखूँ।
शायद मैं भी कोई जंग लड़ने का मौका पाऊँ।
शायद मैं भी कभी दुश्मन के खेमे में घुस जाऊँ।
शायद उसकी किसी गोली पर मेरा भी नाम हो,
ताकि वतन के नाम पर अपनी कुर्बानी लिखूँ।
प्रणाम है उनको जो माँ की दुआओं से विदा किए जाते हैं

और तिरंगे में लिपट कर घर वापस आते हैं।
अगर मेरी माँ कभी मेरे मुख से वो तिरंगा हटाये,
तो खुद को गुमानी लिखूँ।
मेरी तमन्ना है, कि एक कहानी लिखूँ।
कहानी लिखते-लिखते कहीं कहानीकार न बन जाऊँ।
ये हड्डियाँ बूढ़ी हो जाए जिस्म से बेकार न बन जाऊँ,

इससे पहले कुछ ऐसा कर सकूँ, कि मुझ पर कोई कहानी लिखे,
तो सफल मैं जिन्दगानी लिखूँ।
मेरी तमन्ना है, कि एक कहानी लिखूँ
जिसमें खुद को सिपाही हिन्दुस्तानी लिखूँ।

विज्ञान के कुछ तथ्य

-प्रेम कुमार
षष्ठ 'क'

1. मानव कान के श्रवण की सीमा (Limits of audibility) 20 Hz से 20,000 Hz तक होती है।
2. प्रतिध्वनि सुनने के लिए ध्वनि स्रोत से परावर्तक सतह की न्यूनतम दूरी 16.6 मीटर होती है।
3. -273° C ताप को परम शून्य ताप कहा जाता है।
4. वह तापमान (-273° C) जिस पर गैस का आयतन और दाब शून्य हो जाता है परम शून्य तापमान कहलाता है।
5. जल का घनत्व पर 4° C महत्तम होता है।
6. प्रकाशिकी में U, V एवं F के बीच का संबंध होता है : $\frac{1}{F}=\frac{1}{U}+\frac{1}{V}$
7. घरेलू कार्यों के लिए विद्युत शक्ति 220 वोल्ट पर दी जाती है।

माँ-बाप

-आर्यन दीक्षित
नवम 'ख'

(यह गीत उन माँ-बाप के लिए है जिनकी औलादें उन्हें दर-दर की ठोकरें खाने के लिए अकेला छोड़ देती हैं।)

माँ-बाप को जो ठुकरायेगा, दर-दर की ठोकरें खाएगा,
माँ-बाप को दुःख देने वाला, सुख चैन भला क्या पाएगा।

1. नाजों से पालने वालों पर, मूरख तू अत्याचार न कर,
जो तेरी भलाई चाहते हैं, तू उनसे बुरा बरताव न कर।
जिस रोज़ वे बिछड़ेंगे तुझसे, उस रोज़ बड़ा पछताएगा,
माँ-बाप को जो ठुकरायेगा, दर-दर की ठोकरें खाएगा।।

2. उनसे पूछो माँ-बाप है क्या, जिन लोगों के माँ-बाप नहीं,
माँ-बाप को पीड़ा पहुँचाना, कोई इससे बड़ा तो पाप नहीं।
सौ-जतन करो न उतरेगा, एहसान पिता और माता का,
तन-मन से करो इनकी सेवा, ये दूजा रूप हैं ईश्वर का। माँ बाप को जो.....
जब तुम बूढ़े हो जाओगे, क्या सुख संतान से पाओगे,
वैसे ही तो फल आयेंगे, तुम जैसे पेड़ लगाओगे।
माँ-बाप बड़ी दौलत अपनी, ये बात याद हमको रखनी,
जैसी करनी वैसी भरनी, ये बात याद हमको रखनी
माँ-बाप को जो ठुकरायेगा, दर-दर की ठोकरें खाएगा।

यदि देश हित मरना पड़े

-सुयश शुक्ल
नवम 'ग'

पं. रामप्रसाद बिस्मिल को गोरखपुर जेल में फाँसी दी गयी थी। फाँसी के 19 दिन पहले उन्होंने अपने एक मित्र को लिखा जिसमें उन्होंने कुछ पंक्तियाँ लिखी थीं जो निम्नलिखित हैं :-

यदि देशहित मरना पड़े, मुझको सहस्रों बार भी,
तो भी न मैं इस कष्ट को निज ध्यान में लाऊँ कभी।
हे ईश भारतवर्ष में, शत बार मेरा जन्म हो
कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो।
मरते हैं बिस्मिल रौशन लहरी अशफाक अत्याचार से,
फिर होंगे पैदा सैकड़ों उनकी रुधिर की धार से।
उनके प्रबल उद्योग से, उद्धार देश का,
तब नाश होगा सर्वदा दुःख शोक के लवलेश का।

अंग्रेजी का भूत

-आकाश त्रिपाठी
सप्तम 'ख'

हे विश्व पूज्य इंग्लिश मौसी
तोते की तरह तुम्हें रटता,
पर होती है तू याद नहीं
नित परेशान तुझसे रहता
मीनिंग हो जाती याद किन्तु
स्पेलिंग चक्कर कटवाती
जब सेंटेन्स पूछे जाते
तब दिल में धड़कन बढ़ जाती
अंग्रेज बिचारे चले गए
देकर भारत को आजादी
पर तू न गई भारत से
चर्चिल चाचा की तू दादी
भारत से तेरे जाने का
जब शुभ संदेशा पाऊँगा
तो सच कहता हूँ हे मौसी
मैं घी के दीप जलाऊँगा
माना कि तुझको पढ़-लिख कर
डिग्री एम.ए. की पाऊँगा
यदि नहीं पढ़ा मैंने तुझको
क्या छात्र नहीं कहलाऊँगा।

बफ़ेट सिस्टम

-आकाश त्रिपाठी
सप्तम 'ख'

एक बार मुझे जाना पड़ा बारात में
घर परिवार था सभी साथ में
ऊपर से शो पीस किंतु अन्दर से रुखे थे
क्या करें भाई सुबह से जो भूखे थे
इतने में खबर आई हाल में
भगदड़ सी मच गई पाण्डाल में
एक के ऊपर एक गिरने लगे
ऊपर से बरसने लगे
पहला व्यक्ति जो इधर से उधर चक्कर लगा रहा था
खाना खाना तो दूर उसे देख तक न पा रहा था
दूसरा व्यक्ति जो कहीं से प्लेट झाड़ लाया था
उससे ज्यादा अपना कुर्ता फाड़ लाया था
तीसरी महिला ताड़ जैसी तनी हुई थी
उसकी आधी साड़ी पनीर सब्जी से सनी हुई थी
वह बार-बार उसे धो रही थी
पड़ोसन से माँगकर लाई थी इसीलिए रो रही थी
चौथा व्यक्ति गरीब और लाचार था
इसीलिए कपड़े उतारकर पहले से ही तैयार था
खाने पीने के चक्कर में सेहत हो जाए कम
क्यों भाइयों क्या यही है बफट सिस्टम।

मैं भारत हूँ

-अभिषेक वर्मा
दशम 'ख'

मैं मानवता का केन्द्र बिन्दु,
मैं भारत देश महान हूँ।
मैं वीरों की हूँ मातृभूमि,
मैं जननी हिन्द महान् हूँ।।

मैं संस्कृतियों का एकात्मवाद,
मैं विश्व गुरू कहलाता हूँ।
मैं शांति दूत के नाम से,
सारे विश्व में जाना जाता हूँ।।

कई आततायी मुझ पर,
अपना अधिकार जमाने को।
मेरे सपूत बलिदान हुए,
मेरी ही आन बचाने को।।

मैं अवतारों की धरा-धाम हूँ,
मैं कर्म धरा अभिराम हूँ।
पल्लव हैं मेरे हरित वसन,
वारिधि मेरे पादत्राण हैं।।

मैं ठहरा जलवायु चतुर्भुज,
मेरा शीष मुकुट हिमराज है।
विंध्याचल मेरा वक्षस्थल,
रामेश्वर मेरे पाद हैं।।

'माँ'

-देवेश
एकादश 'ख'

माँ मसर्अत के ख्वाब बाँट देती है
दिये में हाथ रखते ही माँ डाँट देती है।
परिंदे ही परिंदों की भाषा समझते हैं
चिड़िया अपनी चोंच से दाना डाल देती है।
जब-जब मैं चला धूप से जंग लड़ने
माँ दुआओं का ताबीज़ बाँध देती है।
कितनी मशक्कत की मेरी तालीम के लिए
माँ जेवर का एक हिस्सा काट देती हैं।
कितनी भोली हैं मेरी माँ इस जमाने में
ज़रा-सी चोट पर दुपट्टा फाड़ देती हैं।
तमाम उम्र सोने के कंगन नहीं पहने
माँ फटी साड़ी में मुद्दतें गुजार देती हैं।
कैसे बताऊँ उन मीठी रोटियों का स्वाद
माँ आटे में ममता सान देती है।
कुछ लोगों का सफर में हमेशा साथ रहता है
वो माँ है जिसका सर पे हाथ रहता है।
हर किसी से अपने गम कहे नहीं जाते
वो माँ है जिससे बेटा अपनी बात कहता है।

नारायण डाट काम

-शिवम द्विवेदी
सप्तम 'क'

एक बार मेरी अमेरिकन से हो गयी पहचान।
मैंने उससे कहा - मेरा भारत महान।
अमेरिकन ने पूछा : क्या है इसका प्रमाण?
मैंने लगाया अपना तार्किक ज्ञान।
अमेरिकन ने कहा - गिनाओ कुछ आविष्कार
जिससे मैं भारत की महानता को करूँ स्वीकार।
मैं हो गया तैयार।
और कहा - सुनाता हूँ यार।
वे हैं इस प्रकार - क्रम वार
विश्व की पहली फायर प्रूफ लेडी
भारत में हुई - नाम था 'होलिका।'
उसकी शक्ति अनोखी थी, भगवान ने दी उसे अतुल शक्ति थी।
वह आग में नहीं जलती थी।
उन दिनों फायर ब्रिगेड नहीं चलती थी।
मैंने बिना रुके कहा -
विश्व का पहला पत्रकार भारत में ही हुआ।
नारद था उसका नाम
पत्रकारिता था उसका काम।
तीनों लोकों में करता था सूचना का आदान-प्रदान।
ई-मेल का उपयोग करता था
यही था उसका फिक्स काम
उसका ईमेल आई.डी. 'था'
नारायण - नारायण डाट काम।

वर्ष के बारह माह

-शिवम द्विवेदी
सप्तम 'क'

कोहरा छाया ओस गिरी
जाड़ों से जनवरी भरी

दिन छोटे हैं रात बड़ी
लिए पुष्प फरवरी खड़ी

तेज हुई सूरज की टार्च
महुए से महका है मार्च

गाँव गली तपते खपरैल
आग लगाता है अप्रैल,

बहता खरा पसीना रे,
मारे मई महीना रे,

तेज बड़े लू के नाखून
जान बचाओ आया जून

वर्षा लेकर आई है
कितनी सुखद जुलाई है।

नाचे मयूरा होकर मस्त
आया झूले लिए अगस्त,

इन्द्र धनुष है अम्बर में।
मौसम मुदित सितम्बर में।

पेड़ों ने पत्ते झाड़े।
देखो अक्टूबर पिछवाड़े।

देखो लगा काँपने बंदर,
आया ठिठुरन लिए नवम्बर,

धूप लगे अब सुन्दर-सुन्दर
खत्म साल आ गया दिसंबर।

मंत्री गुरु अरु बैद जो, प्रिय बोलहिं भय आस।
राज धरम तन तीनि कर, होइ बेगि ही नास।।

अर्थ : मंत्री, गुरु तथा वैद्य यदि भय के कारण प्रिय बोलने लगें तो राज्य, धर्म तथा शरीर का शीघ्र ही नाश हो जाता है।

जिह्वा

-अपूर्व त्रिपाठी
सप्तम 'क'

ईश्वर ने हमें दो कान दिए हैं व दो आँखें पर जिह्वा एक दी है इसलिए कि हम बहुत अधिक सुनें व बहुत अधिक देखें लेकिन बोलें बहुत कम।

जिह्वा का घाव तलवार से अधिक गहरा होता है क्योंकि तलवार शरीर पर घाव करती है व जिह्वा मन पर।

माँ

माँ शब्द में दुनिया सारी।
माँ हमको सबसे प्यारी।।

माँ से ही सारा संसार।
माँ से है हम सबको प्यार।।

दुनिया में जीना सिखलाती।
बहुत प्यार से हमें खिलाती।।

माँ ही है मेरा भगवान।
माँ ही तो है सबसे महान।।

हम सब करते इसकी पूजा।
दुनिया में इस सा ना दूजा।।

'माँ'

-ऋषि त्रिवेदी
अष्टम 'क'

जिसकी कोई उपमा न दी जा सके उसका नाम माँ है।
जिसकी कोई सीमा नहीं उसका नाम माँ है।।

जिसके प्रेम को कभी पतझड़ स्पर्श न कर सके;
ऐसी तीन माँ हैं - परमात्मा, महात्मा और माँ।

माँ पूर्ण शब्द है, गणना है, महाविद्यालय है;
यह मंत्र बीज है, हर सृजन का आधार है माँ।।

ऊपर जिसका अंत नहीं, उसे आसमाँ कहते हैं।
संसार में जिसकी महिमा का अंत नहीं, उसे माँ कहते हैं।।

पेड़ नहीं काटूँगा

-मनीष कुमार
नवम 'ख'

बन्दर भाई लिए गँड़ासा चले काटने पेड़।
हाथी बोला रे! रे! पागल मत पेड़ों को छेड़।।
लेकिन बन्दर बड़ा घमण्डी।
बोला चुप रे हाथी, तेरे जैसे कितने देखे इन पेड़ों के साथी।
हाथी बोला खबरदार। जो एक पेड़ भी काटा।
अभी जड़ूँगा तेरे मुँह पर आठ किलो का चाटा।।
बन्दर बिगड़ा खींच गँड़ासा हाथी पर वो झपटा।
लेकिन आगे फिसलन आयी बन्दर भाई रपटा।।
तभी हाथी के हाथ में आई बन्दर की दुम।
ऐसे झूले बन्दर मामा कि साँसें हो गईं गुम।।
जड़े हाथी ने उसके मुँह पर सात-आठ तमाचे।
भालू चीता गैंडे ने भी बन्दर मामा को डाँटा।।
हाथ जोड़कर लगे मामाजी रोने, बोले मुझको दे दो माफी।
अब अपनी गलती की सजा मुझे मिली गयी काफी।।
अब से पेड़ नहीं काटूँगा, कसम आज खाता हूँ।
हाथी दादा के चरणों में, अपना सीस झुकाता हूँ।।
आज सदा के लिए छोड़ता अपना कुटिल ये गड़ासा।
पेड़ों की रक्षा होगी अब यह है मेरी आशा।

हर ओर राजनीति ने घोला वो जहर है।
जिन्दा है किन्तु मौत के साये में बशर है।।
इस देश का चरित्र गिराने की क्रिया में।
बाकी रखी गयी न कहीं कोई कसर है।।

गृहमंत्री जी विस्फोट हुआ है!

-प्रणव त्रिपाठी
एकादश 'क'
(उपाध्यक्ष-तरुण भारती)

एक मंत्री ने देर रात गृहमंत्री को फोन लगाया।
वह मंत्री डरा हुआ था और थोड़ा घबराया।
गृहमंत्री बोले, इतनी रात को क्या हुआ है?
मंत्री ने कहा, "गृहमंत्री जी, विस्फोट हुआ है!
गृहमंत्री थोड़ा सिहरे, फिर आराम से बोले।
कितने लोग घायल और कितने मरे हैं?"
सर, 80 लोग घायल हैं और 40 मरे हैं।
बस, इतनी-सी बात में यह सब तमाशा हुआ है।
ये आम विस्फोट तो हमारी दिनचर्या में आते हैं।
इन विस्फोटों से हम अपना वोट-बैंक बढ़ाते हैं।
इतने में मंत्री भड़का और बोला,
सर आपके सहायक होने के नाते,
सारे प्रश्न मुझसे ही पूछे जाते हैं।।
गृहमंत्री बोले, कह देना कि हमने इन आतंकियों की,
घोर निन्दा की है।
और जाँच में चार संदिग्धों की पहचान की है।
मंत्री बोला, सर, आपको क्या लगता है,
जनता हमारी दलीलें मान जाएगी।
गृहमंत्री बोला मानेगी नहीं तो और कहाँ जाएगी।
अब चिन्ता न करो, आराम से सो जाओ।
दूध-मलाई खाओ और शोक मनाते जाओ।।

बेटियाँ

-अभिनव पचौरी
नवम 'क'

बोये जाते हैं बेटे,
उग आती हैं बेटियाँ।
खाद पानी बेटों में
पर लहराती हैं बेटियाँ।
एवरेस्ट पर ठेले जाते हैं बेटे
पर चढ़ जाती हैं बेटियाँ।
रुलाते हैं बेटे,
और रोती हैं बेटियाँ।
कई तरह से गिराते हैं बेटे,
पर संभाल लेती हैं बेटियाँ।
ओस की बूँद सी होती हैं बेटियाँ।
रोशन करेगा बेटा एक ही कुल को,
दो-दो कुलों की लाज को रखती हैं बेटियाँ।
काँटों की राह पर खुद चलती रहेंगी,
औरों की तरह फूल ही होती हैं बेटियाँ।
कैसा ये विधान है, दुनिया की रस्म है।
मुट्ठी में नीर, मन की पीर होती हैं बेटियाँ।
बोझ नहीं अपितु ओज होती हैं बेटियाँ।।

मातृभूमि

-प्रदीप कुमार भारती
सप्तम 'ख'

जिसकी रज में लोट-लोट कर बड़े हुए हैं,
घुटनों के बल सरक-सरक कर खड़े हुए हैं।
परम हंस सब बाल्यकाल में सब सुख पायें,
जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलायें।।
हम खेले-कूदे हर्षयुक्त जिसकी गोद में,
हे मातृभूमि तुमको शोकाकुल नहीं देख सकते।
पाकर तुमको सभी सुखों को हमने भोगा,
तेरा प्रत्युत्पकार भी क्या हमसे होगा।।

श्री गुरू जी

-अभिषेक यादव
नवम 'ख'

संघ यूँ सफल न होता
सब संघों से अलग न होता
सेवा-भाव नस-नस में बहता
अत्यन्त क्षमाशील अहंकार इनसे दूर ही रहता
ज्ञान का अपार भण्डार
उदारों से अधिक उदार
लक्ष्मीबाई के लाल
सदाशिव के नंदन
19 फरवरी का शुभ दिन
इनका हुआ धरती पर आगमन
इनके जन्म से नागपुर हुआ धन्य
आओ हम सब मिल करें वंदन
जन्म शती के अवसर पर
श्री गुरू जी को शत-शत नमन
श्री गुरू जी को शत-शत नमन।

दहकते चिनार

-प्रणव त्रिपाठी
एकादश 'क'

घाटी की पगडंडी पर रक्तिम चिनार दहकते हैं।
बेजुबाँ होने पर सारे हालात बयाँ करते हैं।
ऊँचे-घने चिनार जो कभी वादी की शान थे।
आज वही निर्ममता की अनकही कहानी कहते हैं।
झेलम जिसको अपने यौवन पर अभिमान था।
आज वहीं सीमाओं में बँधकर रहती है।
सिंधु जो उन्मुक्त भाव से स्वच्छंद विचरती थी।
आज वही डरकर-सिमटकर वादी में बहती है।
घाटी जो कभी धार्मिक सदभाव की मिसाल थी।
आज नहीं पाक-परस्ती के काल मेघ घुमड़ते हैं।
वादी के पंडित जो वादी के सुख-दुःख के साथी थे।
आज वही आतंक की आग में झुलसते हैं।
वादी जो कभी धरती का स्वर्ग कहलाती थी।
आज वही वादी एकान्त में सिसक-सिसककर रोती है।

-अभिषेक यादव
नवम 'ख'

चिपकू मित्र से पीछा छुड़ाने का नुस्खा -

मैं अपने मित्र के स्वभाव से बड़ा परेशान था, और
उनसे छुटकारा पाना चाहता था। मैं अभी स्कूल से लौटा ही था कि महाशय मेरे कमरे में आए सोचा आज उन्हें उल्लू बनाया जाए। मैंने पूछा आप
कुछ खायेंगे या पियेंगे।
महाशय बोले मैं पी लूँगा।
ठण्डा या गर्म?
ठण्डा।
शर्बत या लिमका?
शर्बत।
गुलाब का या नीबू का?
गुलाब का।
किसान का या रसना का?
किसान का।
बर्फ कम या ज्यादा?
कम।
गिलास में या कप में?
गिलास में।
गिलास काँच का हो या स्टील का?
मित्र तंग आकर बोला - आप मुझे जाने का रास्ता बता सकेंगे?
मैंने पूछा बस का या रिक्शे का?
बस का।
बस यू.पी. रोडवेज या प्राईवेट सर्विस की?
यू.पी. रोडवेज।
डीलक्स या दूसरी?
उत्तर पाने के लिए मुड़कर देखा तो महाशय बेहोश पड़े थे। कुछ देर बाद पानी की छीटें मारने पर उनकी आँखें खुली तो मैंने पूछा -
डॉक्टर बुलाऊँ या हकीम
डाक्टर।
होम्योपैथिक या एलोपैथिक?
यह सुनकर वह फिर से बेहोश हो गए तथा तब कम दिखाई पड़ते हैं।

कुछ करना होगा

-आकाश सिंह
अष्टम 'ख'

इस कविता के माध्यम से मुनिया नाम की एक लड़की ने आतंकवाद पर अपनी चिंता व्यक्त की है, और अपनी दोस्त पर भरोसा करते हुए कुछ कह रही है,

वह कुछ इस प्रकार है:-
मुनिया बोली चिड़िया रानी,
तुमको कैसा लगता होगा।
भीड़-भरे चौराहे पर जब, बम कोई फटता होगा।
फटते ही बम सभी ओर ही भगदड़ मच जाती होगी।
और इन्हीं के बीच सिसकियाँ सबकी ही दब
जाती होंगी।
ना जाने कितने लोगों के ही चिथड़े उड़
जाते होंगे।
नहीं दोष कुछ भी है जिनका, पैसे ही मर जाते होंगे।
यह सब तुमको नहीं तनिक भी, शायद
अच्छा लगता होगा।
ऐसे में अब चिड़िया रानी, तुमको ही कुछ
करना होगा।
सुबह-सुबह खिड़की पर बजाकर, लोगों
से यह कहना होगा।
अच्छी बात नहीं ये किंचित, बंद इसे अब करना होगा।
मिल-जुलकर हमें धरा पर, स्वर्ग यहाँ नया रचाना होगा।

दिल्ली में बिल्ली

-आदित्य विक्रम सिंह
अष्टम 'ख'

दिल्ली में बिल्ली रहती है;
चूहे खड़े कतार में,
पूँछ-मूँछ सब हिला रहे हैं;
बिल्ली के दरबार में।

इंतजार में सभी वहाँ पर;
शायद अगली बार में,
बिल्ली रानी उनको शामिल;
कर लेंगी सरकार में।

बत्ती लाल लगाकर वे;
घूमेंगे ए० सी कार में,
टीवी पर बोलेंगे;
फोटो आयेगी अखबार में।

सम-सामयिक दोहे

-आदित्य विक्रम सिंह
दशम 'ख'

हर दशमी रावण हँसे, देखे भीड़ अनन्त।
कपट वेष में घूमते, उसके चेले सन्त।।

मन में रावण रम रहा, ऊपर-ऊपर राम।
रावायण का राज्य है, रामायण गुमनाम।।

कुंभकर्ण की सीख को, धारण करते लोग।
कर्तव्यों से बेखबर, केवल चाहें भोग।।

मेघनाद हारा नहीं, किया नया संधान।
महादेव की कृपा से, रचा नशे का बान।।

उसी नशे के बान से, मूर्च्छित हुए जवान।
लाकर अब संजीवनी, कौन उबारे प्रान।।

अभिशापित माँ बाप हैं, बेटे खड़े उदास।
बहुओं को रनिवास है, बूढ़ों को वनवास।।

-अमित यादव
षष्ठ 'ख'

सवेरा

सबसे पहले सूरज राजा
धरती पर आते हैं।
नन्हीं-नन्हीं स्वर्णिम किरणें
सभी जगह बिखराते हैं।

देख उजाला चिड़िया रानी
खुश हो चीं चीं करती है।
कौआ करता काँव-काँव
कोयल गाना गाती है।।

देख उजाला मुर्गा बोला
कुंकडू कूँ, कुंकडूँ - कूँ।
हुई प्रभात उठो सब भाई
आवाज सभी को देता हूँ।

रात और तारे

टिम-टिम करते तारे।
आजा पास हमारे।।

बड़े बल्ब सा चंदा मामा।
लगता है कितना प्यारा।

रात सुहानी आयी है।
संग में इनको लाई है।।

रात ये पूनम की आई
साथ रोशनी कितनी लाई है।

आओ बच्चों साथ हमारे।
लुका छिपी खेलें सारे।।

ग्लोबल वार्मिंग

-रवि कुमार कुँवर
नवम 'ख'

ग्लोबल वार्मिंग है एक समस्या,
इसे हमें निपटाना होगा,
इस दुष्ट दुर्योधन को,
हमें यहाँ से भगाना होगा।

ग्लोबल वार्मिंग से होता है,
जीव-जन्तुओं की जीवन हानि
पर्यावरण प्रदूषण बढ़ने से,
हो रहा है जीव-जन्तुओं का क्षरण।

कार्बन डाइ ऑक्साइड के प्रभाव से,
यह होता है विकसित।
फैल रहे प्रदूषण से,
यह होता है निर्वासित।

मौसम तथा जलवायु का,
ग्लोबल वार्मिंग पर प्रभाव है।
तापमान हमेशा बढ़ रहा है,
बढ़ रहा है ग्लोबल वार्मिंग।

प्रदूषण बढ़ने से हो रहा,
ओजोन परत में छेद।
मंडरा रहे हैं महामानवों पर,
ग्लोबल वार्मिंग का भेद।

पर्यावरण की ऊष्मा सोख लेने वाली गैसें
फैला रही हैं ग्लोबल वार्मिंग।
विश्व तापन के बढ़ने से हो रहा है-
इस पृथ्वी से महामानवों का अंत।

ग्लोबल वार्मिंग है एक समस्या,
इसे हमें निपटाना होगा।
इस दुष्ट दुर्योधन को,
हमें यहाँ से भगाना होगा।

लोकतंत्र शासन

-ओम जी द्विवेदी
नवम 'ख'

लोकतंत्र शासन में कुर्सी की सेवा।
जनता रहे भूखी प्यासी मंत्री जी को मेवा।।

कुर्सी के खेल में,
बेचैन हुए नेता।
वादों की नाव को,
कोई नहीं खेता।

माँझी के तेवर अब हुए जानलेवा।
जनता रहे भूखी प्यासी मंत्री जी को मेवा।

एक नहीं, दो नहीं,
सब भ्रष्टाचारी।

जुल्म इनके सह रही जनता ये बेचारी
निर्धन का रक्त चूस कर करे ये कलेवा।
जनता रहे भूखी प्यासी मंत्री जी को मेवा।

प्यासों के हैण्डपम्प सूखे,
भूखों की थाली खाली।

चुनावों के अवसर करें देश सेवा।
लोकतंत्र शासन में कुर्सी की सेवा
हम तो पाँच वर्षों में इन्हें एक बार चुनते,
लेकिन पाँच वर्षों में ये हमें बहुत धुनते।

सोर्स व सिफारिश बिन,
किसी की न सुनते

कुर्सी के कारण बेची देश सेवा।
जनता रहे भूखी प्यासी मंत्री जी को मेवा।

जीवन के सुनहरे स्वप्न,
फँसे हैं अधर में
भारत का स्वर्णिम भविष्य
फँसा है अधर में

बलिदानियों की कर दी, व्यर्थ सारी सेवा।
जनता रहे भूखी प्यासी, मंत्री जी को मेवा।

आरक्षण

-देवप्रिय मधुकर
नवम 'ख'

आरक्षण है समाज का अभिशाप।
कंपित है जिसके प्रभाव से सारा राष्ट्र आज।।

देश भर में छाया है इसका काला राज।
जो कर रहा है राष्ट्र की मेधाओं का नाश।।

नौकरी मिलती है इनको पाकर भी अंक पचास
हम पाकर नब्बे भी काम न पाते काज।।

मार्कशीट व ट्राफी अब बन गये अलमारियों की सज्जा
चूँकि फैला हुआ है 'आरक्षण' का साम्राज्य।।

छात्रों ने की है देश भर में अनेक हड़तालें।
स्कूल और कालेजों में पड़ गये हैं ताले।।

वोट बैंक बढ़ाने का यह सब जरिया।
पर सरकार को बदलना होगा अपना नजरिया।।

कम योग्य व्यक्ति भी क्या विकसित बन पायेगा।।
शायद ऐसे तो कभी होने न पायेगा,
क्योंकि सर्वश्रेष्ठ लोगों द्वारा ही इतिहास रचा जायेगा।।

अतः -
छोड़े आरक्षण, संरक्षण अपनाना होगा,
देश के डूबते हुए भविष्य को बचाना होगा।

भाई को अपने भाई पै विश्वास नहीं है।
रिश्तों पै खून के ये सियासत का असर है।।
गो खुद को पाक साफ सभी बोल रहे हैं।
पर है इन्हीं में चोर अगर चोर कहीं है।।

आज का इन्सान

-देवप्रिय मधुकर
नवम 'ख'

इन्सानियत के नाम पर इन्सान रो रहा।
मनुज ही मनुज को बर्बाद कर रहा।।
देखो इधर-उधर महाभारत मचा हुआ।
चारो तरफ बुराइयों का चक्रव्यूह रचा हुआ।।
कोई तो अभिमन्यु होगा, यही दीप मन में जल रहा।
इन्सानियत के नाम पर इन्सान रो रहा।।
जब तक दम थी हाथों में, खुशबू थी जब साँसों में।
किलकारी बनकर गूँजा अब वो आँगन कहाँ रहा।।
उँगली पकड़कर बड़े हुए, वो संस्कारों को भूल गए।
बैठ सोचता हूँ अब, वो स्वर्णिम दिन कहाँ गए।।
राम-लक्षमण जैसे भाई, श्रवण से पुत्र कहाँ गए?
दौलत की खातिर भाई-भाई का खून बहा रहा।।
माँ, बहन, बेटी की इज्जत, आज दाँव पर लगी हुई।
गली, सड़क, चौराहों पर, लाखों द्रौपदियाँ खड़ी हुई।।
दुःशासन का करे मुकाबला, अब वो कृष्ण कहाँ रहा।
कभी आएगा स्वर्णिम युग, आशा दीप जला रहा।।

होते क्यों नाराज

-अभिषेक पाण्डेय
सप्तम 'क'

"जरा बताओ आज
सूरज भैया,
हर सर्दी में
होते क्यों नाराज?

इतना न गुस्से में डोली
भूल हुई क्या हमसे बोली
कल की नरम-नरम बोली से
टूट गया क्यों साज?

गर्मी, वर्षा सबको प्यारे
अब क्यों दुश्मन बने हमारे,
पल में प्यारी गौरैया से
तुम बन बैठे क्यों बाज?

खुशियाँ बाँटते चलो

-देवप्रिय मधुकर
नवम 'ख'

सुख-दुःख बाँटते चलो,
खुश रहो खुशियाँ बाँटते चलो।
गम न आने पाये जिन्दगी में,
कुछ ऐसा करते चलो।।
अगर निराशा है जिन्दगी में,
तो निराश मत होना।
मुश्किलें हो राहों में,
तो उदास मत होना।
निराशा हो मन में,
तो आशा के दीप जलाते चलो।
गम के पल थम पायेंगे,
खुशियाँ फिर मुस्करायेंगी।
जिंदगी से कभी मायूस मत होना,
वो पल भर की खुशियाँ याद आयेंगी।
जो खुशियाँ मिले उन्हें याद बनाते चलो।।
गम न आने पाए जिंदगी में, कुछ ऐसा करते चलो।।
किसी बड़ी खुशी के इंतजार में,
छोटी खुशियों को न खो देना,
खुशी न मिले किसी पल में,
तो जिंदगी में गमों का बीज न बो देना।

बंदर और कलंदर

-अर्जित कुमार
सप्तम 'ख'

सड़क के किनारे एक कलंदर,
नचा रहा था अपना बंदर।
बोला मैं हूँ मस्त कलंदर,
अब देखो मेरा यह बंदर,
फौरन ही होगा छू-मंतर।
जंतर-मंतर कला-कलंदर,
हरा समंदर गोपी, चंदर,
तू है मेरा वीर सिकंदर।
उड़जा और पहुँच जालंधर।
हनुमान-सा बली धुरंधर।

बंदर बोला - सुनो कलंदर,
माना, मैं हूँ वीर सिकंदर,
हनुमान-सा बली धुरंधर,
पर कैसे पहुँचू जालंधर?
रोटी नहीं पेट के अन्दर।
भरे पेट का जादू मंतर,
खा लूँ यदि दो-चार चुकंदर,
बन जाऊँगा मूँछ-मुछंदर
हो जाऊँगा मैं छू-मन्तर।

चंदा मामा

-शिवम यादव
पंचम

चंदा मामा, चंदा मामा,
अब तो कर डालो हंगामा,
बीते गये युग डरते-डरते
सूरज से यूँ छिपते-छिपते,
सूरज आता तुम छिप जाते,
सूरज जाता तुम आ जाते,
इतने तारे संग तुम्हारे,
चंदा मामा, चंदा मामा,
अब तो कर डालो हंगामा।।

मिठाई भरा पत्र

-अर्जित कुमार
सप्तम 'ख'

आदरणीय रसगुल्ला चाचा और जलेबी चाची,

मेरा रस भरा प्रणाम।

मैं यहाँ सकुशल हूँ और आशा है कि आपके ऊपर भी मक्खियाँ भिनभिनाया करती होंगी। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मेरी बड़ी बहन बर्फी की शादी लड्डू नगर के प्रसिद्ध मक्खन लाल पेड़ा प्रसाद के सुपुत्र खीर मोहन के भतीजे गुलाबजामुन के साथ होनी निश्चित हुई है। दही-बड़े फूफा और कचौड़ी मल मामाजी को भी निमन्त्रण दे दीजिएगा। समोसे भैया और पापड़ी भाभी को लाना न भूलना। आशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि आप लोग उपस्थित होकर वातावरण को चिपचिपा बनाने में सहयोग करेंगे।

आपकी आज्ञाकारिणी भतीजी
इमरती बानो

जियो तो ऐसे जियो

-प्रशान्त सिंह चौहान
सप्तम 'क'

क्षमा नम्रता प्रेम धन सब धर्मों में प्रीत।
अच्छाई में अमृत है सच्चाई में जीत।।
अरुणोदय से पूर्व उठ, लो ईश्वर का नाम।
स्वस्थ रहो सुख शान्ति दो आओ सबके काम।।
नवधा भक्ति विवेक गुण, परहित में हो ध्यान।
सब धर्म तो सत्संग से, रखो पढ़ाई में ध्यान।।
गुरू की, माता-पिता की कभी न करो बात।
अनुशासन पालन करो, करो न तुम उत्पात।।
कर्म करो कर्तव्य से, खूब बढ़ेगा मान।
औरों का सम्मान लो, पाओगे सम्मान।।
हरपल यहाँ अमूल्य है, समय न खोना व्यर्थ।
हर क्षण उपयोगी रहे, हर क्षण का है अर्थ।।
अच्छे ग्रन्थों को पढ़ो, जिनसे उठे चरित्र।
नाम तुम्हारा अमर हो, जीवन रहे पवित्र।।

राजनीति

-प्रकाश कुमार
अष्टम 'ख'

मेरी पहली मुलाकात राजनीति से हुई,
अपनी राष्ट्र की बिगड़ी स्थिति से हुई।
मैंने तो सोचा था सिर्फ संसद में राजनीति है।
वहीं पर उसकी अच्छी से अच्छी गति है।।
मैंने उससे रिक्वेस्ट किया।
विनम्र भाव से सजेस्ट किया।।
"देखो राजनीति अब हमें छोड़ो"
संसद में रहो, नेता को पकड़ो, उन्हें छेड़ो।"
अब राजनीति थोड़ी भड़क गयी
उसकी हालत थोड़ी सरक गयी।
उसने मुझे रपट कर बोला
थोड़ा सा झटक कर राज खोला।
"तुम नये मेहमान हो
तुम मुझसे बड़े अनजान हो।"
अभी भी दाल में काला है,
सब जगह मेरा बोलबाला है।
राजनेता मेरा घर वाला है।
संसद के बाहर ताले हैं।
घर-घर में बोलबाले हैं,
मैं वैभव से भरी सुराही हूँ।
हर जगह भटकने वाली राही हूँ
जो मुझे हृदय से अपनाते हैं
दुःख छोड़ वैभव को पाते हैं।
इतना कह कर वह चली गई।
मेरे मन को भी छली गई।
अब मैं सोच रहा हूँ, मैं क्या करूँ,
दिल को थामू या राजनीति के पल्ले पड़ूँ।

कैसी दिल्ली है भाई

-परमवीर कुमार
षष्ठ 'ख'

चाँदनी चौक में चाँद नहीं
दरियागंज में दरिया नहीं।
पहाड़गंज में पहाड़ नहीं
ये कैसी दिल्ली है भाई?
आनंद पर्वत पर आनंद नहीं
कुतुब रोड पर कुतुब नहीं
ये कैसी दिल्ली है भाई?
नई दिल्ली में पुराना किला
पुरानी दिल्ली में नई सड़क
झील में कोई झील नहीं
ये कैसी दिल्ली है भाई?

दहेज प्रथा एक सामाजिक कलंक

-मनीष कुमार
नवम 'ख'

दहेज लेने वालों गौर से सोचो जरा,
दो दिन की दौलत है उड़ जायेगी बन के हवा।
फिर तू ही कभी देगा बेटी को जन्म,
सिर झुकायेगा माँगेगा खुदा से रहम।
फिर सुनने वाला न होगा तेरा कोई अपना,
जान तेरी जायेगी रह जायेगा, अधूरा सपना।
क्यों करते हो अत्याचार हे लोभी इंसान,
तुम क्यों प्रताड़ित करते हो इन प्यारी सी बहुओं को
ये भी तो हैं उसी पिता की सन्तान।।
थोड़े से पैसे और धन के खातिर ले लेते हो इसकी जान,
तुम मानवता के विनाशक हो,
इन निर्दोष अबलाओं पर क्यों जुल्म ढाते हो?
हम दहेज के इस दानव को मार भगायेंगे।
अब सदा होगा तुम्हारा बुरा ही अंजाम,
अब न बहू जलेगी, न होगा अश्रु प्रवाह,
अब न बहू जलेगी, न होगा अश्रु प्रवाह,
हम सबको है यह पैगाम।।

घाट - घाट पर पंडे

-केशव तिवारी
षष्ठ 'ख'

घाट-घाट पर पंडे बैठे - घाट-घाट पर शोर है
बहुत बड़ा ईमानदार वह बहुत बड़ा वह चोर है
कोई कहता सबसे अच्छा पूजन मैं करवाता हूँ
कोई कहता मैं सीधे वैतरणी पार कराता हूँ।
पर इनके सारे दावों का कोई ओर न छोर है
घाट-घाट पर पंडे बैठे - घाट-घाट पर शोर है
नीले पीले लाल हरे सब रंग बिरंगे झण्डे हैं।
इन झण्डों से ज्यादा रंग बिरंगे सारे पण्डे हैं।
आज इन्हीं के रंगबाजी की चर्चा चारों ओर है।
घाट-घाट पर पंडे बैठे - घाट-घाट पर शोर है।
उल्टे सीधे मंत्री से ये चला रहे दुकानों को।
सबके सब मिल धोखा देते हैं अपने ही यजमानों को।
लूट पाट में सब एक जैसे क्या कोई कमजोर है।
घाट-घाट पर पंडे बैठे घाट-घाट पर चोर हैं।
पण्डागीरी में ही इनकी औलादें भी ढलती हैं।
और इस धंधे में इनकी कई पीढ़ियाँ पलती हैं।
जिसके जितने चेले चापड़ उसका उतना जोर है।
घाट-घाट पर पंडे बैठे घाट-घाट पर शोर है।
हमें त्याग का पाठ पढ़ाकर अपनी थैली भरते हैं।
हमसे ज्यादा ये पंडे ही गंगा मैली करते हैं।
रूप भले ही शुद्ध सात्विक लेकिन आदमखोर हैं।
घाट-घाट पर पंडे बैठे घाट-घाट पर शोर है।

जग में होता उसका नाम

-प्रद्योत
पंचम

मेहनत से करते जो काम
जग में होता उनका नाम
पर्वत की छाती को फोड़
ऊपर से जो धारा आती
बाधाओं से लड़ने वाली
वह जीवन झरना कहलाती।

बदलाव

-जगमोहन यादव
नवम 'ग'

निज देश में ही आज हम पूरे विदेशी हो गये।
वेष भूषा भाव सब अपने चिरन्तन खो गये।।
मानसिक दासता में त्याग निज संस्कृति अमल।
करने लगे हर बात में पाश्चात्य की अन्धी नकल।।
श्वेत धोती कुर्ता मिरजई पगड़ी हटी।
कोट और पतलून के संग एक टाई आ डटी।।
खाने लगी जूठन सभी की मेज पर रखी हुई।
भोज की पशु रीति निकली अब बफर सिस्टम हुई।।
मातृभाषा छोड़ अंग्रेजी लगे हम बोलने।
पश्चिमी रंग में रंगे ही लगे हिलने डोलने।।
बालक भी माता-पिता जी कभी कहते नहीं।
मम्मी, डैडी और पापा बोलते हैं सब कहीं।।

वृक्ष लगाये वृक्ष बचाये

-नैना
पंचम

वृक्ष धरा के हैं भूषण,
करते हैं ये दूर प्रदूषण!!
करते नवजीवन संचार,
वन्य जीव का ये आहार!!
इन वृक्षों में पलने वाले,
जीवों का अनुपम संसार!!
मानव जीवन के रक्षक,
करते हैं सबका उपकार!!
वृक्ष लगाये वृक्ष बचायें,
वृक्ष हमारे जीवन हैं!!
पोषक तत्त्वों की रक्षा,
और प्राण वायु का उत्सर्जन!!
प्रदूषण की समस्या का,
ये वृक्ष ही हैं एकमात्र निदान!!
रोगों का ये उपचार करते,
देते हमको जीवनदान!!
ये तनिक जो खुशहाली है,
वह भी न रहने पायेगी!!
यह स्वर्णमयी वसुन्धरा,
मरघट मयी बन जायेगी!!
यदि वृक्षारोपण की प्रक्रिया,
आरम्भ नहीं की जायेगी!!
अतः
वृक्षारोपण का अभियान,
है पुनीत अरु कर्म महान!!
तन, मन, धन से इन्हें सँवारे,
पर्यावरण संरक्षण पर दें ध्यान!!
ये वृक्ष हैं संदेश देते,
प्रकृति के सौन्दर्य का!!
आज हम करते हैं उसको,
द्रौपदी के चीर सा!!
तो धरती की जिन्दगी को,
हम नया वरदान देंगे!!

समय

-जगमोहन यादव
नवम 'ग'

जून का महीना था,
चेहरों पर पसीना था।
बिजली गुल थी,
फ्रिज सुन्न थी।
सभी का बुरा हाल था,
कोई पीला तो कोई लाल था।
रात को साढ़े आठ होने को थे,
सारे लोग सोने को थे।
दोपहर में, सूरज बहुत उखड़ा हुआ था,
सिर पर वह चढ़ा हुआ था।
सभी चिल्ला रहे थे,
गर्मी से बिलबिला रहे थे।
मैंने पूछा सूरज से,
अरे भाई! क्यों कहर बरसा रहे हो।
लोगों को क्यों सता रहे हो?
पहले तो तुम इतना नहीं सताते थे।
सूरज बोला, अरे भाई मैं खुद परेशान हूँ।
मँहगाई से हैरान हूँ,
मैं भूख से परेशान हूँ,
इसलिए ओवरटाइम कर रहा हूँ।

जिज्ञासा

एकाएक मंत्री जी कोई बात सोचकर मुस्कुराए,
कुछ नए से भाव उनके चेहरे पर आए।
उन्होंने अपने पी.ए. से पूछा -
क्यों भाई, ये डेमोक्रेसी क्या होता है?
पी.ए. कुछ झिझका, सकुचाया, शर्माया!
बोलो - बोलो
डेमोक्रेसी क्या होती है?
सर! जहाँ जनता के लिए
जनता के द्वारा
जनता की ऐसी-तैसी होती है,
वही डेमोक्रेसी होती है।

हँसना जरूरी है

-ऋतिक श्रीवास्तव
अष्टम 'ख'

सोनू के रिपोर्ट कार्ड में मैथ्स में कम मार्क्स देखकर उसके पापा ने कहा - दो थप्पड़ लगाऊँगा।

x x x

सोनू : हाँ पापा, चलो मुझे मैथ्स पढ़ाने वाले सर का घर भी पता चल गया है।

टीचर : बच्चों आप अठारवीं शताब्दी के लोगों के बारे में क्या जानते हैं?

छात्र : वे सभी अब मर चुके हैं।

x x x

टीचर : पाँच पालतू पशुओं के नाम बताएँ।

श्याम : तीन गाय व दो बकरी।

x x x

पापा : चिंटू तुम बड़े होकर क्या बनोगे?

चिंटू : जानवरों का डाक्टर

पापा : क्यों?

चिंटू : क्योंकि जानवर गलत इलाज की शिकायत नहीं करते हैं।

x x x

मरीज : डाक्टर साहब मुझे कानों में ट्रेन की आवाज सुनाई देती है।

डाक्टर : मुझे तो कोई आवाज नहीं सुनाई दे रही है।

मरीज : लगता है, ट्रेन किसी स्टेशन पर रुक गई है।

x x x

एक बार एक आदमी मेरे पीछे आता गया, आता गया, आता गया फिर क्या बाद में उसे एक रुपया देना ही पड़ा।

हँसने के लिए

-अंकित गुप्त
नवम 'ख'

1. रास्ते से जाते व्यक्ति ने देखा कि एक आदमी कब्र पर बैठा है।

   उसने कहा : क्या तुम्हें डर नहीं लगता?

   आदमी : इसमें डर की क्या बात है, कब्र में थोड़ी गर्मी लग रही थी तो बाहर आकर बैठ गया।

2. एक दोस्त दूसरे दोस्त से -

   आसमाँ में जितने सितारे हैं,
   आँखों में ज़ितने इशारे हैं,
   समुन्दर में जितने किनारे हैं,
   उतने स्क्रू ढीले तुम्हारे हैं।

3. एक व्यक्ति जो कुँवारा है अपने शादीशुदा दोस्त से।

   कुँवारा व्यक्ति : भाई पत्नी को बेगम क्यों कहते हैं?

   शादीशुदा व्यक्ति : क्योंकि शादी के बाद सारे गम तो पति के हिस्से में आ जाते हैं, और उसे हसबैंड कहकर उसका बैण्ड बजा दिया जाता है।

4. रमेश ने सोनू से प्रश्न किया-

   रमेश : भाई प्यार का बीमा क्यों नहीं होता?

   सोनू : भाई अगर प्यार का बीमा होता तो रोज़ दिल टूटते और अब तक बीमा कम्पनियाँ कंगाल हो जातीं।

5. सवाल : लेडी और ओवन में क्या अन्तर है?

   जवाब : पारा चढ़ने पर ओवन को ऑफ किया जा सकता है पर लेडी को नहीं।

6. कोई आपकी तारीफ करे.....

   आपको स्मार्ट कहे.....तो उसे जोर से एक थप्पड़ मारो, आखिर उसकी हिम्मत कैसे हुई आपको अप्रैल फूल बनाने की, वो भी मार्च के महीने में।

चुटकुले

-अंकित पाल
नवम 'क'

1. भोला (दुकानदार से) - भाई साहब मुझे जल्दी एक मच्छरदानी दे दीजिए। मुझे बस पकड़नी है।

   दुकानदार (भोला से) - माफ कीजिए भाई साहब मेरे पास इतनी बड़ी मच्छरदानी नहीं है। जिसमें बस पकड़ी जा सके।

2. मोनू - अगर तुम मुझे उधार दे सकते हो तो मैं तुम्हारा जिन्दगी भर एहसानमन्द रहूँगा।

   विक्की - यार मैं तुम्हें इतने लम्बे समय तक उधार नहीं दे सकता।

3. पहला बच्चा - जेल को हवालात क्यों कहते हैं?

   दूसरा बच्चा - अरे बुद्धू, जेल में सिर्फ खाने को हवा और लात ही मिलती होगी।

4. बेटा (पापा से) - पापा आप मेरा होमवर्क कर सकते हैं।

   पापा - नहीं बेटा यह ठीक नहीं होगा।

   बेटा - पर कोशिश तो कर सकते हैं।

5. रवि - क्या बात है, आज कल तुम रोज नये कपड़े पहन कर आ रहे हो।

   विक्की - दरअसल, मेरे पापा ने ड्राइक्लीन की दुकान खोल ली है।

6. बेटा - पापा चश्मा दिला दीजिए मुझे दूर का दिखाई नहीं देता।

   पापा - (सूरज की ओर अंगुली करते हुए) - वो क्या है?

   बेटा - सूरज।

   पापा - बेटा, और कितनी दूर का देखना चाहते हो।

7. अमित - डॉक्टर मैंने चाभी निगल ली।

   डॉक्टर - कब

   अमित - 3 माह पहले।

   डॉक्टर - अब तक क्या कर रहे थे।

   अमित - दूसरी चाभी use कर रहा था वो भी गुम हो गई।

8. अतिथि(छोटे बच्चे से)- तुम्हारा जन्म किस दिन को हुआ है?

बच्चा - शुक्रवार को। और आप का।

अतिथि - रविवार को।

बच्चा - झूठ मत बोलिए। रविवार को तो छुट्टी रहती है। फिर आपका जन्म कैसा हुआ।

चेतावनी !

-अमित कुमार
नवम 'ख'

अच्छी तरह समझना होगा, पूरे पाकिस्तान को।
मानचित्र में रहना है, तो छेड़ न हिन्दुस्तान को।।

कब तक करते रहें सहन, तेरी इस बर्बरता को।
क्या ऐसे ही मरवा डालें, अपनी सारी जनता को।।

बेनकाब करना, तेरे भीतर के शैतान को।
मानचित्र में रहना है, तो छेड़ न हिन्दुस्तान को।।

चाहे हिन्दू-मुस्लिम है, वो चाहे सिक्ख ईसाई है।
भारत में जो रहता है, वो सगा हमारा भाई है।।

वैसे तो हम भारतवासी, प्यार सभी से करते हैं।
लेकिन देशद्रोहियों को असली गद्दार समझते हैं।।

हमने हर अधिकार दिया है, अच्छे इन्सान को।
मानचित्र में रहना है, तो छेड़ न हिन्दुस्तान को।।

गिरगिट जैसा रंग बदलने में, तू कितना माहिर है।
भूल न जाना मियाँ मुसर्रफ, तू भी एक मुजाहिर है।।

तू भी तो भारत में जन्मा, इसकी तुझको शर्म नहीं।
मातृभूमि से गद्दारी से बुरा, कोई दूसरा कर्म नहीं।।

शायद तुमने पढ़ा नही, ढंग से कभी कुरान को।
मानचित्र में रहना है, तो छेड़ न हिन्दुस्तान को।।

हँसगुल्ले

-रणविजय सिंह
नवम 'क'

1. एक साहब साइकिल पर जा रहे थे। पीछे बैठा उनका बच्चा जोर-2 से रो रहा था। उसको रोता देखकर एक राहगीर ने उनसे पूछा - "कमाल है आपका बच्चा रो रहा है, आप बेधड़क चले जा रहे हैं!

   साइकिल सवार ने कहा - बच्चे को जबरदस्ती रुलाया गया है क्योंकि साइकिल में घण्टी नहीं है।

2. डाक्टर - मैं आपके पति का इलाज नहीं कर सकता हूँ क्योंकि मैं घोड़ों का डाक्टर हूँ।

   पत्नी - तभी तो मैं आपके पास आई हूँ, क्योंकि यह नींद में लात मारते हैं।

3. माँ - बेटे ऐसे दो जन्तुओं के नाम बताओ जिनके दाँत नहीं होते?

   बेटा - दादा और दादी

4. ग्राहक (बैरे से) - बिजली चली गई हैं, मैं खाना खा रहा हूँ। जाओ मोमबत्ती ले आओ।

   बैरा - साहब खाना तो मुँह से खाना है मोमबत्ती क्या करोगे?

   ग्राहक (झल्लाकर) - अंधेरे में मेरा मुँह क्या तुम ढूँढोगे।

5. एक लड़का क्लास में सो रहा था। उसकी गर्दन बार-बार नीचे लटक जाती थी। अध्यापक ने जब इसका कारण पूछा तो लड़के ने जवाब दिया - सर, यह तो पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति है।

बरषत हरषत लोग सब, करषत लखै न कोइ।
तुलसी प्रजा-सुभाग तें, भूप भानु सो होइ।।

बाल गीत

-श्रुति गुप्ता
षष्ठ 'क'

भीड़भाड़ का आज जमाना,
देखो! रुको! सुनो! मत जाना।
ठेला, इक्का, ताँगा, टमटम।
रहा न इनमें तनिक भी दमखम।
बदल रही इनकी सरकार,
तेज साइकिलें, मोटर, कार।
ट्रैफिक नियम हुए हैं फेल,
आओ सब मिल, करे कंट्रोल।
ट्रैफिक पुलिस का मानो कहना,
जलते बुझते बल्ब समझना।
लाल बल्ब को देखकर रूकना।
जेबरा लाइन को कभी न छूना।
पीली लाइट, हो तैयार,
हरे बल्ब पर चल दो यार।
पैदल वालों रखना ध्यान,
बिन देखे मत करना प्रस्थान।
जेबरा लाइन पर ही चलना,
और कभी मत बीच में रुकना।
होगा यूँ ट्रैफिक कंट्रोल,
कभी न होगी धक्कमधेल।

नदी

पर्वतों की गोदी से उठ कर,
बलखाती लहराती आऊँ।
नाच नाच कर पाषाणों में
मीठा-मीठा गाना गाऊँ।
गाँव-गाँव को गाना सुनाती
झोपड़ियों से बातें करती
रामू के खेतों से होकर
सागर भैया से जा मिलती।
मेरे शीतल गहरे जल में
नाच मछलियाँ मुझे रिझायें।
नीले पीले लाल सुनहरे
फूल स्वयं को भेंट चढ़ायें।
कभी नहीं क्षण भर मैं रुकती
सदा भीगती जाती हूँ।
अपने भैया से मिलकर ही
अपना आप मिटाती हूँ।

सब्जी - परिणय

परम पूज्य आलू काका गोभी काकी,
सादर प्रणाम।

आपको यह जानकर खुशी होगी कि मेरी बेटी मिर्च की शादी सब्जी नगर निवासी पत्ता गोभी के पुत्र पालक प्रसाद से तय हुई है। आपसे अनुरोध है कि आप अपनी बेटी शलजम को अपने साथ जरूर लाइयेगा। टिंडे बेटे और बिटिया मेथी को एक किलो प्यार देना।

आपका भतीजा
टमाटर सिंह
कचालू मोहल्ला, साग नगर, लौकी प्रदेश

जंगल का राजा शेर

-अनुराग त्रिपाठी
नवम 'ख'

जिसकी दहाड़ सुनकर जंगल के सभी जानवर चौंकन्ने हो जाते हैं वह है जंगल का राजा शेर। आइए, जानते हैं शेर के बारे में कुछ दिलचस्प बातें-

1. आज से लगभग दस हजार वर्ष पहले शेर अफ्रीका, पश्चिमी यूरोप आदि से भारत और अमेरिका लाए गए थे।
2. भारत में थे गुजरात के 'गिर' के घने जंगलों आदि में पाये जाते हैं।
3. पैर काफी मजबूत होते हैं और दाँत लगभग 8 सेंटीमीटर लम्बे होते हैं और दांत लगभग 8 सेंटीमीटर लम्बे होते हैं।
4. एक युवा, शेर का वजन लगभग 150 से 250 किलोग्राम तक होता है जबकि शेरनी का वजन करीब 120 से 182 किलोग्राम होता है।
5. शेर की लम्बाई करीब 170 से 250 सेंटीमीटर तथा शेरनी की लम्बाई लगभग 140 से 175 सेंटीमीटर तक होती है।
6. शेर लगभग 20 घंटे आराम करता है शेर 50 मिनट खाने और 2 घंटे चलने में खर्च करता है।
7. शेर घास के मैदान और घने जंगल में रहना पसंद करता है। इनके दो ग्रुप बने होते हैं। शेरनी जिस ग्रुप में रहती है, उसे 'प्राइड' और शेर के ग्रुप को 'नोमैड' के नाम से जाना जाता है।
8. शेरनी को कम से कम 5 किलो और शेर को लगभग 7 किलो माँस की खुराक चाहिए।
9. शेरनी अपने झुण्ड के साथ शिकार करती है, जब कि शेर अकेले शिकार करता है।
10. जन्म के समय शेर को आँखों से दिखायी नहीं देता है। लगभग 1 सप्ताह बाद ही इसकी आँखों में रौशनी आ पाती है।
11. बचपन में शेर का वजन आम तौर पर लगभग 1.2 - 2.1 किलोग्राम होता है।
12. दहाड़ना, गुर्राना, जोर से खांसना, सीटी बजाना और घुरघुराहट करना आदि इसके आपस में बातचीत करने के तरीके हैं।
13. रात के समय शेर की दहाड़ 3 किलोमीटर की पूरी तक सुनी जा सकती है।
14. श्रीलंका के राष्ट्रीय ध्वज में शेर राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में दिखाया गया है।

रावण कभी नहीं मरता

-शिवम पाण्डेय
अष्टम 'ख'

आँखों की शर्म और ओठों की हया, कुछ खो गयी है ऐसे
फूलों की खुशबू रूठ गयी हो जैसे।

मात्र पचास रुपये की पेंशन के लिए, जब एक वृद्धा ने
दस का नोट आगे बढ़ाया,

तो चलो चाय पानी का इन्तजाम हुआ यह सोच
वह क्लर्क धीरे से मुस्कुराया।

बेइमानी के जंगल में घुसने के बाद,
हम भ्रष्टाचार के दलदल में ऐसे फँस गये
कि साग-सब्जी से पेट नहीं भरा तो चारा ही खा गये।

जब हमारे देश में हुआ था गोधरा कांड,
तो लोगों की आँखों में टूटा था आँसुओं का बाँध।
ना जाने कितनों को जलाया जिंदा कि,
सोच में पड़ गयी मानवता कि कैसा था हिंसा का नग्न नाच।

पहले तो हम ऐसे न थे
फिर क्यों उतार दिये कपड़े हमने मानवता के और ले आये कफ़न,
और खरीद लाये सामान अपनी ही अर्थी के।

मेरे छोटे से मस्तिष्क में यह सवाल है कौंधा कि आखिर
इस मानवता को क्यों गया है रौंदा?

आज तो हर मोड़ पर राका मिल जायेंगे।
किस-किस को समझायेंगे।
किरन-किरन को प्रेम और अहिंसा का पाठ पढ़ायेंगे।
आज तो हर मोड़ पे है रावण मिलता।
सच ही तो है रावण कभी नहीं है मरता।

अपने विभाग के सर्वोच्चाधिकारी

-कुन्दन कुमार
षष्ठ 'ख'

1. भारत के सर्वोच्च सेनाधिकारी	-	राष्ट्रपति
2. भारतीय थल सेना अधिकारी	-	थल सेनाध्यक्ष
3. जल सेना अधिकारी	-	जल सेनाध्यक्ष
4. वायु सेना अधिकारी	-	वायु सेनाध्यक्ष
5. देश के केन्द्रीय मंत्रिमण्डल के प्रमुख	-	प्रधानमंत्री
6. राज्य सभा के प्रमुख	-	सभापति
7. लोकसभा के प्रमुख	-	अध्यक्ष
8. सुप्रीम कोर्ट के प्रमुख	-	चीफ जस्टिस
9. प्रदेश का प्रमुख	-	राज्यपाल
10. विधान सभा का प्रमुख	-	मुख्यमंत्री
11. जिले का प्रमुख	-	जिलाधिकारी
12. नगर महापालिका का प्रमुख	-	मेयर
13. नगर पालिका का प्रमुख	-	चेयरमैन
14. टाउन एरिया का प्रमुख	-	चेयरमैन
15. ग्राम सभा का प्रमुख	-	सभापति

प्रो. अमर्त्य कुमार सेन

भारतीय मूल के प्रो. अमर्त्य कुमार सेन ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें अर्थशास्त्र विषय पर "नोबल पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। साथ ही देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' भी प्रदान किया गया। गुरूदेव रविन्द्रनाथ टैगोर के बाद प्रो. अमर्त्य कुमार सेन भारत के दूसरे ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ।

भारत में सर्वप्रथम

-कुन्दन कुमार
षष्ठ 'ख'

1. ब्रिटिश पार्लियामेण्ट के भारतीय सदस्य	-	दादा भाई नौरोजी
2. समाचार-पत्र (27 जनवरी 1780)	-	'बंगाल बजट'
3. भारतीय गणराज्य के राष्ट्रपति	-	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
4. भारत के प्रधानमंत्री	-	जवाहर लाल नेहरू
5. भारत की महिला प्रधानमंत्री	-	श्रीमती इन्दिरा गाँधी
6. राज्य की महिला मुख्यमंत्री	-	श्रीमती सुचेता कृपलानी
7. राज्य की महिला राज्यपाल	-	श्रीमती सरोजनी नायडू
8. सर्वोच्च न्यायलय की महिला न्यायाधीश	-	मीरासाहिब फातिमा बीबी
9. मुगल बादशाह	-	बाबर
10. ब्रिटिश गवर्नर जनरल	-	वारेन हेस्टिंग्स
11. भारत की महिला मंत्री	-	राजकुमारी अमृत कौर
12. फील्ड मार्शल	-	एस.एच.एफ.जे. मानेकशा
13. भारतीय प्रथम मिस यूनिवर्स	-	कु. सुष्मिता सेन
14. अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के भारतीय अध्यक्ष	-	डॉ. नागेन्द्र सिंह
15. संयुक्त राज्यसभा की महिला अध्यक्ष	-	श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित
16. भारतीय वायुसेना में महिला पायलट	-	हरिता कौर देवल
17. संयुक्त राष्ट्रसंघ की महासभा में हिन्दी में भाषण देने वाले विदेशमंत्री	-	अटल बिहारी बाजपेयी
18. प्रथम भारतीय अंतरिक्ष यात्री	-	कैप्टन राकेश शर्मा
19. प्रथम भारतीय महिला	-	कल्पना चावला

"कणाद"

-नदीश पाण्डेय
नवम 'ख'

महर्षि कणाद अन्न के कण बीन कर उससे भोजन करते थे, इसलिए उनका नाम कणाद पड़ा। उनकी दिनचर्या ही यही थी। कण बीनना और फिर भोजन करना। यह बात जब राजा को पता चली, तो उन्होंने काफी धन-दौलत महर्षि के पास भिजवा दी लेकिन उन्होंने शांत स्वर में कहा कि इसे जरूरतमंदों में बँटवा दीजिए।

ऐसा दो-तीन बार हुआ। फिर राजा स्वयं महर्षि के पास धन-दौलत लेकर गये। परन्तु राजा से भी उन्होंने अपनी पुरानी बात दोहरा दी। राजा इस व्यवहार से उदास हो गये। रानी ने देखा, तो बोली - 'राजन आप गलती कर रहे हैं। साधु के पास तो कुछ लेने के लिए जाते हैं, देने के लिए नहीं। जिनके भीतर सब कुछ है, उन्हें बाहर का कुछ लेने का मोह नहीं होता। वह बाहर का सब छोड़ देते हैं। यह सुनकर राजा जाकर महर्षि के चरणों में गिर गये और माफी माँगने लगे। राजा ने कहा- 'महर्षि, मेरी समझ में आ गया दीनहीन कौन है? मैं ही गरीब हूँ। अंदर की क्षुधा तृप्त होना ही अमीरी की निशानी है। आइए हम भी दुआ करें कि स्वयं में अमीर बनाने वाली संतुष्टि पा सकें।

करुणा

वह घर से निकल कर दफ्तर जा रहा था, थोड़ी दूर ही चला था कि एक कृशकाय बूढ़े भिखारी ने रास्ते में खड़े होकर कहा, 'बेटा, बूढ़े को कुछ दे दो।' मैंने अपनी जेब में उसे कुछ देने के लिए हाथ डाला व सारी जेबें टटोल डालीं, जेब में कुछ नहीं था। मैंने पास ही के चबूतरे पर भिखारी को बैठाया, उसे पानी पिलाया क्योंकि वह काँप रहा था, उसका मुँह भी सूख रहा था। उसके खुरदुरे हाथों को अपने हाथ में लेकर सहलाया और कहा - 'बाबा माफ करना, आपको मैं जरूर कुछ देता मगर अपना बटुआ घर पर ही भूल आया। इसलिए मैं आपको कुछ भी नहीं दे सकता। इसका मुझे दुःख रहेगा।' भिखारी की आँख में आँसू आ गये, उसने कहा - 'कोई बात नहीं बेटा, पैसे की कोई बात नहीं है। पैसा तो बहुत लोग देते हैं, मगर तुमने मुझे आज जो दिया वो आज तक किसी ने नहीं दिया। भगवान तुम्हारा भला करे।' क्या मिला था उस भिखारी को? बस, दो प्यार के बोल।

शिक्षा

"शिक्षा का उद्देश्य जीवन में वासनाओं से उत्पन्न दुख से मोक्ष का मार्ग बनाना है।"
-वेद

"शिक्षा से तात्पर्य संसार के उन सर्वमान्य विचारों को प्रकट करने से है जो प्रत्येक व्यक्ति के मन में निहित हैं।" -सुकरात

"मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति करना ही शिक्षा है।" -स्वामी विवेकानन्द

हम गढ़ते हैं अपनी तकदीर

-हर्षित गुप्त
सप्तम 'क'

अपने नन्हें हाथों से
हम गढ़ते हैं अपनी तकदीर

अपनी राह बनायेंगे हम
सिर को नहीं झुकायेंगे हम
बन्द हमारी मुट्ठी में है
अपने जीवन की तस्वीर।
हम गढ़ते हैं अपनी तकदीर

राष्ट्र नवीन बना सकते हैं
मानव नया बना सकते हैं
हम न रूकेंगे, सदा बढ़ेंगे
तोड़ बन्धनों की जंजीर।
हम गढ़ते हैं अपनी तकदीर

हमें न मोड़ो, हमें न तोड़ो
हमें न जंजीरों में जोड़ो
हम भी तो अनुभव करते हैं
अपनी सुख-दुःख अपनी पीर।
हम गढ़ते हैं अपनी तकदीर

हम तुम सबको दिखला देंगे
हम दुनिया को बतला देंगे
नन्हें-मुन्ने होकर भी हम
कितने तन के मन के धीर
हम गढ़ते हैं अपनी तकदीर।

रोचक जानकारियाँ

-गोविन्द कुमार सिंह
नवम 'ग'

समस्त विश्व की आधी समृद्धि व सम्पत्ति केवल चार देशों अमरीका, जापान, जर्मनी और दुबई के पास है, जिनकी आबादी पूरे विश्व की 15% है।

- सम्राट हेनरी अष्टम, युवावस्था में एक प्रतिष्ठित हैमर खिलाड़ी था।
- विश्व के समस्त जानवरों में केवल हाथी ही है जो अपने सिर के बल होना जानता है।
- यूरोप में, मध्यकाल में हर तीसरे दिन धार्मिक अवकाश रहता था।
- प्रख्यात भाषाविद् डेनमार्क निवासी रास्मस रास्क कोपेहेगेन विश्वविद्यालय में एक ही समय में तीन भाषाओं के प्रोफेसर थे। वह 235 भाषाओं के विद्वान थे और उन्होंने 28 भाषाकोश तैयार किए थे।
- उन्होंने ईश्वर के बारे में ऐसा कहा था.....

(i) मनुष्य ईश्वर की गलती है और ईश्वर मनुष्य की गलती -नित्शे

(ii) मनुष्य से घृणा करना और ईश्वर को पूजना यही सब धर्मों का योगफल प्रतीत होता है। -इंगरसोल

(iii) उस आदमी से बचकर रहें, जिसका ईश्वर आकाश में रहता है।-जार्ज बर्नार्ड शॉ

(iv) ईमानदार मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है। -इंगरपोल

(v) 19वीं शताब्दी में समस्या यह थी कि ईश्वर मर चुका था, 20वीं शताब्दी में यह समस्या है कि मनुष्य मर चुका है। -एरिकफ्रॉम

दुनिया का सबसे ऊँचा क्रिसमस ट्री

मैक्सिको सिटी में दुनिया का सबसे ऊँचा क्रिसमस बनाया गया है और गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स से इसे दुनिया के सबसे ऊँचे क्रिसमस ट्री का सर्टीफिकेट भी मिल गया है।

इस ट्री की ऊँचाई 110.35 मीटर है। इसका व्यास 35 मी. और वजन 330 टन है। इससे पहले 2007 में ब्राजील के अराकाजू के क्रिसमस ट्री को दुनिया का सबसे ऊँचा क्रिसमस ट्री चुना गया था। मैक्सिको सिटी का क्रिसमस ट्री ब्राजील के ट्री के मुकाबले 24 cm ऊँचा है।

इस क्रिसमस ट्री को क्रिसमस से लगभग 20 दिन पहले ही मैक्सिको सिटी में लगा दिया गया और इसे यहाँ 86 दिनों के लिए लगाया गया।

हमारा विद्यालय

-कृष्ण दत्त ओझा
षष्ठ 'ख'

पं. दीन दयाल विद्यालय, यह कानपुर की शान है।
शिक्षण संस्थानों में इसका ऊँचा अपना स्थान है।

पुण्य गंगा सरिता का पावन तट शृंगार है।
सबके मन को मोह रहा बनकर सुन्दर हार है।

वाणी का यह महल मनोहर, विद्या का आगार है।
मानों भू की साक्षरता का, स्वप्न हुआ साकार है।

अध्यापक सब कुशल यहाँ पर निज विषयों में दक्ष है।
अध्यापन मे चतुर हितैषी छात्रों के प्रति निष्पक्ष हैं।

अनुशासन है श्रेष्ठ यहाँ का, चारों ओर सुकाल है।
कभी न कोई झगड़ा दंगा, कभी नहीं हड़ताल है।

रहता पूरे वर्ष यहाँ पर शिक्षण का माहौल है।
सब निर्भय स्वच्छन्द यहाँ पर नहीं कहीं पर हौल (भय) हैं।

देश गीत

-सूरज प्रताप
षष्ठ 'ख'

वीरों की जान है भारत की शान है,
झण्डा हमारा भक्ति का निशान है।

तीन रंग इसमें हैं तीनों की कहानी।
अलग-अलग भाषा में गयी है बखानी।

चक्र सुदर्शन इसका है रखवाला।
देश का उजाला बार्डर का पहरेवाला।

वीरों की जान है भारत की शान है।
झण्डा हमारा भक्ति का निशान है।

हाथ पकड़ कर चलना सिखाया।
पीछे नहीं मुड़ना कसम है खिलाया।

खून बहाया था जैसे कि है पानी।
अलग-अलग भाषा में गयी है बखानी।

वीरों की जान है भारत की शान है।
झण्डा हमारी भक्ति का निशान है।

लुप्त होती प्रजाति

-अर्पित कुमार मिश्र
अष्टम 'ख'

आँकड़े बताते हैं
हमने प्रगति की है।
आँकड़े यह भी बताते हैं।
जहाँ-जहाँ प्रगति हुई
वहाँ-वहाँ स्त्री जाति कम हुई है।
यह हमारा संकल्प है।
हम तेज और चतुर्दिक
प्रगति करेंगे। लाजिमी है।
स्त्री जाति और कम होगी
कम होते-होते विलुप्त हो जाएगी।
तब हम नहीं पाएगें उसे अपने घरों में
बहिन, बेटी और बहू के रूप में
तब जाएगें हम इसे देखने
किसी बर्ड सेंचुरी में
या किसी बर्ड रिजर्व फारेस्ट या म्यूजियम में।

हरियाली

-निर्मला
षष्ठ 'ख'

आयी मन भायी हरियाली।
चिड़ियाँ चहकीं, चटकी कलियाँ,
धरती पर इसकी रंगरलियाँ
नव किसलय से फूटी लाली।
आयी मनभायी हरियाली।।

मलय समीर

मैं मलय समीर निराला।
सर-सर, मर-मर, सर-सर, मर-मर
नभ जल-थल में दे दे फेरी
रवि से कहती है गति मेरी
मधु दिन है आने वाला।
मैं मलय समीर निराला।।

फूल

फूल हैं हम सरल कोमल।
आँसूओं से मिल रहे हम
कंटकों से मिल रहे हम
विश्व हमने बिखेरा
चाँदनी सा हास निर्मल ।
फूल हैं हम सरस कोमल।।

हॉकी विश्व कप की कुछ महत्वपूर्ण जानकारियाँ

-ऋषभ सिंह
षष्ठ 'ख'

1. किसी भी खेल में विश्व कप एक अहम प्रतियोगिता होती है।
2. ओलम्पिक्स में पहली बार, 1908 में हॉकी खेली गयी, और इसके 63 साल बाद, 1971 में हॉकी के पहले विश्व कप का आयोजन हुआ।
3. विश्व कप की ट्रॉफी, सोने और चाँदी से बनी है, इसका वजन 11.56 किलोग्राम है, यह 56 सेन्टीमीटर ऊँची है, इसको बनाने में 900 ग्राम सोने, 7 किलोग्राम चाँदी और 350 ग्राम हाथी दाँत का इस्तेमाल हुआ है।
4. 1975 के बाद, भारत ने विश्वकपों में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया, 1978 का विश्व कप दक्षिण अमेरिका में और 1981-82 में बम्बई में खेला गया।
5. बम्बई के बाद, विश्व कप हर साल बाद खेला जाने लगा।
6. 1982 तक विश्व कप के मैच कुदरती घास के मैदान में खेल जाते थे, लेकिन इसके बाद मैच कृत्रिम घास (एस्ट्रो टर्फ) पर खेले जाने लगे।
7. पाकिस्तान ने चार बार विश्व कप जीता है, हालैंड ने तीन बार और जर्मनी ने दो बार, भारत और आस्ट्रेलिया ने एक-एक बार इस पर कब्जा किया।
8. भारत, उन चुनिन्दा देशों में एक है, जिसने अभी तक के सभी बारह विश्व कप खेले हैं।
9. पिछला विश्व कप 2006 में जर्मनी में आयोजित हुआ था, और जर्मनी ने ही, आस्ट्रेलिया को हराकर जीत लिया।
10. अगला विश्वकप फरवरी-मार्च 2010 में नयी दिल्ली के मेजर ध्यान चन्द स्टेडियम में खेला जायेगा। इस विश्व कप में बारह टीमें भाग लेंगी, जिनमें भारत की टीम भी होगी।
11. पिछले कप के दौरान, FIH की सूची में भारतीय टीम ग्यारवें स्थान पर थी।
12. सबसे पहला विश्व कप पाकिस्तान में खेला जाना था, लेकिन राजनीतिक कारणों से यह स्पेन में आयोजित हुआ तो पहला विश्व कप अक्टूबर 1971 में स्पेन के बार्सीलोना में खेला गया। इसमें भारत को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ, तीसरा स्थान हासिल करने के लिए भारत ने केन्या को हराया भारतीय टीम के कप्तान अजीत पाल सिंह थे, जो उस समय सुरक्षा बल की तरफ से खेलते थे।
13. दो साल बाद, 1973 में विश्व कप, एक बार फिर, यूरोप में आयोजित हुआ, हालैण्ड के शहर एम्सटरडम में, विश्व कप जीतने की इच्छा से बारह देशों ने भाग लिया।
14. 2010 में अपने ही देश में हो रहे विश्व कप में भारत के अच्छा प्रदर्शन करने की आशा है।

'गुरू उपकार'

-रोहन मुकेश
षष्ठ 'क'

गुरू ने कितना उपकार किया?
था मैं पहले आधारहीन।
गीली मिट्टी आधारहीन,
छू कर सुन्दर आकार दिया।
गुरू ने कितना उपकार किया?
था मैं केवल कोरा कागज।
था रंग न कोई भी सज धज,
अपनी समर्थ तूलिका चलाकर,
रंगों से मुझे संवार दिया।
गुरू ने कितना उपकार किया?
मैं पुष्प अविकसित था अबोध।
अपनी सुगन्ध का था न बोध,
भरकर मुझमें चेतना नयी,
शुभ कार्यों का आधार दिया।
गुरू ने कितना उपकार किया?

आँखों में क्या है?

कहा जाता है कि जिसने आँखों की भाषा पढ़ ली है, वह ज्ञानी है। लेकिन बाकी कुछ निर्भर करता है आपके सोचने के ढंग पर। आप सोचने वाले मन की बात जानें इससे पहले जरूरी है कि आप यह जानें कि किसकी आँख का कौन-सा भाव श्रेष्ठ है।

1. माँ की आँखों में - ममता
2. पिता की आँखों में - कर्तव्य
3. बहिन की आँखों में - स्नेह
4. भाई की आँखों में - प्यार
5. बालक की आँखों में - निश्छलता
6. गुरू की आँखों में - ज्ञान
7. अमीर की आँखों में - घमण्ड
8. सज्जन की आँखों में - नम्रता
9. मित्र की आँखों में - सहयोग
10. दुश्मन की आँखों में - प्रतिशोध
11. उद्यमी की आँखों में - योजना
12. विद्यार्थी की आँखों में - जिज्ञासा
13. गरीब की आँखों में - आशा
14. वैज्ञानिक की आँखों में - खोज
15. ईश्वर की आँखों में - दया

कारगिल के बाद

-अमित कुमार
एकादश 'क'

मिल गयी अगर आज्ञा मुझको,
पूरा इतिहास बदल देंगे।
लाहौर सिन्ध पेशावर और,
इस्लामाबाद भी ले लेंगे।।1।।

ताकत वह मेरी देख चुका,
इकहत्तर के जज्वातों में।
नब्बे हजार को छोड़ दिया,
उसी की ही मीठी बातों में ।।2।।

कश्मीर हड़पने का सपना,
सपना बनकर रह जायेगा।
यू. पी. से लहर उठेगी तो,
नापाक-पाक बह जायेगा।।3।।

बेईमानी की इच्छा छोड़,
वरना भूगोल बदल देंगे।
मिल गयी अगर आज्ञा मुझको,
पूरा इतिहास बदल देंगे।।4।।

मौके का यही तकाजा है,
अब बार्डर क्रास किया जाये।
आतंकवाद के अड्डों का,
अब जड़ से नाश किया जाये।।5।।

रोज-रोज की मौतों से,
छुटकारा बहुत जरूरी है।
अब जंग की शुरूआत करें,
यह भारत की मजबूरी है।।6।।

सह चुके बहुत हम छद्म युद्ध,
अब आर-पार की बारी है।
मिल जाये हमें बस आज्ञा अब,
अपनी पूरी तैयारी है।।7।।

मुम्बई पर हमला होना ही,
युद्ध की खुली चुनौती है।'
बन्दूक थाम लो हाथों में,
यह भारत माता कहती है।।8।।

ब्रह्मोस अग्नि और पृथ्वी;
किस दिन काम में आयेंगी।
यदि कैद रहा कश्मीर हमारा,
तो इसमें जंग लग जायेगी।।9।।

अधूरा नक्शा है भारत का,
हम उसको नयी शक्ल देंगे।
मिली अगर आज्ञा मुझको -
पूरा इतिहास बदल देंगे।।10।।

क्या आपको पता है?

-सत्यम प्रकाश
नवम 'ग'

- ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति आज से लगभग 15 अरब वर्ष पूर्व हुयी थी।
- ब्रह्माण्ड का 96% भाग एक रहस्यमयी शक्ति से डार्क एनर्जी से बना है। यही डार्क एनर्जी गुरुत्वाकर्षण के विरुद्ध कार्य करती है।
- किसी भी टेलीस्कोप से ब्रह्माण्ड के केवल 4% भाग को ही देखा जा सकता है।
- मंदाकिनी आकाश गंगा की उम्र लगभग 12 अरब वर्ष है।
- पृथ्वी से सर्वाधिक नजदीकी तारा सूर्य है।
- सूर्य को पीला तारा कहते हैं।
- न्यूट्रॉन तारे की खोज मिस जोकलिन वेल ने की।
- तारे के रंग से हम उसके तापमान को ज्ञात कर सकते हैं।
- नीले रंग के तारे का तापमान सर्वाधिक होता है।
- सूर्य का व्यास लगभग 13.84 लाख किमी. है।
- सूर्य की सतह का तापमान 6,000 °C होता है।
- सूर्य के केन्द्र का तापमान 15 मिलियन डिग्री सेन्टीग्रेट है।
- सूर्य पृथ्वी की भाँति अपनी मंदाकिनी की परिक्रमा 250 मिलियन वर्ष अर्थात् 25 करोड़ वर्ष में करता है। इस अवधि को सौर वर्ष कहते हैं।
- सौर परिवार का गुरुत्व केन्द्र सूर्य है।
- पृथ्वी का पलायन वेग 11.2 किमी./सेकेन्ड है।
- शुक्र के अलावा बुध को भी प्रातः एवं सायं का तारा कहते हैं।
- सर्वाधिक चपटा ग्रह शनि है।
- सबसे बड़ा क्षुद्र ग्रह सिरस है।
- चन्द्रमा ही एक मात्र ऐसा उपग्रह है जिसे जीवाश्म ग्रह की उपमा प्रदान की जाती है।
- चन्द्रमा पर मानव युक्त उतरने वाला अंतरिक्ष यान -11 अपोलो है।
- चन्द्रमा का अक्षीय झुकाव 5° है।
- नार्वे में अर्ध रात्रि का सूर्य दिखाई देता है।

"78118 भारत" क्या है?

-सत्यम प्रकाश
नवम 'ग'

अंतर्राष्ट्रीय खगोलीय संघ (IAU) ने भारत के 58वें स्वतन्त्रता दिवस की पूर्व संध्या पर भारत को सम्मानित करते हुए एक क्षुद्रग्रह का नामकरण भारत के नाम पर रखा। भारत के ही वैज्ञानिक विष्णु रेड्डी द्वारा अमेरिका में एरीजोना स्थित गुडरिक पिजोट वेधशाला में कार्य करते हुए 4 जुलाई को 2002 को खोजे गये क्षुद्र ग्रह का अंतरिम नामकरण पहले "2002 एनटी" किया गया था, जिसे बदलकर अब "78118 भारत" करने की घोषणा की इण्टरनेशनल एस्ट्रोनॉमिकल एसोसिएशन ने 14 अगस्त 2004 को की थी। 2-3 किमी. व्यास का यह एस्ट्रॉइड सूर्य का चक्कर चार वर्षों में लगाता हैं।

मुख्य झीलें -

- **कैस्पियन सागर** - यह खारे पानी की झील, विश्व में सबसे बड़ी झील है।
- **सुपीरियर झील** - यह ताजे पानी की सबसे बड़ी व विश्व में दूसरी बड़ी झील है।
- **विक्टोरिया झील** - यह तीसरी सबसे बड़ी झील है।
- **बैकाल झील** - यह सबसे गहरी झील (1940 मी.) है।
- **टिटिकाका झील** - यह सबसे ऊँची (3811 मी.) झील है।
- **मृत सागर** - यह सबसे नीची (समुद्री सतह से 396 मी. नीचे) झील है।
- **वान झील** - तुर्की की झील यह झील दुनिया की सबसे ज्यादा लवणता वाली (330%) झील है।

बोझे जघन्य पाप के लादे तमाम हैं।
टीके लगे कलंक के माथे तमाम हैं।।
संसद में बुद्धिबल से प्रबल बाहुबल दिखे।
आए चुनाव जीत के बाँके तमाम हैं।।

विश्व के प्रमुख स्थानों के भागोलिक उपनाम

-अनुज कुमार
नवम 'ख'

उपनाम		*स्थान*
हाथियों का देश	-	लाओस
चीनी का कटोरा	-	क्यूबा
यूरोप का कारखाना	-	बेल्जियम
पूरब का मोती	-	सिंगापुर
यूरोप का हृदय	-	स्विट्जरलैण्ड
सदाबहार शहर	-	क्वीटो
संसार का रोटी भण्डार	-	उत्तरी अमेरिका का प्रेयरीज मैदान
यूरोप का मरीज	-	तुर्की
अट्टालिकाओं का शहर	-	न्यूयार्क
अम्पायर सिटी	-	न्यूयार्क
हवामहल का शहर	-	शिकागो
स्वप्निल मीनारों का शहर	-	ऑक्सफोर्ड
बिजली की गड़गड़ाहट का देश	-	भूटान
स्वर्णिम द्वार का शहर	-	सेन फ्रांसिस्को
लौंग का द्वीप	-	जंजीवर (अफ्रीका)
यूरोप का बारूद का पीपा	-	बाल्कन राज्य
विचित्र महादेश	-	आस्ट्रेलिया
सोने व हीरों का देश	-	दक्षिण अफ्रीका

विश्व में सर्वाधिक बड़ा, ऊँचा व लम्बा

-शाश्वत रंजन
नवम 'ख'

सबसे बड़ा महासागर	-	प्रशान्त महासागर
सबसे बड़ी पर्वतमाला	-	एण्डीज पर्वतमाला (द. अमेरिका)
सबसे ऊँची पर्वतमाला	-	हिमालय (एशिया)
सबसे बड़ा बन्दरगाह	-	न्यूयार्क (सं. रा. अमेरिका)
सबसे विशाल मन्दिर	-	अंकोरवाट का मन्दिर (कम्बोडिया)
सर्वाधिक लम्बी सीमा वाला देश	-	कनाडा
सबसे बड़ी खारे पानी की झील	-	कैस्पियन सागर
सबसे बड़ी ताजे पानी की झील	-	लेक सुपीरियर (उ. अमेरिका)
सबसे बड़ा स्टेडियम	-	स्टॉहाब स्टेडियम (चेक गणराज्य)
सबसे बड़ा द्वीप समूह	-	इण्डोनेशिया
सर्वाधिक जनसंख्या वाला शहर	-	टोक्यो
सर्वाधिक विस्तार वाला शहर	-	लंदन
सबसे बड़ी खाड़ी	-	मैक्सिको की खाड़ी
सबसे लम्बा रेलवे प्लेटफार्म	-	खड़गपुर (प. बंगाल, भारत)
सबसे बड़ा परमाणु रिएक्टर	-	इग्नालिना स्टेशन (रूस)
सबसे विशाल ज्वालामुखी	-	मोनलोआ (हवाई द्वीप)
सबसे ऊँचा ज्वालामुखी	-	ओजोस डेल सालाडो (द. अमेरिका)
सर्वाधिक ऊँचा हवाई अड्डा	-	बेंगडा हवाई अड्डा (तिब्बत)
सबसे व्यस्त हवाई अड्डा	-	न्यूयार्क इंटरनेशनल एयरपोर्ट (न्यूयार्क)
सबसे गर्म प्रदेश	-	अलजीरिया (लीबिया)
सर्वाधिक निर्वाचक संख्या का क्षेत्र	-	भारत
सर्वाधिक सीमाओं वाला देश	-	चीन (13 देशों की सीमाएँ)
सबसे बड़ा राजमार्ग	-	ट्रांस कैनेडियन राजमार्ग
सबसे ऊँची राजधानी	-	लापाज (बोलिविया)
सबसे बड़ा सागर	-	दक्षिण चीन सागर
सबसे व्यस्त व्यापारिक नदी	-	राइन नदी (जर्मनी)
सबसे व्यस्त नहर	-	कील नहर

सबसे बड़ा हवाई अड्डा	–	शाह खालिद हवाई अड्डा (जेद्दा, साउदी अरब)
सबसे बड़ी कार्यालय इमारत	–	पेन्टागन (सं. रा. अमेरिका)
सबसे छोटा पक्षी	–	हर्मिंग बर्ड
सबसे बुद्धिमान पशु	–	चिम्पैंजी
सबसे बड़ा पक्षी	–	ऑस्ट्रिच (शुतुरमुर्ग)
सबसे बड़ा पुस्तकालय	–	कांग्रेस का पुस्तकालय (यू.एस.ए.)
सबसे बड़ा चिड़ियाघर	–	कुगर नेशनल पार्क
सबसे ऊँचा वृक्ष	–	फाउण्डर का वृक्ष (कैलिफोर्निया)
सबसे बड़ा नदी द्वीप	–	माजुली (ब्रह्मपुत्र नदी, असम)
विश्व की सबसे बड़ी मूंगे की चट्टान	–	ग्रेट बैरियर रीफ (ऑस्ट्रेलिया)

ज्ञान की बातें

-कुन्दन कुमार
षष्ठ 'ख'

बारह ज्योतिर्लिंग

1. श्री सोमनाथ मंदिर
2. श्री मल्लिकार्जुन मंदिर
3. श्री रामेश्वर मंदिर
4. श्री नामनाथ मंदिर
5. श्री महाकाल ज्योतिर्लिंग
6. श्री ओंकारेश्वर मंदिर
7. श्री विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग
8. श्री त्र्यंबकेश्वर मंदिर
9. श्री परली बैजनाथ
10. श्री केदारनाथ मंदिर
11. श्री भीमा शंकर मंदिर
12. श्री घृष्णेश्वर मंदिर

विश्व में सबसे बड़ा, सबसे ऊँचा एवं सबसे छोटा

-स्वस्तिक मिश्र
नवम 'ग'

- सबसे छोटा महाद्वीप - आस्ट्रेलिया (76,92,030 वर्ग किलोमीटर)
- सबसे बड़ा महाद्वीप - एशिया (क्षे. 4,40,30,000 वर्ग किलोमीटर)
- सबसे बड़ा महासागर - प्रशान्त महासागर (16,53,84,000 वर्ग किलोमीटर)
- सबसे छोटा देश - वेटिकन सिटी (44 हेक्टेयर)
- सबसे बड़ा देश - रूस (1,70,75,400 वर्ग किलोमीटर)
- सबसे विशाल पठार - तिब्बत (4,875 मी. ऊँचाई)
- सबसे ठण्डा प्रदेश - बर्खोयॉस्क (रूस)
- सबसे ऊँचा झरना - एंजिल (979 मी.)
- सबसे ऊँचा पठार - पामीर
- सबसे ऊँची पहाड़ियों की श्रेणी - हिमालय पर्वत श्रेणी
- सबसे बड़ा डेल्टा - सुंदर वन (भारत)
- सबसे ऊँचा बाँध - रोगुन्स्की (335 मी.) (तजाकिस्तान)
- सबसे बड़ी ताजे जल की झील - सुपीरियर
- सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन - ग्रांड सेण्ट्रल टर्मिनल (न्यूयार्क सिटी)
- सबसे ऊँचा रेलवे पुल - हुए. पी. लोंग ब्रिज (लुशियाना)
- सबसे बड़ी मूँगे की चट्टान - ग्रेट बैरियर रीफ (आस्ट्रेलिया)
- सबसे लम्बी नहर - स्वेज नहर (168 किमी.)
- सबसे बड़ा महाकाव्य - महाभारत
- सबसे ऊँची झील - टिसो सिकरु (तिब्बत)
- सबसे गहरी झील - बैकाल झील (रूस, 1940 मीटर)
- सबसे ऊँचाई पर स्थित झील - टिटिकाका (3,811 मी. ऊँचाई पर)
- सबसे बड़ा बन्दरगाह - न्यूयार्क
- सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश - भारत
- सबसे तेज गति वाला ग्रह - बुध
- सबसे छोटा पक्षी - हर्मिंग बर्ड
- सबसे बड़ा म्यूजियम - अमेरिकन म्यूजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री (न्यूयार्क)
- सबसे बड़ा चिड़ियाघर - ऋगर नेशनल पार्क (दक्षिण अफ्रीका)
- सबसे बड़ी कृत्रिम झील - बोल्गा झील (घाना)

तथ्य निराले

-ओंकार दीक्षित
नवम 'क'

1. टेबल क्लॉथ का जन्म खाने के बाद मुँह और हाथ पोंछने के उद्देश्य से हुआ था।
2. 19वीं शताब्दी में चाय के ठोस टुकड़ों को साइबेरिया मुद्रा के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।
3. दो बिलियन लोगों में से कोई एक ही 116 वर्ष या इससे अधिक की उम्र जी पाता है।
4. पृथ्वी पर 100 पौंड का एक आदमी जब मंगल पर हो तो उसका भार महज 38 पौंड रह जायेगा।
5. बार्बी का पूरा नाम बारबरा मिलसेंट रोबर्ट्स है।
6. ज्यादातर विज्ञापनों में घड़ी को प्रदर्शित करते समय उसका समय 10 बजकर 10 मिनट रखा जाता है।
7. कॉंटेदार साठी का हृदय एक मिनट में 300 बार धड़कता है।
8. बोइंग 747 में 57,285 गैलन ईंधन भरा जा सकता है।
9. ऑस्ट्रिच की आँख उसके दिमाग से बड़ी होती है।
10. मच्छर किसी और रंग की अपेक्षा नीले रंग की ओर ज्यादा आकर्षित होते हैं।
11. आइसलैण्ड के रेस्टोरेंट्स में टिप देना अपमान माना जाता है।
12. जंगल की आग ऊपर के पहाड़ों में निचले पहाड़ों की अपेक्षा तेजी से फैलता है।
13. मकड़ी का खून पारदर्शी होता है।
14. बोइंग 747 के डैने इतने बड़े होते हैं जितनी की राइट ब्रदर्स के पहले हवाई जहाज की कुल लम्बाई चौड़ाई थी।
15. तितलियाँ अपने पैरों से स्वाद का पता लगाती हैं।
16. मगरमच्छ अपनी जीभ बाहर नहीं निकाल सकता।
17. संसार भर की आधी से ज्यादा आबादी का मुख्य भोजन चावल है।
18. जब एक जंबो जैट उड़ान भरता है तो 4000 गैलन ईंधन खपा देता है।
19. हवाई जहाज का ईंधन सफेद पेट्रोल होता है।
20. सुरवोई एक ऐसा जहाज है जो हवा में पैट्रोल भरवा सकता है।

जरा हँस लो

-शिखर पाण्डेय
पंचम

एक गाँव में एक आदमी रहता था। उसके तीन बेटियाँ और एक बेटा था। उनके नाम क्रमशः टूटी, फीकी, बासी और मँहगा था। एक एक दिन उनके यहाँ एक मेहमान आया। उस आदमी ने कहा - 'टूटी खटिया लाओ मेहमान ने कहा - 'नहीं-नहीं मैं जमीन पर ही बैठ जाऊँगा। वो जमीन पर ही बैठ गया फिर आदमी ने कहा - 'फीकी चाय लाओ मेहमान ने कहा - 'नहीं-नहीं मैं कुछ नहीं पियूँगा। उसने कुछ नहीं पिया। फिर आदमी ने कहा - 'बासी खाना लाओ मेहमान ने कहा - नहीं-नहीं मैं खाना नहीं खाऊँगा। मेहमान ने खाना भी नहीं खाया। फिर आदमी ने कहा - 'मँहगा रिक्शा लाओ। मेहमान ने कहा - 'नहीं-नहीं मैं पैदल ही चला जाऊँगा और वह पैदल ही चला गया।

जरा हँस लो

1. बेटा - आज भूकम्प आने वाला है।

   पिता जी - बेटा, चिन्ता मत करो। घर तो मकान मालिक का है।

2. पिता जी सो रहे हैं। बच्चा पास में खेल रहा था। पिता जी खर्राटे ले रहे थे। बच्चा दौड़ा-दौड़ा किचन में गया। उसने अपनी माता जी से कहा - पिता जी का इंजन खराब हो गया है।

3. सागर भर किताबें हैं। नदी भर पढ़ पाते हैं बाल्टी भर याद हो जाता है। मग भर लिख पाते हैं। चुल्लू भर नम्बर मिलते हैं। चलो डूब मरते हैं।

आश्चर्यजनक तथ्य

-मानवर्धन कुशवाहा
नवम 'क'

* नॉरो दुनिया का सबसे छोटा राष्ट्र द्वीप है। इसका आकार मात्र 21 वर्ग किलोमीटर है।
* इंडोनेशिया 13667 द्वीपों से मिलकर बना राष्ट्र है।
* दुनिया का सबसे ऊँचा क्रिकेट मैदान हिमाचल में स्थित है। यह मैदान समुद्र तट से 2444 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।
* सन् 1666 में लंदन में लगी आग में 80 प्रतिशत शहर जल गया था।
* दक्षिणी ध्रुव एकमात्र महाद्वीप है, जहाँ साँप नहीं मिलते।
* पोलर भालू (ध्रुवीय भालू) एक बार में 86 पेंगुइन खा सकता है।
* कड़कने वाली बिजली का तापमान सूर्य की सतह के तापमान से पाँच गुना अधिक होता है।
* कॉकरोच का सिर काट देने पर भी वह कई हफ्तों तक जिंदा रह सकता है।
* सन् 1960 में दक्षिणी ध्रुव के वोस्तोक स्टेशन पर रूसी वैज्ञानिकों ने शून्य से 127 डिग्री नीचे का तापमान रिकार्ड किया था।
* सन् 1932 में इतनी तेज सर्दी पड़ी थी कि दुनिया के सबसे जल प्रपातों में से एक नियाग्रा फॉल्स जम गया था।

लक्ष्य निश्चित करें

-शुभम वर्मा
दशम 'ख'

आपकी क्या रुचि है? आप क्या बनना चाहते हैं? आप किस काम को और लोगों से अच्छा कर सकेंगे? कौन-सा पेशा कौन से उत्तरदायित्व या कौन-सा काम आपकी प्रतीक्षा कर रहा है - इसे देखें। जहाँ या जिस काम में आप अपने व्यक्तित्व की पूरी शक्ति लगा सकें, जिसमें आपका मन रम सके और जिसके द्वारा आप समाज और संसार को कुछ दे सकें वही आपके जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। लक्ष्य निश्चित करने पर आप स्वयं उस ओर बढ़ेंगे क्योंकि आपके लक्ष्य में आप को खींचने की शक्ति है। आपका मन लक्ष्य पर टँगा हुआ है इसलिए आप कहीं भी रहें आपका खिंचाव उस ओर रहेगा।

लक्ष्य ही मनुष्य का प्राण है, वही उसका जीवन है वहीं से उसे प्रेरणा मिलती है। संकटों का सामना करने के लिए वहीं से उसे साहस व बल मिलता है।

आपकी दृष्टि अपने लक्ष्य पर रहती है, उसे पाने पर रहती है और आप निरंतर उसकी ओर बढ़ते जाते हैं। आपका जीवन उत्साह और उल्लास से पूर्ण होता है क्योंकि आप सदैव लक्ष्य की प्राप्ति की आशा से प्रसन्न हैं।

लक्ष्य चुनते समय, जहाँ तक हो सके, ऐसा काम चुनें जिसमें समाज की ही सेवा हो। परमार्थ की दृष्टि से किया गया कार्य स्वार्थ की दृष्टि से किये गये काम से कहीं अधिक शान्ति देता है। सेवा का क्षेत्र अत्यन्त विशाल है - उसमें संकीर्णता नहीं है, उसका अंत नहीं है। वह एक आदर्श है जिसकी प्राप्ति में हम नित्य उत्साह व जीवन से युक्त रहते हैं। सब कुछ भूलकर सेवा में रमने वाला ही सदा सुखी है।

लक्ष्य जितना ही महान् होगा, उसमें जितनी ही साधना की अपेक्षा होगी, उसमें जितना ही अधिक परिश्रम अपेक्षित होगा, उतनी ही उसकी प्राप्ति में, प्रसन्नता भी होगी। महान् लक्ष्य, उद्देश्य या आदर्श की प्राप्ति में छोटी-छोटी बातों पर भी ध्यान देना चाहिए। इन्हें भी महान् ही समझें क्योंकि ये उस महान् लक्ष्य की प्राप्ति की सीढ़ियाँ हैं।

वैज्ञानिक कारण

-ऋषि द्विवेदी
अष्टम 'क'

1. **जंग लगने पर लोहे का वजन बढ़ क्यों बढ़ जाता है?**
लोहे पर लगा जंग आयरन आक्साइड होता है। नमी की उपस्थिति में लोहा वायुमण्डल से आक्सीजन अवशोषित कर आयरन ऑक्साइड बनाता है। बढ़ा हुआ वजन वायुमण्डल से अवशोषित आक्सीजन के बराबर होता है। यही कारण है कि जंग लगने पर लोहे का वजन बढ़ जाता है।

2. **एक महान गायक अपने गाने से काँच की वस्तु के टुकड़े-टुकड़े कैसे कर सकता है?**
यदि गायक के स्वर की आवृत्ति काँच की स्वाभाविक आवृत्ति के बराबर हो जाए तो अनुवाद के कारण वस्तु का कंपन-आयाम (Resonance) बहुत अधिक हो जाएगा जिससे काँच के टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।

3. **गाय का दूध पीला और भैंस का दूध श्वेत क्यों होता है?**
दूध का श्वेत रंग प्रनिलम्बित वसा में कैल्शियम फॉस्फेट और कैसीनेट की उपस्थिति से तथा क्रीम जैसा रंग विसर्जित अवस्था में कैरोटीन व जलीय अवस्था में राइबाफ्लाविन (Reboflavine) के कारण होता है। गाय के दूध में पीला वर्णक बीटा-कैरोटीन (B-carotene) की अधिक मात्रा के कारण यह पीला दिखाई देता है। भैंस के दूध में श्वेत रंग का कैल्शियम अधिक मात्रा में पाया जाता है।

4. **सूखी बालू की अपेक्षा भीगी बालू पर चलना आसान क्यों है?**
पानी सरेस का काम करता है जो बालू के कणों को एक दूसरे से चिपकाए रहता है। इससे बालू के कणों के बीच आकर्षण बढ़ जाता है। भीगी बालू पर घर्षण बल अधिक काम करता है, अतः सूखी बालू की अपेक्षा भीगी बालू पर चलना आसान है।

बहन जी!

बहन जी!
तुम पहने हो नोटों की माला ऐसे देश में
जहाँ लोग भूखे हैं।
रहने को घर नहीं है
पहनने को एक जोड़ी मुकम्मल कपड़े नहीं हैं
जहाँ सपने अभाव के मलबे में
दफन हो जाते हैं
जहाँ उम्मीदों के अंकुर
सूखी तपती रेत में कुम्हला जाते हैं
जहाँ भ्रष्टाचार के नक्कारखाने में
'योग्यता' तूती की आवाज है
जहाँ चापलूसी, तिकड़म और रिश्वत के चक्रव्यूह में
ईमानदारी के अभिमन्यु की हत्या की जाती है।
वहाँ तुमने पहनी है नोटों की माला।

- दुर्गेश वाजपेयी

दृढ़ संकल्प

-अनुराग त्रिपाठी
नवम 'ख'

कालिदास एक गया-बीता व्यक्ति था, बुद्धि की दृष्टि से शून्य एवं काला-तुरुप। जिस डाल पर बैठा था वह, उसी को काट रहा था। जंगल में उसे इस प्रकार बैठे देख राज्यसभा से विद्योत्तमा द्वारा अपमानित पंडितों ने उस विदुषी को शास्त्रार्थ में हराने व उसी से विवाह कराने का षडयंत्र रचने के लिए कालिदास को श्रेष्ठ पात्र माना। शास्त्रार्थ में अपनी कुटिलता से उसे मौन विद्वान बताकर उन्होंने प्रत्येक प्रश्न का समाधान इस तरह किया कि विद्योत्तमा ने उस महामूर्ख से हार मान उसे अपना पति स्वीकार कर लिया। पहले ही दिन जब उसे वास्तविकता का पता चला तो उसने उसे घर से निकाल दिया। धक्का देते समय जो वाक्य उसने उसकी भर्त्सना करते हुए कहे, वे उसे चुभ गए। दृढ़ संकल्प अर्जित कर वह अपनी ज्ञानवृद्धि में लग गया। अंत में वही महामूर्ख अपने अध्ययन से कालांतर में 'महाकवि कालिदास' के रूप में प्रकट हुआ और अपनी विद्वत्ता की साधना पूरी कर विद्योत्तमा से उसका पुनर्मिलन हुआ।

स्वार्थ और धूर्तता

एक लड़की ने पूछा - "पिता जी! कौआ और कोयल दोनों काले हैं, पर लोग कौए को मारते और कोयल को प्यार करते हैं, यह क्यों?" बालिका पर एक करुण दृष्टि डालकर पिता ने उत्तर दिया- "कोयल सबको प्यार करती है, इसलिए मीठा बोलती है। वाणी और भावनाओं की मधुरता के कारण ही वह सर्वप्रिय बन गई है और कौआ तो अपने स्वार्थ और धूर्तता के कारण ही उस आदर से वंचित है।"

स्वर्ग और नरक की परिभाषा

एक बार की बात है। वांग ली नाम का एक योद्धा संत कंफ्यूशियस के पास गया और बोला- स्वर्ग और नरक की परिभाषा बताइए। संत ने कहा - तुम योद्धा कहाँ हो? भिखारी जैसे लगते हो। इस पर वांग ली आग-बबूला हो गया और म्यान से तलवार निकाल ली। कंफ्यूशियस ने कहा - यह तलवार नकली है, मेरी गर्दन नहीं काट सकती। वांग ली कुछ देर शांत रहा और विचार करके तलवार म्यान में डाल ली। कंफ्यूशियस ने कहा - देख लिया न। जब तुम आग-बबूला होकर तलवार चमका रहे थे, तब नरक में थे और जब सूझ-बूझ से काम लेकर तलवार म्यान में डाल ली, तब तुम स्वर्ग में पहुँच गए।

ढर्रे के आदी

ऊँटो का एक बड़ा काफिला सौदागरी का माल लादकर सफर पर निकला। मालिकों ने रात बिताने के लिए एक सराय खोजी। मालिकों को चारपाइयाँ मिल गई, पर ऊँटों को तो जमीन पर ही सुस्ताना था। ऊँटों की रस्सी बाँधने के लिए खूँटियाँ गाड़ी गईं। आदत के मुताबिक जो बँध गए, वे चैन से सुस्ताने लगे। एक खूँटी कम पड़ रही थी। ऊंट कैसे बाँधा जाए, इसके बिना वह बैठने तक को तैयार नहीं हो रहा था। सराय मालिक समझदार था। उसने सलाह दी, झूठ-मूठ जमीन में खूँटी गाड़ो और झूठ-मूठ ही उसे रस्सी बाँध दो ऐसा ही किया गया। तरकीब काम दे गई। ऊँट बैठ गया और सुस्ताने लगा। अब सवेरा होते-होते बड़ी समस्या आई। खूँटी उखाड़ने पर और सब ऊँट तो उठ बैठे, पर वह उठने को राजी नहीं होता था। सराय मालिक ने सलाह दी कि झूठ-मूठ खूँटी उखाड़ो और रस्सी हिलाकर उठाओ।

ऊँट उठ बैठा और काफिले के साथ चलने लगा। काफिले में एक बुजुर्ग थे। उन्होंने ज्ञानचर्चा करते हुए साथियों से कहा "मनुष्यों की आदत भी इस ऊँट जैसी ही है। वे भी ढर्रे के आदी हैं। उन्होंने झूठ

भी सच और अच्छा लगता है। सच को जानने और समझने की कोशिश ही नहीं करते, इसी कारण जो कुछ भी सरल, सुगम व अभ्यास में आ गया है, वह स्वभाव से छूटता ही नहीं।"

ब्याज की लाज

द्रौपदी गंगा स्नान कर रही थी। दृष्टि दौड़ाई तो देखा कि कुछ दूर पर एक साधु स्नान कर रहा था। हवा से उसकी किनारे पर सखी लँगोटी पानी में बह गई जिसे वह पहने था, पुरानी होने के कारण संयोगवश वह भी उसी समय फट गयी। बेचारा असमंजस में था। नंगी-उघारी स्थिति में लोगों के बीच से कैसे गुजरे? उसने दिनभर झाड़ी में छिपकर समय काटने और अँधेरा होने पर कुटी में लौटने का निश्चय किया और छिप गया। द्रौपदी को स्थिति समझने में देर न लगी वे झाड़ी तक पहुँची। अपनी साड़ी का एक भाग फाड़कर साधु को दे दिया और कहा "इसमें से दो लँगोटी बना लीजिए। अपनी लाज बचा लें।" साधु ने कृतज्ञतापूर्वक वह अनुदान स्वीकार किया।

दुर्योधन की सभा में द्रौपदी की लाज उतारी जा रही थी। उसने भगवान को पुकारा। भगवान सोचने लगे इसका कुछ पुण्य जमा हो तो बदले में अधिक दे सकना संभव है। देखा तो साधु की लँगोटी वाला कपड़ा ब्याज समेत अनेक गुना हो गया था। भगवान ने उसी को द्रौपदी तक पहुँचाया और उसकी लाज बचा ली।

सत्संग का लाभ

सत्संग अर्थात् सत का संग। संतों, यानी सद्-विचारवान व्यक्ति के सान्निध्य में रहना ही सत्संग कहलाता है। सत्संग का सच्चा लाभ उसे ही मिल सकता है, अर्थात् जिस व्यक्ति के पास अभिमान और क्रोध जैसी मनोवृत्तियाँ मौजूद न हों। यह सच है कि मनुष्य के जीवन में कई विपत्तियाँ आती हैं। यह भी संभव है कि आप किसी भौतिक वस्तु के मोह में पड़ जाएँ। दरअसल, जिस व्यक्ति ने प्रभावपूर्ण ढंग से अपने मोह और लोभ का मुकाबला कर लिया, वही सत्संग का सच्चा साधक है। सत्संग से साधक को कीर्तन अथवा संत-प्रवचन, मंदिर, तीर्थ क्षेत्र, संत लिखित आध्यात्मिक ग्रंथों के वाचन आदि का लाभ मिलता है। सच तो यह है कि यदि किसी व्यक्ति को प्यास लगी है, तो झरना उसके पास नहीं आता है, बल्कि व्यक्ति को स्वयं उसके पास जाना पड़ता है। उसी प्रकार साधक की स्वयं जिज्ञासा होगी, तो वह सत्संग का लाभ उठा सकता है, अन्यथा नहीं। ध्यान दें कि सैकड़ों लोग कीर्तन-प्रवचनों का श्रवण करते हुए दिखाई देते हैं, संत महात्माओं के दर्शन के लिए जाते हुए दिखाई देते हैं, परन्तु सच्चे साधकों की संख्या बहुत कम होती है। दरअसल सच्चा साधक बनने के लिए आपके भाव भी पवित्र होने चाहिए। कहने का यही है कि आपने काम, क्रोध, मोह ईर्ष्या जैसे दुर्गुणों पर विजय प्राप्त कर ली है तो सत्संग का फायदा मिल सकता है। इसलिए यदि आप सच्चे सत्संग साधक बनना चाहते हैं, तो आपकी भावना पवित्र होनी चाहिए। सत्संग के कई लाभ हैं। दरअसल अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दिन-रात भाग-दौड़ में जुटे रहते हैं। इस फेर में हम आत्मकेन्द्रित भी हो जाते हैं। यदि हम प्रतिदिन सत्संग का सेवन करें, तो अन्य साधकों का अनुभव सुनने से मन में आई शंका का समाधान मिलने में हमें सहायता मिलती है। हमें मार्गदर्शन मिलता है। दरअसल सत्संग में ग्रुप थेरेपी का लाभ मिलता है, जिसे इस उदाहरण से समझा जा सकता है। यदि सत्संग का लाभ लेने के लिए पाँच-छह व्यक्ति आते हैं। यदि उनमें से कुछ व्यक्तियों के पास अपनी समस्या है, तो कुछ अन्य के पास समाधान भी हैं। कई बार आपस में बातचीत करने से भी समस्या का हल निकल आता है और हमारा मन शांत हो जाता है। वहीं दूसरी ओर, सत्संग में ऋषि-महात्माओं के मन में पवित्र भावनाओं का संचार होता है। वैज्ञानिक शोध के अनुसार, प्रत्यक्षतः सुनी गई बातों का प्रभाव हमारे मस्तिष्क पर पड़ता है।

चेतावनी

-ओम जी द्विवेदी
नवम 'ख'

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो।
मन को विषयों के विष से बचाते चलो।।
देखना इन्द्रियों के न घोड़ें भगें।
रात दिन इनको संयम के कोड़े लगे।।

प्राण जाये मगर नाम भूलो नहीं।
दुःख में तड़पो नहीं सुख में फूलो नहीं।।
मन को विषयों को विष से बचाते चलो।
कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो।।

ध्यान धरते रहो काम करते रहो।
सब बुरी वासनाओं से डरते चलो।।
प्रेम भक्ति के आँसू बहाते चलो।
कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो।।

याद आयेगा प्रभु को कभी न कभी।
दास पायेगा उनको कभी न कभी।।
मन में ऐसा विश्वास जगाते चलो।
कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो।।

घेर खड़े हो गये कर्ण को मुदित, मुग्ध पुरवासी,
होते ही हैं लोग शूरता-पूजन के अभिलाषी।
चाहे जो भी कहे द्वेष, ईर्ष्या, मिथ्या अभिमान,
जनता निज आराध्य वीर को, पर लेती पहचान।।

द्वादश ज्योतिर्लिंग

-ऋषि द्विवेदी
अष्टम 'क'

1.	सोमनाथ	[प्रभास क्षेत्र (जूनागढ़) गुजरात]
2.	मल्लिकार्जुन	(श्री शैलम, आन्ध्र प्रदेश)
3.	महाकाल	(उज्जैन, मध्य प्रदेश)
4.	ओंकारेश्वर	(नर्मदा के तट पर, मध्य प्रदेश)
5.	वैद्यनाथ	(देवधर, झारखण्ड)
6.	भीमशंकर	(पुणे के पास, महाराष्ट्र)
7.	रामेश्वरम्	(तमिलनाडु, सेतुबन्ध के निकट)
8.	नागेश्वर अथवा नागनाथ	(दारुकावन, गुजरात)
9.	विश्वनाथ	(वाराणसी, उत्तर प्रदेश)
10.	त्र्यम्बकेश्वर	(नासिक के समीप गोदावरी तट पर, महाराष्ट्र)
11.	केदारनाथ	(हिमालय, उत्तरांचल में)
12.	घुश्मेश्वर (घृष्णेश्वर)	(एलोरा के पास, महाराष्ट्र)

क्या आप जानते हैं?

-रोहित त्रिपाठी
नवम 'क'

1. **इतिहास का सबसे छोटा शासनकाल** - शहंशाह हुमायूँ को डूबने से बचाने के कारण अजमेर के भिश्ती निजाम को पुरस्कार स्वरूप 6 घंटे के लिए भारत का सम्राट घोषित कर दिया था।

2. **इतिहास का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक** - अली इब्न अबी तालिब अरब के खैबर युद्ध में अरबों का नेतृत्व करते समय जब अपनी ढाल गँवा बैठा तो उसके किले के विशाल फाटक को एक ही झटके से उखाड़कर 850 पौंड वजनी फाटक ढाल के रूप में एक हाथ से ही प्रयोग किया तथा दूसरे हाथ से तलवार चलाते हुए विजय प्राप्त की।

3. **बूटा सैनिक** - भारत में नवाब अनबरुद्दीन (1642-1749) ने 107 वर्ष की आय में हाथी पर सवार होकर अम्बौर की लड़ाई में सैनिक दस्ते के साथ नेतृत्व किया। युद्ध में दो गोलियाँ लगने से उसकी मृत्यु हुई।

4. **लैप लोग** - बर्फ पर फिसलते हुए प्रायः ये लोग 125 फीट चौड़ी खाइयाँ छलांग जाते हैं।

5. **बेलम डोपारा** - ब्राजील के इस शहर में पूरे वर्ष भर प्रतिदिन दोपहर 2 से 4 बजे तक वर्षा होती रहती है।

6. **अद्‌भुत चिड़िया** - आस्ट्रेलिया की नामजी स्क्रब नामक चिड़िया अपना घोंसला जमीन पर बनाती है और यह अन्य किसी की आवाज की हूबहू नकल कर सकती हैं।

'फर्क'

-अभय पाण्डेय
अष्टम 'ख'

काशी से विद्या पढ़कर एक विद्वान् ब्राह्मण नगर में आये। उनका सत्संग करते-करते वहाँ के राजा की उनके साथ मित्रता हो गई। राजा ने उनके लिए मकान बनवा दिया, उनका विवाह करा दिया और अन्त में अपना आधा राज्य भी उनको दे दिया। एक दिन राजा ने अपने ब्राह्मण मित्र से कहा कि जो कुछ मेरे पास है, वह तुम्हारे पास भी है। बताओ, तुममें और मुझमें क्या फर्क है? ब्राह्मण ने कहा कि मौका पड़ने पर फर्क बताऊँगा। एक दिन दोनों घूमने के लिए चार घोड़ों की बग्घी पर चढ़कर बाहर गये। ब्राह्मण ने राजा से कहा कि तुम फर्क पूछते थे। मैं अभी जा रहा हूँ, तुम भी मेरे साथ आ जाओ राजा देखता रह गया, और ब्राह्मण चला गया, फिर कभी न लौटकर नहीं आया। राजा फर्क समझ गया।

समय का सदुपयोग

-शिवम पाण्डेय
अष्टम 'ख'

एक मनुष्य किसी महात्मा के पास पहुँचा और कहने लगा, "जीवन अल्पकालिक है, इस थोड़े से समय में मैं क्या-क्या करूँ? बाल्यकाल में ज्ञान नहीं रहता, बुढ़ापा इससे भी बुरा होता है : रात में नींद नहीं लगती है। रोगों का उपद्रव अलग बना रहता है। युवावस्था में मानव कुटुम्ब के भरण पोषण में उलझा रहता है। तब भला ज्ञान कैसे मिले? लोकसेवा कब की जाए? इस जीवन में तो कभी मिलता नहीं दिखता।" ऐसा कहकर वह खिन्न होकर रोने लगा।

उसे रोते देख महात्मा भी रोने लगे। मनुष्य ने पूछा, "आप क्यों रोते हैं?" महात्मा ने कहा, "क्या करूँ बच्चा, खाने के लिए अन्न चाहिए, लेकिन अन्न उपजाने के लिए ज़मीन नहीं है। मैं भूख से मर रहा हूँ। परमात्मा के एक अंश में माया है। माया के एक अंश में तीन गुण हैं। गुणों के एक अंश में आकाश है। आकाश में थोड़ी-सी वायु है और वायु में बहुत आग है। आग के एक भाग में पानी है। पानी का शतांश पृथ्वी है। पृथ्वी के आधे हिस्सों में पर्वत है। नदियाँ और जंगल भी जहाँ बिखरे पड़े हैं। मेरे लिए भगवान ने ज़मीन का एक टुकड़ा भी नहीं छोड़ा है। थोड़ी-सी ज़मीन थी सो उस पर औरों ने कब्जा कर रखा है। तब बताओ मैं भूखा ही मरूँगा न?"

उस मनुष्य ने महात्मा से कहा, "यह सब होते हुए भी आप ज़िन्दा हैं। फिर क्यों दुःखी हैं?" महात्मा तुरन्त बोले, "तुम्हें भी तो समय मिला है....."फिर भी समय नहीं है..... की रट लगाकर हाय-हाय कर रहे हो। अब आगे से समय का बहाना न करना। जो है उसका सदुपयोग करो।

26 जनवरी को घटित महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

-दिव्यांशु कश्यप
नवम 'क'

1. 26 जनवरी 1164 ई. को राजा बीसल देव की दिल्ली पर विजय।
2. 26 जनवरी 1175 ई. में मुहम्मद द्वारा मुल्तान पर विजय।
3. 26 जनवरी 1265 ई. में नसीरूद्दीन महमूद की मृत्यु।
4. 26 जनवरी 1299 ई. में जलालुद्दीन खिलजी द्वारा रणथम्भौर किले की नाकाबन्दी।
5. 26 जनवरी 1313 ई. में इब्नतूता का भारत आगमन।
6. 26 जनवरी 1530 ई. में बाबर की मृत्यु।
7. 26 जनवरी 1536 ई. हुमायूँ की शेरशाह से पराजय।
8. 26 जनवरी 1553 ई. में हुमायूँ की मृत्यु।
9. 26 जनवरी 1744 ई. में उर्दू के पहले कवि बली का स्वर्गवास।
10. 26 जनवरी 1770 ई. में नादिरशाह का दिल्ली पर हमला।
11. 26 जनवरी 1778 ई. आस्ट्रेलिया राष्ट्रसंघ का सदस्य बना।
12. 26 जनवरी 1792 ई. में अंग्रेजों द्वारा टीपू सुल्तान से युद्ध।
13. 26 जनवरी 1835 ई. में अंग्रेजों द्वारा समाचार की स्वतंत्रता।
14. 26 जनवरी 1832 ई. में अंग्रेजों का काबुल तक विस्तार।
15. 26 जनवरी 1858 ई. में आयकर विधि लागू की गई।
16. 26 जनवरी 1861 ई. में बम्बई में उच्च न्यायालय खुला।
17. 26 जनवरी 1868 ई. में स्वेज का निर्माण।
18. 26 जनवरी 1878 ई. में कलकत्ता से बम्बई के लिए पहली रेलगाड़ी चली।
19. 26 जनवरी 1882 ई. में बम्बई, कलकत्ता और मद्रास में टेलीफोन सेवा शुरू।
20. 26 जनवरी 1882 ई. में बम्बई में बोरी बन्दर स्टेशन तथा बी.बी.सी. बना।
21. 26 जनवरी 1903 ई. में पहली बार तिब्बती मिशन भारत आया।
22. 26 जनवरी 1930 ई. में स्वतंत्रता संग्राम का नेहरू द्वारा उद्घोष।
23. 26 जनवरी 1941 ई. में सुभाष चन्द्र बोस का भारत से पलायन ।
24. 26 जनवरी 1950 ई. में भारतीय संविधान बना तथा भारत गणतंत्र हुआ।
25. 26 जनवरी 1957 ई. में जम्मू और कश्मीर में नया संविधान लागू हुआ।
26. 26 जनवरी 1976 ई. में मद्रास का नाम बदलकर तमिलनाडु रखा गया।

डर तेरे कितने नाम

-दिव्यांशु कश्यप
नवम 'क'

1. पानी से लगने वाला डर - हाइड्रोफोबिया (Hydrophobia)
2. किताबों से लगने वाला डर - बिब्लियो फोबिया (Biblio Phobia)
3. पेड़ों से लगने वाला डर - डैड्रोफोबिया (Dendro Phobia)
4. उड़ने से लगने वाला डर - एवियोफोबिया (Avio Phobia)
5. बादलों के गरजने, बिजली चमकने से लगने वाला डर - ब्रोंटोफोबिया (Bronto Phobia)
6. अजनबी से लगने वाला डर - जेनोफोब (Xeno Phobe)
7. साँप से लगने वाला डर - ओफीडियो फोबिया (Ophidio Phobia)
8. भीड़-भाड़ से लगने वाला डर - एगोरा फोबिया (Agora Phobia)
9. मुर्गियों से लगने वाला डर - एलेक्ट्रो फोबिया (Alectro Phobia)
10. बिस्तर पर जाने से लगने वाला डर - क्लीनोफोबिया (Clino Phobia)
11. भूतों से लगने वाला डर - फास्मोफोबिया (Phasmo Phobia)
12. घड़ियों से लगने वाला डर - क्रोनोमेन्ट्रो फोबिया (Chronomentro Phobia)
13. बदसूरती से लगने वाला डर - अनअट्रेक्टिव फोबिया (Unattractive Phobia)
14. चोर डकैतों से लगने वाला डर - स्केलेरो फोबिया (Scelero Phobia)
15. बाल कटवाने से लगने वाला डर - टांसर फोबिया (Tonsur Phobia)
16. गंजे होने से लगने वाला डर - पेलाडो फोबिया (Pelado Phobia)
17. बिना फोन के कहीं जाने से लगने वाला डर - नोमो फोबिया (Nomo Phobia)

सह विविध यातना मनुज जन्म पाता है,
धरती पर शिशु भूखा-प्यासा आता है।
माँ सहज स्नेह से ही प्रेरित अकुला कर,
पय-पान कराती उर से उसे लगा कर।।

मेरा विद्यालय

-रवि प्रताप-II
अष्टम 'ख'

मैं छात्र हूँ, यहाँ का, यह है प्रिय विद्यालय मेरा,
यहाँ सरस्वती मैया का, रहता है नित्य बसेरा।
पहनाती है हार सुनहरा इसको उषा सवेरे,
गंगा जी की पावन धारा, बहती इसके नेरे।
पं. दीनदयाल जी का सपना मानो साकार खड़ा है,
जिसको पूरा करने का, हम छात्रों ने संकल्प किया है।

चन्दन तिलक सम श्री वीरेन्द्र जीत सिंह जी हैं सचिव इसके
जिनके अथक प्रयास से विद्यालय की कीर्ति लता में,
जड़ती है नित नई लड़ियाँ।

शोभित यहाँ श्री प्रकाश नारायण बाजपेई जी से,
गरिमामय प्राचार्य पद।

और सभी गुरुजन अपने शिष्यों को हैं अच्छी सीख सिखाते
विद्या, ज्ञान दानकर हमको शिक्षित सभ्य बनाते।
कानपुर जनपद में इस विद्यालय ने अपना मान बढ़ाया,
पं. दीनदयाल विद्यालय, उनकी स्मृति में ही कहलाया।
त्रुटियाँ हों तो क्षमा करें सब गुरुजन,
शत-शत प्रणाम स्वीकार करें अब मेरा।

युगद्रष्टा की अमृतवाणी

-शगुन गुप्त
सप्तम 'ख'

1. गृहस्थ जीवन एक तपोवन है, जिसमें संयम, सेवा और सहिष्णुता की साधना करनी पड़ती है।
2. अपना मूल्य समझो और विश्वास करो कि तुम संसार के सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति हो।
3. सभ्यता का स्वरूप है सादगी, अपने लिए कठोरता और दूसरों के लिए उदारता।
4. प्यार व सहकार से भरा पूरा परिवार ही धरती का स्वर्ग होता है।
5. उन्हें मत सराहो जिन्होंने अनीतिपूर्वक सफलता पाई और संपत्ति कमाई।
6. धूर्तों की चापलूसी से बुद्धिमान की फटकार अच्छी है।
7. मनुष्य का जन्म तो सहज होता है, पर मनुष्यता उसे कठिन प्रयत्न से प्राप्त करनी पड़ती है।
8. ईमानदार होने का अर्थ है - हजार मन को चमकने वाला हीरा।
9. बड़प्पन अमीरी में नहीं, ईमानदारी और सज्जनता में सन्निहित है।
10. कायर मृत्यु से पूर्व अनेक बार मर चुकता है, जबकि बहादुर को मरने के दिन ही मरता है।

मुशर्रफ और बुश

-अभिजीत दीक्षित
नवम 'ग'

एक बार श्री मुशर्रफ ने श्री बुश को फोन मिलाया।
उनको अपना कुशलक्षेम बताया।
बोले साहब कुछ करो,
आतंकी खजाना फिर भरो,
नहीं तो हिन्दुस्तान आगे बढ़ जाएगा
और अपना पाकिस्तान मुँह ताकता रह जायेगा

ठंडी आहें भरते हुए बोले महाशय बुश
तुम्हारी चाटुकारिता और चापलूसी देख बहुत हूँ खुश
लेकिन मैं क्या करूँ,
तुम ठहरे आतंकी और तुम्हें इसका बुखार है
तुम भले ही 99 की हार भूल गये
लेकिन मुझे इज्जत से प्यार है
हिन्दुस्तान किसी कायर का नाम नहीं
तुम जैसों के लिए दहकता गोला है
हर बार धूल चाटने के बावजूद तेरा मन नहीं डोला है

झटका खाकर गिरे, बोले मुशर्रफ - महाराज।
यदि तुमने मेरी लाज न बचाई,
तो मुँह की खाऊँगा फिर आज,
आखिर तुम समझने की कोशिश क्यों नहीं करते?
मुझ भिखारी की पुकार क्यों नहीं सुनते
यदि आज तुम मेरा साथ निभाओगे
तो भविष्य में कश्मीर के अधिपति कहलाओगे
फिर हिन्दुस्तान हाथ मलता रह जाएगा
सारी दौलत इकट्ठा करके तू मालामाल हो जाएगा।

उमड़ी स्नेह की उज्ज्वल धार हृदय से,
तुम सूख गयीं मुझको पाते ही भय से।
पर राधा ने जिस दिन मुझको पाया था,
कहते हैं उसको दूध उतर आया था।

चुटकियाँ

-अभय पाण्डेय
अष्टम 'ख'

अखबार

अखबार पढ़ो मगर
चर्चा न करो,
मुफ्त का पढ़ो
व्यर्थ खर्चा न करो।

वायदे हवा में

चुनाव जीतते ही
ढाई मन मिठाई में तुल गये
भावनाएँ कुर्सी तले
वायदे हवा में उड़ गये।

हिन्दी

विधवा लगे नारी
बिना बिन्दी के
वैसे ही
अनाथ लगे देश
बिना हिन्दी के

नेता

नेता और अभिनेता
एक जैसे दिखते हैं
क्योंकि ये दोनों ही
पैसों में बिकते हैं।

होड़

गाना
अंग्रेजी एक कोढ़ है।
लेकिन इसे
अपनाने के लिए भी
आपस में कितनी होड़ है।

साथ चलेंगे

-अंकित शुक्ल
अष्टम 'ख'

आज चलेंगे साथ चलेंगे,
धरती का उद्धार करेंगे।
भारत भूमि महान करेंगे।
आर्यावर्त की शान बनेंगे।

वीरों की इस पुण्य भूमि का,
फूलों से शृंगार करेंगे।
वृक्षों, पौधों हरियाली से,
पुनः सुखी संसार करेंगे।

अवतारों की इस पवित्र भूमि की,
हम रक्षा हर बार करेंगे।
दूषण रूपी रावण का,
इस युग में हम संहार करेंगे।

कोई भी कठिनाई आई,
या कोई संकट आया,
तो वीर सिपाही बनकर,
हम संकट को हर लेंगे।

आज चलेंगे साथ चलेंगे,
धरती का उद्धार करेंगे।।

अपनी किसी स्थिति के लिए समाज को जिम्मेदार ठहराना उचित नहीं है। समाज न तो किसी का विरोध करता है और न अवरोध। यदि कुछ करता है तो सहयोग करता है। अब यदि समाज का सहयोग प्राप्त कर सकने की क्षमता नहीं है तो मनुष्य स्वयं ही उसका दोषी है न कि समाज।

EDITORIAL

Mrs. Rekha Nigam
Lecturer in Dep. of English

No living being can avoid work or shirk from work and remain without activity. Even in the sleep, the physiological activities must go on. Action is the expression of life in any organism. The source of activity in everyman is his tendencies. Sometimes even a wise man follows his tendencies. A doctor can be drunkard, although he has full knowledge of the adverse effects of alcohol and may come to die of cirrhosis of liver.

Intellectually, we may applaud and appreciate a certain moral value of life but by the time it has to be expressed as action. We act as lowly as though we had no education at all. We can appreciate music or painting but it does not mean we can sing tunefully or produce a masterpiece. Knowledge is needed but to express the knowledge we need a lot of laborious training. By merely restraining all of a sudden, nothing can be achieved.

And now the question is - few succeed and many fail why? The bosom gets flooded with a gushing, gurgling spring of dynamism. This should not be allowed to get dissipated either in the regrets of the past or in the anxieties of future or with the excitement in the present. Bring the entire dynamism to express itself in the field of endeavour and thus fight the battle of life.

Grief benumbs our abilities, weakens our daring, dries up our courage and saps up all hopes and joy. They are really wise who have realised the eternal reality behind all phenomenal changes. We should not grieve at the decay or death. We do not condole every evening the death of the day, for we know that the seen has not really gone and it will rise again in the east in another twelve hours.

Therefore, whatever be the field in which we are working today, we should concentrate on it and polish our inner equipments. All work is noble if we undertake it in the right spirit of selflessness. Man must perform fully his entire duties in life. We do not live alone. We are gregarions - we live in a society, O Reader we have not only duties to ourselves but have a widening field of duties; duties towards family, relatives, community, the nation and the world. Everyman should try to fullfill all his obligatory duties as best as he can in a spirit. Man should lead meaningful, fruitful and successful life without causing any harm to others and without hurting other's feelings.

I urge the intelligent youth that they can practice and master it. In this way we can get the ultimate glory of the nation in the years to come. The youth must grow in strength to lift the world around them out of the ruts of its present day sophisticated incompetency and civilized sorrows into a more benign era of culture, of peace and progress. Srive O Reader! suffering hardships, meeting challenges, overcoming hurdles are the things that may pour success.

INDIAN VALUES

Mrs. Archana Tiwary
English Teacher

India is a land known for its variety in every aspect. It is a country that is so diverse and demographically complex. But there is one thing that is Indian values - the belief or behaviour pattern that is universal, that the majority of people of the country identify with and respect, even if they don't act on it.

Traditionally, Indians have laid high stress on values like peaceful co-existence, spirituality, deference to elders, recourse to nature, artistic expression, selecting prosperity, strong family ties, respecting even the tools of your trade, joyousness and hospitality.

Prayer is almost a daily ritual. The old have always been taken care of at home and it is generally the eldest who makes the important decisions for the family, be it financial or a relationship. Dance and music too are integral part of our cultures and religions. Celebrations & happy occasion are bright and colourful. Holidays are spent together and there is little formality in such relationships.

Even today we see people worshipping the source of their livelihood. A dancer will bow to the stage. A farmer will bow to his yoke. A vegetable-seller will bow to his hand-cart and the rickshaw-wala will bow to his rickshaw.

Tradition in India is about values that transcend down generations automatically. Ancient culture believed in a lot of dogmas and rituals but Indians are intelligent to traverse these paths and modify the social requirements. Indians are highly flexible in the sense and get affirm their belief in traditions.

It is customary to respect elders and touch their feet so as to seek their blessings. Occasions or festivals demand a lot of participation as per the caste and geography.

With the advent of technology and woman emancipation, there is a trend to mingle free with the western concepts of dress, belief work and also get into a secular concept. But one can feel a distinct Indianness and most of our brethren abroad miss their homeland. Indians all over the world are known for their hospitality and high level of tolerance. Their adaptation power is high. Putting oneself on the global map, Indians are seeking new vistas of communicating their beliefs and tradition. The gift of health and well-being through yoga and meditation is a great source of Vedas in the rich Hindu tradition which has actually benefitted the world.

The values in India is about living the life with zest and observing the belief that there is one God prevailing despite so many religions.

Respecting elders, understanding cross culture traditions, free mingling to accommodate tolerance, staying interested in the rural welfare are the values of India. The artifacts, cuisine, handicrafts is still followed and preserved by We - Indians.

ENGLISH - IS IT THE LANGUAGE NECESSARY FOR SUCCESS ??

Mrs. Tripti Prem
Department of English

Have you ever wondered why English is the most popular language in the world? Why the 'Idea' and the 'Teach India' campaigns showed young children learning English and why after, transcending all barriers, English has become the *lingua franca* of the World.

Well, first of all English was born in Great Britain and flourished there before it spread to the other nations including India. But, what is there in this language, that people identified with it instantly and even sacrificed their mother tongue for it. Even in India, English has become a necessity for survival in this world. A country with more than 22,000 languages and dialects has accepted this alien language English readily. The magnitude with which it has spread is definitely unbelievable.

One of the reasons for its acceptance is, its simplicity and flexibility.

We all remember Amitabh Bachchan's dialogue in Namak Halal - "I can talk English, I can walk English and I can laugh English because English is a very funny language. Bhairo becomes Byron because their minds are very narrow". Clearly English has moved from being the language of the elite class to being identifiable to the masses as well.

Another reason for its popularity is its adaptability. The language has gone on and embraced the people in the world. Many common Indian words have become a part of this language, the latest of which is 'Jai Ho.'

So, whether you are in any corner of the world, this language has become imperative. There is a need to learn this language to get a better job, to have a better career and most important to keep abreast with the developments that are taking place around the world.

Slowly realising the importance of English as an international language, many schools have upgraded it as the first language in the curriculum.

English continues to be the premier language in higher education because the resources available in this language are abundant as compared to other languages. English is another passport and provides the visa for overseas study.

COPENHAGEN UNITED NATIONS CLIMATE CHANGE CONFERENCE - 2009

Pranav Tripathi
(Vice Chairman-Tarun Bharti)
Class XI-A

The United Nations Conference on Climate change also known as COP 15 was held at Copenhagen, the capital of Denmark on Dec. 7-19, 2009. It may be recalled that the conference had aroused much interest and concern in the world leaders owing to the immense importance attached to its deliberations in the background of global warming hitting the planet in no uncertain terms. Prior to this conference, almost all international meets including the APEC meeting in Singapore in November, the Commonwealth Heads of Government Meeting held in Port of Spain in Nov. 2009 itself had pinned much hope on the Copenhagen summit.

The Copenhagen Accord recognizes the scientific view that an increase in global temperature below 2° C is required to stave off the worst effects of climate change. It may be recalled that experts had estimated that global temperature would rise by 5 to 6 degrees by 2050 if expedious steps were not taken to cut green house gas emissions.

THE NOBEL INDIANS

Pranav Tripathi
(Vice Chairman-Tarun Bharti)
Class XI-A

- **Rabindra Nath Tagore -** He got the nobel prize in Literature in 1913. Gitanjali, a collection of Poems was awarded this prize.
- **C.V. Raman** - He got nobel prize in 1930 for the discovery of inelastic scattering of light.
- **Hargovind Khurana -** He discovered protein synthesis and genetic code. He was awarded with nobel prize in 1913 for medicine.
- **Mother Teresa -** She worked for poor people and orphans; she established 'Missionaries of Charity.' She got this prestigious prize in 1979 for Peace.
- **S. Chandrashekhar -** He got this prize in1983 for his remarkable work in Physics. He discovered the theory about stars.
- **Amartya Sen -** He got prize in 1998 for 'Welfare Economics and Human Development' theory.
- **V. Ramakrishnan -** He got nobel prize in the year 2009 for mapping ribosomes, the protein producing factories.

WATER - SPORTS

Nikhil Gupta
Class IX-B

If the word 'adventure' thrills you, water sports is something you should not miss! Water sport is a form of recreation where water is an essential aspect of the activity. Basic swimming skills, physical fitness and safety precautions are needed to participate in most water sports. Some of them are :-

WATERSKIING :- The most favourite water sport is 'waterskiing', in which the participant, usually wearing one or more 'skis,' skims the surface of the water. A 'Water Ski Racing' team consists of a boot driver, an observer and a skier. The skie has to be physically fit to complete her/his game. Observers need excellent concentration, to relay signals, from the skier to the driver. The driver will take the team around the course, while avoiding rocks and other obstacles.

WINDSURFING :- This is the most popular water sport but it is not popular in India. It is a surface water sport that involves, riding on water on a sailboard. The sport combines aspects of both sailing and surfing, alongwith certain athletic aspects shared with other board sports.

HISTORY & CULTURE OF INDIA

Pranav Tripathi
Class XI-A

1. The easternmost outpost of the Indus Civilization was excavated by .....
   Ans. **Y.D. Sharma**

2. Before the foundation of Kolkata, the biggest English settlement in Bengal was .....
   Ans. **Hugli**

3. Sarojini Naidu was elected the President of Indian National Congress in 1925 at .....
   Ans. **its Kanpur session**

4. Akbarnamah and Ain-e-Akbari have been written by .....
   Ans. **Abdul Fazal**

5. Who founded the 'Servants Societies of India?' .....
   Ans. **Gopal Krishna Gokhale**

6. Who was called 'Deshbandhu'? .....
   Ans. **Chitranjan Das**

7. Who was the founder of 'Satya Shodhak Samaj'? .....
   Ans. **Jyotibha Phule**

8. What was the birthplace of Akbar? .....
   Ans. **Amarkot**

SECOND SCIENCE CONCLAVE-2009

In this swift changing world everybody knows the importance of science and technology. Science is our companion in our daily life. Nowadays technological machines are a part of our routine works. From a tiny needle to a big vessel everything works on scientific rules.

However, in India the level of science is very low. For the improvement of science, Indian Government & Department of Science and Technology (DST) India is running many programs in many parts of our country. One of them is INSPIRE PROGRAM which is the part of eleventh five-year plan. Under this program, Second Science Conclave-2009 was held in IIIT - Allahabad, during 8-14 December.

A group of 15 students from our college went there to enrich our minds. We reached IIIT Alld. in the night of December 7. All of us collected our Identity Cards from the Reception and then we went to our hostel for taking rest. Every student was curious about the events which were being conducted in the next 7 days.

On our first morning in Alld., we were feeling very fresh and energetic. According to schedule, we took our short breakfast at 7 am. After that, we took a brief round of the campus and the venue where we had to go for the initial speech. As the watch struck 8:30, all the students and our teacher Shri Kaushalendra Pandey left the hostel for the destined venue called 'Pandal'.

First of all, director of IIIT-Allad. came on the dias for the identification of dignified luminaries and to give them his heartfelt thanks for being there. He also introduced us with the objectives of D.S.T. India for run this programmes. He told us the first aim of this conclave that was 'to motivate young minds for the scientific research. Therefore, we heard the eminent noble laureate 'Mr. R.C. Richardson' about his invention of 'supefluidity in Helium-3' followed by 'Sir Joseph Hooton Taylor' who told us about his invigorative invention in the field of gravity. At last the mentor elaborated the everyday's schedule and venues. We enjoyed the dignified atmosphere created by the presence of great luminaries, noble laureates and eminent scientists assembled from worldwide.

Everyday at 3 O'clock we interacted with the scientist and noble laureats as well. We got conceptual and informative knowledge in day to day interactions. I recollect memories of my interaction with Prof. D.D. Sharma. He was a very humorous person and he taught us about nano-technology in an effective lecture. Interactions were the most informative sessions for us. I can't forget the words of 'T-Ramasami', Secretary of D.S.T. India in which he determined, "Students of India are like crude gold, and once their minds are sharpened, they will glitter all over the world."

Every night, some entertaining cultural programs were arranged. I enjoyed the puppet show by 'Suresh Dutta' the most famous dramatist of Calcutta.

On 13th Dec., an eminent singer who has changed the stars into superstars by his magical voice, Mr. Abhijeet Bhattacharya made a night into musical night with his superhit songs. That was the last day of our dream trip. Those days will remain in my heart throughout my whole life.

HAWAII - THE TROPICAL PARADISE!

If you dream about palm fringed beaches with sparkling turquoise water and Swaying palm trees or mills of golden Sand, calm water and utterly incredible sunsets, it's at Hawaii' you've been dreaming of !

The Hawaiian islands once known as the sandwich Islands, form an archipelago of many islands, actolls and islets. Hawaii is the southernmost state of the United States. All of the Hawaiian Islands were formed by volcanoes arising from sea floor from a magma source described in geological energy as a hotspot. The volcanic activity and subsequent erosion created impressive geological features. The Big Island is notable as the World's fifth highest island.

The island has some of the most spectacular beaches in the world. Some of them are accessible only by helicopter or by landing aircraft; some built round the high drama of intense waves crashing against lava rocks; and some literally disappear under the high winter surf on the north shores of the islands.

Situated between two lava points and bordered by a coconut tree grove in the Kapalua beach famous for its tranquil surf. Hanolei Bay Beach is the most exquisite beach in Hawaii. It is set against the backdrop of breath taking waterfalls and emerald green mountain peaks. It is located at the end of the road on Kauai's North shore between the dramatic Na Pali coast and Limahuli stream in the Ke's Beach Park. The self lagoon at Ke's Beach is a favo snorkeling site.

The isolation of the Hawaiin islands in the middle of the Pacific Ocean, and the wide range of environment to be found in islands located in and near the tropic, have contributed to create an impressive diversity of endemic flora and fauna.

KNOWLEDGE

Shudhanshu Kumar
Class VIII-A

- A man of knowledge increaseth strength.
- Brain power is better than muscle power.
- Dress does not give knowledge.
- Knowledge is better than wealth.
- You have to look after wealth, knowledge looks after you.
- Knowledge is proud that he was learn'd so much, wisdom is humble that he knows no more.
- Knowledge is the body of culture, understanding is its soul.
- Profit is inherited, knowledge is not.
- Some knowledge comes from the head and some comes from the heart.

MALAYSIA

The land of exotic beauty

Govind Kumar
Class IX-C

Malaysia is a federation of thirteen states and three federal territories in Southeast Asia, located between the Indian Ocean and the South China sea. The name "Malaysia" was adopted in 1963. It covers a total landmass of 3,29,847 km. The capital city is Kuala Lumpur.

The country is divided into two regions - the Malay Peninsula and Borneo - by the South China Sea. Both West and East Malaysia feature coastal plains rising to often densely forested hills and mountains - Today, an estimated 59% of Malaysia remains forested. Thailand, Indonesia, Singapore, Brunei and Philippines border the exotic, beautiful federal country.

Located near the equator, Malaysia has tropical climate. The population is approximately 27 million. Non-Malay indigenous groups like Orang Asli, Sabah and other make up more than half of the population, though Malays still comprise the majority. There are a sizable number of Chinese and Indian communities. Islam is the official religion of the federation, while the Malay Language is the official language.

International trade and manufacturing play a large role in Malaysia booming economy. The strait of Malaca, lying between Sumatra and Peninsular Malaysia, is arguably its most important shipping land.

At one time, Malaysia was the largest producer of tin, rubber and palm oil in the world.

However, main appeal lies in Malaysia's scenery, its crisp invigorating air and azure blue skies.

FOOD, GLORIOUS FOOD!

Shubham Sen
Class IX-C

- The first ice-cream soda was sold in 1874.
- There are more than 10,000 varieties of tomatoes.
- Do you know that an onion, apple and potato all have the same taste? The differences in flavour are caused by their smell!
- China uses 45 billion chopsticks per year. 25 billion trees are chopped down to make the sticks!
- The Chinese first discovered tea. Actually it was a Chinese Emperor who first tasted the brew in 2737 B.C. when some tea leaves accidentally blew into a pot of boiling water.

THE CHALLENGE OF MOUNT EVEREST

Mount Everest is the highest mountain on Earth as measured by the height of its summit above sea level, which is 8848 meters. The mountain, which is part of the Himalaya range in Asia, is located on the border between Nepal and Tibet. Everest was formed about 60 million years ago by the compression that accompanied a collision of the Indian plate with the Eurasian plate,

The climate of Mount Everest is extremely cold. As a result of its elevation, when the rain, falls, it freezes into ice and topples down the mountain. The atmospheric pressure at the top of Everest is about a third sea level pressure, means there is about a third as much oxygen available to breathe as the sea level. This makes it very difficult for climbers.

Climbers have dreamed of climbing to the top of the mountain but few have conquered this near impossible task. The first person to scale the summit were Edmund Hillary from New Zealand and Sherpa Tenzing Norgay from Nepal. They reached the summit on May 29, 1953. At that time, both acknowledged it as a team effort by the whole expedition, but Tenzing revealed a few years later that Hillary had put his foot on the summit first !

Mount Everest was named after Sir George Everest, a British Surveyor. The Tibetan name for Mount Everest is Chomoungma or Qomoeangma, translated as "Mother of the Universe" or "Goddess Mother of the Earth". The Nepalese name of the Everest is Sagarmatha means "Goddess of the sky.

TO PARENTS

Akash Rathore
Class VIII-B

Father is like a tree
who is not at all free
No, not free from affection
Always stands with conviction.
His pockets are filled with generosity
But comes home late from city
Mother is like a snow.
When she melts, we never know
We do mischiefs and see her tear
She sheds for her dear
The more we heat, the more she melts
When we are vexed with troubles
She blows them all like bubbles
Their love and affection flow in the letter
I write to her back that I'm better
To have my mother, father and all of them

SYMPHONY IN MARBLE

SYMBOL OF LOVE - TAJ MAHAL

Satyam Prakash
Class IX-C

The Taj Mahal is generally considered the finest example of Mughal architecture, a style that combines elements of Persian, Turkish and Indian architecture. While the white domed marble mausoleum is the most familiar part of the monument, the Taj Mahal is actually an integrated complex of structures. It was listed as a UNESCO World Heritage Site in 1983 when it was described as a "universally admired masterpiece of the world's heritage".

Shah Jahan, the emperor of the Mughal Dynasty, during a period of great prosperity, controlled extensive resources. In 1631, his second wife died during the birth of their daughter Gauhara Begum, their fourteenth child. Shah Jahan was reportedly inconsolable. He decided to build a monument to his wife's memory. Construction of the Taj Mahal began in Agra soon after Mumtaz's death. The principal mausoleum was completed in 1648, and the surrounding buildings and garden, five years later.

The Taj Mahal incorporates and expands on many design traditions, particularly Hindu, Persian and earlier Mughal architecture. Specific inspiration came from a number of successful Mughal buildings. These include Humayun's Tomb, Itmad-Ud-Daulah's Tomb and Shah Jahan's own Jama Masjid in Delhi. Under his patronage, Mughal building reached new levels of refinement. Whilst previous Mughal buildings had primarily been constructed on red sand-stones, Shah Jahan promoted the use of white marble inlaid with semi-precious stones.

The Taj Mahal is a splendid sight on full moon nights, when its dome shape seems to be giving off a pearly luminescence. It is the most sought after tourist destination for international travellers in India.

VARIOUS FACTS

Harshit Katiyar
Class VIII-B

- A spider's silk is stronger than steel.
- The Amazon rainforest produces more than 207 of the world's oxygen supply.
- A fully loaded supertanker travelling at normal speed takes at least twenty minutes to stop.
- A shark can detect one part of blood in 100 million parts of water.
- Men can read smaller print than woman; Woman can hear better.
- The term cop comes from constable on patrol, which is a term used in England.
- Camel's milk does not curdle.
- Oak trees do not produce ocorns until they are fifty years of age or older.

STUDY = FAIL

Madhukar Tiwari
Class XI-A

Study = Not fail ... ... (i)

Not Study = Fail ... ... (ii)

addying equation (i) & (ii)

Study + Not study = Fail + Not fail

Study (1+Not) = Fail (1 + Not)

dividing by (1 + Not) on both sides

Study = Fail !

Still are you ready to study ?

1 RS. = 1 PS.

1 Rs. = 100 paise
= (10 x 10) paise
= (10 paise) x (10 paise)
= (0.1 Rs.) x (0.1 Rs.)
= (0.01 Rs.)
= 1 Paisa

Can you find any mistake ?

It's a Challenge !

MUSIC MANIA

Anurag Tripathi
Class IX-B

A pink floyd album "Dark side of the moon" stayed on the top 200 Billboard charts for 741 weeks ! That is 14 years !

In the song 'Jingle Bells', the horse's name is Bobtail !

35 cents ! > That was the price of tickets for Frank Sinatra's first solo performance at the Paramount Theatre in New York city in 1942 !

A German, Geoff Graff wrote the song "when Irish eyes are smiling". Graff had never been to Ireland in his life.

The copyright to the song "Happy Birthday" was taken over by Warner Communications for $28 million !

ATOMIC ENERGY : USES AND ABUSES.

Alok Kumar Kushwaha
Class XII-B

Atomic or nuclear energy can be used for destruction as well as for construction. Hiroshima and Nagasaki, the two cities of Japan, are the witnesses that so far atomic energy has been used for destructive purposes. Powerful nations have a great stock of atomic arms which can destroy the whole world any day.

But if it is properly used atomic energy can bring about great advantages and better living for all. Atomic energy has been discovered at a time when it became clear that the earth's resources of stored energy cannot last more than two hundred years. The world badly needs atomic power and will need it more in the years to come.

In industries nuclear radiations and radioactive materials are providing more effective control in the production of better and cheaper things.

In agriculture, radiation is useful in improving the present varieties of fruits, vegetables and crops. And it can be used for creating new possibilities. It can be used to cure and stop killer diseases in plants so that the yield can be increased.

The other main sphere where atomic energy can help us greatly is the supply of cheap electricity. It can help in easy generation and regeneration of water to produce electricity. It would then easily reach the remote areas or backward countries which have irregular or absolutely no supply or electricity.

In the field of medical science, the diseases of the 'Thyroid', have been classified with the use of 'radio-iodine'. Which is absorbed by far more easily. Then there is 'radiography' which needs a small radioactive source and simple equipments. Atomic energy in the form of laser has proved to be helpful in demolishing tumours, stones etc. Laser treatment of the eyes has also turned out to be successful.

Today every country wants to be powerful in the field of atomic energy, because in the present time the measuring scale of power is the amount or capacity of atomic energy which every country possesses.

Our country also has made a lot of progress in the field of atomic energy. We have own 'Nuclear Bomb', and other nuclear missiles like 'Trishul, Agni-1, Agni-2, Bramhose, etc.

In this field our country is progressing day by day and we are competent enough to face the threats of our enemies.

KALPANA, WE ARE PROUD OF YOU

Rishabh Yadav
Class IX-B

She want to space,
To see that place
She was keen,
To see the scene.

I was disappointed by her death
I was in awe
For great grief is hidden in my heart.
As her death is a real fact.

Scientists never die,
They remain alive.
They and their facts
Will forever remain in our memory alive.

DEFINITION OF DISCIPLINE

Dinesh Kumar
Class VI-A

What is discipline?

It is very difficult to answer, this question, in a simple way we can say that Discipline is the back bone of good education. There can be no education without discipline.

Discipline means doing whatever. We are told to do in a very systematic manner. There are some examples of discipline. The sun always rises in the east and sets in the west. The moon rises at night. The seasons come and go at the proper time. Definition of Discipline is essential for student's life. Student will also not simply believe this fact because this is an abstract fact and we are students of Maths and Science. We do not understand the language of fable or speech so I will give you an example.

That will give you a complete definition of discipline lets see. That is a magic of alphabet and numbers.

A	B	C	D	E	F	G	H	I	J	K	L	M	N	O	P	Q	R	S	T	U	V	W	X	Y	Z
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26

See here minutely

D + I + S + C + I + P + L + I + N + E = Discipline

And yet put the value of these alphabets

4 + 9 + 19 + 3 + 9 + 16 + 12 + 9 + 14 + 5 = 100%

So Discipline = 100% Success

Discipline is that thing which gives us - 100% success

FRIENDSHIP

Aditya Srivastava
Class IX-C

Friendship is the golden chain
that links a friend with you
It attaches together firmly
with all that is deep and true
And is rich with happy memory
and fond recollection too.
Friendship is like golden metal,
that can't be bought or sold.
Hence, to have a true friend
is a passion dearer than gold.
The golden chain of friendship
is a strong and blessed tie,
Binding two hearts together,
as years go rolling by.
Friendship is a bridge that leads -
the garden full of flowers,
where persons can spend,
Many pleasures and joys.
It is a bridge leading to pleasure
and to delight with our measure.

BEAUTIFUL MORNING

On the morning of everyday,
we have a new way.
Every morning a glorious sunrise,
Appears and makes us rise.
Every morning the new light,
Fills us in with joy and pride.
Every morning the light of the sun,
gives us a lot of fun.
Every morning the shiny rays,
Fills us with delight and praise.
On the morning of everyday,
We have new way.

MAURITIUS

The Island Nation

Satyam Agnihotri
Class IX-A

Mauritius, officially called the Republic of Mauritius, is an island nation, off the coast of the African continent, located in the south west part of the Indian Ocean. It was formed roughly 8-10 million years ago as a result of under sea volcanic eruptions as the African plate drifted over the Reunion hotspot. The island is named after prince Maurice of Nassau and comprises 9 districts with Port Louis as its capital city.

The Portuguese sailors first visited the island in 1507. In 1638, the Dutch established the first permanent settlement in the island. In 1715, France seized Mauritius followed by Britishers who set out to gain control over the island between 1803-1815. But after a long drawn series of invasions, Mauritius finally got its independence to become a republic within the commonwealth in 1992.

Since then, it follows a parliamentary democracy based on the UK model.

Mauritius has developed from a law-income agriculturally based economy to a middle income diversified economy with its fast growing sectors of industry, finance and tourism.

A majority of the republic residents are the descendants of people from the Indian subcontinent. The Indo-Mauritians comprise approximately 60% of the total population, the remaining 40% being mostly creates.

Mauritian creole is considered the native tongue of the country, through french is more commonly employed. The official language is English.

The rich culture of Mauritius, the saga and nature's compelling beauty have this fascinating country one of the most sought after places in the world.

I CAN BE

I can be as deep as the sea.
I can be high as the mountains.
I can snatch the stars from the sky.
I can do
I can be as green as the nature,
I can be as blue as the sky,
I can be brighter than sun
I can do
I can be the best in the world,
I can fly like birds,
I can bring heaven on the Earth.
I can do.

IT IS FUN TIME!

Kundan Kumar
Class VI-B

1. Shopkeeper : Madam, to accept the cheque from you, I have to establish your identity first.
   Customer (takes out a mirror and peers into it) : Yeah ! It is me all right.

2. Boss (to the candidate): Why were you sent out of your office where you were working?
   Candidate : I killed a mosquito.
   Boss : Only for this reason !
   Candidate : The mosquito was sitting on my boss's head.

3. A young man (to an old woman) :Do you know any lady who likes the pink colour. Madam?
   Old woman : Why ?
   Young man : I would like to marry her.
   Woman : I like pink colour very much.

FUN

Kundan Kumar
Class VI-B

1. Manish : My 80 - year-old grandfather gets up early in the morning and jogs for 20 km.
   Prem : That is fantastic. What does he do in the afternoon?
   Manish : Jogs the last km.

2. Rosi : If I find a bag on the road with Rs. 1,000 inside it, what should I do?
   Priya : Give the money to me and keep the bag with you. Ha....Ha....Ha !

3. Diner (to the waiter) : I never ordered this food.
   Waiter : Well sir, you had said that you wanted something different.

4. Utkrisht : The play had a happy ending.
   Shashwat: It is so, how?
   Utkrisht : Every one was happy when it ended.

ONE DAY OUT IN KANNAUJ

Aditya Pratap
Class IX-B

We were in Kannauj to attend the NCC camp. Soon the last day came. It was something odd to return purchasing perfumes and exploring some ancient structures from the city of scent and history Kannauj. Kannauj was once the metropolis of whole Aryawarta in the empire of a great, benevolent, munificent and just king Harshavardhana. We went outside the camp, actually without permission. We decided not to waste any time taking permission. Hoping of a big fort we advanced to Jaychand's castle. But instead of any mammoth structure there was only a hillock. Only some bricks were peeping outside after a long struggle with nature. Antifact by man but ruined by the cruel and almighty nature. The whole fort was buried and veiled under the hillock and was waiting anxiously to be explored by any archaeologist. We had some photographs from there. From the top most we could see the peak of very ancient Gauri - Shankar Temple top guilded of pure gold glazed and dazzled in the noon. We walked down to the temple in time. Soon we were in the temple which was about 1400 years old. It was the place where Budhist summit was organised in the presidency of Chinese traveller Hiuen Tsang. Unfortunately, the door was closed. We peeped the shivling from outside only. We got some photograph as souvenir there. Now we were strolling in the streets of Kannauj. We got some refreshment there wandering through roads. We bought some perfumes from factory and a shop. Now we returned to our bus which was in the field to take us back to Kanpur. It was the day which is printed in my mind and cannot be forgotten so easily.

JOKES

Aditya Srivastava
Class IX-C

1. Mahesh : Why does the cow give us milk directly?
   Pradeep : Because it doesnt know how to sell it.

2. A bus passenger suddenly opens his bag and checks his Tiffin Box.
   Co-Passenger : Why did you do that?
   Passenger : To check whether I am going to office or coming back.

3. Lady to milkman : Why have you increased the price of milk?
   Milkman : Because earlier I mixed up tap water, now I mix mineral water.

4. Father : Why did you get such a score in the test?
   Son : The reason is absence.
   Father : You mean you were absent on the day of test.
   Son : No, the boy who sits next to me was absent.

5. Ramu : Why did you cut a hole in the umbrella?
   Hari : So that I can see when it stops raining.

WHAT MAKES OUR INDIA SO GREAT?

Amit Kumar
Class XI-A

Delhi for majesty, Kashmir for beauty.
Bombay for looking, Madras for cooking.
Bengal for writing, Punjab for fighting
Guajrat for wealth, Madhya Pradesh for health.
Kerala for dance, Karnataka for romance
Bihar for mines, Himachal for pines.
Nagaland for hills, Ahmedabad for mills.
Uttar Pradesh for Patriotism, Rajasthan for heroism.
Andhra for hard working, Maharashtra for learning.
makes our India so great.

MORE OR LESS

Love more	-	Hate less
Think more	-	Talk less
Earn more	-	Spend less
Work more	-	Sleep less
Read more	-	Gossip less
Praise more	-	Blame less
Help more	-	Fight less

STUDENT / CRICKETER

Examination	-	Pitch
Examiner	-	Umpire
Examinee	-	Batsman
Paper setter	-	Bowler
Pen	-	Bat
Questions	-	Balls
Difficult questions	-	Bouncer
Marks	-	Runs
Good question	-	Good bowling
Fully attempted questions	-	Sixers
Cheating	-	Catch out
Talking in examination hall	-	Run out
Mark Sheet	-	Score Board
Wrong attempted question	-	I.B.W. out
Blank Answer Sheet	-	Clean Bowled
Distinction	-	Century

NEED FOR THE TEACHING OF MORAL AND SPIRITUAL VALUES

Moral values particularly refer to the conduct of man towards man in the various situations in which human beings come together in home, in school and economic field and in the life of the outside world generally. It is essential to form in the earliest childhood, moral values should be inculcated in us. We have to influence the home first. We fear our - homes are not wnat they are ought to be Habits, mind and body are formed in the early period at home and they persist and influence our life afterwards. Good manners are very important part of moral education. It is not usual and when people obtain freedom suddenly after long years of bondage, they are inclined to become self-willed, arrogant and inconsiderate. In such situation good manners are easily set aside.

There is a great deal of talk of corruption and dishonesty in our official and business life. It is the students of today who are to be incharge of the various departments of life tomorrow, and if they learn - what real integrity is in their early years, they are not likely to go wrong later on. Every effort must, - thereafter be made to teach students moral values from the earliest stage of their educational life. If the content of education is enriched with the moral and spiritual values, the purpose of education will be highly fulfilled.

SUCCESS IN THE LIFE

Remember your smile is the
midst of storm,
Remember your place is the
midst of cheers,
Remember your manners is the
midst of wildness
And you will always succeed
in life.

KNOWLEDGE

Knowledge is a power, never can be taken,
it is a treasure, never can be stolen.
Knowledge is the foundation, that can't be shaken,
It is the determination, that can't be broken.
Knowledge is healthy that can't be bought by wealth
It is the truth, that always gives fruit.

गुणावतरण 'Acrobatics' के कुछ दृश्य

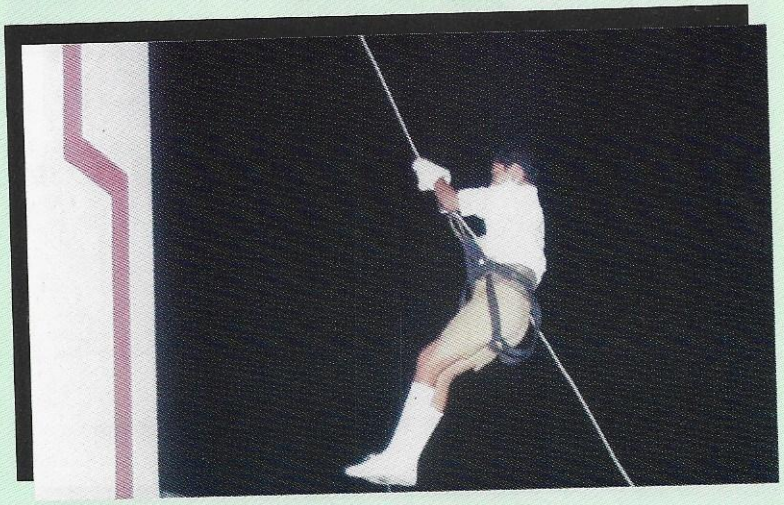

"प्रवीर हो, जयी बनो, बढ़े चलो, बढ़े चलो"

वार्षिकोत्सव के मुख्य कार्यक्रम में प्रदक्षिणा करते हुए घोष के छात्र

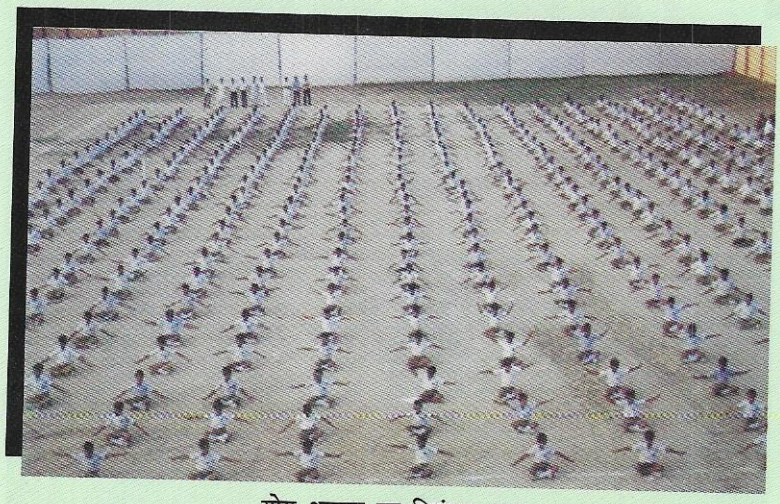

योग-आसन का विहंगम दृश्य

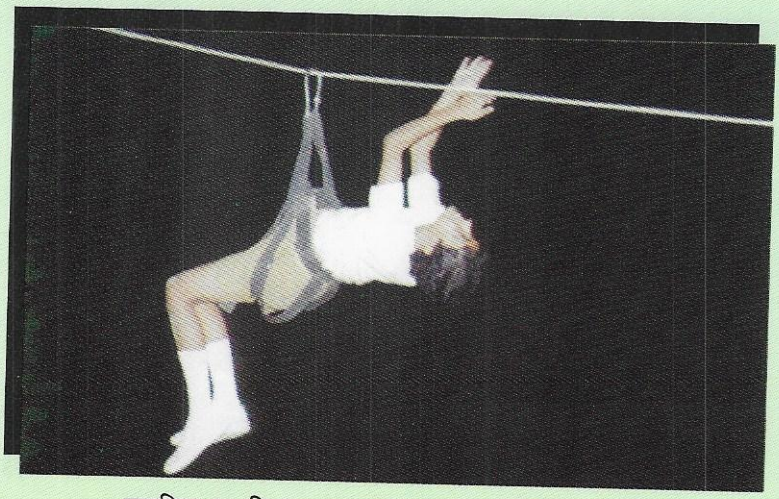

साहसिक प्रस्तुति 'गुणावतरण' Acrobatics करता विद्यार्थी

गीत गायन प्रतियोगिता

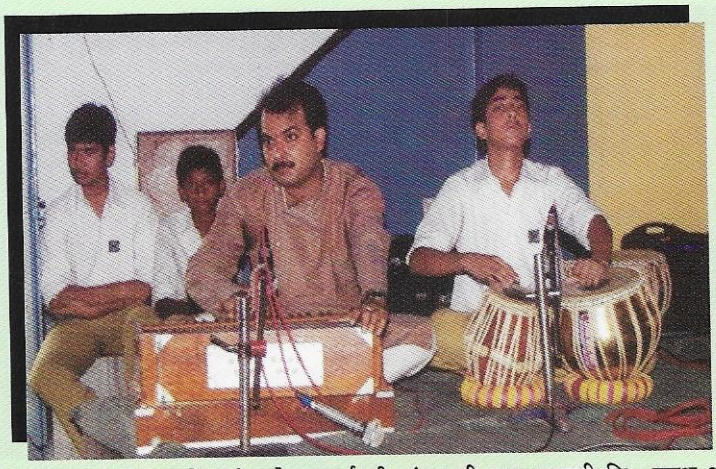

गीत गायन प्रतियोगिता में संगीत के आचार्य श्री अंकुर जी तथा तबलची चि० सुयश शुक्ल

कार्यक्रम को सम्बोधित करती हुई डी०ए०वी० महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ० रेखा शर्मा

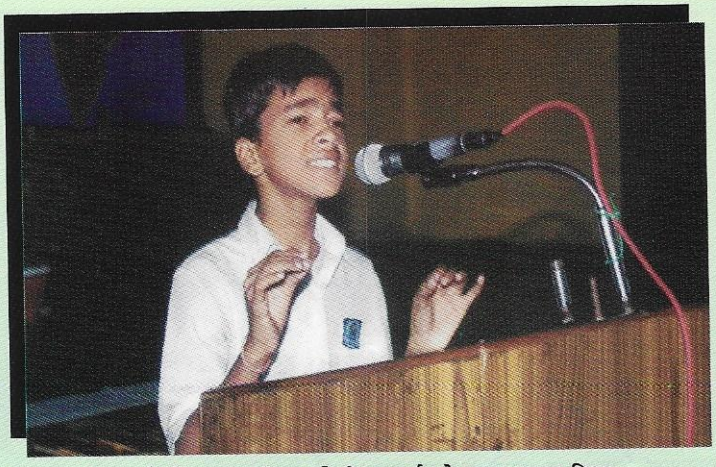

गाने में तल्लीन दिख रहे चि० पार्थ को प्रथम स्थान मिला

वाद-विवाद प्रतियोगिता

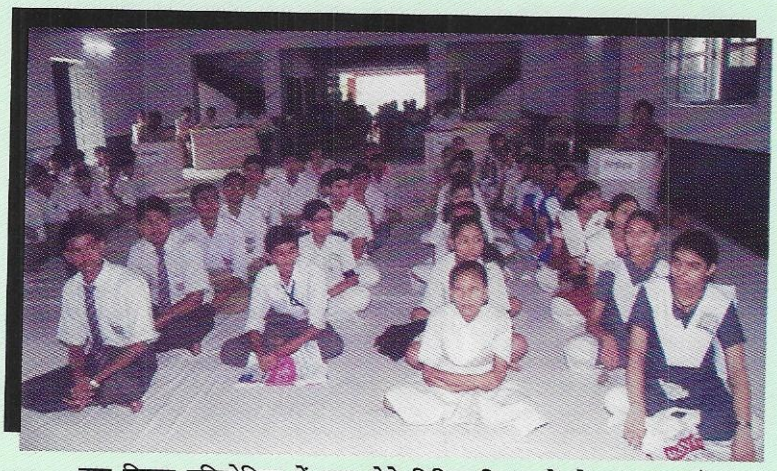

वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लेते विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राएँ

विजेता छात्रों को पुरस्कृत करते हुए निर्णायक डॉ० पंकज चतुर्वेदी जी

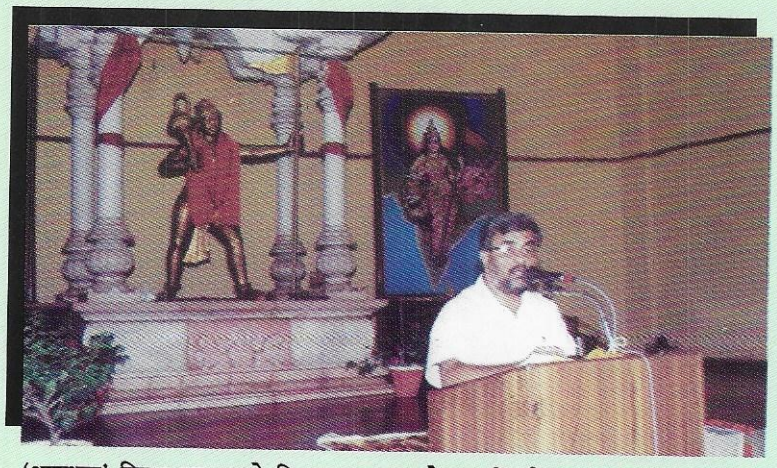

'आरक्षण' विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए निर्णायक डॉ० मनोज मिश्र जी

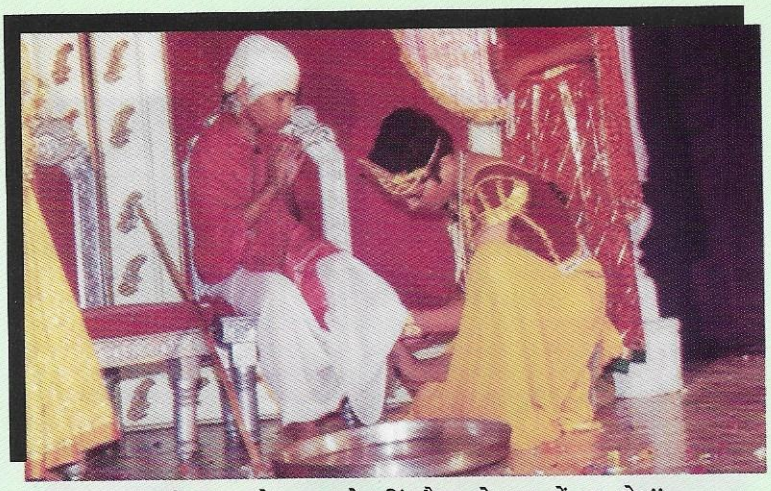

"पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए"
सुदामा (आयुष त्रिपाठी) के चरण धोते हुए श्री कृष्ण (अक्षत कृष्णा)

प्रेम दीवानी मीरा : माई री मैं तो लियो गोविन्दो मोल

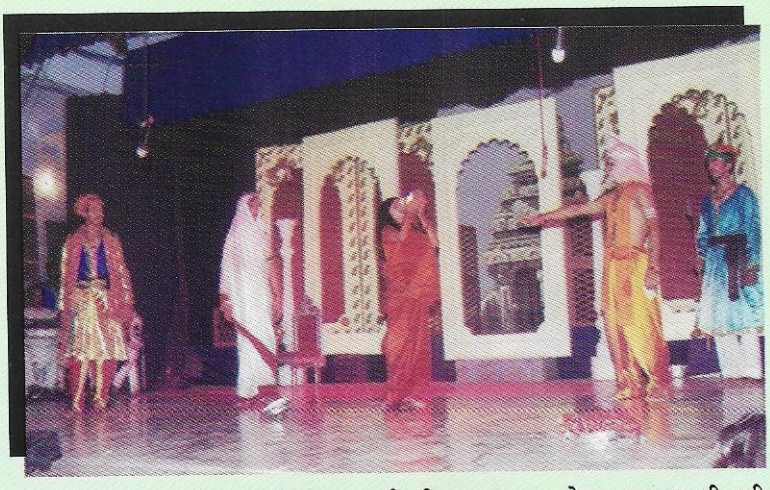

अनन्य कृष्ण भक्त मीरा जहर का प्याला भी श्री कृष्ण का चरणोदक समझकर पी गयी

रंगमंचीय कार्यक्रम

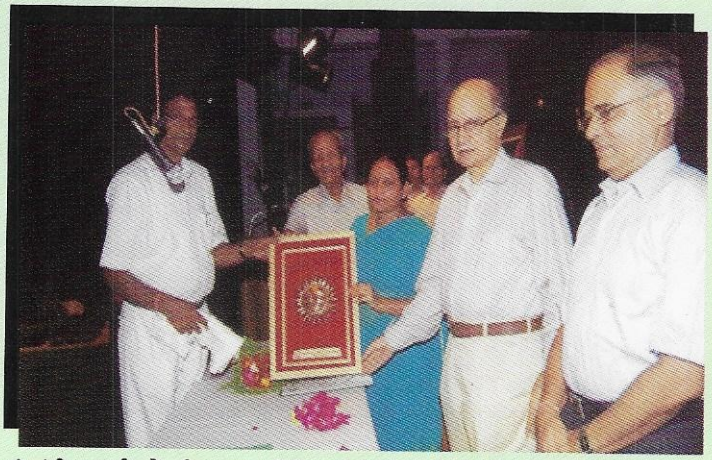

रंगमंचीय कार्यक्रमों की मुख्य अतिथि ए०डी०एम० सिटी श्रीमती शकुन्तला गौतम को सम्मानित करते हुए माननीय सचिव जी, माननीय अध्यक्ष जी तथा माननीय प्रधानाचार्य जी

स्त्री पात्र की सुन्दर भूमिका निभाने वाले रोशन तिवारी को पुरस्कृत करती हुई ए०डी०एम० सिटी श्रीमती शकुन्तला गौतम

अभिनय गीत प्रस्तुत करते छात्र

कवि-गोष्ठी

विविध रसों के प्रतिष्ठित कवियों से सुसज्जित कवि-गोष्ठी का मंच

"हमारा नाम जवानी, हमने जब चाहा आँधियाँ सिर्फ इशारों में रुख बदलती हैं"
काव्य-पाठ करते श्री सुमन जी

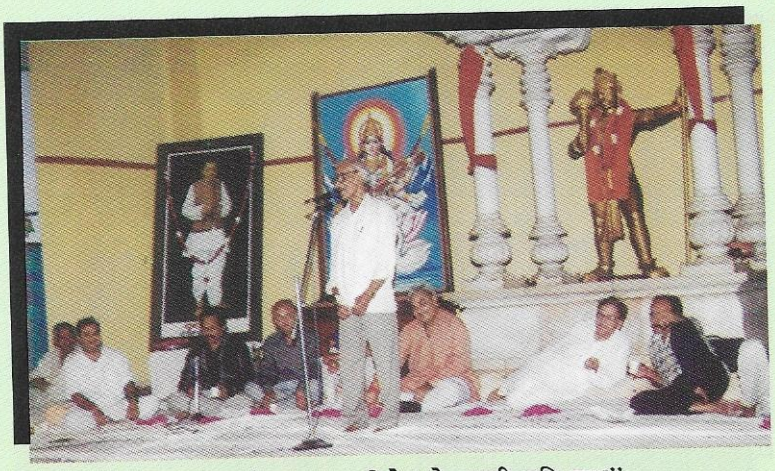

"कुछ भी बुरा न मानिये, जो सनकी कहि जाए"
हास्य-कवि श्री सनकी जी कविता सुनाते हुए

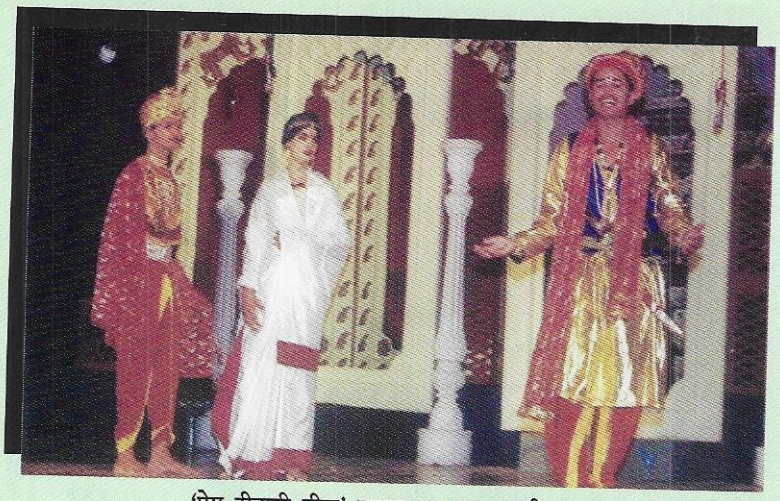

'प्रेम दीवानी मीरा' नाटक का एक प्रभावी दृश्य

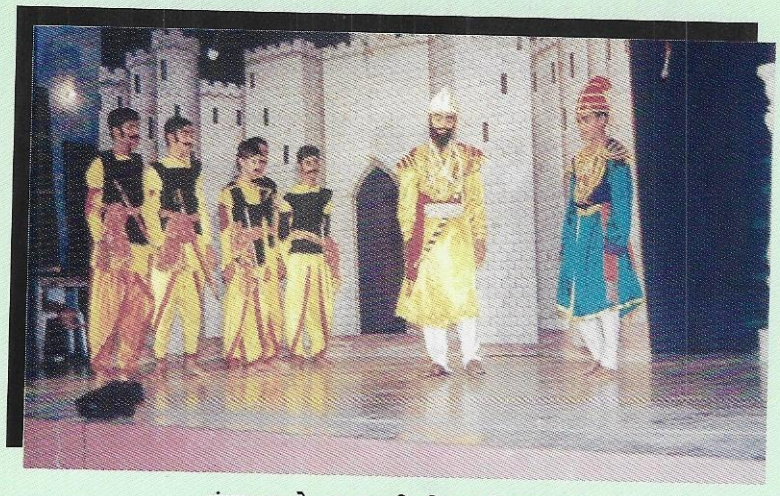

मंत्रणा करते हुए छत्रपति शिवा जी महाराज

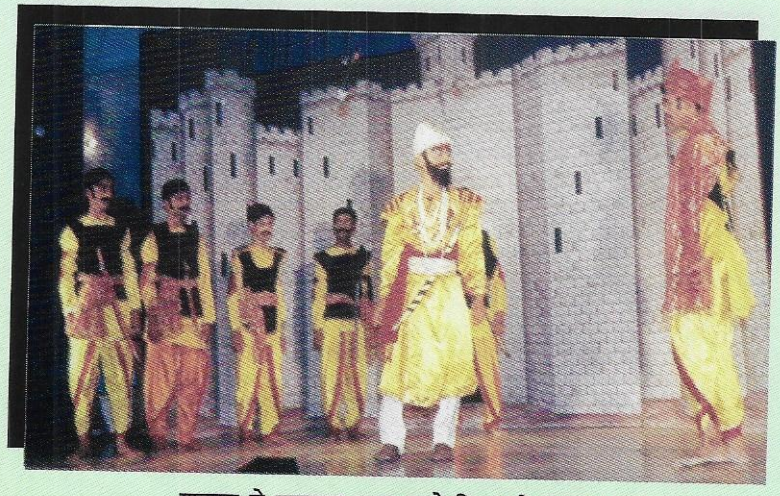

गुप्तचर से समाचार प्राप्त करते शिवा जी महाराज

NO MORE GOING TO SCHOOL!

Nishant
Class XII-A

All that exuberant rowdiness, which I enjoyed in previous twelve years, is just going to diminish. Yes, it is the most emotional moment in my life so far. My friend! and my last day of school.

The emotions have subdued the students. The hour of parting with friends has come. I do not expect to see many of these students again, of course, others also expect so. But, it won't be the same. I know it, and they too know it.

Thinking of my early days, in school, I remember the passionate child whose aim was just to enjoy every small and big incident in life. As he grows, he gets the feel of the world. He, sometimes, is deceived by a friend, sometimes he is offered help by generous hand. He is trained to compete and also to aspire for big goals. He celebrates Diwali and Holi as well as 'Id' and 'Christmas'. Also 'Teacher's Day as well as 'Friendship Day' are not forgotten by him. Who trains this child? - 'School'.

That's why, nobody can overlook the role of school.

I've passed precious thirteen years of my life in school, And it is equally true that this has been the most valuable wealth for me.

"In time, the strangers will become friends,
But these times will be different & special,
No new group of mates will ever take -
- the place of the one leaving me today!"
Some lines come to my mind on this sad moment.

"The room is so blank,
our desks are all cleaned-out.
So now I've to leave quietly,
and wait for any bus to come."
I wish I could get a time - machine to go back in time and
could enjoy my school-days again.
Reality, its like a full life passed.

The scolding of teachers and then telling us how to improve - I won't forget in my life ever-

"The teachers scolded and
Then trained us to become ept,
They, the makers of future,
I will never be able to pay off their debt.
Now I can forget,
The slap of my Principal,
Manoj ji's duster - punishment -
- That led to the Sanskrit verses learnt.

x x x

The transfer of powers
from idol of valiant Mahavir
-Will always give a back-lift,
while facing every troulble in life.
x x x
The tough sums of Mahesh ji,
The moral teachings of Ojha ji,
The Sanskrit quotations by Ganesh ji,
The 'responsibilities' told by Satish ji.
The Geography of poems by Shubhas ji,
The decency of Pappal ji,
Great gains of my life -
are all of them, see.
Solvay Ammonia process
Very favourite of Rajesh ji.
Perkin reaction and 2nd group radicals
often asked by Sudhir ji.
I can't express my views for the one,
he's only Dinesh ji.
The stylish teaching done
one and only by Kailash ji.
Best of all the teachers of Physics,
the visit to Science conclave with Hemant ji.
How can I forget you - my ma'am,
the efforts of you to let me write,
This is the glory of my school,
That'll be always dignified.
x x x

Alas ! I will never ever get these moments. It's ever lasting memories will always be with me. Oh my school! I'll really miss you much!

NECESSITY IS THE MOTHER OF INVENTION

Shubham Shukla
Class XII-A

'Necessity is the mother of invention' - is a famous proverb. It means that new inventions come into existence when they are needed. Nothing happens by chance - for every event there must be a reason. Necessity urges human mind to find means to satisfy it.

Each of us knows the famous story of a thirsty crow. A crow was very thirsty. It flew to and fro in search of water. Luckily it saw a pitcher of water. It tried to quench its thirst. But it could not succeed. The reason was that it could not reach the water-level. It saw some pebbles nearby. It dropped the pepples one by one into the water. Thus, the water came up and the crow drank it.

A famous English poet Dryden said -

"Want is bitter and hateful good; Because its virtues are not understood;
yet many things impossible to thought; Have been by need to full perfection brought."

Thus it is clear that immediate need compels us to find out a way for its fulfilment and this is the basis of new thoughts, discoveries and inventions.

If we look at the different stages of human history, the same idea comes before us. In the primitive at the stage of mankind, man ate his food by killing birds, fish and animals. So he used all kinds of traps, tricks and snares. In those days he ate raw meat which was not tasty. He thought of fire. By using fire, he cooked his food.

Later on he thought of living in houses. The need of houses was hardships of weather.

The necessity of preserving life against the cold led to the invention of woollen clothes. The invention of writing is due to need of keeping records.

Nature is a store house of everything. It gives us all that we need. If a man is satisfied with what he gets, he need not exert himself for anything. But, by nature a man craves for more. He thinks of new ways to attain perfection. So, he is compelled to invent new devices.

DEFINITIONS OF FRIEND

Abhinandan Kumar
Class IX-B

1. A true friend thinks of you when all others are thinking of themselves.
2. Friendship is not a thing that just happens. It has to be created and nurtured.
3. A friend is one who comes in when world goes out.
4. A friend is one who forgets what he gives and remembers what he recovers.
5. A friend is a single soul dwelling in two bodies.
6. A friend is not the one who wipes away our tears, he is the one who keeps us away from shedding tears.
7. Friendship is like chinaware, once broken it cannot be mended and if at all mended the scar will be there.

A FRIEND IN NEED IS A FRIEND INDEED.

HOW OLD ARE YOU

Aditya Vikram Singh
Class X-B

There are several ways of finding out sometimes age and the month he was born. Here is one of these methods :-

- Ask someone to think of the number of the month he was born (January = 1, February = 2, December = 12).
- Multiply the month's number by 2, then add 5.
- Multiply the addition by 50 and then add his age.
- Subtract 250 from the addition.

The last two nos. of the figure will be the age of the volunteer and the first or 1st two no's will be the month he was born.

Suppose ÷

A volunteer is born on July so he talk's the month's no..7; his age = 12

(i) 7 x 2 = 14 + 5 = 19 x 50 = 950 + 12

= 962 - 250 = 7 1 2

Month age

The last two nos. are 12, his age, and the rest of nos. he was born in month.

FRENCH WORLD

English word		French word
Children	-	Enfants
Mother	-	Mere
Father	-	kere
Brother	-	Frere
Son	-	swur
Lady	-	dame
Wife	-	Femme
Friend	-	Chers Amis
Husband	-	Mari
Daughter	-	Eille
Grand father	-	Grandpere
Grand mother	-	Grandmere

DO YOU KNOW?

Akash Singh
Class VIII-B

1. The king Cobra is the only snake that makes a nest.
2. Flying lizards are found in Assam.
3. Crocodiles grow up to 7 meters long and weigh upto 1000 kg.
4. A mosquito has 47 teeth.
5. The ant can lift things 10 times its own weight.
6. A whale can swim for 3 months without eating.
7. Men have more blood than women.
8. Bamboo can grow up to three feet in 24 hours.
9. An ant can survive up to two weeks under water.
10. Turtles can live more than 100 years.
11. A moth has no stomach.
12. The lithphone is the oldest musical instrument.

CHANDA MAMA

Anupam Tripathi
Class V

There are five phases of the moon.

1. New Moon 2. First Quarter 3. Full Moon
4. Third Quarter 5. Old Cresent.

1. New Moon : The moon appears in the sky having a small lining on the side.

2. First Quarter : It begins to wax, to increase in size. In a week, we can see half of the moon.

3. Full Moon : After two weeks the full moon appears in the sky the earth is lit with moonlight.

4. Third Quarter : The moon begins to wane decrease in size. After three weeks, we can see about half of the moon in the sky.

5. Old Cresent : At the end of the month, the moon decreases greatly in size. It is a tiny silver moon, about to disappear.

SCHOOL CRICKET

Akash Singh
Class VIII- B

Batsman	Students
Bowler	Paper Setter
Umpire	Teacher
Play Ground	School
Spectators	Helpless Guardians
Commentators	Mark Sheet
Expert Comments	Classmates
Sixer	Distinction
Four	First Class
Googly	Changed pattern
Bouncer	Questions out of Syllabus
Umpire's Decision	Grace Mark
Run Out	30/100
Clean Bowled	Failed
Oh! It's no ball	Passed in Supplementary Exam
Wide Bowl	Absent in Exam
Hat Trick	Distinction in three Subjects

SOME MEMBERS OF THE SPACE FAMILY

Amit Chaurasia
Class IX-C

Asteroids : Asteroids are minor planets whose orbits lie between Jupiter and Mars.

Ceres : The first asteroid to be discovered is the largest asteroid having a diameter of 670 km.

Meteors : Meteors are small heavenly bodies coming from interplanetary space. They are popularly known as shooting stars.

Comet : A comet is a luminous celestial body which moves about the solar system in elliptical or hyperbolic orbits. Comet are usually accompained by a long shining tail.

Star : Stars are suns or self luminous bodies, situated at enormous distances from the solar system.

There are many types of stars.

(i) Fixed stars [dog stars]

(ii) Binary stars [double stars]

(iii) Temoprary stars [novae]

(iv) Variable stars.

(v) Dwarfs.

Super Nova : SUper Nova are violent explosions of massive stars where the inner core of the star is blown of into interstellar space.

IT'S A FACT

- The average lead pencil can draw a line that is almost 35 miles long or you can write almost 50,000 words in English with just one pencil.
- ... A person can live without food for about a month, but only about a weak without water.
- It the amount of water in your body is reduced by just 1% you'll feel thirsty. If it's reduced by 10%, you'll die.
- Almost is the word in English Language with all the letters in alphabetical order.
- It is impossible to lick your elbow.
- Dolphins sleep with one eye open !
- Brahmaputra is the only river in India with a male name.
- Ancient Egyptians used slabs or stones as pillows.
- The railway platform at Kharagpur in West Bengal is 833 meters (2,733 ft) long. It is longest in the world.
- Hero Honda is the largest producer of motor cycles in India.

TELL ME WHY

1. **Why does water not calm the tongue after you have eaten hot spicy food?**

Ans. The spices in hot foods are usually oily. You probably know that oil and water don't mix. So the water on your tongue just rolls over the oily spices.

What can we do ?

Eat bread, it will absorb the oily spices or you can drink milk.

2. **Why is it that ants don't die even when they fall from a great height ?**

Ans. Like cats, ants are able to fall right side up without injuring themselves. They spread out their legs during the fall and land right side up.

3. **Why shouldn't you wash pearls with vinegar?**

Ans. Because pearls melt in vinegar.

TEACHER

Akash Rathore
Class VIII-B

Teachers are gods
They not only teach us lessons
But groom us to be nice person
They always teach us good manners
And help us climb the stairs of success.
As a potter makes a pot pretty and strong
So, they always takes us to height a long
Like candle they burn and make us shine
Their expert hands do shape us very fine.

ON THE DAY OF SEPARATION

Chandra Mauli
Class XII-A

When half-bloomed mind
was entering to rise,
Heart beats were fast;
Building, in front was nice.

To rise under the
limitless love and affection;
New inning of life started
For getting perfection.

Taps of beautiful hearts often greeted me,
In the days of stress;
These beautiful hearts were
Of my teachers and mistress.

Plant was irrigated for seven years,
By number of mighty-minds;
The debator I am
For the debt of affection.

The affection I got, from
Respecting teachers and loving friends;
I am very sorry for mistakes,
unknowingly that I made.

The moment is pleasant,
Impatience is in heart;
Harsh bell of separation
Now, pinching my heart.

On the Day of separation;
Oh school! Bye - Bye.

YOGA CAN SET US FREE

Shubham Gupta
Class XII-A

Relationships gone sour remains with us as a load for a very long time. They constantly gnaw at our mind, upset our emotional balance and adversely impact our health. However, a small trigger could turn memories into raw wounds again.

Yogic healing is achieved with "asana", "Pranayama", "Dharana" and "Mantra Sadhana". What really is Sadhna? Sadhna is a way, a path. It is also a method of transformation. Further, Sadhna is a journey from the impure towards the pure. The impure relates to the world of name, fame, ideas and that is our normal mind where it is the ego that is interacting with the world.

When Sadhna is done regularly, with conviction and over a long period of time, it transforms a person into being more simple and natural internally.

"In yoga Sadhna : The healing Process is three fold : Physical, Mental and Psychic" At the physical level, we work through asanas and Pranayama - that is, "hatha Yoga", to purify the body. At the mental level, we work to connect to our innerself and begin the journey within "This is achieved through Pratya hara, Dharna and Mantra." The Psychic level is purified by Kriya Yoga, Kundalni Yoga, Nada Yoga and Laya Yoga. "According to Patanjali's Yoga Sutra, Assana is Sukham-Sthiram-Assanam, that is, the posture in which one experiences joy, happiness and stability", "Dharna sharpens the mind and improves focus."

Mantra are sound vibrations, They help us and connect the innerself to the cosmic energy and overcome energy blockages within. "Mahamritunjaya Mantra, Gayatri Mantra and Goddess Durga's 32 names are some of the well known Beneficial Mantras.

"With Yoga and Mantra Sadhna one achieves harmony with the self and with the world. The body becomes healthy, the prana balances and at the level of spirit the process 'set us free' and unravels creativity in life.

The only constant in life is change. What Sadhna does is to put the Sadhak or aspirant on the path of acceptance, change, adaptation and deep within it inculcates the ability to step back and view the world dispassionately.

WHAT IS A HOUSE?

Devpriya Madhukar
Class IX-B

It's brick and stone
and wood that's hard.
some window glass
and perhaps a yard.
It;s eaves and chimneys
and tile floors
and stucco and roof
and lots of doors.

WHAT IS A HOME?

It's loving and family
and doing for others.
It's brothers and sisters
and fathers and mothers
It's unselfise acts
and kindly kind sharing
and showing your loved ones
you are always caring.

REALITY OF LIFE AND LOVE

When life is full of love.
One becomes gentle as dove.
Love of mother is very pure.
Father's love is for sure.
Friend's love is one of kind-
Don't ever say love is blind
Teachers love is full of education.
Flower's love is filled with dedication.
Brother's love is so warm.
Sister's love is full of charm-
when in life love goes away.
Men turn to violence in every way.

DON'T FORGET

Don't forget who gave you Birth.
Don't forget who gave you education.
Don't forget to respect your elders.
Don't forget to do your duty well
Don't forget to help the need & poor
Don't forget to be truthful and honest.
Don't forget God, the creater of the world
Don't forget the freedom of fighters
and most of all. *Don't forget that you are an Indian.!*

FEELINGS OF A CADET

East or West Home is the best
but a cadet will always say
East or West CAMP is the best
No worry, No Hurry
but he always feels a sort of rest

Go for run, face the sun
Fully tired muscles and bones
but seniors say the run was for fun
Hence, not to worry and again
Be prepared for the drill practice and run

Must is night PT no one feels sleepy
No hurry for bed, neither fells sad
but when he is weak in PT
He feels very bad
But role of CAMP then starts
Cadet picks up very fast
And then stands first
who used to be the last

KARL - MARX

Karl Marx was a German economist. He was a great political thinker and a revolutionary. He was of the chief supporter of communism. In 1842, Karl Marx became the editor of a newspaper. He started writing articles on the economic and social problems of the country. The paper was soon banned. Marx went to Paris. There he met Friedrich Engels. Both were socialists and remained friend for life. They wrote Communist Manifesto. Karl Marx wrote another book called Das-Kapital. In this book he expressed his views very clearly and boldly.

There were two classes of people. They were capitalists and the workers. The capitalistic gathered the wealth. But the poor workers lived in very miserable conditions. Karl Marx was the first who revolted against this injustice. He suggested the workers to rise against the capitalists and take control. Marx's ideas later inspired Communist revolutions all over the world. It is a warning to the rich not to ill-treat the poor.

Can you read this?

"The pharnmned purer of the human mnid : I cdnuolt blveiee uesdnatnrd waht to a rscheearcr at cmagbride uinervitisy, it wrod order the ltteers of a wrod are, the olny imrmoatnt thign is taht the frits and Lsat lttree be in the rghit pelae. The reet can be a taotl mess and guo cna sitle raed it wouthit a pormleb. This is bcuseae the huamn mnid does not read ervey lteter by istlef, but the wrod as a wlohe."

IT HAPPENED IN 20TH CENTURY

Nikhil Gupta
Class IX-B

1. **1947**, the Dead sea scrolls are discovered by a Bedovin shephered in 'gordan' - dating from the 1st century, they are in Aramaic, the language of Jesus and Hebrew.
2. **1908**, Henry Ford rolls his first Ford Model T, the car for the people.
3. **1994**, An asteriod passes the earth at only 1,60,000 km.
4. **1902**, the Teddy Bear is created after a Russian immigrant sees a newspaper cartoon depicting President Theodore "Teddy" Roosevelt.
5. **1917**, Charlie Chaplin signs the first million dollar movie contract.
6. **1978**, the first test tube baby, 'Louise Brown' is born in England.

AMAZING FACTS

- The interior temperature of icebergs can be in the range of 15°C to 20°C!
- Peanuts are used in making of dynamites!
- People take bath in sand in Sahara.
- A tree named 'culia' changes its colour before an earthquake takes place.
- The maximum speed of 'fly' can fly is 818 miles/sec!

REALITY OF HAPPINESS

Ajay Singh Rawat
Class IX-A

Life is a strange blend of ups and down, sorrow and happiness, success and failure, darkness and light, the good and bad. It keeps on assessing a person's fortitude by presenting unpredictable situations without a fore warning.

Everyone of us would like to be happy all the time, but the reality is quite different and each one has his share of favourable and unfavourable circumstances. And this too is a fact that different person behave absolutely unlike other in diverse situations. For one, an adverse predicament might mean a bleak future while another might consider the opportunity a challenge.

Every hindrance leaves a person stranger and wiser. It is only while facing a difficult situation that a person comes to know his real inner strength.

Just as wood is seasoned by giving hot and cold treatments alternately before being used in house construction, similarly emergence of varied unpredictable condition makes one stronger, more mature and determined. A stone turns into a diamond only after under going a lot of cutting and polishing. Good times too are no less or challenge in the way that these evaluate person's way of handling happiness.

Happiness is not so valuable in absence of trouble. It is only defeat which makes victory so enviable. "Every night has a day" Tough situations are forebonding of good times. It is nature's way of maintaining balance on this earth.

If you want to know the value of happiness after a great struggle, you should meet a student who is selected in any great competition after 12th. The struggle of his whole year is not much greater as his happiness.

Brooker T. Washington, a famous educationist of the United States of America, was born in poor negro family. His early life was full of difficulties and hardships. As a boy, he worked in a coal mine Here he heard about Hampton Normal and Agricultural Institute. The school seemed to him to be the greatest place on earth and more attractive than even heaven.

He faced a lot of difficulties and ultimately succeeded in getting admission in the institute. So we should not be deterred by any odd difficulties and hurdles that may came in our way of realizing ambition.

"Adversities of life is like a doctor's pills which are bitter in taste but sweet in its effect."

There are some times when inspite of our best efforts, things seem to go out of control and we feel helpless. In such cases do your best and leave the rest to God. The man or woman who turns to God is like a tree planted by a stream. What they share with the world is replenished from a source beyond themselves, so they never run dry.

SOME SPECIAL ATE FOR A GOOD LIFE ARE-

- Make few promises.
- Always speak the truth.
- Keep good company or none.
- Never play a game of chance
- Good character is above all things
- Never borrow if you possibly can help it.
- Make no haste to be rich, if you are not prosper.
- If any one speaks evil of you let your life be such that no one will believe him.
- When you retire to bed, think over what you have been doing during the day.
- Never be idle, if your hand can't be employed usefully, attend to the cultivation of your mind.
- The best way to make your dream come true is to wake up.
- Be positive towards life.
- Faith in God, every time.
- Fear is only for the first time so never be afraid of this.
- A Good heart is better than all the heads in the work.

"NEVER FEAR THE CHANGE OF UNKNOWN" -Dhiru Bhai Ambani

AN IDEAL TEACHER

An ideal Teacher
is a part of life
He helps a lot
To make our future
There are Times
when we feel sad
He gives us knowledge
Like a preacher
The blessing of God
An uncommon creature
He is none, but
Teacher, Teacher & Teacher.

STUDIES.....DIFFERENT STUDIES

Sonam
Class VI-B

(i)	Agrostology	-	The study of grasses
(ii)	**Bryology**	-	The study of mosses
(iii)	**Charology**	-	The study of geographical, plants & animals
(iv)	**Dactylology**	-	The study of finger prints
(v)	**Epistemology**	-	The study of the nature of knowledge.
(vi)	**Mycology**	-	The study of fungi & fungal diseases
(vii)	**Olfactology**	-	The study of sense of smell
(viii)	**Theology**	-	The study of religions
(ix)	**Hypnology**	-	The study of sleep
(x)	**Lithology**	-	The study of characteristics of rocks.

PERFECT SILENCE

Meditation of life,
Emptiness of soul
Search of Truth,
Essence of sorrow
Freedom of thought,
serenity of solitude
Fears of Confession,
Need to rest
Peace of Mind,
That's the kind of "Perfect silence."

"DONT READ"

The Indians have only one main problem that the things which are prohibited, they want to do only that thing. One day I saw a person entering in a 'No Entry' area without permission. Clearly written above in the title to not to read, then also you are reading thioidiocy.

आचार्य - परिवार

1. श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी (प्रधानाचार्य), एम.एस-सी. (जन्तु विज्ञान), बी.एड.
2. श्री राजेश शुक्ल, एम.एस-सी. (रसायन विज्ञान), बी.एड.
3. श्री रामतीर्थ मिश्र, एम.ए. (हिन्दी), बी.एड.
4. श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव, एम.ए. (गणित, समाजशास्त्र), एल.टी.
5. श्री हेमन्त शुक्ल, एम.एस-सी. (भौतिकी), बी.एड.
6. श्री कैलाश जोशी, एम.एस-सी. (गणित), बी.एड.
7. श्रीमती रेखा निगम, एम.ए. (अंग्रेजी), बी.एड.
8. श्री दिनेश सिंह भदौरिया एम.एस-सी. (रसायन विज्ञान), बी.एड.
9. श्री दीपक राजे, बी.ए., बी.एड.
10. श्री सुभाष चन्द्र शर्मा, एम.ए. (भूगोल), बी.पी.एड.
11. श्री गणेश शंकर वाजपेयी एम.ए. (संस्कृत), शिक्षाशास्त्री
12. श्री सतीश चन्द्र गुप्त एम.ए. (इतिहास), एम.एड.
13. श्री जगपाल सिंह, एम.ए. (भूगोल), बी.एड.
14. श्री श्रीप्रकाश ओझा, एम.एस-सी. (भौतिकी), बी.एड.
15. श्री सुधीर अवस्थी, एम.एस-सी. (रसायन विज्ञान), बी.एड.
16. डॉ. मनोज कुमार शुक्ल, एम.ए. (संस्कृत), हिन्दी, साहित्याचार्य पी.एच-डी.
17. श्री दुर्गेश वाजपेयी, एम.ए. (हिन्दी, संस्कृत), बी.एड., पत्रकारिता परास्नातक (IIMC)
18. श्री मनजीत सिंह, एम.एस-सी. (गणित), बी.एड.
19. श्रीमती शिल्पी श्रीवास्तव, एम.एस-सी. (भौतिकी), बी.एड.
20. श्री आनन्द श्रीवास्तव, एम.ए. (अंग्रेजी), बी.एड.
21. श्रीमती अर्चना तिवारी, एम.ए. (अंग्रेजी), बी.एड.
22. श्रीमती मीना अग्रवाल, एम.एस-सी. (गणित), बी.एड.
23. श्रीमती तृप्ति प्रेम, बी.ए., बी.एड. vocational course in Broad Casting & Media
24. श्री अनूप शुक्ल, एम.एस-सी. (वनस्पति विज्ञान), बी.एड.
25. श्रीमती पल्लवी अग्रवाल, एम.एस-सी. (वनस्पति विज्ञान)
26. श्री सुनील दीक्षित, एम.एस-सी. (रसायन विज्ञान), बी.एड.
27. श्रीमती अर्चना विद्यार्थी, डिप्लोमा (कम्प्यूटर) 'ए' लेविल बी.एस-सी., एम.ए.
28. कु. शिखा शुक्ला, एम.एस-सी. (रसायन विज्ञान) डिप्लोमा (कम्प्यूटर) 'ए' लेविल
29. श्री कौशलेन्द्र पाण्डेय, एम.काम., एम.सी.ए.
30. श्री अंकुर दुबे, संगीत प्रभाकर
31. श्री वेद कुमार शर्मा, बी.ए., बी.एड. आई.जी.डी. बॉम्बे

32. कु. प्रीति तिवारी, एम.एस-सी. (पर्यावरण विज्ञान), एम.फिल. एम.ए. (अंग्रेजी)
33. श्रीमती शक्ति श्रीवास्तव, बी.एस-सी., एम.ए. (समाजशास्त्र)

कार्यालय

1. श्री राजेन्द्र गुप्त (कार्यालय अधीक्षक)
2. श्री ओंकार नाथ गुप्त
3. श्री आशीष तिवारी
4. श्री रिण्टू घोष

छात्रावास

1. श्री सुरेश नारायण अग्निहोत्री (छात्रावास अधीक्षक)
2. श्री बाबूसिंह बिसेन
3. श्री शैलेष दीक्षित
4. श्री अजय मिश्र
5. श्री किशन

विद्यालय-प्रबन्ध-समिति

अध्यक्ष	डॉ0 ज्ञान चन्द्र अग्रवाल	अ0 प्रा0 प्राध्यापक	कानपुर
उपाध्यक्ष	श्री कृष्ण गोपाल लाहोटी	व्यवसायी	कानपुर
मंत्री	श्री वीरेन्द्र जीत सिंह	चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट	कानपुर
सहमंत्री	श्री यतीन्द्र जीत सिंह	व्यवसायी	कानपुर
सदस्य	पं0 रामबालक मिश्र	अधिवक्ता	कानपुर
	डॉ0 योगेन्द्र भार्गव	अ. प्रा. मुख्य अभियन्ता	कानपुर
	श्री ओम प्रकाश भार्गव	व्यवसायी	कानपुर
	श्री प्रेम चन्द्र गुप्त	व्यवसायी	कानपुर
	श्री शंकर शरण श्रीवास्तव	शिक्षाविद्	लखनऊ
	श्री हरिकृष्ण सेठ	अधिवक्ता	कानपुर
	श्री तरुण विजय	पत्रकार	नई दिल्ली
	डॉ0 अशोक वार्ष्णेय	सामाजिक कार्यकर्ता	कानपुर
	श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी	प्रधानाचार्य	कानपुर
	दो शिक्षक प्रतिनिधि		

अन्तरताना ठिकाना : Website : www.geocities.com/pddusdv
: www.pddusdv.org
अणुडाक : email-pddusdvkanpur@gmail.com

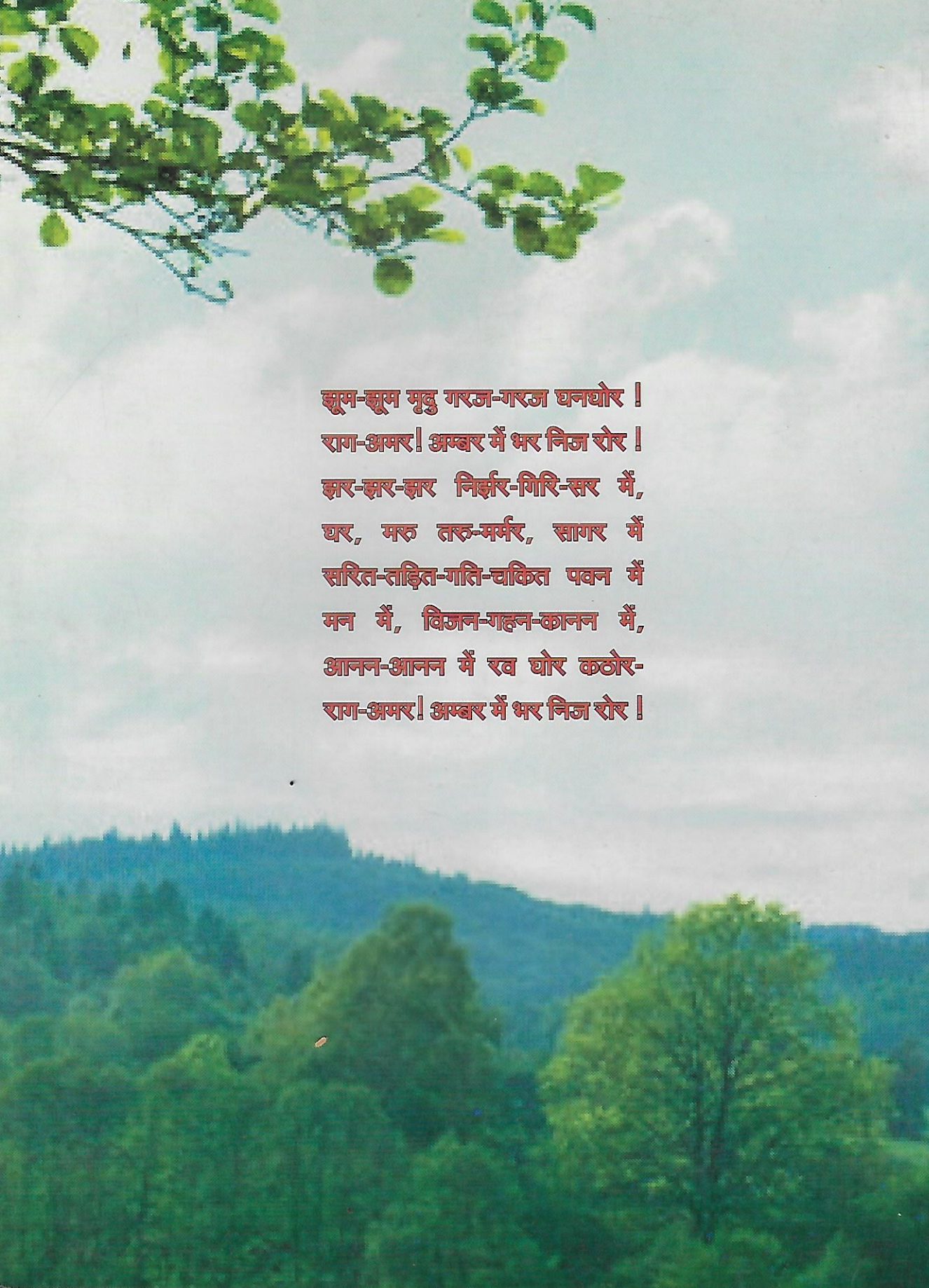

झूम-झूम मृदु गरज-गरज घनघोर !
राग-अमर! अम्बर में भर निज रोर !
झर-झर-झर निर्झर-गिरि-सर में,
घर, मरु तरु-मर्मर, सागर में
सरित-तड़ित-गति-चकित पवन में
मन में, विजन-गहन-कानन में,
आनन-आनन में रव घोर कठोर-
राग-अमर! अम्बर में भर निज रोर !